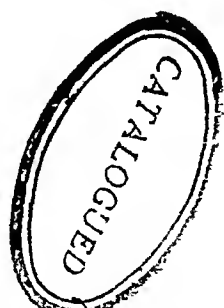


राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ५१



राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग- २

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएण्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर, पूना; गुजरात साहित्य-सभा, अहमदाबाद;
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-संस्थान, होशियारपुर; निवृत्त सम्मान्य नियामक—
(ऑनरेरि डायरेक्टर), भारतीय विद्याभवन, बम्बई

ग्रन्थाङ्क ५१

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

सम्पादक

श्री गोपालनारायण बहुरा, एम. ए.

उप सञ्चालक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर.

प्रकाशनकर्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१७ }
प्रथमावृत्ति ५०० }

भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८२

{ ख्रिस्ताब्द १९६०
{ मूल्य १२.००

RAJASTHAN PURATANA GRANTHMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhramas
Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to
India in general and Rajasthan in particular.

★

GENERAL EDITOR

JINA VIJAYA MUNI, PURATATTVACHARYA

Honorary Member of the German Oriental Society, Germany; Bhandarkar
Oriental Research Institute, Poona; Vishveshvarananda Vaidic
Research Institute, Hosiarpur, (Punjab); Gujrat Sahitya
Sabha, Ahmedabad; Retired Honorary Director,
Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay; General
Editor, Gujarat Puratattva Mandir
Granthavali; Bharatiya Vidya
Series; Sinhghi Jain Series...
etc. etc.

★ ★

No. 51

A CLASSIFIED LIST OF MANUSCRIPTS IN THE

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE
JODHPUR

Pt. 2.

★ ★ ★

Published

Under the Orders of the Government of Rajasthan

By

Director, Rajasthana Prachya Vidya Pratisthana
(Rajasthan Oriental Research Institute)
JODHPUR (RAJASTHAN)

सञ्चालकीय वक्तव्य

प्रस्तुत सूची राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुरमें अप्रैल सन् १९५६ ई० से मार्च सन् १९५८ ई० तक संग्रहीत ३८५५ हस्तलिखित ग्रन्थोंकी है। मार्च सन् १९५६ तक संग्रहीत ४००० ग्रन्थोंकी सूची भाग १ के रूपमें प्रकाशित हो चुकी है। साथ ही मार्च सन् १९५८ तक संग्रहीत राजस्थानी ग्रन्थोंकी सूची भी राजस्थानी ग्रन्थ सूची, भाग १, के नामसे पृथक् प्रकाशित की जा चुकी है।

ग्रन्थोंका वर्गीकरण और विषयनिर्धारण ये दोनों ही कठिन एवं समय-सापेक्ष कार्य हैं। हमारा विचार था कि राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानमें संग्रहीत ग्रन्थोंका वर्गीकृत और सविवरण सूचीपत्र तैयार कराकर विज्ञानोंके सामने लाया जाय, किन्तु ग्रन्थोंकी संख्या दिनों-दिन बढ़ती रही और आगन्तुक विद्वानों एवं अनुसंधित्सुओं का, सामग्रीकी उपयोगिताकी दृष्टिमें रखते हुए, यह अनुरोध रहा कि संग्रहीत सामग्रीका कोई न कोई रूप जल्दी से जल्दी सामने आ जाना चाहिए। एतदर्थ यथासाध्य उपकरणोंको जुटा कर विभागीय कर्मचारियों द्वारा थोड़े से थोड़े समयमें मोटे तौर पर वर्गीकरण एवं विषय-विभाजन कराकर ये सूचियाँ वार्षिक सूचिकाके रूपमें प्रकाशित की जा रही हैं। आगे विवरणादि तैयार करनेका कार्यक्रम भी हमारे सामने है और राजस्थानी सचित्र ग्रन्थोंके सूचीपत्रका काम इस दिशामें श्रीगणेश करनेके लिए हाथ में लिया गया है। इस प्रकार हमारे सूची-प्रकाशन कार्यक्रममें एक तो संग्रहीत-ग्रन्थोंकी सूची और दूसरी विवरणात्मक सूचियाँ यथावसर निकलती रहेंगी।

प्रस्तुत ग्रन्थ-सूची, भाग २, का स्वरूप यद्यपि प्रथम भागके बहुत कुछ अनुरूप रखा गया है, फिर भी इसमें आवश्यकतानुसार कुछ परिवर्तन किये गये हैं। यथा भाषाका कोष्ठक कम करके हिन्दी एवं राजस्थानी ग्रन्थोंके पृथक् विषय बना दिये गये हैं जिससे सुविधानुसार इन दोनों भाषाओंके ग्रन्थोंकी जानकारी मिल सके। विशेष उल्लेखनीय के कोष्ठकमें रचनाकाल, लिपिस्थान, लिपिकर्त्ता, ग्रन्थदशा और विषय-स्पष्टीकरणका संक्षिप्त संसूचन किया गया है। इसके अतिरिक्त परिशिष्ट १ में कुछ विशिष्ट ग्रन्थोंके आद्यन्त अंश अविकल रूपमें उद्धृत कर दिये गये हैं। साथ ही ग्रन्थके विषयमें यदि कोई विशेष सूचना प्राप्त हुई है तो वह भी समाविष्ट कर दी गई है। तात्पर्य यह है कि ग्रन्थके स्वरूप एवं दशाको समझनेके लिए संक्षिप्त रूपमें जानकारी देनेका यथाशक्य प्रयास किया गया है। परिशिष्ट २ में ग्रन्थकर्त्ता-नामानुक्रमणिका दी

गई है। स्पष्ट है कि इन दोनों ही सूचियोंमें बहुतसे ग्रन्थ एवं ग्रन्थकारोंके नाम अद्यावधि अन्यान्य संस्थाओंमें प्रकाशित ग्रन्थसूचियोंमें, विशेषतः राजस्थानी ग्रन्थ-सूचियोंमें नहीं पाये जाते हैं, जो अद्यतन अनुसंधित्सु विद्वानोंके लिए विशेष आवश्यक एवं उपयोगी हैं।

प्रतिष्ठानकी वर्द्धमान प्रगतिको देखते हुए यह भी उचित समझा गया है कि राज्यमें तत्तत् स्थानों पर उपलब्ध हस्तलिखित ग्रन्थ-संग्रहोंको भी इसी विभागके आगत कर दिया जावे। तदनुसार इन्द्रगढ़ पोथीखानेके २०६ ग्रन्थ प्रतिष्ठानमें प्राप्त हुए हैं जिनकी सूची इसी भागके परिशिष्ट ३ में प्रकाशित की जा रही है। भविष्यमें भी ऐसे प्राप्त होने वाले सरकारी एवं व्यक्तिगत संग्रहोंकी सूचियाँ प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित की जावेंगी।

इस सूचीमें समाविष्ट ग्रन्थोंके आक्रमांक विशिष्ट परिचयान्त परिचय-पत्रक सन् १९५८ के नवम्बर मासमें ही श्री गोपालनारायण बहुरा एवं श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी द्वारा भरे जा चुके थे, परन्तु दिसम्बर १९५८ में प्रतिष्ठानका स्थानान्तरण जोधपुरमें हो गया। यहाँ आकर व्यवस्था आदि करने में ५-६ मासका समय लगा। तदनंतर पुनः जांच आदि करके प्रेस कापियाँ तैयार की गईं और मुद्रण चालू करवाया गया। इस पुस्तक का सम्पादन हमारे निर्देशनमें विभाग के उप संचालक श्री गोपालनारायण बहुराने किया तथा परिचय पत्रकांकन, प्रेस कॉपी लेखन, नामानुक्रमणिका और परिशिष्टादि संकलन और प्रूफ-संशोधनादि कार्यमें सर्व श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, लक्ष्मीनारायण गोस्वामी, रमानन्द सारस्वत, स्वर्गीय विश्वेश्वरदत्त द्विवेदी प्रभृतिने भी यथेष्ट सहयोग दिया।

आशा है, इस प्रकाशनसे विद्वज्जन एवं पुरासाहित्यानुसंधित्सु लाभान्वित होंगे।

राज० प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, }
जोधपुर
दि० २९-७-६०

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

विषय-तालिका



| विषय | कृतियाँ | पृष्ठ संख्या |
|---------------------------------------------------------------------|---------|--------------|
| १ स्तुतिस्तोत्रादि | २६० | १-१४ |
| २ वैदिक | ११० | १५-२० |
| ३ कर्मकाण्ड | १७६ | २१-३० |
| ४ तन्त्रमन्त्रादि | १३१ | ३१-३८ |
| ५ धर्मशास्त्र | ११३ | ३९-४६ |
| ६ पुराण-कथा-माहात्म्यादि | १७१ | ४७-५७ |
| ७ वेदान्त | २२६ | ५८-६६ |
| ८ न्याय-दर्शन | ५६ | ७०-७२ |
| ९ व्याकरण | १६६ | ७३-८१ |
| १० कोष | ५३ | ८२-८४ |
| ११ ज्यौतिष | ६२३ | ८५-१२१ |
| १२ छन्दःशास्त्र | २४ | १२२-१२३ |
| १३ संगीतशास्त्र | ३ | १२४ |
| १४ कामशास्त्र | ४ | १२५ |
| १५ काव्य-नाटक-चम्पू | २३३ | १२६-१४० |
| १६ रसालङ्कारादि | ४३ | १४१-१४३ |
| १७ सुभाषितादि | ६४ | १४४-१४८ |
| १८ कथा-चरित्र-आख्यानादि | ६१ | १४९-१५३ |
| १९ आयुर्वेद | १४२ | १५४-१६१ |
| २० राजस्थानीग्रन्थ | ७६८ | १६२-२०५ |
| २१ हिन्दीग्रन्थ | ५४८ | २०६-२३६ |
| २२ जैनस्तोत्र | १४६ | २३७-२४५ |
| २३ जैनागम | १८१ | २४६-२५६ |
| २४ जैनप्रकरण | १७१ | २६०-२७१ |
| २५ प्रकीर्णग्रन्थ | ३५ | २७२-२७४ |
| परिशिष्ट १ [कतिपय ग्रन्थों का विशेष परिचय] | | २७५-३२६ |
| परिशिष्ट २ [ग्रन्थकारनामानुक्रमणिका] | | ३३०-३४६ |
| परिशिष्ट ३ [इन्द्रगढ़ पोथीखानेसे प्राप्त हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची] | | ३४७-३६१ |



राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; १. स्तुतिस्तोत्रादि]

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|------------------------------------------------|--------------------------------------------|----------|-------------|-------------------------|
| १ | ७७५८ | अग्निहोत्रपञ्चाग्नि स्तोत्र | विष्णुधर्मोत्तर तृतीयकाण्डगत | १८२७ | ११ | लि. क.-दैष्णव तृसिंहदास |
| २ | ४५०३ (१) | अपराजिता विद्या (रुद्रगीता) | पद्मपुराणोक्त | १८वीं श. | १-६ | गढ़ बधणोर मध्ये |
| ३ | ७६६८ | अपराधनिरसन स्तोत्र | शङ्कराचार्य (टी. रामानन्दभिक्षु | १८६० | २ | लि. क.-रामनारायण |
| ४ | ६६५२ | अपराधसुन्दरस्तोत्र सटीक | रामेन्द्रवनशिष्य) | १७६७ | ७ | लि. क.-परमानन्द |
| ५ | ४४६७ | अपामार्जन स्तोत्र | विष्णुरहस्योक्त (दालभ्य- पुलस्त्यसंवाद) | १८०२ | ८ | लि. क.-दवे सदाशिव |
| ६ | ४४७७ | " " | विष्णुधर्मोत्तरे विष्णुरहस्योक्त | १६वीं श. | १० | |
| ७ | ५४३८ (६) | अष्टाविंशति नाम | भगवद्भुक्त | १८६० | ६६-६७ | * |
| ८ | ४२३४ | अहत्यास्तोत्र | अध्यात्मरामायणगत | १८वीं श. | ६ | * |
| ९ | ४२५४ | अज्ञानविमोचनस्तोत्र | नन्दिपुराणगत | १६वीं श. | ३ | लि. क.-गंगाधर |
| १० | ४३७० | आदित्यहृदयस्तोत्र (द्वादशावरण) | भविष्योत्तरपुराणगत | १८२० | ११ | |
| ११ | ४५१२ | आदित्यहृदयस्तोत्र | भविष्योत्तरपुराणोक्त | १६वीं श. | २५ | लि. क.-जोशी पन्नालाल |
| १२ | ५०५२ | " " | " | १८६५ | १६ | सवाई जयपुरमध्ये |
| १३ | ५०५७ | आनन्दलहरी | " | १६२३ | १८ | |
| १४ | ६७८५ | आपडुडारबटुकभैरवकवच स्तोत्र (अष्टोत्तरशतनाम) | शङ्कराचार्य | १६०८ | २ | |
| १५ | ४५१३ | आलवन्दारस्तोत्र सटीक त्रिपाठ | रुद्रयामले भैरवतन्त्रोक्त | १८०३ | ७ | लि. क.-दवे सदाशिव |
| १६ | ६०७४ | आलवन्दारस्तोत्र सटीक त्रिपाठ | यामुनाचार्य | १८२८ | १३ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------------------------------------------------------|------------------------|----------|-------------|-----------------------------------|
| १७ | ६२४३ | आलवन्दारस्तोत्र सटीक | यामुनाचार्य | १८२६ | १८ | प्रथम पत्र अग्रान्त |
| १८ | ६५४७ | " | " | १९वीं श. | १४ | |
| १९ | ७५८२ | " | " | १८७८ | १८ | |
| २० | ६३७६ | इन्द्राक्षी स्तोत्र | | १८वीं श. | ५ | |
| २१ | ४६०४ | (१) एकवलीकी भागवत (२) महाभारत (३) दुर्गा (४) सप्तवलीकी गीता | | | ६६ से ६६ | |
| २२ | ५६४७ | कर्पूरस्तवराज सटीक | महाकालसंहितोक्त | १९वीं श. | १२ | |
| २३ | ५४४८ | कार्तवीर्यार्जुन कवच | अमरतन्त्रोक्त | " | ३८ | |
| २४ | ५७०३ | कालिका-कवच | तन्त्रोक्त | १९१२ | २ | लि. क.—ब्रजवासी, अलवर |
| २५ | ५७६० | कालिकाखड्गमाला स्तोत्र | महाकालसंहितान्तर्गत | १९वीं श. | ३ | |
| २६ | ५८१७ | कालीसहस्रनाम | " | १८वीं श. | ३० | |
| २७ | ५१६२ | काशीमङ्गल स्तोत्र | श्रीशंकराचार्य | १९वीं श. | ८ | |
| २८ | ६२८० (२) | कृष्णकरुणामृत | लीलाशुक् | १९०६ | ७-१६ | लि. क. पुजारी हरदेवदास, गोविंदगढ़ |
| २९ | ७६१६ | कृष्णस्तवराज | | १९वीं श. | १० | |
| ३० | ४२३६ | कौसल्यास्तोत्र | अध्यात्मरामायणान्तर्गत | १८वीं श. | ४ | |
| ३१ | ४२३१ | गंगालहरी | जगन्नाथ भट्ट | १८वीं श. | २७ | |
| ३२ | ५४२० (२) | गंगालहरी (सटीक) | जगन्नाथ, टी. बलदेव | १९वीं श. | ४८-६५ | हिन्दी टीका सहित |
| ३३ | ५५६६ | गंगालहरी बालबोधिनो टीकासहित | टी. दलपतिराम | " | ३२ | |
| ३४ | ६०५८ | गंगालहरी टीका | टी. चतुर्भुज मिश्र | १९०६ | ५८ | लि. क.—सान्ग्राम |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|----------------------------|-----------------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------|
| ३५ | ४२३७ | गंगास्तोत्र | नारायण भट्ट | १८वीं श. | ४ | |
| ३६ | ६६३६ | " | ब्रह्मवैवर्तपुराणगत | १८८१ | ५ | |
| ३७ | ४२६६ | गजेन्द्रमोक्ष | महाभारतोक्त | १८वीं श. | २६ | |
| ३८ | ५२८४ | " | " | १६वीं श. | १३ | |
| ३९ | ४५०६ | " | " | १८३६ | १६ | |
| ४० | ४४५२ (३८) | गणपतिस्तोत्र | | १८वीं श. | ४१ | लि. क.-पं० प्रीतसौभाग्य |
| ४१ | ४६७० | गायत्रीसहस्रनाम | रुद्रयामलोक्त | १८१२ | ११ | लि. क.-महात्मा नाथराम शिवपुरीमध्ये |
| ४२ | ५४५६ | गोता पञ्चरत्न सचित्र | | १८वीं श. | २१६ | चित्र संख्या ५ |
| ४३ | ५५०८ | " | | १८३० | ३६० | |
| ४४ | ५८१८ | " | | १८७४ | १६२ | |
| ४५ | ७१७४ | " सचित्र | स्कन्दपुराणोत्तरखण्डोक्त | १८वीं श. | गुटका | चित्र संख्या ५१ |
| ४६ | ४५०८ | गुरुगीता | | १८१६ | ५ | लि. क.-भीकमजी |
| ४७ | ७६२६ | गुरुपादुकास्मृति | | १६वीं श. | ३ | |
| ४८ | ७१४८ | गुरुस्मरणष्टक | कवितार्किकासह वैकटनाथ शिष्य | " | ४० | गोपालविद्याथिना लिखितं नेतरामजी कृते |
| ४९ | ५३१६ | गोपालविंशति | गोपाल | १८८३ | २ | |
| ५० | ५२०५ (१४) | गोपिकागीत (रासर्पचाध्यायी) | भगवतोक्त | १८वीं श. | ४६-६४ | |
| ५१ | ४२६१ | गोपीनाथाष्टक | विश्वनाथ चक्रवर्ती | १६४७ | २ | |
| ५२ | ४५०५ | गोविन्दस्तोत्र | श्रीशंकराचार्य | १८४३ | ३ | |
| ५३ | ७७८६ | गोविन्दाष्टकम् | " | १७५१ | २ | |
| ५४ | ५०८३ | चण्डीपाठ (सचित्र) | मार्कण्डेयपुराणोक्त | १७८६ | ६१ | आद्य चार पत्र अप्राप्त, लि. क.-धवल, चित्र सं. ४६ |

| क्रमाङ्क | अर्थान्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|-----------|----------------------|--------------------------|----------|-------------|--------------------------------|
| ५५ | ५२०८ | चण्डीपाठ (सचित्र) | मार्कण्डेयपुराणोक्त | १८वीं श. | ६८ | चित्र संख्या १० |
| ५६ | ५२०५ (१२) | चतुःस्तोको भागवत | मार्कण्डेयपुराणोक्त | " | ४७-४८ | |
| ५७ | ४४५२ (५८) | चतुःषष्टियोगिनीस्तव | मार्कण्डेयपुराणोक्त | " | ११६वां | |
| ५८ | ६३८१ | जानकीनवरत्नस्तोत्र | अग्रस्यसंहितान्तर्गत | १६वीं श. | ६ | लि.क.—भरतदास वैष्णव, भरतपुर |
| ५९ | ७७०३ | जानकीस्तवराज | पद्मपुराणोक्त | " | ६ | लि.क.—रामनारायण |
| ६० | ६६६७ | जानकीसहस्रनामस्तोत्र | | १७६० | १८ | लि.क.—भगवद्दास |
| ६१ | ७०६५ | जानकीसहस्रनाम | भैरवीतन्त्रोक्त | २०वीं श. | ७ | |
| ६२ | ४६६६ | ताराकवच | रामायणोक्त | १६वीं श. | ४ | वेदान्तपरक |
| ६३ | ४२४६ | तारा-श्रीरामसंवाद | आनन्दतीर्थ | १८वीं श. | ५ | |
| ६४ | ६६३४ | द्वादशस्तोत्राणि | स्कन्दपुराणे काशीखंडोक्त | १६वीं श. | ११ | लि.क.—चतुर्भुज व्यास, अम्बावती |
| ६५ | ७७०५ | दशहरास्तोत्र | | १७४२ | ४ | लि.क.—केशवदास, गढ़बदनोर |
| ६६ | ७६१२ | दशावतारस्तोत्र | शंकराचार्य | १६वीं श. | १ | |
| ६७ | ६०५२ | दक्षिणामूर्तिस्तोत्र | " | १८वीं श. | ४ | |
| ६८ | ४५४४ | " | | १७६४ | १२ | |
| ६९ | ५५०४ | दुर्गाकालकस्तोत्र | | १८८६ | १२ | लि.क.—हनुमदुपाध्याय |
| ७० | ४२०७ | दुर्गासन्तशती | | १६वीं श. | ३५ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ७१ | ४४७६ | " | | १७७३ | ५६ | लि.क.—रघुनाथजीश्री, स. जयपुर |
| ७२ | ५३२८ | " | | १८३१ | ५८ | लि.क.—हनुमदुपाध्याय |
| ७३ | ५४६३ | " | | १८८६ | ५८ | भोजपत्र पर लिखित |
| ७४ | ६६२७ | " | | १७वीं श. | ८४ | |
| ७५ | ७१५७ | " | | १८वीं श. | १६१ | |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग २; १. स्तुतिस्तोत्रादि]

| क्रमांक | ग्रंथाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|--------------------------------------------------|---------------------------|----------|-------------|-------------------------------------------------------------------|
| ६७ | ५०६२ | देवीचरित्र (दुर्गोपाख्यान, त्रयोदशाध्यायान्त) | रुद्रयामलोत्तरखंडोक्त | १९वीं श. | ५१ | पत्र १ व ३२वां अप्राप्त तथा १५वें पत्रमें कुछ सन्दर्भ अद्विष्ट |
| ७७ | ५५२० | देवीमहिम्नस्तोत्र | दुर्वासिःप्रोक्त | १९१७ | २२ | लि.क.—व्यास मुकुन्ददास, जोधनगर |
| ७८ | ४३११ | देवीमाहात्म्य | वेदव्यास | १८५६ | १८ | |
| ७९ | ४२६० | नंदाष्टक, कृष्णाष्टक | श्रीमद्गोस्वामी (विठ्ठल?) | १८वीं श. | ४ | |
| ८० | ७७५७(९) | नवश्लोकीस्तोत्र | शंकराचार्य | १८५० | २२८-२३० | |
| ८१ | ४१७२ | नारायणकवच | भागवतोक्त | १८वीं श. | ८ | |
| ८२ | ४४६८ | " | " | १९वीं श. | ४ | |
| ८३ | ५४३८(७) | " | " | १८९० | ६७-७३ | |
| ८४ | ४२३३ | नारायणाष्टक | " | १८वीं श. | ३ | |
| ८५ | ६४५० | नारायणहृदयस्तोत्र | " | १९१७ | १-४ | |
| ८६ | ४२६७ | नृसिंहकवच | " | १८वीं श. | ४ | प्रथम पत्र सचित्र |
| ८७ | ४१७५ | पंचमुखी हनुमत्कवच | " | १९वीं श. | १३ | |
| ८८ | ७६५३ | पंचायुधस्तोत्र | ब्रह्मांडपुराणोक्त | १८३७ | २ | |
| ८९ | ४१७० | पद्मपुष्पाञ्जलि | कवि रामकृष्ण | १८७८ | १० | |
| ९० | ६८५८ | " | " | १८वीं श. | ८ | आद्यपत्र चित्रित |
| ९१ | ४८८१ | (१) पवनविजयाशनिस्तोत्र (२) रामनवमीसंकल्प | " | १९वीं श. | १९ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ९२ | ४१७८ | पीयूषलहरी | जगन्नाथ पंडितराज | १९१० | १४ | लि.क.—गोदाराम जोशी |
| ९३ | ४१७९ | पीयूषलहरी | " | १९१० | १३ | |

| क्रमाङ्कः | ग्रंथाङ्कः | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|-----------|------------|-------------------------------------------|----------------------|----------|-------------|-------------------------------------------------|
| ६४ | ४५१० | पीयूष लहरी | जगन्नाथ पण्डितराज | १६१० | ११ | |
| ६५ | ५२५६ | " | " | १८वीं श. | २६ | |
| ६६ | ६५८५ | ब्रह्मस्तुति (व्याख्यासहित) | श्रीनिवासदास | १८४० | २५ | |
| ६७ | ५२४८ | वगलामुखीस्तोत्र | | २०वीं श. | ७ | |
| ६८ | ४१३३ | बटुकभैरवकवच | | १६वी श. | ८ | |
| ६९ | ४१३४ | बटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्र | | " | ३५ | |
| १०० | ४१५४ | भगवती श्रगला वीलकस्तोत्र | | " | ३ | |
| १०१ | ४१६२ | भगवती पुष्पाञ्जलि | कवि रामकृष्ण | " | ६ | लि.क.—रामशंकर, कुबेरलाल, स्थान—ग्राम मधवासना |
| १०२ | ६४२३ | " | " | १८०७ | ६ | |
| १०३ | ७६६४ | भवान्यष्टक | शंकराचार्य | १७६४ | १ | लि.क.—राघव जोशी |
| १०४ | ४१२४ | (१) भवानी कवच (२) भवानीसहस्रनामस्तोत्र | | १८वीं श. | २२ | |
| १०५ | ४२५६ | भवानीसहस्रनाम | | १८६१ | ३० | लि.क.—गंगाविष्णु, मलारणा |
| १०६ | ५२१३ | " | | १८वीं श. | ३० | |
| १०७ | ५७६० | भवानीसहस्रनाम एवं कवच | | १८६८ | ६ | लि.क.—हरिवल्लभ शर्मा |
| १०८ | ५४६७ | भावकल्पतरु | मधुर शर्मा | १६वीं श. | ३४ | |
| १०९ | ४२४१ | भीष्मस्तवराज | महाभारतीकृत | १८वीं श. | २२ | |
| ११० | ५२८५ | " | " | १६वीं श. | ६ | |
| १११ | ६६६६ | " | " | " | १२ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|------------------------------|-------------------------------|----------|-------------|-------------------------|
| ११२ | ४५१८ | भीष्मस्तोत्र, अनुस्मृति | शान्तिपूर्वोक्त | १८३१ | १४ | |
| ११३ | ५२०५ (१३) | भुजङ्गप्रयाताष्टकम् | | | ४८-४९ | |
| ११४ | ४२७५ | भुवनेश्वरीस्तोत्र | पृथ्वीधराचार्य | १६८६ | = | |
| ११५ | ५३८५ (६) | मङ्गलाष्टक | कालिदास | १६वीं श. | ५ | |
| ११६ | ६६९० | " | | १८९७ | १ | |
| ११७ | ७७०१ | मधुरकुञ्जविहार्यष्टक | ब्रह्माण्डपुराणक्षेत्रखंडोक्त | " | ३ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ११८ | ५२४३ | मल्लारिकवचस्तोत्र | देवीरहस्योक्त | १६वीं श. | १६ | लि. क.—तिवाड़ी बखतरामजी |
| ११९ | ५०५९ | महागणपतिकवच | राघवचर्चन्य | १८२६ | ३ | |
| १२० | ४५१४ | महागणपतिस्तोत्र | शंकराचार्य | १८वीं श. | ६-८ | |
| १२१ | ४५०३ (२) | महागणपतिस्तोत्र | | १६वीं श. | १८ | |
| १२२ | ४२१५ | महानारायणस्तोत्रचिन्तामणि | अथर्वणरहस्योक्त | " | ११ | |
| १२३ | ५०४६ | महालक्ष्मीहृदयस्तोत्र | मुद्रशेनसंहिता | " | ३ | |
| १२४ | ६६८२ | महामुद्रशेनकवच | श्रीविष्णुकृत | १८३१ | ६ | |
| १२५ | ५२५० | महिम्नस्तोत्र | पुष्पदन्त | १६वीं श. | ४ | |
| १२६ | ५८७० | " | " | १७६० | ११ | लिपि स्थान—काशी |
| १२७ | ६६८३ | " | " | १८८६ | १० | लि. क.—नन्दराम |
| १२८ | ६६९१ | " | मधुसूदन सरस्वती | १७९३ | ४८ | आद्य दो पत्र अप्राप्त |
| १२९ | ७४९६ | महिम्नस्तोत्रटीका | | १६वीं श. | १६ | |
| १३० | ५५६० | महिम्नस्तोत्र सटीक (त्रिपाठ) | | १९१९ | | लि. क.—रामदास कबीरपंथी |
| १३१ | ६७८४ | " | | १८८९ | | लि. क.—ब्रजवासी |
| १३२ | ५७८४ | महिषमर्दिनीसहस्रनाम | रुद्रयामलतंत्रोक्त | | ८ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-------------------------|--------------------------------|----------|-------------|-------------------------------|
| १३३ | ६६६८ | महिषमर्दिनीसहस्रनाम | विश्वसारोद्धृत | १६वीं श. | १२ | |
| १३४ | ५२७८ | यमकाष्टक | पद्मप्रभदेव | २०वीं श. | ५ | |
| १३५ | ४२३८ | यमुनाष्टकस्तोत्र | श्रीवल्लभ-विठ्ठल-हरिराय-रघुनाथ | १८वीं श. | ३ | (४८ कृतियां) |
| १३६ | ६७०१ | यमुनाष्टकादिस्तोत्र | नारदीयपुराण | १६वीं श. | ५४ | लि. क.—रामसेवक, चित्रकूट |
| १३७ | ६३७६ | युगलकिशोर सहस्रनाम | बह्मरहस्यगत | १८वीं श. | १२ | अंतर्में नवग्रहस्तोत्र आदि है |
| १३८ | ४१७३ | रघुवरसहस्रनामस्तोत्र | तंत्रोक्त | १८११ | २१ | |
| १३९ | ६७४६ (५) | राधाकवच | त्रैलोक्यसम्मोहनतंत्रोक्त | १६वीं श. | ११७-११६ | |
| १४० | ५४५५ (२) | राधाकृष्णज्ञानामस्तोत्र | गौतमीयतंत्रोक्त | " | ११ | |
| १४१ | ७७०० | राधाष्टकस्तोत्र | रुद्रयामस्तोक्त | १८वीं श. | १ | लि. क.—पुजारी हरदेवदास |
| १४२ | ६२८० (५) | राधास्तवराज | " | १६०६ | ३६ | |
| १४३ | ५४५४ | राधासहस्रनामस्तोत्र | " | १८१८ | २५ | |
| १४४ | ५५१८ | " | " | १६वीं श. | २ | |
| १४५ | ५२४७ | राधिकाष्टकस्तोत्र | यहूद्ब्रह्माण्डपुराणोक्त | ' | १ | |
| १४६ | ७७०२ | राधिकास्तोत्र | नारदप्रोक्त | १७६६ | २ | |
| १४७ | ६२८० (७) | राधिकाष्टोत्तरशतनाम | विजयरामाचार्य | १६०६ | २ | लि. क.—पुजारी हरदेवदास |
| १४८ | ५२८३ | रामचन्द्रस्तवराज | विश्वामित्र ऋषि | १६वीं श. | ८ | |
| १४९ | ७७१८ | रामचन्द्र स्तुति आदि | नीलकण्ठ | " | ५ | |
| १५० | ६३६६ | राम महिम्नः स्तोत्रम् | विश्वामित्र | १६०१ | ११ | |
| १५१ | ४३३२ | रामरक्षाकवच | विश्वामित्र | १८वीं श. | ६ | |
| १५२ | ७६४७ | रामरक्षाविवरणकारिका | विश्वामित्र | १६वीं श. | ३ | |
| १५३ | ५०५३ | रामरक्षास्तोत्र | विश्वामित्र | " | ५ | |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि जातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|-----------------------------------------|--------------------------|----------|-------------|--------------------------|
| १५४ | ६६७६ | (१) रामवज्रकवच (२) विष्णुहृदयस्तोत्र | हिरण्यगर्भसंहितोक्त | १६वीं श. | ८ | |
| १५५ | ६६८० | रामशरणस्तोत्र | बृहद् ब्रह्मसंहितोक्त | १८वीं श. | ४ | |
| १५६ | ६६३० | रामस्तव | | १६वीं श. | ३ | |
| १५७ | ४२४७ | रामस्तवराज | सत्कुमारसंहितोक्त | १८वीं श. | १८ | |
| १५८ | ५२३५ | " | " | १७५६ | ७ | |
| १५९ | ५४३८(१) | " | " | १८६० | १-१६ | |
| १६० | ६६६५ | " | " | १८६० | ६ | लि.क.-जयजयराम |
| १६१ | ६७४६(४) | " | " | १६वीं श. | १०५-११६ | किला अमरकोट मालवामें लि |
| १६२ | ५२३३ | " | " | १६०६ | ३८ | |
| १६३ | ४२४८ | रामहृदयस्तोत्र | " | १८वीं श. | ६ | |
| १६४ | ४५०४ | " | ब्रह्माण्डपुराणोक्त | १६वीं श. | ५ | |
| १६५ | ७७५७(८) | " | अध्यात्मरामायणोक्त | १८५० | २२२-२२७ | |
| १६६ | ६६३६ | रामानुजाष्टोत्तरशतनाम | महात्मा आङ्घ्रिपूर्ण | १८वीं श. | २ | |
| १६७ | ७६१६ | रामाष्टक, रामस्तोत्र | महेश्वर भट्ट | १६वीं श. | १ | |
| १६८ | ५७१५ | रुचिस्तव | मार्कण्डेयपुराणोक्त | १६वीं श. | ५ | |
| १६९ | ७७६६ | रूपवित्तमणिस्तोत्र | चक्रवर्ती | " | ५ | |
| १७० | ६२८०(६) | " | " | १८६० | ४ | लि.क.-रामनारायण |
| १७१ | ५१६४ | ललितादिव्यनामत्रिशती | ललितोपाध्यायगत | १६०६ | २५-२८ | लि.क.-पुजारी हरदेवदास |
| १७२ | ५८०७ | ललितास्तव | दुर्वासा | १६वीं श. | २० | |
| १७३ | ७६५६ | लक्ष्मीपञ्जरस्तोत्र | मन्त्ररहस्योत्तरखण्डोक्त | १६वीं श. | २६ | स्तव २११ आर्याभोगें है । |
| | | | | १६१३ | २ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------|----------|-------------|-----------------------------------------|
| १७४ | ६६८६ | लक्ष्मीस्तव | वैकटनाथ वेदान्ताचार्य | १६वीं श. | ३ | |
| १७५ | ६६८८ | लक्ष्मीस्तोत्र | अथर्वणरहस्योक्त | १६०१ | ४ | |
| १७६ | ५५१६ | लक्ष्मीस्तोत्र, नारायणहृदय | ब्रह्माण्डपुराणगत | १६२६ | १२ | ७वां पत्र अप्राप्त |
| १७७ | ५३१६ | लक्ष्मीसहस्रनाम | अथर्वणरहस्योक्त | १८२८ | १० | |
| १७८ | ६४४० (२) | लक्ष्मीहृदयस्तोत्र | अथर्वणरहस्योक्त | १६१७ | ५-१७ | |
| १७९ | ७७१३ | व्रजविहार | श्रीधर स्वामी | २०वीं श. | २ | |
| १८० | ५३३६ | वरदगुरुपंचाशत | नारायण | २०वीं श. | ६ | लि.क.-देवकृष्ण, र.का. १६०१ |
| १८१ | ५२३४ (२) | (१) विशतिनामस्तोत्र (२) चतुःश्लोकी भागवत (३) एकश्लोकी रामायण (४) सप्तश्लोकी गीता (५) बिहारी सतसई के २३ दोहे | | १६११ | १०-१४ | |
| १८२ | ५५११ | विश्वोम सप्तशती | मार्कण्डेयपुराण | १८वीं श. | ३२ | |
| १८३ | ७७२१ (१६) | विष्णुपञ्जरस्तोत्र | | १८४४ | २०३-२०५ | लि.क.-व्यास केशा |
| १८४ | ७७५० (२) | " | ब्रह्माण्डपुराणोक्त | १८६० | २१-२४ | लिपिकर्त्री-किशानी, लिपि स्थान-खारला |
| १८५ | ४२५१ | विष्णुसहस्रनामस्तोत्र | महाभारतोक्त | १८वीं श. | ३२ | |
| १८६ | ४४७८ | विष्णुसहस्रनाम (सार्थ) | पद्मपुराणोक्त | १७वीं श. | ५३ | टीका हिन्दीमें |
| १८७ | ५२८२ | " | महाभारतोक्त | १६वीं श. | १३ | |
| १८८ | ५४३८ (२) | " | " | १८६० | १६-४० | |
| १८९ | ५४६० | " (गीतापञ्चरत्न) | | १८८२ | ३०१ | चित्र संख्या ३ |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-------------------------------|----------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------------|
| १६० | ६६३५ | विष्णुसहस्रनाम | महाभारतोक्त | १७वीं श. | ११ | |
| १६१ | ६३७५ | " | " | १७८२ | १७ | |
| १६२ | ४५१५ | " | " | १८वीं श. | १६ | |
| १६३ | ६८६४ | विषाणुहस्तोत्र व्याख्या | धनञ्जयसूरि | १६वीं श. | १० | लि.क.-पण्डित हरिपणि |
| १६४ | ५२०५ (१७) | विक्षित ? (विक्षिप्तिस्तोत्र) | विठ्ठलेश दीक्षित | १८वीं श. | ८६-८८ | |
| १६५ | ५१८३ | वृन्दावनशतकम् | प्रबोधानन्द सरस्वती | " | २० | |
| १६६ | ५४६६ | " | " | १८३७ | ११ | |
| १६७ | ६४६८ | वेदस्तव सटीक | विश्वनाथ | १६वीं श. | २७ | |
| १६८ | ४२४६ | वेदस्तुति | भागवतोक्त | १८वीं श. | १४ | |
| १६९ | ५४६७ | वेदस्तुति (ग्रन्थबोधिनी टीका) | | १८६२ | ३६ | |
| २०० | ६४६३ | वेदस्तुति सटीक | | १६६६ | ६ | लि.क.-शिवनिधानगणि, लि० स्था०-प्रल्हादन लि.क.-हरिलास |
| २०१ | ६४६७ | " | टी. श्रीधर | १८८८ | ५४ | |
| २०२ | ६५६३ | " | श्रीनिवासदास | १६वीं श. | २८ | |
| २०३ | ४१८० | वैशम्पायन सहस्रनाम | वेदव्यास | " | २७ | |
| २०४ | ४२५३ | श्रीदेवीपुष्पाञ्जलि | रामकृष्ण | १८४६ | ३ | |
| २०५ | ४१३१ | श्रीसूक्त (सभाष्य) | विद्यातीर्थ | १६वीं श. | ६ | |
| २०६ | ७७५७ (१०) | इलोकोपनिषत् | शंकराचार्य | १८५० | २३०-२३२ | |
| २०७ | ५७५६ | शारभसहस्रनाम (सकवच) | श्रीकाशभैरवकल्पोक्त | १६वीं श. | ७ | |
| २०८ | ४१७१ | शारभकवच | शंकरप्रोक्त | " | १२ | |
| २०९ | ६६८७ | शालिग्रामस्तोत्र | भविष्योत्तरपुराणोक्त | " | ४ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि जातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|---------------------------------------------|------------------|----------|-------------|--------------------------|
| २१० | ७७६० | शिवताण्डवस्तोत्र | रावण | १६वीं श. | २ | जयपुर में लिखित |
| २११ | ५५०६ | शिवमहिम्नस्तोत्र | पुण्ड्रवन्त | १८४२ | ६ | |
| २१२ | ४६२१ | शिवमहिम्नस्तोत्र | " | १६वीं श. | ५ | |
| २१३ | ४१६१ | शिवमहिम्नस्तोत्रटीका | अहोबिल शास्त्री | " | २४ | |
| २१४ | ६१६८ | शिवमहिम्नस्तोत्र (सटीक) | " | " | ८ | |
| २१५ | ६६६७ | " | " | १६१५ | १४ | |
| २१६ | ५१८६ | " | मधुसूदन सरस्वती | १६वीं श. | ५० | लि.क.—ब्रह्मानन्द |
| २१७ | ७७७२ | शिवस्तोत्र | रावण | १६वीं श. | १ | |
| २१८ | ४४६६ | शिवसहस्रनामस्तोत्र | शिवपुराणोक्त | १८६२ | १० | |
| २१९ | ५०५६ | शिवाष्टक | शंकराचार्य | १८६० | ३ | लि.क.—गोपीनाथ |
| २२० | ४२१६ | श्रीतिलास्तोत्र | " | १८७१ | ३ | लि.क.—कैसोराम कान्यकुब्ज |
| २२१ | ७८११ (३) | स्तोत्रकवचादि | " | १८वीं श. | | लि० स्था०-नगर बोलो |
| २२२ | ६२८० (४) | स्मरणमंगल | " | १६०६ | २१-२२ | * |
| २२३ | ४५०१ | संकटनाशनस्तोत्र | पद्मपुराणोक्त | १६वीं श. | १ | लि.क.—पुजारी हरदेवदास |
| २२४ | ४१५३ | सप्तशती दुर्गापाठ | " | १६२७ | १०८ | |
| २२५ | ७८३५ | सप्तशती दुर्गास्तोत्र | " | १६वीं श. | ११२ | चित्र संख्या ११२ |
| २२६ | ५५१२ | सप्तशती टीका | नागोजी भट्ट | १८२४ | ८१ | |
| २२७ | ७७६२ | सप्तशती भाष्यम् | " | १६वीं श. | ५६ | |
| २२८ | ४४५२ (५६) | (१) सरस्वती मंत्रस्तोत्र (२) गणपतिमन्त्र | " | १८वीं श. | ११७वां | |

| क्रमांक | पद्याङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | विषय समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|--------------------------|-----------------------|----------|-------------|------------------------|
| २२६ | ६३६६ | सहस्रनामस्तोत्र | कुण्डगडास पयोहारी | १८०८ | ३ | |
| २३० | ५६२५ | साम्बपंचाशिका विवरण | डो. राजानक क्षेमराज | १९वीं श. | ३२ | |
| २३१ | ६६७७ | सुवर्दानस्तोत्र | अहिर्बुध्न्य संहितागत | " | १ | |
| २३२ | ५५२७ | सुवर्दानसहस्रनाम स्तोत्र | पंडितराज जगन्नाथ | " | ६ | |
| १३३ | ४४३६ | सुधासहस्रनामस्तोत्र | शंकराचार्य | " | १० | |
| २३४ | ४५०२ | सूर्यस्तोत्र | सीताराम पंचोकीकर | " | १ | |
| २३५ | ७००६ | " | | २०वीं श. | ३ | |
| २३६ | ७७२१ (१५) | सूर्याष्टक | शंकराचार्य | १८४४ | २०२ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| २३७ | ४१७७ | सौन्दर्यलहरी | " | १९वीं श. | २० | लि.क.-ऋषि देवचन्द |
| २३८ | ४४०३ | " | " | १८५७ | ७ | लि.क.-ऋषि श्रीकृष्ण |
| २३९ | ४५०७ | " | " | १८२३ | ८ | लि.क.-पलाययाप्राप्तस्थ |
| २४० | ४५१६ | " | " | १७३४ | १५ | ठाकुरसूरजीपुत्र |
| २४१ | ४५२६ | " | " | १९वीं श. | १० | |
| २४२ | ५२४४ | " | " | १८६३ | १६ | लि.क.-धनीराम मिश्र |
| २४३ | ५५८४ | सौन्दर्यलहरी सटीक | डो. श्री रंगदास | १९वीं श. | ५४ | |
| २४४ | ५६७६ | " | डो. नरसिंह | " | ४१ | |
| २४५ | ५७८८ | " | कैवल्याश्रम | १९३६ | ७५ | |
| २४६ | ६५२३ | सौन्दर्यलहरी व्याख्या | गौरीकांत | २०वीं श. | ३३ | |
| २४७ | ५२३१ | हनुमत्सहस्रनामस्तोत्र | चाल्मीकीय रामायणोक्त | १७५६ | १३ | लि.क.-शिवदत्त |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|---------------------------------------------------------------------------------|-----------------------|----------|-------------|------------------------|
| २४८ | ७६४६ | हनुमन्मधुनामस्तोत्र | वैकटनाथ वेदान्ताचार्य | २०वीं श. | २ | लाङ्गूल शत्रुजयस्तोत्र |
| २४९ | ६७०७ | हयग्रीवस्तोत्र | शंकराचार्य | १९वीं श. | ४ | |
| २५० | ७७०६ | हरिनाममालास्तोत्र | हरिवंशपुराणोक्त | " | ३ | (८१वां अध्याय) |
| २५१ | ७८१२ | हरिहस्तोत्र | | " | ६ | |
| २५२ | ७६८८ | हरिहरात्मकस्तोत्र | शंकराचार्य | " | ३ | |
| २५३ | ६८२६(२) | (१) हस्तामलक (२) यमुनाष्टक (३) हनुमानाष्टक | नन्ददास | १९०२ | १-१४ | |
| २५४ | ६५८२ | हस्तामलक सटीक | तुलसीदास | १९वीं श. | ५ | |
| २५५ | ६५८४ | क्षमाषोडशी | शंकराचार्य | १८९५ | ७ | लि.क.-रामसुख रामनारायण |
| २५६ | ६६७८ | " | वेदान्ताचार्य | १९वीं श. | ३ | लि.क.-रामकुमार, कोटा |
| २५७ | ५१०६ | (१) त्रिपुरसुन्दरीहृदय (२) त्रिशती (३) कल्याणीस्तोत्र (४) ललितास्तवराज | वीरमहेश्वरतन्त्रोक्त | १९२५ | ३१ | |
| २५८ | ५१६१ | त्रिपुराकवच | | १९वीं श. | ३ | |
| २५९ | ७७२१(१७) | त्रिपुरास्तोत्र आदि | उत्तरगन्धर्वतन्त्र | १८४४ | २०५-२७७ | |
| २६० | ४१६३ | त्रैलोक्यविजयकवच | | १९वीं श. | २४ | |

राष्ट्रभूषण पुरातन्त्रान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; २. वैदिक

| क्रम-सू. | संख्या | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि नमय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|--------|------------------------------|--------------------|----------|-------------|--------------------------|
| १ | ४६४३ | प्रथमं निरुक्त | | १८६५ | १२ | लि.क.—सवासुल शुक्ल, जयनग |
| २ | ४६३७ | प्रथमं निरुक्ता प्रष्टादशकां | | १६०४ | ११ | " " |
| ३ | ४६२८ | प्रथमं निरुक्ता | | १८६२ | १३४ | " " |
| ४ | ४०६५ | प्रथमं निरुक्ता | | १८६० | ५६ | लि.क.—महादेव भट्ट |
| ५ | ४००२ | प्रथमं निरुक्ता | | १८६० | ५ | |
| ६ | ४६४५ | प्रथमं निरुक्ता | माधव | " | ३० | |
| ७ | ४५६२ | प्रथमं निरुक्ता | प्रथमं निरुक्ता | " | ४४ | |
| ८ | ४५६२ | प्रथमं निरुक्ता | प्रथमं निरुक्ता | " | २१ | लि.क.—भट्ट मयाराम |
| ९ | ४६४६ | प्रथमं निरुक्ता | प्रथमं निरुक्ता | १८०६ | १६ | लि.क.—सवाईराम |
| १० | ४६४४ | प्रथमं निरुक्ता | प्रथमं निरुक्ता | १६०६ | ६४ | |
| ११ | ४०१० | प्रथमं निरुक्ता | प्रथमं निरुक्ता | १७८१ | १०५ | लि.क.—वीरेश्वर शुक्ल |
| १२ | ४०११ | प्रथमं निरुक्ता | प्रथमं निरुक्ता | १७८४ | ७५ | " " |
| १३ | ४०१२ | प्रथमं निरुक्ता | प्रथमं निरुक्ता | " | ८७ | " " |
| १४ | ४०१३ | प्रथमं निरुक्ता | प्रथमं निरुक्ता | १७१६ | १२४ | " " |
| १५ | ४०१४ | प्रथमं निरुक्ता | प्रथमं निरुक्ता | १७८४ | ७२ | " " |
| १६ | ४०१५ | प्रथमं निरुक्ता | प्रथमं निरुक्ता | १७८२ | १११ | लि.क.—पंड्या चिन्तामणि |
| १७ | ४०१६ | प्रथमं निरुक्ता | प्रथमं निरुक्ता | " | ६६ | " " |
| १८ | ४०१७ | प्रथमं निरुक्ता | प्रथमं निरुक्ता | १७८२ | ६८ | लि.क.—वीरेश्वर |
| १९ | ४०१८ | प्रथमं निरुक्ता | प्रथमं निरुक्ता | १७२६ | १३३ | पत्र १६, ४६, ४७ अप्राप्त |
| २० | ४०१९ | प्रथमं निरुक्ता | प्रथमं निरुक्ता | १६०६ | १२७ | |

| क्रमसू. | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-------------------|--------------------|----------|-------------|--------------------------|
| २१ | ५०२० | ऋग्वेद तृतीयाष्टक | | १६वीं श. | १११ | १७वीं पत्र प्राप्त |
| २२ | ५०२१ | चतुर्थाष्टक | | १८५३ | १२६ | |
| २३ | ५०२२ | पंचमाष्टक | | १८५५ | ६७ | |
| २४ | ५०२३ | षष्ठाष्टक | | १८५५ | १०४ | |
| २५ | ५०२४ | सप्तमाष्टक | | १८५६ | ६६ | |
| २६ | ५०२५ | अष्टमाष्टक | | १८५८ | ११४ | |
| २७ | ५५७० | तृतीयाष्टक | | १८वीं श. | ६६ | पत्र २७ से ३८ तक प्राप्त |
| २८ | ७६७३ | प्रथमाष्टक | | १७७५ | ७४ | |
| २९ | ७६७४ | द्वितीयाष्टक | | १७७३ | ६६ | |
| ३० | ७६७५ | तृतीयाष्टक | | १७७५ | ७२ | |
| ३१ | ७६७६ | चतुर्थाष्टक | | १७७५ | १०० | |
| ३२ | ७६७७ | पञ्चमाष्टक | | १७२० | ८४ | लि.क.—वीरेन्द्रवर शुक्ल |
| ३३ | ७६७८ | षष्ठाष्टक | | १७८० | ७२ | लि.क.—जगन्नाथ, काशी |
| ३४ | ७६७९ | सप्तमाष्टक | | १७७४ | ८२ | लि.क.—व्यास गोकुल, ढोङा |
| ३५ | ७६८० | द्वितीयाष्टक | | १६६६ | ७६ | लि.क.—पण्ड्या चिन्तामणि |
| ३६ | ७६८१ | तृतीयाष्टक | | १७६३ | १६३ | |
| ३७ | ७६८२ | " | | १७०४ | ६१ | |
| ३८ | ७६८३ | " | | १७२६ | ७१ | |
| ३९ | ७६८४ | पञ्चमाष्टक | | १७७४ | ७२ | |
| ४० | ७६८५ | षष्ठाष्टक | | " | ११० | लि.क.—सुलजी |
| ४१ | ७६८६ | सप्तमाष्टक | | १८५३ | | |

| क्रमांक | प्रमाण | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | तिथि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|----------|----------------------------------|--------------------|----------|-------------|--------------------------|
| ४२ | ४६९७ | ऋग्वेद प्रतिपाद्य (प्रथमाध्याय) | | १८वीं श. | १६ | लि.क.-फकीरचन्द |
| ४३ | ४६९८ | ऋग्वेद संहिता | | १७६३ | ६३ | |
| ४४ | ४७६६ | " | | १७३० | १५१ | |
| ४५ | ४०२६ | ऋग्वेदानुक्रमणिका | | १८५२ | १२३ | स्वरितं देवशंकरेण |
| ४६ | ४०२७ | " | (कुरु) | १७६६ | ४७ | लि.क.-रविवत्त |
| ४७ | ४०२८ | परिभाषाभाष्य | रघुनाथ | १७६८ | १० | |
| ४८ | ४०८५ | ऋग्वेदानुक्रमणिका विवृति | | १८वीं श. | १३ | अपूर्ण |
| ४९ | ४६६६ | वेदोपनिषत् | | १६वीं श. | ३ | |
| ५० | ७५८४ | कैवल्योपनिषत् | | १६वीं श. | १ | |
| ५१ | ६१२६ (२) | कोमोतक ब्राह्मण | | १५४३ | १३३ | |
| ५२ | ४४४३ | गोपासतापिन्युपनिषत् त्रिपाठ सटीक | | १६०१ | १६ | लि.क.-प्रम्बालाल |
| ५३ | ४६२८ | अरण्यग्रह व्याख्या | | १७८० | ५ | लि.क.-पीताम्बर, कागहाजी |
| ५४ | ५७०० | " | | १६२४ | ३ | |
| ५५ | ७८२० | धनुर्वेदपरिच्छेद | | १७६६ | २६ | लि.क.-हरिकृष्ण |
| ५६ | ४२४५ | (वीरचित्तामणिनामा) | | १८वीं श. | १३ | |
| ५७ | ७७१० | नारायणोपनिषत् | | १६वीं श. | ४ | |
| ५८ | ५०३० | निषध | पाणिनीय | १८१२ | २२ | लि.क.शुभराम, तुलाराम ध्य |
| ५९ | ६७२४ | " | | १६वीं श. | २६ | |
| ६० | ५५७३ | निरुक्तम् | | १७२४ | ६३ | पत्र ८, व २८ से ४२ तक ३ |
| ६१ | ५०३४ | ब्राह्मण प्रथम पंक्तिका | | १८वीं श. | २३ | |

| क्रमांक | पंथांक | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|--------|----------------------------------|--------------------|----------|-------------|------------------------|
| ६२ | ५४८२ | ब्राह्मण प्रथमपंचिका | | १८वीं श. | ४६ | |
| ६३ | ७७०४ | " " | | " | २२ | |
| ६४ | ५०३५ | " द्वितीयपंचिका | | " | २८ | |
| ६५ | ५५६६ | " " | | " | ६१ | |
| ६६ | ५०३६ | " तृतीयपंचिका | | " | ३० | पत्र १, २, ५५ अप्राप्त |
| ६७ | ५४८३ | " " | | " | ५५ | |
| ६८ | ५०३७ | " चतुर्थपंचिका | | " | २४ | |
| ६९ | ५०३८ | " पंचमपंचिका | | " | ३० | |
| ७० | ५०३९ | " षष्ठपंचिका | | " | २३ | |
| ७१ | ५०४० | " सप्तमपंचिका | | " | २० | |
| ७२ | ५०४१ | " अष्टमपंचिका | | " | २० | |
| ७३ | ६६४४ | ब्राह्मणानि (तृतीयाध्यायपर्यन्त) | | १८५४ | ५२ | |
| ७४ | ४१६४ | मण्डल (श्रावणीकर्मज्ञभूत) | | १६वीं श. | ७ | |
| ७५ | ५१७६ | मण्डल प्रकरण | सायणाचार्य | १७६१ | १० | |
| ७६ | ४६३० | मण्डल व्याख्यान | | १७वीं श. | ६ | लि.क.—माधवाश्रम शंकर |
| ७७ | ५५०१ | मन्त्रसंहिता शान्तिस्तुतानि | | १८वीं श. | १७१ | पत्र २० से ६२ अप्राप्त |
| ७८ | ५८२३ | मन्त्रार्थटीपिका | शत्रुघ्नोपाध्याय | १८२५ | १४२ | आदिके दो पत्र नहीं हैं |
| ७९ | ७७१७ | मन्युसूक्त | | २०वीं श. | ४ | लि. क.—मित्रमणि |
| ८० | ४६०८ | मनोज्योतिस्मंत्र | | १६१३ | २ | |
| ८१ | ४७०० | माण्डूक्योपनिषत् | | १६वीं श. | ३ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|------------------------------------------------|------------------------------|------------------|-------------|------------------------------------------------------------------|
| ८२ | ७६६३ | माध्यन्दिनी संहिता | याज्ञवल्क्य | १८५६ | ४ | लि. क.-रामगोपाल दाधीच पत्र १, ५, ११, ३७ अप्राप्त |
| ८३ | ४७०१ | मुण्डकोपनिषत् | | १६वीं श. १७८८ | ७ | |
| ८४ | ५५८० | खद्रजप्य (खद्राष्टाध्यायी) | | १६वीं श. | ३८ | |
| ८५ | ४४७६ | खद्रांगभूतमंत्रन्यासादि | | १६वीं श. | ८ | |
| ८६ | ७६६५ | खद्राध्याय | | १८६६ | १३ | लि. क.-रावल वलभजी लि. क.-वल्लभराम दुर्लभराम नागर, विधमनगरा |
| ८७ | ५७२८ | वंश-ब्राह्मण | | १६वीं श. | ११ | |
| ८८ | ४५७६ | वाजसनेयी शिक्षा | | " | १५ | |
| ८९ | ४२०३ | वाजसनेय संहिता | | १७६७ | १६० | |
| ९० | ५००७ | " " | | १८४८ | १४६ | लि. क.-जयचंद धनेश्वरसुत लि. क.-राधाकृष्ण स्थान-अम्बावती |
| ९१ | ५२०० | " " | | १८वीं श. | १५७ | |
| ९२ | ५८०३ | " " | | १७८२ | १८२ | |
| ९३ | ४६३२ | " पूर्वार्द्ध | | १८७६ | १७० | |
| ९४ | ५७७८ | " उत्तरार्द्ध | भा.-शंकराचार्य, टि.आनन्दगिरि | १८५२ | १४८ | लि. क.-रामकृष्ण |
| ९५ | ४६३३ | " | | १८७६ | १०७ | लि. क.-रामशुक्ल |
| ९६ | ५७७६ | " | | १८७३ | ६३ | |
| ९७ | ५१६७ | " | | १८२८ | १५३ | लि. क.-हरिभाई सूर्यपुर |
| ९८ | ६४६६ | वाजसनेयी संहितोपनिषदीशा- वास्यभाष्य सटिप्पण | | १८८६ | ६ | |
| ९९ | ७८३० | वैदिक संहिता (पदसंग्रह) | | १५२५ | १५५ | |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर - हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; २-वैदिक]

[२]

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि जातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|---------------------------------------------------|------------------|----------|-------------|------------------------------------------|
| १०० | ५०२६ | शिक्षात्र्योतिषद्वन्द्वसि | श्रीशत्रुघ्न | १७२७ | २४ | लि. क.-अम्बिकेश्वर श्यामजी |
| १०१ | ५०३१ | " (शांकरशिक्षा) | | १७६७ | १५ | शुक्लसुत, दोडावास्तव्य |
| १०२ | ७५०६ | पञ्चमन्त्राः (मन्त्रार्थदीपिकास्या- टीकोपेताः) | | १६वीं श. | ७५ | लि. क.-पुरुषोत्तम प्रथम पत्र अप्राप्त |
| १०३ | ५५७४ | पञ्चाध्यायः संहिता | | १७२४ | १०३ | लि. क.-करणीदत्त पालीवाल |
| १०४ | ५११६ | " (द्वितीयाष्टक) | ब्राह्मणोदत्त | १८६७ | १८० | १८० |
| १०५ | ५५७७ | संहिता | | १७५६ | १०४ | १०४ |
| १०६ | ५००१ | संहिताद्वयप्रकाशः | | १६वीं श. | १३ | १३ |
| १०७ | ४६५५ | सर्वानुक्रमणिकावृत्ति | | १७६८ | ६१ | ६१ |
| १०८ | ४६४१ | हव्यकाण्ड | | १६८७ | २११ | २११ |
| १०९ | ७७७१ | अथवाभाष्य | | १६१७ | २ | २ |
| ११० | ७७७८ | अथवाभाष्य | | १६३७ | २ | २ |

अथः ५५ वामुख्यतीगोतिः ॥ नराय ॥ तृतीयः ॥ तौ गीः ॥ रतिः ॥ वामुयमसिनी नराय
 शोभ ॥ अमुयवर्ग ॥ गिरः ॥ अमुयवर्ग ॥ गिरः ॥ अमुयवर्ग ॥ गिरः ॥ अमुयवर्ग ॥ गिरः ॥
 युतिः ॥ अमामः ॥ गीः ॥ रतिः ॥ पतिः ॥ अमुयवर्ग ॥ गिरः ॥ अमुयवर्ग ॥ गिरः ॥ अमुयवर्ग ॥ गिरः ॥
 अमामः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥
 कतिः ॥ पुविर्वा ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥
 अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥
 अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥
 अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥
 अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥
 अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥ अमामः ॥ सुः ॥

५५

राजस्थान पुरातत्वावेपण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ३ कर्मकाण्ड]

| क्रमा क्र. | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|------------|------------|---------------------------|----------------------|----------|-------------|----------------------------------------|
| १ | ४४४६ | अग्निष्टोमपद्धति | देव याज्ञिक | १८६६ | ८५ | कात्यायनसूत्रोक्त |
| २ | ४४५० | " | " | १८६५ | ८२ | लि. क.—उमाशंकर शुक्ल |
| ३ | ४६१० | अनन्तव्रतविधि | भविष्योत्तरे | १८०० | ११ | लि. क.—नन्दराम आचार्य |
| ४ | ४४५१ | अध्वर्युप्रयोग | | १८०० | ५३ | लि. क.—दुखभंजन तिवड़ी |
| ५ | ४५५८ | अग्निदेवतादिस्थापनहोमविधि | अग्निरोक्त | १६वीं श. | १३ | औदीच्य |
| ६ | ५३४६ | अष्टमहादानप्रकरण | " | १६वीं श. | ३ | लि. क.—लीलाधर ठाकुर, कोटा |
| ७ | ४६८८ | आतु रसंन्यासपद्धति | | १७७३ | ५ | |
| ८ | ५१७५ | " | " | १८वीं श. | १४ | |
| ९ | ४६३६ | आरामप्रतिष्ठाविधि | | १५६८ | २१ | |
| १० | ४०६४ | आश्वलायनगृहपरिशिष्ट | | १८वीं श. | २६ | |
| ११ | ४६५० | आश्वलायनगृहसूत्रवृत्ति | नारायण | १८०३ | १०७ | |
| १२ | ४६५५ | " | त्रैविध्यवृद्ध | १८०० | ६४ | |
| १३ | ४६५४ | " | " | १७६६ | १०७ | |
| १४ | ५०३३ | आश्वलायनश्रौतसूत्र | देवयाज्ञिक | १७६५ | ५२ | लि. क.—इच्छाराम व्यास |
| १५ | ४६१६ (२) | आह्निकपद्धति | | १७६८ | ४२ | लि. क.—यदुराम |
| १६ | ६६७४ | एकोद्दिष्टश्राद्धविधि | | १६०३ | ६ | |
| १७ | ४६१३ | ऋषिपञ्चमीव्रतविधि | भविष्यपुराणोक्त | १८वीं श. | ४ | लि. क.—छेदालाल, पंडित |
| १८ | ४६८३ | कर्कभाग्य | कर्कचार्य | १८०७ | १६ | लि. क.—मुखदेव गौलवाल, मुरतवंदरमध्ये |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|------------------------------|----------------------------|----------|-------------|--------------------------------|
| १६ | ४६२५ | कर्मप्रदीप | गोभिलोक्त | १६वीं श. | ३३ | १५वां पत्र अप्राप्त |
| २० | ४६८७ | " | | १५६६ | ३५ | लि. क.—कालुआ महत्त, महसाणा |
| २१ | ४६४६ | कात्यायनश्रौतसूत्र | देव याज्ञिक | १७६३ | ६१ | |
| २२ | ४४४८ | कात्यायनसूत्रपद्धति | " | १८६४ | १५६ | |
| २३ | ५४६४ | कात्यायनपद्धति (सौत्रामणी) | " | १८वीं श. | २० | |
| २४ | ६३६८ | कार्तिकोद्यापनविधि | | १८२२ | ६ | |
| २५ | ४६६५ | कुण्डकल्पद्रुम | माधव | १८१० | १८. | र. का.—१७१२ |
| २६ | ५७४६ | " | " | १६वीं श. | १० | लि. क.—ऋषीश्वर शुक्ल |
| २७ | ४६६० | कुण्डतत्त्वप्रदीप | वलभद्रशुक्ल | १८वीं श. | १५ | * |
| २८ | ४६७८ | कुण्डप्रकरण (इलोकप्रकाशिका) | रामचंद्र नैमिषवासो | १८१७ | ३१ | * |
| २९ | ५६१८ | कुण्डप्रदापक सटीक | महादेव राजगुरु | १६२६ | ८ | * |
| ३० | ४६३५ | कुण्डमण्डपसिद्धि सवृत्तिक | विट्ठल दीक्षित | १६वीं श. | ४२ | |
| ३१ | ४५२७ | " विवृति | " | १६वीं श. | २५ | लि. क.—रुद्रदत्त शुक्ल जम्बूसर |
| ३२ | ५६४४ | कुण्डरत्नटीका | विश्वनाथ श्रीपतिद्विवेदमुल | १८वीं श. | ८६ | |
| ३३ | ४१२८ | कुण्डार्क (मरीचिमालाटीकोपेत) | मू. शंकर भट्ट | १६४४ | ११ | लि. क.—वज्रवासो सिल्लु: |
| ३४ | ४६६७ | कुशकण्डिका | टी. रघुवीर दीक्षित | १६वीं श. | ६ | |
| ३५ | ४११५ | क्रियापद्धति | विश्वनाथ | १८६० | १०६ | |
| ३६ | ४६५१ | " | " | १८वीं श. | ७५ | जीर्ण प्रति |

| क्रमाङ्क | ग्रंथाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|-----------|-----------------------------|----------------------------------|----------|-------------|---------------------------------|
| ३७ | ४६६३ | क्रियापद्धति | देवयाज्ञिक प्रजापतिमुत्त | १७८२ | २६ | लि. क.-नन्दिकेश्वर |
| ३८ | ५७४१ | " | देवकीनन्दन जीवानन्दमुत्त | १६वीं श. | ११ | लि. क. राधाकिशन, मूंडोता ग्राम |
| ३९ | ५७२६ | ग्रहजपदानविधि | बृद्ध वशिष्ठ | १६१० | २१ | पत्र ८ से १६ तक अप्राप्त |
| ४० | ४४८० | ग्रहशान्ति | मोद्वराज | १६वीं श. | २२ | |
| ४१ | ४१८५ | ग्रहशान्तिप्रकारः (पद्धतिः) | हेरम्ब शिष्य | १६६३ | ८८ | |
| ४२ | ४१२५ | ग्रहशान्तिपद्धति | " | १६वीं श. | १-८२ | |
| ४३ | ५७६५ (१) | " | नारायणभट्ट रामेश्वरमुत्त | " | १६ | लि. क.-वामदेव |
| ४४ | ५०४४ | " | " | १७५१ | १३ | |
| ४५ | ४६१४ | मयापद्धति | वसुदेव दीक्षित | १८वीं श. | २२ | |
| ४६ | ५७१६ | " | " | १६वीं श. | ३१ | |
| ४७ | ४६३६ | गृह्यसूत्र | | १८वीं श. | ६३ | |
| ४८ | ४६६१ | गृह्यसूत्रपद्धति | | १६वीं श. | ८२-८८ | |
| ४९ | ५७६५ (२) | मोदानपद्धति | | १६वीं श. | ३ | लि. क.-व्रजवासीसिल्लु; काशी |
| ५० | ४१३० | घृततुलादान विधि | | १८६३ | ४ | लि. क.-भट्टराजा यज्ञदत्त, जयपुर |
| ५१ | ४५६० | जन्मदिवसकृत्यम् | | १८४० | ५ | |
| ५२ | ४६३२ | तर्पणविधि | | १६वीं श. | २ | |
| ५३ | ४६३४ | " | विविधपुराणोक्तसंग्रह | १८६५ | ६ | |
| ५४ | ५६८१ | तिलादिधेनुदानविधि | " | १६वीं श. | १४ | लि. क.-सदासुख शुक्ल |
| ५५ | ४६२७ | तीर्थयात्राविधि | भट्टोजिदीक्षितकृतत्रिस्यलोसेलुगत | " | २२ | |
| ५६ | ४६८० | तीर्थश्राद्धविधि | | १८७६ | ३ | |
| ५७ | ५०५१ | तुलादानविधि | | " | | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-------------------------------|-------------------------------------------------------------|----------|-------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ५८ | ५४५१ | तुलादानविधि | गणपति रावल हरिशंकरसुत | १९९० | ६ | लि. क.—माणिकराम भट्ट रचना १७१६ लि. क.—भट्ट शंकरदत्तजी, जयपुर |
| ५९ | ६६८६ | तुलापुरुषपद्धति | | १९वीं श. | ८ | |
| ६० | ४११२ | द्वादशलिंगीमण्डलदेवतापूजनविधि | | १९वीं श. | ७ | |
| ६१ | ४९७५ | दशकर्मपद्धति | | १७१८ | ३६ | |
| ६२ | ४१२० | दशरात्र | गणपति रावल हरिशंकरसुत | १९वीं | १०३ | लि. क.—भट्ट शंकरदत्तजी, जयपुर |
| ६३ | ६५७३ | दशहराकृत्य | | " | ४ | |
| ६४ | ६७१३ | नवग्रहजाप्यविधि | | १८३४ | ७ | |
| ६५ | ६७१४ | नवग्रहन्यास | | १८९३ | ७ | |
| ६६ | ४६३३ | नवाश्लेषि | आश्वलायनगृह्यसूत्रपरिशिष्ट शिवप्रसाद पुष्करवल्लीवास्तव्य | १९वीं श. | ४ | सवाई जयपुर |
| ६७ | ४९४० | नागबलिप्रयोग | | " | २१ | |
| ६८ | ५८६९ | नरदाहकर्तव्यता | | " | ५ | |
| ६९ | ४९३९ | नारायणबलि | | " | १० | |
| ७० | ४९८९ | नीलोद्वाह पद्धति | नीलकण्ठ शंकरभट्टात्मज " | १७९० | १९ | प्रयोगसारान्तर्गत जीर्णप्रति, लि. क.—नन्दिकेश्वर लि. क.—हरिप्रसाद शर्मा लि. क.—सम्पतराम शुक्ल, जयपुर राजाद्विजय प्रयाणविधि |
| ७१ | ५००२ | " | | १९वीं श. | १५ | |
| ७२ | ४१०६ | प्रतिष्ठाकर्म | | १८५२ | ४५ | |
| ७३ | ४१११ | प्रतिष्ठामयूख | | १८वीं श. | ३७ | |
| ७४ | ४९५७ | " | नीलकण्ठ शंकरभट्टात्मज " | १८८६ | ३० | |
| ७५ | ४९९२ | प्रयाणशान्ति | | १८८८ | ९ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-----------------------------|--------------------------|----------|-------------|--------------------------------------------------------------|
| ७६ | ५५६१ | प्रयोग | अनन्त भट्ट | १८४१ | १६० | यज्ञोपवीतविधि पत्र २७ से ५६ व १५५ से १५७ तक अप्राप्त |
| ७७ | ४०६३ | प्रयोगदीपिका | मंचनाचार्य | १६वीं श. | ६६ | आश्वलायन सूत्रोक्त |
| ७८ | ५५५४ | प्रयोगरत्न | नारायण रामेश्वरभट्टात्मज | १८४२ | २१४ | लि. क.-काशीनाथ, पुस्तकमिदं नारायणभट्टसूत्रोद्देवभट्टस्य । |
| ७९ | ५५७२ | प्रयोगरत्नाकर | " | १६वीं श. | ११२ | पत्र १, ३६, ४०, ७५, ९४ व ९५ वां अप्राप्त । |
| ८० | ६५६५ | प्राणप्रतिष्ठाविधि | | १८८१ | २ | लि. क. रामनारायण, सामरथाश्रम अपूर्ण । |
| ८१ | ६४११ | प्रायश्चित्तधेनुदानविधि | | १६वीं श. | ८ | लि. क.-करणशंकर जोशी |
| ८२ | ४६०४ | प्रायश्चित्तप्रयोग | | १८३६ | २ | लि. क.-श्रीशाराम ध्यास, मालपुरा |
| ८३ | ४६७७ | प्रासाददेश्यताप्रतिष्ठा | | १८१३ | २० | |
| ८४ | ४६४२ | प्रेतबलि | | १९वीं श. | १६ | लि. क.-ऋषीश्वर । |
| ८५ | ४६८६ | पशुबन्धप्रयोग | | १७६४ | ६ | लि. क.-गोविन्द शर्मा |
| ८६ | ५३३१ | पापघटदानविधि | | १६वीं श. | ८ | |
| ८७ | ४१७४ | पार्थिवपूजा | | " | ६ | |
| ८८ | ६६८४ | पार्थिवेश्वरचिन्तामणिपद्धति | | १८७३ | ७ | |
| ८९ | ४११४ | पार्थिवेश्वरपूजापद्धति | चन्द्र चूड | १६वीं श. | ७ | |
| ९० | ४२१२ | पार्वणश्राद्धविधि | | " | ११ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-------------------------------|------------------------|----------|-------------|----------------------------------------|
| ६१ | ६६७५ | पार्वणश्राद्धविधि | हलायुध | १६०३ | ६ | जीर्ण, खण्डित रामानुजसंप्रदायानुसार |
| ६२ | ६७२७ | पिण्डप्रमाण | | १८०५ | ७ | |
| ६३ | ४२११ | पितृकैकोद्दिष्टश्राद्ध प्रयोग | | १६वीं श. | ८ | |
| ६४ | ७८११ (४) | गुरुपूज्य (षोडशोपचार) | | १८वीं श. | ८१-८६ | |
| ६५ | ६५०६ | ब्राह्मणसर्वस्व | | १८०४ | १६६ | |
| ६६ | ६६३३ | भगवदारार्थनप्रकार | | १६वीं श. | ७ | |
| ६७ | ४६४१ | भूतबलि | | " | १५ | |
| ६८ | ४६६३ | महालक्ष्मीव्रतोद्यापनविधि | | " | १३ | |
| ६९ | ४२१० | मातृकैकोद्दिष्टप्रयोग | | " | ७ | |
| १०० | ४६४६ | मूर्तिप्रतिष्ठाविधि | | " | ५ | |
| १०१ | ७६६७ | यजमानपद्धति | गंगाधर रामचंद्रपाठकसुत | १८१० | १७ | * लि. क.-गिरिधारी |
| १०२ | ४६६२ | यजुर्गृह्य सूत्र | पारस्कर | १७६४ | ४८ | लि. क.-इच्छाराम व्यास |
| १०३ | ४६६६ | " | " | १८५६ | ४० | लि. क.-गोविन्दराम, आम्बेर |
| १०४ | ४६६६ | " (डोढकाण्ड) | " | १८वीं श. | २४ | अपूर्ण |
| १०५ | ७६०१ | यजुर्विधान | " | १७६८ | २५ | |
| १०६ | ६४०८ | यज्ञोपवीतविधि | " | १६वीं श. | ११ | |
| १०७ | ४६४२ | यात्राविधि | " | १८वीं श. | ३ | |
| १०८ | ५०६७ | योगपट्टविधि | " | १६वीं श. | १ | |
| १०९ | ४१२१ | योगिनीपूजनविधि | " | " | १६ | |
| ११० | ६६०२ | राधाकृष्णषोडशोपचारपूजा | " | " | ५ | |
| १११ | ५८८८ | रामोद्यापनपूजाविधि | भविष्योत्तरपुराणोक्त | १६०८ | ११ | |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि जातव्य | निधि नाम | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|-----------------------------|----------------------|----------|-------------|-------------------------------|
| ११२ | ७८११(१) | रात्रिसंध्याविधान आदि | मालजी त्यागलाभट्टसुत | १८वीं श. | ११८ | रचना १६६५, लि. क.—बालकृष्ण |
| ११३ | ४६६२ | रत्नपद्धति (श्रावचर्ममंजरी) | | १७१४ | ५७ | न्यासाध्वकर्म |
| ११४ | ४६०७ | रत्नाभितेककर्म | महानन्द पाठक | १६१३ | १४ | |
| ११५ | ४६२० | रत्नाभितेकपद्धति | कर्कचाय | १८१४ | १८ | लि. क.—जानकीलाल |
| ११६ | ६४२७ | सद्यकारिका | | १६४७ | १८ | लि. क.—सदासुख शुक्ल, बीकानेर |
| ११७ | ४६७६ | ध्यासपूजापद्धति | | १६७६ | १० | |
| ११८ | ५७६५(३) | श्रद्धाभिपनविधि | | १६वीं श. | ८८-६६ | |
| ११९ | ७६६६ | वास्तुशांति | | " | २६ | |
| १२० | ४६२४ | विद्यारत्नसमुच्चय | | " | २७ | |
| १२१ | ४४१७ | विनायकशांति | गणेशित | १८५८ | ६ | लि. क.—रामचन्द्र |
| १२२ | ७१४६ | विवाहचतुर्थीकर्म | | १६४३ | १७+१३=३० | लि. क.—सदाफूल |
| १२३ | ४८८८ | विवाहपद्धति | | १७२५ | ६ | |
| १२४ | ५७६५(४) | " | | १६वीं श. | ६६-११७ | |
| १२५ | ४५८२ | विवाहविधि (यजुर्वेदीय) | | १८६१ | १५ | लि. क.—रत्नेश्वर श्याम, जयपुर |
| १२६ | ७१४७ | " | | १६४३ | २३ | राजस्थानी में अर्थ सहित |
| १२७ | ४१८६ | वेदोक्तस्नानादिकर्म | | १६वीं श. | २२ | |
| १२८ | ४६४१ | वैतरण्याविधान | | १८४५ | ८ | |
| १२९ | ४६६१ | वैधव्यशान्ति | | १६वीं श. | ५ | लि. क.—चुन्नीलाल |
| १३० | ५३२० | श्राद्धप्रयोग | नारायण भट्ट | १८६५ | ८ | प्रयोगरत्नाकरगत |
| १३१ | ५५६५ | " | नारायण भट्ट | १६वीं श. | २५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------------|------------------------------------|----------|-------------|------------------------------------------|
| १३२ | ४५६५ | श्राद्धपद्धति (यजुर्वेदीय) | | १६वीं श. | २५ | |
| १३३ | ४६१५ | " | | १७६७ | ७ | लि. क.—शंकरदत्त |
| १३४ | ५५१५ | " (सांवत्सरिक) | | १६वीं श. | १६ | |
| १३५ | ५७२६ | " | | १६१५ | ७ | |
| १३६ | ५०५५ | श्राद्धविधि | | १८२७ | ३१ | लि. स्था.—सवाई जयपुर |
| १३७ | ७२६५ | श्राद्धविधिवृत्ति (कौमुदी) | रत्नेश्वरसूरि | १६वीं श. | १२५ | |
| १३८ | ५२५२ | श्राद्धविवेक | रुद्रधर | १६वीं श. | ५१ | २० वां पत्र अप्राप्त |
| १३९ | ४१८८ | श्रावणीविधि (ऋषिपूजन) | | १६वीं श. | ६१ | |
| १४० | ४२२१ | " | | १८७२ | २१ | लि. क.—कैसोराम, नगर बोली |
| १४१ | ७६६१ | श्रौताधानपद्धति | गणपति रावल | १६वीं श. | ३३ | |
| १४२ | ५६३७ | शान्तिकर्म | कमलाकर रामकृष्णसुत, नारायणपौत्र | " | १५८ | |
| १४३ | ४१२३ | शान्तिपद्धति | दुर्गाशंकर शुक्ल | १८वीं श. | ३० | |
| १४४ | ४८७२ | शान्तिविधान (पल्लीसरपतन) | गर्गोक्त | १८४४ | ३ | लि. क.—रेवादत्त |
| १४५ | ५१७० | शान्तिभाष्य | वशिष्ठोक्त | १८०६ | ६ | लि. क.—कैवलजी, जयपुर, माधवसिंह राज्ये |
| १४६ | ५५६४ | शान्तिविधि | " | १८वीं श. | ६८ | ३७ वां पत्र अप्राप्त । |
| १४७ | ४६५२ | शुक्लसूत्र | कात्यायन | १६वीं श. | ५ | |
| १४८ | ४५६६ | षट्पिण्डकर्म | | " | ७ | |
| १४९ | ५००८ | षष्ठीपूजा | | १८७० | ११ | लि. क.—उमाशंकर |
| १५० | ७६१३ | षोडशोपचारपूजा | | १८४६ | ६ | लि. क.—रणछोड़दास, गढ़- बदनोर । |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-----------------------------|--------------------------------------------------------------------------------|----------|-------------|--------------------------|
| १५१ | ४२०८ | स्त्रीकर्तृ कथाद्व प्रयोग | दानखण्डोक्त " युजुर्वेदीय " नारायणमुनि शठकोपमुनि भट्टोजिदीक्षित | १६१७ | ५ | लि. क.-नारायण शर्मा |
| १५२ | ४१६५ | स्वस्तिवाचन | | १६वीं श. | १३ | |
| १५३ | ५७१६ | " | | १७३६ | १० | |
| १५४ | ६६८१ | " | | १६वीं श. | ६ | |
| १५५ | ६६६२ | " | | १८६२ | ८ | |
| १५६ | ५२५५ | संध्या (यजुर्वेदीया) | | १६वीं श. | ११ | |
| १५७ | ५६६५ | संध्या टीका " | | १८६६ | १५ | लि. क.-मुरलीधर शरण |
| १५८ | ६६०० | संध्यापद्धति (सामवेदीया) | | १६वीं श. | ५ | |
| १५९ | ६५७२ | संध्याभाष्य | | १६वीं श. | ६ | |
| १६० | ७७७५ | संध्यामंत्रव्याख्या | | १६४२ | १६ | लि. क.-मगनराज जोशी |
| १६१ | ७६६५ | संध्या सटीका (यजुर्वेदीया) | हंसवतीविधानोक्त | १६०१ | ४ | लि. क.-रघुनाथाश्रम, काशी |
| १६२ | ४५८१ | संध्यासपद्धति | | १६०८ | ४ | लि. क.-वसुदेवराज, मथुरा |
| १६३ | ६६४८ | सपिण्डीकरणविधि | | १६वीं श. | ४० | |
| १६४ | ५७४० | सर्वतोभद्रमण्डलपूजाविधि | | " | ४ | |
| १६५ | ५७६५ (५) | सर्वदेवतास्थापनपूजाविधि | | " | ११७-१३१ | |
| १६६ | ४५६४ | सिद्धिचिन्तायकव्रतपद्धति | | " | ४ | |
| १६७ | ४६८५ | सूर्यव्रतविधि | | १८१२ | ४ | लि. क.-सदाशिव शुक्ल |
| १६८ | ४६३८ | हरतालिकाव्रतविधि | | १७२८ | ७ | लि. क.-म. सुर |
| १६९ | ५१८२ | हेमाद्रिप्रयोग | | १८वीं श. | १२ | |
| १७० | ४७०७ | हेमाद्रिविधि (स्नान संकल्प) | | १८४४ | ८ | |
| १७१ | ४५६८ | त्र्युचाकल्प (अर्घ्यदान) | | १६वीं श. | ६ | |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर-हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; ३-कर्मकाण्ड]

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|---------------------------|--------------------|----------|-------------|-----------------------------|
| १७२ | ७७८८ | त्र्युचाविधानम् | | १६वीं श. | ७ | अपूर्ण |
| १७३ | ७७७४ | त्र्यम्बकमंत्रविधि | | १८६३ | १६ | लि. क.-बालमुकुन्द व्यास |
| १७४ | ५०५८ | त्रिकालसंध्या (सामवेदीया) | | १६२३ | १३ | |
| १७५ | ५७६१ | " (यजुर्वेदीया) | | १६२५ | १२ | |
| १७६ | ६४२४ | " | | १८२५ | ८ | लि. क.-चैनराम मिश्र, भरतपुर |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मंदिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ४-तन्त्रमन्त्रादि]

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------------|-----------------------|----------|-------------|----------------------------------|
| १ | ५७८१ | अमरनाथपटल | भृङ्गीशसंहितान्तर्गत | १६वीं श. | २६ | एकादशपटलित, अमरनाथकी यात्राका फल |
| २ | ५२२७ | अष्टादशाक्षरमहामंत्रपद्धति | रुद्रयामलप्रोक्त | १८वीं श. | १७ | गोपालमंत्रपरक |
| ३ | ५७८३ | उच्छिष्टगणपतिचतुरङ्ग | | १६वीं श. | १५ | आदि में गणपतियंत्र है । |
| ४ | ४१५२ | उड्डीशकल्प | | १६२७ | ६४ | लि. क.—रामनारायणमिश्र |
| ५ | ५७६३ | उद्धारकोश | | १६वीं श. | २४ | लि.स्था.—बयाना |
| ६ | ५८२० | " | " | " | २ | |
| ७ | ४४५२ (५७) | श्रीषधिकल्प (चक्र) | सिद्धनागार्जुन | १८वीं श. | ११४-११६ | लि. क.—कुपराम |
| ८ | ५७६७ | कक्षपटो | पुण्यानन्दमुनीन्द्र | १८७७ | ५० | |
| ९ | ५६५० | कामकलाङ्गनाविलास | उड्डामरतंत्रोक्त | १६१६ | ३३ | लि. क.—गदाधर देवज्ञ, |
| १० | ५७६६ | कार्तवीर्यदीपकर्मरहस्य | | १६५१ | ५ | लि. स्था.—वाराणसी |
| ११ | ६६६२ | कार्तवीर्यनित्यदीपविधि | नन्दिकेश्वरपुराणोक्त | १६०३ | ५ | |
| १२ | ५२२८ | कालाग्निरुद्रपटलोपनिषत् | | १८५० | ७ | लि. स्था.—पुष्कर |
| १३ | ६७५१ | कालाग्निरुद्रोपनिषत् | | १६०६ | १० | लि. क.—रामदास |
| १४ | ५६१७ | कुलाचनदीपिका | जगदानंद महामहोपाध्याय | १६वीं श. | २४ | |
| १५ | ५६२३ | कुलार्णवतंत्र | सम्मोहनतंत्रगत | " | ७८ | |
| १६ | ५७६२ | " | | " | ८७ | |
| १७ | ४३२६ | कुलचरित | | १७६२ | १६ | * |
| १८ | ४८८६ | कौतुकचिंतामणि | प्रतापरुद्रदेव | १८०६ | ६८ | लि. क.—आशाराम ज्ञानी |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-----------------------------------|-----------------------------------------------|----------|-------------|------------------------------------------------|
| १६ | ६६३५ | कौलरहस्य (ज्ञातक) | तरुणीवीरेंद्र नरोत्तमारण्यमुनीन्द्र- शिष्य | १८८६ | १० | लि. क.-राममुख, जयपुर |
| २० | ७६६० | गणेशपूजा | | १८८१ | ४ | लि. क.-शिवनाथदयास, जयपुर |
| २१ | ६७३२ | गणपत्युपनिषत् | | २०वीं श. | ३ | |
| २२ | ६३४८ | गायत्रीपद्धति | रुद्रयामलोक्त | १८८७ | ३५ | द्वितीय पत्र अप्राप्त |
| २३ | ६७७३ | गायत्रीपंचांग | | १६०७ | २० | लि. क.-रामदास कवीरपंथी |
| २४ | ६२४७ | गंधोत्तमानिर्णय | गुरुसेवक (श्रीकाल) | १८वीं श. | २२ | * रचना-१७०२ |
| २५ | ५७१० | गुरुकीलकपटल | (गुप्तवतीरहस्यतंत्रोक्त) | १६वीं श. | २ | |
| २६ | ७८११ (२) | गौरीकल्प | | १८वीं श. | | |
| २७ | ५१६८ | घंटाकर्णकल्प | | १८वीं श. | | |
| २८ | ५७०२ | चण्डिकार्चनदीपिका | काशीनाथभट्ट जयराममुल | १६वीं श. | २० | आपडुडारणमंत्रयुक्त, अपूर्ण |
| २९ | ५८१४ | चंडीप्रयोगविधि | वाराणसीगर्भसंभव नागोजीभट्ट | १८६६ | २३ | लि. क.-वज्रवासी ज्योतिर्वित् लि. स्था.-काशी |
| ३० | ५८८६ | चंडीपाठप्रयोगविधि | | १६०० | २७ | लि. क.-दामोदरदास, सिडलपुर ग्रामवासी |
| ३१ | ७५०६ | चंडीस्तोत्रव्याख्या | नागोजीभट्ट | १६वीं श. | २३ | |
| ३२ | ४८६७ | तंत्रलीलावती | कर्णसिंह | १८११ | ६१ | |
| ३३ | ७७११ | तंत्रस्थहृदय (स्वोपज्ञदीकोपेत) | काशीनाथभट्ट अनन्तशिष्य | १८वीं श. | १६ | * तृतीयपटलांत |
| ३४ | ७६०८ | तुम्बादिबीजमंत्र | नागपुरवास्तव्य जयराममुल | " | १८ | * लि. क.-बालमुकुंद |
| | | | | १६वीं श. | १ | लि. क.-केशवदास |

| क्रमाङ्क | ग्रंथाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|-----------|--------------------------------------------|---------------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------|
| ३५ | ५७२२ | तुरीयोपस्थानविधि | | १६१५ | ५ | लि. क.-घनश्याम ब्राह्मण लि. स्था.-राजपुर, मेवाड़ |
| ३६ | ५१२६ | नवार्णन्यासविधि | | १६वीं श. | २ | |
| ३७ | ४६०० | नित्ययात्रा (षोडशयात्रा) | | " | ६ | |
| ३८ | ४६२६ | " | काशीखण्डोक्त बुद्धिराज | १८४७ | १४ | |
| ३९ | ५७६५ (२) | नित्यपारायण | | १६वीं श. | १-२० | |
| ४० | ५५१६ | नृसिंहमालामंत्र | | " | २० | |
| ४१ | ७६४४ | प्रत्यंगिरासूक्तमंत्र | | १६१२ | १६ | लि. क.-ब्रजवासी शिल्लू लि. स्था.-अलवर |
| ४२ | ४४५२ (८६) | प्रभातगायत्री तथा त्रिकाल-अस्तु-गायत्री | | १८वीं श. | १२८वीं | |
| ४३ | ५१२३ (५) | पंचदशीयंत्रविधान | | " | २७-२८ | * आदिके ११ पत्र कीटविद्ध । |
| ४४ | ७७०८ | परशुरामकल्पसूत्र | | १८वीं श. | ४८ | |
| ४५ | ५७५७ | पात्रस्थापनविधि | | १६वीं श. | ६ | |
| ४६ | ५६५४ | पुरश्चर्यार्णव | प्रतापशाहदेव | " | २४ | प्रथम तरङ्ग |
| ४७ | ५६५५ | " | " | " | २५२ | द्वितीयसे नवमतरङ्गपर्यन्त |
| ४८ | ५६५६ | " | " | " | ११७ | दशमैकादशद्वादशतरङ्ग रचनार्त्त सं० १८३१ |
| ४९ | ५६६१ | पुरश्चरणचंद्रिका | देवेंद्राश्रम | " | ११२ | |
| ५० | ५६३८ | पूजास्तन | सत्यानन्द | १६२८ | २१२ | |
| ५१ | ५७६५ (१) | " | " | १६वीं श. | १-६ | प्रथम मयूख |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|--------------------------------------|-----------------------------------------------------|----------|-------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ५२ | ५१६५ | पूर्णभिषेक षडास्नाय मन्त्रादि | | १८वीं श. | स्फुट पत्र | इन पत्रोंमें नृसिंहसुन्दरी महामः दशमहाविद्या, दशावतार दश-श्लोक, शिवावलि विधि नाभि-विद्योद्धार और तन्त्रोक्त अपूर्ण-हवनपद्धति लिखी हुई है। |
| ५३ | ६८७८ | ब्रह्मकल्प (कायाकल्प) | मन्त्रचिन्तामणिप्रोक्त विश्वसारोद्धारस्तोत्रोक्त | १६वीं श. | ६ | |
| ५४ | ५००४ | बटुकभैरवपद्धति | | १६वीं श. | २३ | |
| ५५ | ४१३५ | बटुकभैरवपूजापद्धति | | १६वीं श. | २७ | |
| ५६ | ६७६० | बालास्तोत्रादि | | १७२८ | १६-२४ | बालास्तोत्र, ईश्वरीस्तुतिपूजा, भारतीस्तोत्र, अन्नपूर्णस्तोत्र, श्रीवार्तिकसंस्कृतपादवर्चनाथस्तोत्र, परमानन्दस्तोत्र। |
| ५७ | ७०५६ | भुवनेश्वरीपद्धति (पञ्चाङ्ग) | रुद्रयामलतन्त्रांतर्गत भूतडाभरतन्त्रोक्त | १८वीं श. | ६६ | पत्र ६ से १५ अप्राप्त |
| ५८ | ५४२६ | भूत-भूतिनीसाधनविधि | | १६वीं श. | ७४ | प्रथमपत्र खंडित। |
| ५९ | ६४१६ | भूतशुद्धि | | " | ११ | |
| ६० | ७००३ | " | | " | ७ | लि. क-भट्ट दयादत्तशर्मा |
| ६१ | ४१८१ | भूतशुद्धि प्राणप्रतिष्ठा मातृकान्यास | शिवागमसारोक्त | " | २० | |
| ६२ | ५००५ | भैरवपुरश्चरणविधि | | " | ६ | लि. क.-रामचंद्र शुक्ल |
| ६३ | ६४४६ (१) | भौमपूजाप्रकार | | " | ३६-४० | |
| ६४ | ६७२३ | मंगलव्रतपूजाविधि | | १६१७ | ६ | लि. क.-विद्याधर |
| ६५ | ४४४४ | मन्त्रमहोदधि | महीधर | १८०३ | १४६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रंथाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|-----------|------------------------------|-------------------------------|----------|-------------|-------------------------------------------------------|
| ६६ | ५७४८ | मंत्रमहोदधि | महीधर | १८वीं श. | ८२ | रचना सं० १६४५ |
| ६७ | ५७४४ | " | " | १९वीं श. | ७४ | नौकाटीकासहित |
| ६८ | ६६५६ | " | " | १८७६ | २११ | लि. क.—शिवदत्त शर्मा सनाढ्य |
| ६९ | ४८५८ | मंत्रसिद्धितक्षण | भोतमन्त्रोक्त | १९वीं श. | ३ | माधोपुर काशी |
| ७० | ५०४९ | महामणपतिविधान (पञ्चाङ्ग) | खदयामलोक्त | " | ३२ | |
| ७१ | ६२६२ | महानिर्वाणतंत्र (पूर्वकाण्ड) | | १९४२ | १४९ | |
| ७२ | ५८३२ | महाविद्या | | १८वीं श. | ५५ | ४१वां पत्र अप्राप्त |
| ७३ | ४२९६ | महाविद्यादशश्लोकीविवरण | | १८९१ (?) | ४ | * लि. स्था.—सिरोही, लि. सं.—१८९१ प्रतीत होता है । |
| ७४ | ५३३६ | महाविद्यापारायणविधि | नृसिंह | १९०० | २७ | |
| ७५ | ५००० | मातृकानिघण्टु | टी. रामतीर्थ | १९वीं श. | ६ | |
| ७६ | ५६११ | मानसोत्तास सटीक | | १९१६ | ७७ | |
| ७७ | ६४१३ | मायावीजकल्प (ह्रींकारकल्प) | | १९७५ | ३ | लि. क.—भक्तिसुंदर, लि. स्था.—विक्रमपुर |
| ७८ | ५७८० | सार्तण्डमाहात्म्य | भृंगीशसंहितान्तर्गत | १९वीं श. | १५ | |
| ७९ | ४११८ | रामपद्धति (वेदोक्ता) | श्रीरामानुज | १८६७ | ८ | * लि. क.—विप्र जयराम |
| ८० | ४२३९ | " | " | १८वीं श. | २६ | |
| ८१ | ४२५५ | " | " | " | ३९ | |
| ८२ | ५८७८ | " | लक्ष्मीनिवास नृसिंहाश्रमशिष्य | १७७१ | १८ | लि. क.—पुरुषोत्तमदास वैष्णव, लि. स्था.—गलता, जयपुर |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|--------------------------|-------------------------------|----------|-------------|-------------------------------------------------|
| ८३ | ६७४२ | रामपूजापद्धति | श्रीरामोपाध्याय | १६५६ | १६१ | * पत्र १६०वां अप्राप्त |
| ८४ | ६८०४ | " | लक्ष्मीनिवास नृसिंहाश्रमशिष्य | १७९४ | २९ | |
| ८५ | ४११७ | राममंत्रपटल | | १९वीं श. | ७ | |
| ८६ | ७७१६ | राममंत्रविधिपटल | | " | १७ | लि.क.-वैष्णव रामप्रसाद वैष् |
| ८७ | ४१६६ | राममंत्रविधिपद्धतिपटल | | " | १५ | लि. क.-अमरदास, खेतड़ी |
| ८८ | ५७९२ | रामार्चनदर्पण | | १९१० | १२२ | |
| ८९ | ४१६७ | (त्रिपुरसुंदरीपूजाविधान) | ईश्वरतंत्रोक्त | १८२४ | ३१ | लि. क.-भवानीदत्त |
| ९० | ७०५४ | लक्ष्मीपञ्चाङ्ग | ब्रह्माण्ड पुराणोक्त | १८वीं श. | ४२ | अपूर्ण |
| ९१ | ५१२९ | वरदगणेशपञ्चाङ्ग | रुद्रयामलातर्गत | १९वीं श. | २६ | |
| ९२ | ४४५२ (५६) | वश्ययंत्रादि | | १८वीं श. | ११४वां | |
| ९३ | ५२३६ | वसुधारा (आयेंवसुधारा) | बौद्धकल्प | १९वीं श. | ७ | * |
| ९४ | ५२२५ | वसुधारा नाम धारणीकल्प | बौद्धकल्प | १८६९ | ६ | * |
| ९५ | ५८०९ | श्यामापद्धति | | १९वीं श. | ८ | अन्तर्में भैरवतंत्रोक्त जगन्मंगल कवच भी है। |
| ९६ | ५६२७ | श्यामार्चनमंत्ररी | लालभट्ट अनारगिरिशिष्य | १९१६ | ९३ | |
| ९७ | ५६०५ | श्यामारहस्य | पूर्णानन्दगिरि | १८वीं श. | १०४ | |
| ९८ | ६२२१ | " | " | " | २२ | पत्र २० से २२की लिखावट अर्वाचीन प्रतीत होती है। |
| ९९ | ५५६२ | " | " | " | ६९ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि जातव्य | चिप्पि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-------------------------------|-----------------------------|------------|-------------|-------------------------------------------|
| १०० | ५८०५ | श्रीचक्रार्चनविधि | पृथ्वीधरमिश्र शांङ्गिगोत्रज | १९वीं श. | ६ | परशुरामकल्पसूत्रानुसार |
| १०१ | ५७५५ | श्रीविद्यापटल | जगन्नाथसुत हरपुरनिवासी | १९वीं श. | १५ | मंत्रमहोदध्यानुसारिणी |
| १०२ | ७५०२ | श्रीविद्यार्चनपद्धति | दक्षिणामूर्तिसंस्थितोक्त | " | ४७ | |
| १०३ | ५४६८ | श्रीविद्यार्चनसंक्षेपपद्धतिः | मंत्रमहोदध्युक्त | " | ३७ | |
| १०४ | ५७६८ | श्रीविद्यामालामंत्र | ललितापरिशिष्टतंत्रोक्त | " | १० | |
| १०५ | ५६६५ | श्रीविद्यारत्नसूत्रदीपिका | विद्यारण्य | " | ४४ | |
| १०६ | ४६५८ | शतचण्डीविधान | | १८६६ | ५२ | लि. क.—सदाशिव शुक्ल |
| १०७ | ४६६८ | " " | | १९वीं श. | ११ | भट्टविश्वनाथस्य पुस्तकम् (अपूर्ण) |
| १०८ | ७१२६ | शतचंडी-सहस्रचंडी-प्रयोगपद्धति | | " | ५२ | |
| १०९ | ५६४१ | शरभार्चापारिजात | रामकृष्णदेवज्ञ नीलकण्ठवंशीय | १९२६ | १२२ | |
| ११० | ५६६७ | शिवताण्डवतंत्र | श्रापदेवसुत भवानीगर्भज | १९११ | ६४ | लि. क.—जीवणराम, द्वादश-पटलसेचतुदंशपटलान्त |
| १११ | ६४४४ | " " | दक्षिणामूर्तिप्रोक्त | १९वीं श. | २५ | |
| ११२ | ६४६६ | " " (रटीक) | " | १८४० | ४२ | लि. क.—गंगाधर |
| ११३ | ४४६६ | शिवपंचाक्षरीन्यासविधि | डी० नीलकण्ठ गोविंदसूरिसुत | १९वीं श. | ६ | * |
| ११४ | ६७३३ | शिवाम्बुक्ल्प | | " | १७ | |
| ११५ | ७७४१ (२) | स्फुटमंत्र | | १७वीं श. | १२-१३ | |
| ११६ | ५००६ | सर्वदेवप्रतिष्ठाविधि | | १८६१ | १५४ | लि. क. सदाशिव शुक्ल । |
| ११७ | ५५८५ | सांख्यायनतंत्र | | १९वीं श. | ५१ | पंचत्रिंशत्पटलान्त । |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|-------------------------|-----------------------------------------------------------------------------|----------|-------------|----------------------------|
| ११८ | ७७७३ | सिद्धसिद्धान्तपद्धति | गोरक्षनाथ | " | २६ | *रचना सं० १७३१ |
| ११९ | ४२०५ | सिंहसिद्धान्तसिंधु | गोस्वामिश्रीशिवानन्दभट्ट | १८२५ | ६०२ | लि. स्या. जयपुर |
| १२० | ७६६२ | सुमुखीविधान | रुद्रयामलोक्त | १७३४ | ३ | लि. क. गंगापुरी लि. स्या. |
| १२१ | ५६५८ | सौभाग्यरत्नाकर | श्रीविद्यानन्दनाथ (श्रीनिवास- भट्ट गोस्वामी) | १६२७ | २७२ | मंगलौर ग्राम हाडौती प्रदेश |
| १२२ | ६३७१ | हनुमत्पताकासिद्धि | रुद्रयामलोक्त | १८वीं श. | ४६ | अपूर्ण |
| १२३ | ५१३८ | त्रिकूटारहाय | रुद्रयामलोक्त | २०वीं श. | ६ | प्रथमपत्र अप्राप्त |
| १२४ | ६१२१ | " | रुद्रयामलोक्त | १७५० | ५६ | लि. क. सुखराम |
| १२५ | ५७७७ | त्रिपुराचर्ममंजरी | भट्टगदाधर(ज्ञानानन्दापर नामधेय विमर्शशिष्य शिवशंकरसुत अम्बागर्भसंभूत) | १६१६ | १ | प्रतिके कोण खण्डित है |
| १२६ | ५८१२ | " | " | १६वीं श. | २६४ | |
| १२७ | ५६५६ | त्रिपुरारहस्य | " | १६वीं श. | १०६ | |
| १२८ | ५६०० | त्रिपुरासारसमुच्चय | नागभट्ट | " | ५१ | लि. क. नानूराम ब्राह्मण |
| १२९ | ५८०६ | त्रिशतीनामार्थप्रकाशिका | शंकराचार्य | १६३४ | ८६ | लि. स्या. जयपुर |
| १३० | ५८२६ | ज्ञानार्णवतंत्र | | १६वीं श. | ११६ | ८१वां पत्र अप्राप्त |
| १३१ | ६६५६ | " | | १६वीं श. | ८६ | |

राजस्थान पुरातत्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ५ धर्मशास्त्र]

| क्रमांक | ग्रंथांक | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|----------|-------------------|------------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------------------------|
| १ | ४३७८ | अत्रिस्मृति | स्कन्दपुराणोक्त | १६वीं श. | ११ | |
| २ | ४५३४ | " | | १८४० | ४ | |
| ३ | ४६२७ | अथर्वणशांतिप्रयोग | | १८६३ | ७३ | लि. क. देवकृष्ण दाधीच लि. स्था. जयनगरमध्ये सीता- रामजीका मन्दिर |
| ४ | ४५८६ | आचारदीप | नागदेव उपाध्याय | १८वीं श. | ६५ | |
| ५ | ४६१६ | " | " | " | ८८ | ज्योतिर्विक्तेवत्तरामजीकस्य पुस्तकमिदम् |
| ६ | ४६४३ | " | " | १६वीं श. | ६३ | पत्र ५८, ५९ अप्राप्त |
| ७ | ६५५६ | आचारप्रदीप | " | १६१५ | ४० | लि. क. रामनारायण मिश्र दाधीच |
| ८ | ५२२६ | आचारप्रदीप | कमलाकर कूर्परग्रामवासी | १७६० | ६२ | पत्र १ से ३ तथा ५४, ५५ वै अप्राप्त । लि. क. किशोरदास |
| ९ | ४३८२ | आचारसमूह | नीलकण्ठभट्ट शंकरसुत | १८वीं श. | ८४ | लि. स्था. सागवाटकपुर ७४वां पत्र अप्राप्त |
| १० | ६५१३ | " | " | १८३८ | ७२ | |
| ११ | ४५२६ | आशौचविशच्छ्लोकी | | १६वीं श. | ५ | |
| १२ | ५२५८ | " | | " | २३ | |
| १३ | ४५३० | आशौचनिर्णय | श्री भट्टाचार्य ? | १६७० | ६ | लि. क. शीवजी केशवसुत |
| १४ | ४५३१ | " वृत्ति | | १८वीं श. | १६ | त्रिंशच्छ्लोकी व्याख्या |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|---------------------------------------|--------------------------------------------|----------|-------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| १५ | ४११३ | आशौचदशक सभाष्य | मू. विज्ञानेश्वर, टी. हरिहर | १८४२ | ११ | * |
| १६ | ७७६१ | " | दी. भट्टाचार्य | १६वीं श. | १० | |
| १७ | ४६०२ | आशौचसंग्रह सटीक (त्रिशच्छ्लोकी भाष्य) | | १६वीं श. | ३७ | |
| १८ | ४६०३ | " | | " | ६ | शिवनन्दनजीलिखापित, जयपुर |
| १९ | ६२२८ | " | | १८६६ | १६ | लि. क. मोरेस्वर |
| २० | ५२२० | उत्सवप्रतान | पुरुषोत्तम | १८वीं श. | ३८ | लि. क. दयाराम, जयनगर |
| २१ | ४५५६ | कालनिर्णयदीपिका | श्रीरामचन्द्राचार्य गोपालगुरुशिष्य | १८१३ | २० | लि. क. गोविंदराम महुवांकर |
| २२ | ४६७१ | " | " | १८११ | ३० | दोडा मध्ये |
| २३ | ६६६५ | कालनिर्णयप्रकाश | रामचन्द्रभट्ट विठ्ठलभट्टसुनु | १८६१ | १४१ | लि. क. अनिरुद्ध प्रन्नोरा, |
| २४ | ४३५१ | कालनिर्णयसिद्धांत सटीक | बालकृष्णभट्टपौत्र म. रघुराम, टी. महादेव | १७४० | १४७ | प्रति अपूर्ण । पत्र ४७, ८१ से दहतक अप्राप्त लि. क. हरिराम हलवद्रवासी रचना सं. १७०६, १० स्थान भुजपुर । ५८वां पत्र अप्राप्त । |
| २५ | ६२४६ | कृत्यरत्नावली | रामचन्द्रभट्ट, विठ्ठलभट्टसुनु | १८वीं श. | ६२ | |
| २६ | ६३८० | गोदानत्रिधिः | | " | १६ | |
| २७ | ६५८७ | चैत्रशुक्लप्रतिपन्निर्णय | जयसिंहकल्पद्रुमान्तर्गत | १६वीं श. | ८ | लि. क. गोपीनाथ । |
| २८ | ६६२४ | जयसिंहकल्पद्रुम | रत्नाकर पुण्डरीक | १८वीं श. | ७५५ | |

॥ तिथि-यः ॥

॥ ३७ ॥

॥ संवत् १७३२ वर्षना प्रपद सुदि १२ चतुर्वाशरे ॥ श्री रामायनमः ॥ श्री गे वि
दायनमः ॥ श्री रामो जयति ॥ सुममस्तु ॥ अतुस्तु नमः ॥ गंगा येन मः
असंकेतो यश्चानेनो रकर्मणि मेयुने ॥ जाते भरणे नेवत ॥ लानयापि नीतिः ॥ १ ॥ मन्वादा
नयुगा दो च ग्रहणे च इत्येतो ॥ व्यतीपात्रे वेद्यतो च न ज्ञातव्यापि नीतिः ॥ २ ॥ रं क्रुदं नि
संकीर्तो विवाहाः स्वयं द्रष्टु ॥ स्नान दानादिकं कुर्यात् निश्चिकाम्प्यतयु ॥ ३ ॥
दीपो सवज्जुतो ग्राहनादुर्गन्धं आवर्णी ॥ एकादशी अगस्त्यध्वजं संस्तुते मदा ॥ ४ ॥ अथ
मध्यगवां गच्छे विवाहे यत्संजय ॥ राहोदरी न भोज्यं दुस्तकं न विधीयते ॥ ५ ॥ विवाहे अ
नवंधे च ब्रूओपकरणे तथा ॥ दुर्गा होमं सुते जाते अग्निर्वक्रे न दूष्यति ॥ ६ ॥
॥ निबंधोऽसंध्या क्रान्तेति क्रान्ते स्नात्वा च भयया विधौ जपेदक्षयते देवी ततः ॥ ७ ॥
ध्यां सभा चरेत् ॥ यमः ॥ आणयां स च यत्रातः संगं वेद्विगुणं वरता ॥ मध्याह्ने त्रिगुणं
अभय राहो चेतुर्गुणं ॥ सायाह्ने पंचगुणं संध्याति के मल भवेत् ॥ रात्रिबंधो ॥

च ४५

॥ राम ॥

३७

तिथिनिर्णय

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-----------------------------------------|---------------------------------------------|----------|-------------|-------------------------------------------------|
| २९ | ६९९३ | जयसिंहकल्पद्रुम | रत्नाकर पुण्डरीक | १९वीं श. | ४४१ | अपूर्ण, त्रुटित |
| ३० | ६६५८ | जातिविवेक | विश्वम्भरीयवास्तु शास्त्रान्तर्गत | १९०२ | २० | विविध कर्मकार जातियोंका वर्णन |
| ३१ | ७०४१ | जीवत्पितृक कर्त्तव्यनिर्णय | रामकृष्णभट्ट, नारायणसूनु, रामेश्वर पौत्र | १७४० | २० | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ३२ | ४१२९ | तिथिनिर्णय (तिथि दीधिति) | अनन्तदेव | १७५७ | ४८ | * स्मृतिकौस्तुभान्तर्गत |
| ३३ | ४६१८(१) | " | भट्टोजी दीक्षित | १८वीं श. | २७ | |
| ३४ | ४६०१ | " | गंगाराम भट्ट | १८३४ | १२ | लि. क. वीरदेव संबन्ध (त्) नेपाले ८३४ |
| ३५ | ७५९५ | " | शिवानन्द भट्ट | १७३२ | ३७ | कर्त्तक जीवनकालमें लिखित प्रति ज्ञात होती है |
| ३६ | ४५३८ | दत्तकदीधिति | अनन्तदेव | १८वीं श. | १४ | स्मृतिकौस्तुभान्तर्गत |
| ३७ | ४९२९ | दानचन्द्रिका | | १८६८ | ६८ | लि. क. सदासुख शुक्ल |
| ३८ | ७५९५ | दानधर्म प्रकरण | भविष्योत्तरपुराणोक्त | १९वीं श. | ३०१ | प्राद्य १५ पत्र अप्राप्त |
| ३९ | ४९४७ | " खण्ड | हेमाद्रि | १७६६ | ३३९ | चतुर्वर्गचिन्तामणिगत लि. क. भगवतीदास |
| ४० | ४९८४ | दानवाक्यसमुच्चय | पुरुषोत्तम | १६१९ | ६७ | * लि. क. दामनशुक्ल |
| ४१ | ४५४० | देवालयगृहादिवास्तुदीधिति | अनन्तदेव | १८वीं श. | ४२ | |
| ४२ | ५११३ | धर्मप्रवृत्ति | रामेश्वरभट्ट, सूनु श्रीनारायणभट्ट | १८७९ | १७५ | लि. क. वैष्णव रामप्रसाद लक्षकपुर |
| ४३ | ४६०५ | धानतपद्धति (द्राक्षयादिक्रत- निर्णय) | | १९वीं श. | ९ | * |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-------------------------|---------------------------------------|----------|-------------|---------------------------------------|
| ४४ | ६६५७ | निर्णयसिधु | कमलाकरभट्ट | १८८२ | ३५० | लि. क. हरिदास वैष्णव, जयपुर |
| ४५ | ४५५३३ | निर्णयामृत | गोपीनारायणश्रीसूर्यसेन महीमहेन्द्र | १५३५ | २३० | लि. क. पाठक वानरसुत पाठक परमात्मा |
| ४६ | ४५८३ | " | बलालदेव | १६७० | १८० | (अपूर्ण) |
| ४७ | ५१६४ | नीतिमयूख | नीलकण्ठभट्ट शङ्करसूनु | १८वीं श. | ५० | |
| ४८ | ५७०६ | प्रायश्चित्तकदम्बनिर्णय | गोपाल न्यायपंचानन भट्टाचार्य | १६०७ | ५३ | |
| ४९ | ४१८४ | प्रायश्चित्तमयूख | नीलकण्ठ | १६वीं श. | १०६ | * पत्र ७, ६१, ६२, ७० से ७३ |
| ५० | ६४५४ | पाराशरस्मृति सचिवृतिक | दिवृतिकार भाधव | १५वीं श. | १५६ | तथा अन्त्य पत्र अप्राप्त |
| ५१ | ४६२६ | " | " | १८३३ | ५०८ | ६६वाँ पत्र अप्राप्त |
| ५२ | ७७७९ | " | " | १७७१ | १८६ | लि. क.—रामनारायण मिश्र शाकंभरीदासी |
| ५३ | ४५६३ | " | " | १७वीं श. | १६० | अपूर्ण |
| ५४ | ४४४६ | मदनपारिजात | भट्ट विश्वेश्वर कौशिक (?) | १७८६ | ३८४ | * लि. क.—वीरेश्वर शुक्ल |
| ५५ | ६५७५ | मलमासनिर्णयादि | | १६वीं श. | ६ | |
| ५६ | ६००८ | महादानपद्धतिः | रूपनारायण | १५७२ | १४० | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ५७ | ४६६० | महाव्रत | | १८वीं श. | १२ | लि. क.—ऋषीश्वर |
| ५८ | ६१२६ (१) | महाव्रतकथा | | १५४३ | १३ | जीर्ण, फटी हुई |
| ५९ | ४४४४ | महाव्रतभाष्य | गोविन्दपण्डित | १७४१ | ३४ | * |
| ६० | ४६८२ | महाशान्ति | नीलकण्ठ | १८६६ | ६ | लि. क.—सदाशुख |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-----------------------------------------------|-------------------------------------------|----------|-------------|--------------------------------------------------------------------------------------|
| ६१ | ६६८५ | माधवोयकालनिर्णयकारिका | माधव | १८वीं श. | १२ | * |
| ६२ | ४५१६ | मानवधर्मशास्त्रसंहिता | भृगुप्रोक्त | १८वीं श. | १३१ | |
| ६३ | ४५३७ | यमप्रणीतधर्मशास्त्र | | १८वीं श. | ४ | |
| ६४ | ४३८३ | याज्ञवल्क्यस्मृतिटीका (मिताक्षरा-प्रथमाध्याय) | विज्ञानेश्वर श्रीपद्मनाभ भट्टोपाध्यायान्न | १५७८ | ६२ | १ से ६ पत्र अप्राप्त |
| ६५ | ४३८४ | " द्वितीयाध्याय | " | " | १६३ | ४४ से ५४ पत्र अप्राप्त |
| ६६ | ४६४५ | " तृतीयाध्याय | " | १८वीं श. | ४० | |
| ६७ | ४३८५ | " तृतीयाध्याय | " | १८वीं श. | १४१ | आदितस्तृतीयाध्यायान्त |
| ६८ | ५१६३ | " प्रथमाध्याय | " | १८११ | १४३ | |
| ६९ | ६४५१ | " द्वितीयाध्याय | " | १७वीं श. | ७५ | |
| ७० | ६४५२ | " तृतीयाध्याय | " | " | १३२ | 'शुक्लविश्वेश्वरस्येदंपुस्तकम्' |
| ७१ | ६४५३ | " | " | " | १७६ | " |
| ७२ | ६५४६ | " | " | १८६६ | ८८ | १५०वाँ पत्र अप्राप्त लि. क.-वैकुण्ठनाथ, व्यवहार- खण्ड मात्र |
| ७३ | ४६१६ | " मूल | अनन्तदेव | १७८२ | ४७ | लि. क. उद्धवजी नागोर |
| ७४ | ४५४१ | रजोदर्शनजातकशांतिदीधिति | | १६वीं श. | ६७ | स्मृतिकौस्तुभान्तर्गत प्रथम पत्र तथा पृ. ६७ से आगे पत्र अप्राप्त, अपूर्ण प्रति |
| ७५ | ४६३८ | रजोदर्शनशांति | गोविन्दपण्डित | १८६५ | ७ | लि. क. सदासुखशुक्ल, जयपुर |
| ७६ | ४३५० | रत्नसंग्रह | | १७१२ | ५० | * |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|---------------------------|----------------------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ७७ | ६५०७ | लघुपाराशरस्मृति | पराशरमुनि | १८वीं श. | ३३ | तृतीयाध्यायपर्यन्त |
| ७८ | ४५४२ | व्यासस्मृतिः | शङ्कर नीलकण्ठ (तनय) | १८वीं श. | ५ | लि. क. गङ्गाराम । लि. स्था. जयपुर । पत्र ५२ व ३८६ से ३९४ तक अप्राप्त । प्रति में दो तरहके पत्र है । ५१४ से ५७० तकके पत्र दूसरी प्रकारके व छोटे हैं तथा इनमें पत्र सं. १७० तक स्वतन्त्र संख्या भी लगी है । |
| ७९ | ६६१५ | " " गृहस्थालिकम् | | " | ११ | |
| ८० | ४९२६ | व्रतार्क | | १८९२ | ५८३ | |
| ८१ | ५८२१ | वापिककुल्य | कविकान्तसरस्वती आदित्याचार्य-सुत | १९वीं श. | ५५२ | पत्र ४७, ४८, १८६ व २२० से २२३ तक अप्राप्त |
| ८२ | ४५८४ | विश्वामर्श | कविकान्तसरस्वती आदित्याचार्य-सुत | १६७५ | २० | ११वां पत्र अप्राप्त |
| ८३ | ६७१९ | विश्वेश्वरस्मृति | कैवल्येन्द्र सरस्वतीशिष्य | १८वीं श. | ७ | |
| ८४ | ४५३६ | वृद्धशातातपधर्मशास्त्र | | १८वीं श. | ३ | |
| ८५ | ६६१५ | वैष्णवचर्चा | श्रीनिवासाचार्य | १६वीं श. | ४ | |
| ८६ | ६१६७ | वैष्णवधर्मसत्त्वचिन्तामणि | | १८वीं श. | ४ | |
| ८७ | ६२६६ | वैष्णवोपयोगीनिर्णय | | १९०५ | २० | रामार्चनचंद्रिकादिके आधार पर संगृहीत |
| ८८ | ४५३३ | शङ्खस्मृति (शांखास्त्र) | शंखप्रोवत | १८४१ | ११ | * |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-------------------------------|--------------------------------------|----------|-------------|----------------------------------------------|
| ८६ | ४४४७ | शांखायनसूत्रभाष्य | वरदत्तमुत्त ? | १६०६ | १५४ | * कीटविद्ध । ठाकुर नाथूरामस्य- पुस्तकम् । |
| ८७ | ४६४८ | शान्तिमयूख | नीलकंठ | १७७६ | १५८ | पत्र ४६ से ५० व ११वां अप्राप्त |
| ८८ | ६०७५ | " | " | १८७७ | ८७ | लि. क. सदासुखशुक्ल, जयनगर |
| ८९ | ४६३१ | शांतिसार | दिनकरभट्ट रामकृष्णात्मज | १८८७ | ६१ | लि. क. सदासुखशुक्ल, जयनगर |
| ९० | ४३८० | " | " | १६वीं श. | १२३ | जयसिंहकल्पद्रुमोक्त |
| ९१ | ५००३ | शिवरात्रिपूजनविधि | " | १६वीं श. | १५ | लि. क. रामभदत सारस्वत |
| ९२ | ५१४२ | शुद्धिविवेक | रुद्रधरलक्ष्मीधरात्मज हुल- धरानुज | १७६६ | १४ | लि. क. सदासुखशुक्ल, जयपुर |
| ९३ | ४६३४ | शूद्रधर्मकमलाकर | भट्ट कमलाकर | १८६० | ६५ | पत्र ६ से १५, २३, २४ तथा |
| ९४ | ५५७८ | स्मार्तनिष्कृतिपद्धति | दिवकर भट्ट | १७०६शक | ७१ | ५२ से ६२ तथा ८७वां पत्र अप्राप्त |
| ९५ | ४६६८ | स्मृत्यान्वित (स्मृतिसमुच्चय) | अनन्तदेव | १७५८ | २४ | लि. क. सखारामभट्ट उल्लप नामक भाई भट्ट सनु |
| ९६ | ४५३६ | स्मृतिकौस्तुभ-संस्कारदीधिति | अनन्तदेव | १८वीं | ६७ | लि. क. ठा. लीलाधर |
| १०० | ४६१७ | स्मृतिसार | याज्ञिकदीक्षित | १८१२ | २२ | लि. स्या. कोटा |
| १०१ | ४६३६ | " | " | १७६७ | २० | लि. क. तिवारी शिवजीराम |
| १०२ | ६०६३ | संस्कारकौस्तुभ | अनन्तदेव | १८वीं | १३५ | दायमी, लि. स्या. आमेर |
| | | | | | | पत्र ३४, ३५, ३६ अप्राप्त |
| | | | | | | लि. लट्टू गदाधरमुत्त जयकृष्ण |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|---------------------|-----------------------------------------|----------|-------------|-------------------------------------------------------------------------------------|
| १०३ | ७०४४ | संस्कारप्रयोगसंग्रह | संवर्त्तच्छ्रुषिप्रोक्त श्रीज्ञलपाणि | १८वीं श. | ८१ | अपूर्ण |
| १०४ | ७०४५ | संस्कारपद्धतिसंग्रह | | " | २५ | |
| १०५ | ५२५३ | संग्रहश्लोकाः | | १६२३ | २१ | |
| १०६ | ४५३५ | संवर्त्तस्मृति | | १८४० | ८ | |
| १०७ | ४६७६ | सार्पिण्ड्यविवेक | | १७१६ | ५ | लि. क. श्रीरत्नाकर भट्टात्मज भट्ट शंकर । लि. स्था. काशी ५१वां पत्र अप्राप्त । |
| १०८ | ५५४६ | हारीतस्मृति | हारीतच्छ्रुषिप्रोक्त | १८१० | ६८ | लि. क. आशानन्द व्यास |
| १०९ | ४५८६ | हेमाद्रिकालनिर्णय | भट्टोजीदीक्षित | १८वीं श. | ४५ | लि. क. नाथूराम भालूक |
| ११० | ७७७० | त्रिशच्छलोकी भाष्य | | १८८४ | ३१ | |
| १११ | ५३४२ | त्रिशच्छलोकी सटीक | | १८५४ | १८ | |
| ११२ | ४६३५ | " | | १८६६ | १७ | लि. क. सम्पतराम |
| ११३ | ६६०३ | ज्ञानभास्कर | | १६वीं श. | १३८ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|--------------------------|------------------------|----------|-------------|------------------------------------------------------|
| १ | ६६२८ | श्रक्षयतीयाकथा | पद्मपुराणोक्त | १६३१ | २ | लि. क. देवकुण दाधीच पुरो- हित चक्षुपुरे (चाकसू ?) |
| २ | ४४६१ | अगस्त्यकथा | पद्मपुराणोत्तरखण्डोक्त | १६वीं श. | ८ | लि. क. रामचन्द्र |
| ३ | ४६६४ | " (अर्घ्यदानविधिः) | भविष्योत्तरपुराणगत | १६वीं श. | ८ | लि. क. केसोराम कायकुब्ज |
| ४ | ६६७३ | " | " | १८३१ | ८ | ब्राह्मण नगर बोलो |
| ५ | ४२२० | अगस्त्यार्घ्यपूजाकथा | " | १८१४ | ८ | |
| ६ | ५३७६ (१४) | अनन्तनाथकथा | गोतमप्रोक्त | १८वीं श. | १६६ से २०२ | |
| ७ | ४१२२ | अनन्तशक्तकथा | भविष्योत्तरपुराणगत | १६वीं श. | १० | |
| ८ | ६६७० | " | " | १८३२ | ८ | |
| ९ | ६६५४ | अर्जुनमाहात्म्य | स्कन्दपुराणोक्त | १६०५ | १३१ | |
| १० | ६८११ | इतिहाससमुच्चय | " | १६४३ | ४६ | लि. स्था.-उदयपुर |
| ११ | ४१६० | एकलिंगमाहात्म्य | वायुपुराणोक्त | १६१३ | १०४ | अर्थ राजस्थानीमें है |
| १२ | ४०४४ | एकादशीमाहात्म्यकथा सार्थ | विविधपुराणसंकलित | १८१३ | २८ | लि. क. रामचन्द्र ग्राम कांगणी मेवाड़देश |
| १३ | ५५५२ | एकादशीकथासंग्रह | " | १६०८ | ६१ | लि. क. यज्ञेश्वरदेव, आद्य ४ पत्र अप्राप्त |
| १४ | ६४०६ | " (अपूर्ण) | " | १६वीं श. | १६ | भाद्रपद से फाल्गुन कु. एका- दशी कथापर्यन्त |
| १५ | ६७२६ | ऋषिपञ्चमीकथा | ब्रह्माण्डपुराणोक्त | १८१६ | ७ | |
| १६ | ६६६६ | ऋषिपञ्चमीव्रतोद्यापन | भविष्योत्तरपुराणगत | १६वीं श. | ७ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------------|--------------------------|----------|-------------|----------------------------------------------|
| १७ | ६५६६ | कमलैकादशीमाहात्म्य | ब्रह्माण्डपुराणोक्त | १६वीं श. | ४ | कामदा एकादशी पुरुषोत्तममास की एकादशी होती है |
| १८ | ६७०४ | कामदैकादशीकथा | भविष्योत्तरपुराणोक्त | " | ४ | 'रमा' एकादशी |
| १९ | ५४४४ | कार्तिककृष्णैकादशीमाहात्म्य | ब्रह्मवैवर्तपुराणोक्त | १८४५ | ८ | लि. क. घनश्याम |
| २० | ४०९७ | कार्तिकमाहात्म्य | स्कन्दपुराणोक्त | १६७७ | ४७ | लि. क. गोविन्दव्यास गुर्जरगौड़ |
| २१ | ४१०७ | " | पद्मपुराणोक्त | १८५९ | ४५ | अजयपुर |
| २२ | ४२०९ | " | " | १८५१ | ५१ | लि. क. नन्दभाट्ट विद्यार्थी |
| २३ | ४५५४ | " (एकादशी कथा संग्रह) | मत्स्याद्यनेकपुराणोद्धृत | १८६१ | ७१ | लि. क. गंगाविष्णु कान्यकुब्ज, बौली नगर |
| २४ | ६५४८ | " | पद्मपुराणोक्तपुराणोक्त | १६वीं श. | ३८ | २०वां पत्र अप्राप्त |
| २५ | ६५९७ | " | " | " | ५१ | लि. क. रत्नेश्वरव्यास, जयपुर |
| २६ | ६६०७ | " | ब्रह्मनारदीयपुराणोक्त | १८७९ | ५७ | |
| २७ | ६६०८ | " | पद्मपुराणोक्त | १६वीं श. | २२ | |
| २८ | ६५७८ | कार्तिकशुक्लानवमीमाहात्म्य | " | १६वीं श. | ६ | अक्षयनवमीमाहात्म्य |
| २९ | ४४४१ | कूर्मपुराण | वेदव्यास | १८४८ | २०० | १९५वां पत्र अप्राप्त |
| ३० | ४४४३ | केदारखण्ड | स्कन्दपुराणोक्त | १७९९ | ९७ | लि. क. मोतीराम |
| ३१ | ४६०१ | गङ्गासाहात्म्य | " | १६वीं श. | ७ | शिवप्रकरण जागेश्वरस्यपुस्तकम् |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|------------------------------|--------------------------------|----------|-------------|-------------------------------------------|
| ३१ | ४४६० | गणेशचतुर्थीकथा | स्कन्द० | १६०४ | ५ | लि. क. नन्दरामव्यास |
| ३२ | ४२५४ | गयामाहात्म्य | वायुपुराणोक्त | १७४१ | २८ | लि. क. नृसिंह भट्ट तर्ककेशरी |
| ३३ | ४५५५ | गरुडपुराण | वेदव्यास | १६वीं श. | ८१ | प्रेतमञ्जरी |
| ३४ | ६६०६ | गरुडपुराणसारोद्धार | " | " | ६६ | , |
| ३५ | ६४१० | " | " | १६१६ | ३६ | |
| ३६ | ६६१० | गोपाष्टमीकथा | भविष्योत्तर० | १६वीं श. | १ | |
| ३७ | ६६८५ | गोत्रिवात्रव्रतकथा | स्कन्द० | १८६६ | ४ | |
| ३८ | ५५०६ | चातुर्मासमाहात्म्य (अपूर्ण) | " | १६वीं श. | ३३ | |
| ३९ | ६६१८ | चान्द्रायणव्रतकथा | भविष्योत्तर० | " | २ | |
| ४० | ६७०८ | ज्येष्ठकृष्णैकादशीमाहात्म्य | ब्रह्माण्ड० | " | २ | |
| ४१ | ४४८६ | जन्माष्टमीकथा | भविष्योत्तर० | १८५७ | ७ | लि. क. व्यास रतनेश्वर, श्रीभिनमालमध्ये |
| ४२ | ५४४२ | जन्माष्टमीजन्यतीर्थावर्णन | " | १६०७ | ६ | लि. क. रामनारायण, हरि- चलभजीभट्टस्य |
| ४३ | ६५८० | जन्माष्टमीव्रतकथा | " | १८६४ | ४ | लि. क. देवकृष्णभट्ट |
| ४४ | ५६६१ | तत्त्वदीपभागवतम् (पूर्वखण्ड) | वल्लभ (विष्णुस्वामिसत्तवर्ती) | १७६४ | ११० | नवानगरे लिखितम् |
| ४५ | ५६६२ | " (उत्तरखण्ड) | " | " | ८६ | " |
| ४६ | ७११६ | तुलसीमाहात्म्य | पद्य० स्कन्द० विष्णुधर्मोत्तर० | १६वीं श. | ३१ | |
| ४७ | ६७२२ | तुलसीविवाहमाहिमा | विष्णुपुराणोक्त | १६वीं श. | ६ | |
| ४८ | ६६२६ | द्वादशीमाहात्म्य | गरुड० | १७७६ | ५ | |
| ४९ | ६६१२ | दशदिनव्रतकथा | स्कन्द० | १६वीं श. | ४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------------------|----------------------------|------------------|-------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ५० | ६४८६ | दानभागवत | कुवेरानन्दवर्णि विष्णु० | १६वीं श. १८५३ | ११२ | लि. क. गङ्गाविष्णु कान्यकुब्ज |
| ५१ | ४२१८ | देवप्रबोधिनीएकादशीव्रतकथा | | | १२ | बौलीनगर (जयपुर राज्यान्तर्गत) |
| ५२ | ५२०५ (१५) | धरणीशेषसंवाद | ब्रह्माण्ड० | १८वीं श. १८६५ | ६४-६६ | गुटका-जिसमें रामगीता, राम- |
| ५३ | ६८३६ | नासिकेतपुराण | | | ६२ | स्तोत्र, कर्मविपाक व पाण्डवगीता |
| ५४ | ५६५२ | नित्यविहारलीला | लक्ष्मीधरपुत्र रामविष्णु ? | १६४५ | १०१ | भी हैं माथुरा राजद्वारकादास कारायित टिप्पणी |
| ५५ | ६७०६ | निर्जलैकादशीमाहात्म्य | ब्रह्मवैवर्ते० | १८६१ | ४ | |
| ५६ | ४४८७ | नृसिंहचतुर्दशीव्रतकथा | पद्मपुराणोक्त | १६वीं श. १८७७ | ७ | |
| ५७ | ६६०१ | " | " | | | |
| ५८ | ६६७१ | प्रदोषव्रतकथा | स्कन्द० | २०वीं श. १८२३ | ४ | लि. क. रामलाल |
| ५९ | ४५४८ | पञ्चपर्वमाहात्म्य | गरुड० वराह० नारदीय० | १८२३ | ११ | लि. क. घनश्याम ब्राह्मण पाराशर |
| ६० | ५५४२ | पद्मपुराण (पातालखण्ड) | स्कन्द० | १८३८ | ४३ | १४वाँ पत्र अप्राप्त |
| ६१ | ६५६० | पुरुषोत्तमसमासमाहात्म्य | स्कन्द० | १८६६ | ४१ | लि. क. रामनारायण मिश्र |
| ६२ | ६८०७ | पुरुषोत्तमसहस्रनाम टीका (अपूर्ण) | शङ्कराचार्य | १६वीं श. " | ४३ | विष्णुसहस्रनाम |
| ६३ | ७७७७ | पुष्करणीपाद्यान | स्कन्द० | | ६ | |
| ६४ | ४६२२ | पुष्करप्रादुर्भाव (सटीक) | डॉ. विद्वेश्वर | १७६५ | ८३ | 'गौड़जातीयभट्टरामनन्दनात्मजेन वीरनन्दनेन लिखितं व्यास क्षेत्रे' ३६वाँ ६२वाँ पत्र अप्राप्त |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|-----------------------------------|--------------------|----------|-------------|-------------------------------------------------------------------------------------|
| ६५ | ६५८६ | पुष्करमाहात्म्य | पद्म० | १७६६ | ६६ | लि. क. मोतीराम मथ, रूप- |
| ६६ | ७०१७ | " | " | १८३७ | ५६ | नगरमध्ये लालदासजीपठनाथे |
| ६७ | ७०३३ | " | " | १८वीं श. | २१ | सलेभावादे |
| ६८ | ७६०६ | ब्रह्मवैवर्तपुराण (गणपतिखण्ड) | " | १७६५ | ६० | आद्यपत्र अप्राप्त |
| ६९ | ४१०१ | " | " | १८६१ | ६६ | आद्य २ पत्र अप्राप्त |
| ७० | ६६६० | " | " | १८वीं श. | १०१ | |
| ७१ | ६६६३ | " | " | " | ६६ | |
| ७२ | ६६५६ | " (प्रकृतिखण्ड) | " | " | १७४ | |
| ७३ | ६६६१ | " (ब्रह्मखण्ड) | " | " | ७७ | |
| ७४ | ६५१२ | बृहन्नारदीयपुराण | | १७६८ | १३३ | लि. क. जतीलालजी सवाई जय- पुरे महाराजाधिराज सवाई जय- सिंहराज्ये चित्र सं० ६ |
| ७५ | ५२१२ | भागवत (प्रथम से दशमस्कन्धपर्यन्त) | | १८वीं श. | ६७ | |
| ७६ | ५४६५ | सचित्र | | " | ११३ | ःलि. क. वनश्यामपल्लीवाल |
| ७७ | ४२३० | भागवत (प्रथम तीन स्कन्ध) | श्रीधर स्वामी | १८७१ | ५२ | लिपि सुन्दर, आद्यत्त पत्रोंपर चित्र |
| ७८ | ४३१७(१) | " (द्वादशस्कन्ध) | | १८वीं श. | | |
| ७९ | ४३१७(२) | " सजिन्द सटीक | | " | १४० | |
| ८० | ४३१७(३) | " (प्रथम-द्वितीयस्कन्ध) | | | | |
| ८१ | ४३१७(४) | " (तृतीयस्कन्ध) | | | | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|------------------------------|--------------------|----------|-------------|---------------------------------------------------------------------|
| ६६ | ६४८४ | भागवत (एकादशस्कन्ध) | | १८वीं श. | ३६ | * |
| ६७ | ६४८५ | भागवतक्रमसन्दर्भटीका | | " | ८ | |
| ६८ | ७८२२ | द्वादशस्कन्ध | टी० श्रीधरस्वामी | १६वीं श. | १४०-१४६ | चित्र सं० १२ |
| ६९ | ६६२५ | भागवतके सचित्र पत्र | " | १८वीं श. | ५६६ | पञ्चमस्कन्धके चतुर्थ अध्याय |
| १०० | ६६६४ | भागवत सटीक | " | १६वीं श. | १५३ | तक |
| १०१ | ६७०६ | " " मूल | " | " | ११६ | |
| १०२ | ६४७४ | " (प्रथमस्कन्ध) सुबोधिनीटीका | टी० वल्लभाचार्य | १७६७ | ६० | |
| १०३ | ६४७५ | " द्वितीयस्कन्ध | " | १७६८ | ५७ | ४८वां पत्र अप्राप्त |
| १०४ | ६४७२ | " सटीक | टी० श्रीधरस्वामी | १८वीं श. | ११८ | लि. क. भूधरमहाजन भानपुर-मध्ये |
| १०५ | ६५४६ | " तृतीयस्कन्ध | " | १६वीं श. | ६७ | लि. क. खुदयालचन्द वधवाड़ा-ग्रामे राजा श्री वेदला डूंगरसिंहजी राज्ये |
| १०६ | ६५५० | " चतुर्थस्कन्ध | " | १८०६ | ८३ | पत्र २८ से ३० तक अप्राप्त |
| १०७ | ६५५१ | " पञ्चमस्कन्ध | " | १७८६ | ६२ | २१वां पत्र अप्राप्त |
| १०८ | ६५५२ | " षष्ठस्कन्ध | " | १६वीं श. | ६७ | लि. क. गोवर्द्धनदास जती |
| १०९ | ६५५३ | " सप्तमस्कन्ध | " | १८१० | | सवाई जयपुर मध्ये |
| ११० | ६५५४ | " अष्टम स्कन्ध | " | १६वीं श. | ५८ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|------------------------------------------------------|-----------------------|----------|-------------|--------------------------------------------------------------------|
| १११ | ६५५५ | भागवत नवमस्कन्ध | टी० श्रीधरस्वामी | १९वीं श. | ५१ | ६ पत्रोंमें ११ चित्र |
| ११२ | ७८३४ | " दशमस्कन्धके सचित्रपत्र | | " | ६ | जीर्ण |
| ११३ | ५१७८ | भागवत दशमस्कन्ध | | १६६८ | ४० | लि. क. देवजी रूपपुरनिवासी |
| ११४ | ६४५० | " " | | १६८५ | २६२ | ३१वां अध्यायमात्र |
| ११५ | ५१७९ | " " | | १९वीं श. | ३ | लि. क. दुर्लभराय जगन्नाथभट्ट सुत |
| ११६ | ५१८४ | " " | | १८वीं श. | ३६२ | अन्तमें श्रीकृष्णसहस्रनाम और अष्टकादि भी हैं |
| ११७ | ६४७३ | भागवत दशमस्कन्ध रासपञ्चाध्यायी वैष्णवनिन्दिनीटीका | टिप्पणिकार विद्याभूषण | १९वीं श. | ५० | |
| ११८ | ६४९० | " दशमस्कन्ध प्रकरणद्वयविवृति- प्रकाश | विठ्ठलदीक्षित | " | ३९ | |
| ११९ | ६४७६ | " दशमस्कन्ध सुबोधिनीटीका | वल्लभाचार्य | १८वीं श. | १८२ | |
| १२० | ६८१५ | " भागवत दशमस्कन्धपूर्वार्द्ध सटीक | टी० श्रीधरस्वामी | १९वीं श. | १११ | |
| १२१ | ६८१६ | " उत्तरार्द्ध | " | १९४५ | ६८ | लि. क. लक्ष्मीनारायण |
| १२२ | ६४४९ | " दशमस्कन्ध (उत्तरार्द्ध) सटीक | टी० परमानन्द | १७५८ | १३० | बुन्देलखण्डे कोंचसमीपे |
| १२३ | ६५५६ | " " (उत्तरार्द्ध) | | १९वीं श. | ९८ | |
| १२४ | ६५५७ | " एकादशस्कन्धसटीक | टी० श्रीधरस्वामी | " | १५५ | |
| १२५ | ६५५८ | " द्वादश " " | " | १८वीं श. | ४८ | |
| १२६ | ६४९५ | " दशमस्कन्धे जन्माष्टास्यार्थ- प्रकाश | | १९वीं श. | ११ | "जन्माष्टस्य"—इस एकही श्लोकके अनेक प्रकारसे अर्थ किए गये हैं |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|--------------------------------------|----------------------------------|----------|-------------|--------------------------------|
| १२७ | ६६१७ | भागवतपुराणविषयशंका निरास | पुरुषोत्तम (बल्लभाचार्यचरणानुचर) | १६वीं श. | ४ | लि. क. ब्रजलालगौड़, ब्राह्मण |
| १२८ | ४१०२ | भागवतमाहात्म्य | पद्म० | " | १८ | गुर्जरगौड़, ग्राम खंडारी |
| १२९ | ५५४१ | भागवत माहात्म्य | " | १८वीं श. | ६ | पत्र १० से १३ तक अप्राप्त |
| १३० | ५५५७ | " | " | १६वीं श. | २८ | लि. क. कंवर कालूराम जयपुर |
| १३१ | ६५६८ | " | " | १८५५ | १५ | मध्ये |
| १३२ | ७५=१ | " | " | १८४५ | २५ | ३रा पत्र अप्राप्त |
| १३३ | ६४८८ | भागवतसन्दर्भे तत्त्वसन्दर्भः (प्रथम) | जीवक | १८२५ | १३ | लि. क. लिपमीराम जोसी नेघट |
| १३४ | ६४८७ | " " भागवतसन्दर्भः (द्वितीयः) | " | १६वीं श. | ७८ | नगरमध्ये |
| १३५ | ६४८६ | " " कुण्डसन्दर्भः (तृतीयः) | " | " | ८० | " |
| १३६ | ५२०५ (११) | भागवतानुक्रमिका | भविष्योत्तर० | १८६६ | ४२-४७ | लि. क. ब्रजवासी ज्योतिषिद |
| १३७ | ५७३७ | भौमव्रतकथा | " | १८६६ | ३ | सारस्वतकुलोत्पन्न रोमा (रोवां) |
| १३८ | ६७३६ | मत्स्यदेशमाहात्म्य | " | १६वीं श. | १७ | आद्य ४ पत्र अप्राप्त |
| १३९ | ७५६३ | मथुरामाहात्म्य | आदिवराहपुराण० | १८६६ | ५० | " |
| १४० | ७३०७ | " (अपूर्ण) | " | १६वीं श. | ४६ | " |
| १४१ | ६६११ | महालक्ष्मीव्रतकथा | भविष्योत्तर० | १६१६ | ६ | वसिष्ठ दिल्लीपसंवाद |
| १४२ | ४५४६ | माघमाहात्म्य | पद्म० | १८६२ | ६४ | " |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------|----------------------|------------------|-------------|------------------------------------------------------------|
| १४३ | ६५६३ | माघमाहात्म्य | पद्म० | १६वीं श. १८८६ | ३६ | लि. क. राममुख रामनारायण |
| १४४ | ६५६६ | " | " | १८८६ | ४१ | सवाईजयपुरमध्ये |
| १४५ | ५५७५ | मार्गशीर्षमाहात्म्य | स्कन्द० | १८३१ | ३८ | पत्र ३५, ३६ अत्राप्त |
| १४६ | ६५६७ | " | " | १६वीं श. | ५४ | लि. क. लालनिहारी |
| १४७ | ६७११ | यमद्वितीयाकथा | " | १८८७ | १ | लि. क. गिरिधारी |
| १४८ | ५८७२ | रामनवमिन्नतकथा | लिङ्गपुराणोक्त | १८८६ | ६ | लि. क. शंकरप्रधान खण्डेला |
| १४९ | ६६६७ | " | अगस्त्यसंहितोक्त | १८६२ | ४ | लि. क. रामनारायण |
| १५० | ६५६५ | रामायणमाहात्म्य | स्कन्द० | १८८६ | ८ | लि. क. राममुखरामनारायण |
| १५१ | ६७७८ | रासक्रीडा | भागवतोक्त | १६१६ | २ | |
| १५२ | ५१७३ | रासपञ्चाध्यायी | " | १८वीं श. | ३४ | |
| १५३ | ४६३७ | लिङ्गपुराण | वेदव्यास | १८१४ | ३७ | लि. क. कृपाराम |
| १५४ | ६४६६ | " | " | १६वीं श. | १८६ | |
| १५५ | ६७४० | लोहगर्लमाहात्म्य | बराहपुराण | २०वीं श. | ३ | |
| १५६ | ६६६८ | वटत्रिरात्रिकथा | भविष्योत्तर० | १७६६ | ६ | |
| १५७ | ५४६५ | विष्णुपुराण (६ खण्ड) | वेदव्यास | १६वीं श. | १८१ | |
| १५८ | ६५६४ | वैशाखमाहात्म्य | स्कन्द० | १६१५ | ४६ | लि. क. रामनारायणमिश्र |
| १५९ | ६६४७ | " | पद्म० | १८४२ | ६३ | लि. क. जैजैराम सवाई जयपुर- मध्ये सवाई प्रतापसिंह राज्ये |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------------|--------------------------|----------|-------------|--------------------------------------------|
| १६० | ५४८५ | शिवपुराण | वेदव्यास | १८१७ | २०६ | ग्राम खाचरोद में लिखित |
| १६१ | ४४८८ | शिवरात्रिकथा | स्कन्दपुराणोक्त | १८वीं श. | ४ | लि. क. संभूकचन्द |
| १६२ | ६६०६ | " | स्कन्दपुराणान्तर्गत | १६वीं श. | २ | लि. क. कौवर कालूराम |
| १६३ | ५४४५ | शिवरात्रिव्रतकथा | लिंगपुराणोक्त | १८१६ | १४ | लिखित जयपुर मध्ये |
| १६४ | ६६१४ | संक्रान्तिमाहात्म्य | | १८६० | १ | लि. क. कौवर कालूराम |
| १६५ | ६६४६ | संकष्टचतुर्थीकथा | स्कन्दपुराणोक्त | १६३७ | ४ | लि. क. जोशी मोडराम पाटोद्यो बूंदी मध्ये |
| १६६ | ६७१२ | संकटचतुर्थीव्रतकथा | नारदीयपुराणोक्त | १७३० | ५ | |
| १६७ | ५२५७ | सत्यनारायणव्रतकथा | स्कन्दपुराणोक्त | १६३४ | १२ | |
| १६८ | ४१०० | सत्योपाख्यान | श्रीव्यास | १६वीं श. | ६५ | |
| १६९ | ५६७८ | हरितालिकाव्रतकथा | भविष्योत्तरपुराणान्तर्गत | १८६५ | ४ | लि. क. ब्रजवासी सिल्लुः काश्याम् |
| १७० | ६४०३ | हरितालिकाव्रतकथा | भविष्योत्तरपुराणान्तर्गत | १६वीं श. | ३ | प्रथम पत्र अग्राप्त |
| १७१ | ४६३८ | हरिवंशपुराणरसकुल्याख्याख्या | हितहरिवंशशेखरस्वामी | १८३५ | ५२६ | |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ७-वेदान्त]

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|---------------------------------------------|------------------------------|----------|-------------|-------------------------------------|
| १ | ४५४५ | अध्यात्मविद्योपदेशविधि (गीतामूढार्थ-दीपिका) | शंकराचार्य | १७६० | ६ | लि. क. मयाराम |
| २ | ४५६४ | अन्तःकरणबोधसंवित्तिविवृति | वल्लभ | १८वीं श. | १६ | लि. स्था. मालपुरा |
| ३ | ४२४४ | अनुस्मृति | महाभारतगत | " | १३ | |
| ४ | ४६४६ | अनुस्मृति | महाभारतज्ञान्तिपवाकत | १६वीं श. | ६ | |
| ५ | ४५८८ | अपरोक्षानुभूति | शंकराचार्य | १८वीं श. | ७ | |
| ६ | ५२३२ | " | " | " | १० | |
| ७ | ६७१० | " | " | २०वीं श. | ६ | |
| ८ | ७७५७ (४) | " | " | १८५० | १७०-१८६ | |
| ९ | ५३५१ | अभयप्रदानसार | वरदाचार्य वैकटनाथाचार्यशिव्य | १८६१ | १५ | |
| १० | ६६४२ | अर्जुनगीता | | १८६६ | १२ | लि. क. शिवराजगिरि |
| ११ | ५५४७ | अर्थपञ्चकम् (रामानुजसम्प्रदायस्य) | गोपदास | १८३७ | १० | लि. क. तुलसीदास वैष्णव पुष्कर मध्ये |
| १२ | ५५४३ | अष्टावक्रटीका | विश्वेश्वर | १७१४ | ७४ | लि. क. गोकुल वैरागी शाहगंज |
| १३ | ५२६४ (२) | अष्टावक्रटीका (अवधूतानुभूति) | विश्वेश्वर | १८६० | ३२ | लि. क. हरिदेव |
| १४ | ६५६६ | अष्टावक्रटीका (वाक्यसुधाख्या) | " | १६वीं | ४४ | |
| १५ | ४६०४ | अष्टावक्रसूक्त | अष्टावक्र | " | ४३ | |
| १६ | ४६०६ | अष्टावक्रसूक्तसटीक (त्रिपाठ) | टीका—विश्वेश्वर | १८०५ | २७ | लि. क. रामेश्वर शिवात्मज |
| १७ | ७७५७ (७) | आत्मनिरूपण | शंकराचार्य | १८५० | २२०-२२२ | |
| १८ | ४५६१ | आत्मबोध | " | १७६६ | ७ | |
| १९ | ४६११ | " | " | १८वीं श. | ६ | लि. क. दयादत्ता |

| क्रमांक | ग्रंथांक | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|----------|------------------------------------------------------|---------------------------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------------|
| २० | ७७५७ (६) | आत्मबोध | शंकराचार्य | १८५० | २१०-२१६ | |
| २१ | ६६७६ | आत्मबोधप्रकरण | " | १६वीं श. | १७ | |
| २२ | ६६२७ | आत्मबोधव्याख्या (विद्वज्जनानन्ददा- यिनी, बालबोधिन | शंकराचार्यनारायणतीर्थ | १७७४ | २३ | लि. क. रामकृष्ण |
| २३ | ४१४१ | आत्मबोधसटीक | शंकराचार्य | १८वीं श. | १७ | |
| २४ | ४६१२ | आत्मबोधसटीक (प्रकाशिकाख्या) | टीका गोविन्दाचार्य | " | १६ | |
| २५ | ५६१२ | आत्मबोधसटीक | शंकराचार्य | १६वीं श. | १२ | |
| २६ | ६३५४ | आत्मानात्मविवेक | | १८वीं श. | ६ | |
| २७ | ६१५४ (२) | उज्ज्वलनीलमणि विवृतिः | रूपसनातन | १८१४ | १७६ | |
| २८ | ४५७८ | उत्तरगीता | अश्वमेधपर्वगत | १६वीं श. | १४ | |
| २९ | ५६१६ | उपदेशपञ्चकव्याख्या | शंकराचार्य, टीका-भूधर | " | ४ | |
| ३० | ५५०३ | कर्णानन्दसटीक (अर्थकौमुदीनाम्नी) | कृष्णदास, टीका-प्रबोधानन्द सरस्वती | १८०६ | ६३ | रचनाकाल सं. १६३५ |
| ३१ | ४५७७ | कुम्भकपद्धति | रघुराम शिवरामसुत | १६वीं श. | २१ | |
| ३२ | ७०६६ | कृष्णसन्दर्भ | जीवंगोस्वामी | १८२० | २४३ | लि. क. व्यास हरिनाल जूनिया- वासी; पत्र २१, २२ अप्राप्त |
| ३३ | ५६८५ | " | " | १८वीं श. | १५६ | |
| ३४ | ४५६७ | गर्भगीता | ब्रह्मज्ञानतत्त्वसार | " | ६ | |
| ३५ | ७६१० | गीतासारोपनिषत् | " | १६वीं श. | ४ | |
| ३६ | ६७८२ | गोरक्षशतक | " | " | १२ | लि. क. केशवदास |
| ३७ | ५४०४ | गोविन्दगुणानुवादसटीक | कृष्णदास | १६४६ | ३८ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------------------|---------------------|----------|-------------|------------------------------|
| ३८ | ४५८७ | चन्द्रोदयविलास | चन्द्रसिंह | १८वीं श. | ६४ | रचनाकाल १६६५ |
| ३९ | ६२०१ | चित्रदीपव्याख्यान | रामकृष्ण | " | ३० | प्रति जीर्णं व कीर्तविद्ध है |
| ४० | ६०६६ | चित्रदीपसटीक | " | १६वीं श. | ३० | |
| ४१ | ६५६० | चैतन्यचरितामृत | वल्लभाचार्य | १६०१ | ४१ | |
| ४२ | ५२०५ (८) | जलभेदः | कल्याणराम | १८वीं श. | ४०-४१ | |
| ४३ | ६५०६ | जलभेदटीका | | १७२८ | ८ | |
| ४४ | ४३८१ | तत्त्वभागवत | | १८वीं श. | १२७ | अपूर्ण |
| ४५ | ५५२६ | तत्त्वमुक्तावली | पूर्णानन्द श्रीगौड़ | १८४६ | ६ | |
| ४६ | ५५६६ | तत्त्वयाथार्थदीपनम् | गणेशदीक्षित | १६वीं श. | २३ | |
| ४७ | ७१६१ | तत्त्वसन्वर्भे | जीवगोस्वामी | १८वीं श. | १८ | |
| ४८ | ७७५७ (५) | तत्त्वसार | ऋष्यचैतन्यमुनि | १८५० | १८६-२०६ | |
| ४९ | ५३८५ (१) | " | " | १६वीं श. | | |
| ५० | ६०५६ | तत्त्वत्रयचूलािका | वरदार्यः | १८४७ | १३ | लि. क. मयाराम |
| ५१ | ४५४६ | तत्त्वानुसंधान | महादेव सरस्वती मुनि | १७६५ | १५ | |
| ५२ | ६०७० | " | " | १६०१ | ३६ | |
| ५३ | ६१७३ | " | " | १८वीं श. | ४६ | |
| ५४ | ६४६२ | " | " | १८८६ | २० | |
| ५५ | ६७०५ | द्वादशमहावाक्यविवरण | | १८७५ | ३८ | लि. क. हरीराम दवे, भावनगर |
| ५६ | ७७५७ (२) | द्वादशमहावाक्यसिद्धांत | | १८५० | ५६-१४० | |
| ५७ | ६८०६ | दशश्लोकीटीका (तत्त्वसारप्रकाशिनी) | नन्ददास | १८२१ | ८ | लि. क. हरचन्द्र, जयपुर |
| ५८ | ६०६१ | नाटकदीपाख्याख्या | रामकृष्ण विद्वान् | १९वीं श. | ५ | * |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|--------------------------------|------------------------|----------|-------------|---------------------------|
| ५६ | ७११७ | नारदगीता | बल्लभाचार्य | १६वीं श. | २ | |
| ६० | ५२०५ (१०) | निरोधलक्षण | " | १७७६ | ४२वां | |
| ६१ | ७५७६ | निरोधलक्षणटीका | विठ्ठलदीक्षित | १८वीं श. | २७ | प्रथम ३ पत्र अप्राप्त |
| ६२ | ५२०५ (४) | प्रबोधः | जडभरत (साधवानन्दशिष्य) | १६वीं श. | ३६-३७ | |
| ६३ | ५६५२ | प्रज्ञावली | मधुसूदनसरस्वती | १६वीं श. | ८ | |
| ६४ | ५७२५ | प्रस्थानभेद | जीवगोस्वामी | " | १८ | |
| ६५ | ५४७२ | प्रीतिसन्दर्भ (षष्ठः) | रसिकोत्तंस | १८२१ | ७१ | लि. क. मोतीरामजोशी, जयनगर |
| ६६ | ५४६६ | प्रेमपतनाख्यसन्दर्भसटीक | | १८वीं श. | ८० | |
| ६७ | ६७१६ | पञ्चधाटीव्याख्या | टी० रामकृष्ण | १६वीं श. | १२ | |
| ६८ | ७०३१ | पञ्चदशीटीका | " | १८६० | ४१ | |
| ६९ | ७७८७ | पञ्चदशीसटीक | टी० विदेववर | १८वीं श. | १२५ | |
| ७० | ५२६४ (१) | पञ्चीकरणप्रकरण (अवधूतानुभूतिः) | टी० आनन्दगिरि | १८६० | १५ | लि. क. हरिदेव |
| ७१ | ५७८२ | पञ्चीकरणसटीक | योगेश्वर | १६१६ | १६ | |
| ७२ | ६१५५ | पद्यावली | | १८८८ | ४२ | |
| ७३ | ५३८५ (२) | परमात्मप्रकाश | जीवगोस्वामी | १६वीं श. | | |
| ७४ | ७०६८ | परमात्मसन्दर्भ | विद्याविलास | १८२० | २७ | लि. क. हरिलाल व्यास |
| ७५ | ६१३४ | परिभाषावृत्तिः | | १७२४ | १३ | ग्राह्य २ पत्र अप्राप्त |
| ७६ | ४२१४ | पाण्डवगीता | | १६वीं श. | १७ | |
| ७७ | ४२४० | " | | १८वीं श. | १७ | |
| ७८ | ४५५६ | " | | १६वीं श. | ८ | लि. क. जयकृष्ण |
| ७९ | ५११२ | " | | " | ११ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|--------------------------------|--------------------|----------|------------------|----------------------------------------------|
| ८० | ७७०६ | पाण्डवगीता | | १८०४ | ६ | लि. क. परशुराम व्यास |
| ८१ | ७८१६ (४) | " | वल्लभाचार्य | १८३३ | ३७-३८ | लि. क. बाबा कृपाराम |
| ८२ | ४२०५ (५) | पुष्टिप्रवाहस्यार्था | रूपगोस्वामी | १८वीं श. | १६ | लि. क. हरिलाल व्यास |
| ८३ | ४४७० | ब्रह्मसंहितासटीक (पञ्चमाध्याय) | महादेव | १८२८ | १३ | |
| ८४ | ४५६८ | ब्रह्मज्ञान | वल्लभाचार्य | १८वीं श. | ३३-३६ | |
| ८५ | ४२०५ (३) | भक्तिप्रकरण | परमहंस विष्णुपुरी | " | ६४ | |
| ८६ | ४२६६ | भक्तिरत्नावली | " | १७५४ | १२३ | रचना १५५१ |
| ८७ | ४२८६ | " | " | " | लि० स्था० जोधपुर | |
| ८८ | ६१५० | " | " | १८२८ | ३० | |
| ८९ | ४२६८ | भगवद्गीता | " | १८वीं श. | १२६ | आद्यन्त पत्र सचित्र |
| ९० | ४२६५ | " | सचित्र | " | ६७ | चित्र संख्या ६ |
| ९१ | ५०८६ | " | " | १८०५ | ६६ | |
| ९२ | ५११० | " | " | १७११ | ८३ | काशीमें लिखित |
| ९३ | ६२६४ | " | (सभास्य) | १८वीं श. | १०२ | अंतिम अध्याय के ३६वें श्लोक तक है |
| ९४ | ४५८५ | " | सटीक | १५३८ | ८३ | पत्र १, २८, ३३, ३४ अप्राप्त |
| ९५ | ४५४३ | " | गूढार्थदीपिकासहित | १७६० | २०५ | लि. क. वैष्णव मयोराम |
| ९६ | ५४८० | " | सुबोधनीटीका | १६२७ | १०६ | लि. स्था. श्री द्रव्यपुर |
| ९७ | ६३५६ | " | " | १७६६ | १२५ | लि. क. गौरीशंकर पत्र ३, ४, ६, ८, ४६ अप्राप्त |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------------------------|--------------------|------------------|-------------|--------------------------------------|
| ६८ | ७०६६ | भगवद्गीता (पञ्चोली) | | १६वीं श. १८२० | १४१ | लि. क. पिरागदास |
| ६९ | ४३१० | भगवद्गीता (भाषापद्यानुवाद सहित) | हरिवल्लभ | | १८८ | स्था० नटवाड़ा |
| १०० | ६०७७ | " सुबोधिनी व्याख्या | श्रीधर | १८४९ | ११३ | लि. क. काशीनाथ भरतपुर |
| १०१ | ६०६५ | भगवद्भक्तिरत्नावलीमटीकट्रिपाठ | विष्णुपुरी | १८३४ | ६७ | पत्र ६६वां अप्राप्त |
| १०२ | ६३२४ | " | " | १८७६ | २९ | लि. क. नरोत्तमदास वैष्णव |
| १०३ | ६६१६ | " | " | १८८० | ३५ | लि. क. मनुलाल |
| १०४ | ७५२० | " | " | १६वीं श. | ७४ | लि. क. जमुनादास, नाथद्वारा |
| १०५ | ६५६२ | " सटीक | " | १६वीं श. | ७४ | लि. क. वैष्णव गंगादास, पल-सरा ग्रामे |
| १०६ | ७०१९ | " | " | १८वीं श. | ६७ | प्रथमपत्रसचित्र |
| १०७ | ६१५४(१) | भक्तिरसामृतसिन्धुटीका (दुर्गम संग-मनी) | रूप सनातन | १८१५ | १४७ | |
| १०८ | ६२३१ | भक्तिरसामृतसिन्धुसटीकपूर्वविभाग | " | १९२४ | ३३ | |
| १०९ | ६४६४ | भक्तिरसामृतसिन्धुबिन्दु | " | १६वीं श. | ८ | लि. क. सहजराववैष्णव साहिपुरा |
| ११० | ६७६७ | भक्तिरहस्य | मल्लिनाथ | १७७६ | ३४ | लि. क. व्यास हरिलाल |
| १११ | ७०७० | भक्तिसन्दर्भ | जीवगोस्वाम | १८२० | ६३ | " " |
| ११२ | ७०६७ | भगवत्सन्दर्भ | " | " | ५० | लि. क. गोविन्द लक्ष्मी |
| ११३ | ५२८१ | भगवद्गीता | " | १८११ | ५६ | लि. क. शिवनाथ |
| ११४ | ६६६६ | " | " | १७७९ | ७२ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|------------------------|-----------------------|----------|-------------|-----------------------------|
| ११५ | ६७५७ | भगवद्गीता | शंकराचार्य | १८८६ | ५४ | लि. स्था. डेरावसी |
| ११६ | ७६०२ | " | " | १८५७ | ३५ | लि. क. गोडजी शोभजी |
| ११७ | ७८०५ | " | " | १८वीं श. | ११७ | एकादश अध्यायपर्यन्त |
| ११८ | ७७८५ | " (पंचोत्ती टीका) | " | १८४१ | ४४ | |
| ११९ | ५७०७ | भगवद्गीतासभाष्य | शंकराचार्य | १८वीं श. | ११७ | |
| १२० | ४५५१ | " | " | " | ११ | अपूर्ण |
| १२१ | ४३७२ | भगवद्गीतासटीक | श्रीधर | १८७५ | ११३ | लि. क. रामचन्द्र |
| १२२ | ६६४० | " | " | १८७३ | १०६ | प्रथम पत्र अत्राप्त |
| १२३ | ६६५८ | " (अर्थसंग्रहटीका) | श्रीधर | १८वीं श. | ११२ | |
| १२४ | ६६६२ | " सुबोधनीटीका | गोपालभट्ट | १८६७ | ६७१ | लि. क. गोविन्दराम, जयनगर |
| १२५ | ६५०५ | भगवद्भूक्तिविलासटीका | कृष्णयाजी | १८वीं श. | ८१ | अन्तिम पत्र खण्डित |
| १२६ | ६५२० | महावाक्यार्थविवरण | ब्रह्मसंहितासंगत | १८१७ | १७ | लि. श्यामदास, मथुरा |
| १२७ | ६०६६ | मीमांसा परिभाषा | श्रीनिवासदास | १८०६ | १-६ | लि. पुजारी हरदेवदास |
| १२८ | ६२८० (१) | मूलसूत्र | " | १८वीं श. | २१ | |
| १२९ | ६२६५ | यतीन्द्रमतदीपिका | " | १८२३ | ५५ | |
| १३० | ५२६३ | " | वंशीधर | १८वीं श. | २८ | |
| १३१ | ५६५१ | याज्ञवल्क्योपनिष | हरिभद्रस्वैतभिधु | १८वीं श. | ५८ | पत्र २५, ४५, ४६वां अत्राप्त |
| १३२ | ५५५१ | युगलचरितामृतकथा | " | १८१६ | २३ | |
| १३३ | ७३३६ | योगदृष्टिसमुच्चयवृत्ति | महीधर, टी० विद्मेश्वर | १८५० | १४०-१७० | लि. क. नारायणदास वैष्णव |
| १३४ | ७७५७ (३) | योगवासिष्ठसार | " | १७८८ | २७ | स्थान वृन्दावती |
| १३५ | ४५५२ | " (सटीक त्रिपाठ) | " | | | |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ७-वेदान्त]

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------------------|--------------------|----------|-------------|-------------------------------|
| १३६ | ४४३० | योगशास्त्र | श्री पतञ्जलि | १८११ | १२० | |
| १३७ | ७३४६ | योगशास्त्रप्रकाश | हेमचन्द्राचार्य | १५वीं श. | १० | |
| १३८ | ५६०१ | योगशास्त्र (वृत्ति) | " | १६वीं श. | २८ | |
| १३९ | ७३२८ | योगशास्त्र (चतुर्थ प्रकाशपर्यन्त) | " | १७वीं श. | २६ | |
| १४० | ४३५३ | योगशास्त्रद्वादशाप्रकाश | " | १५३६ | २४ | |
| १४१ | ४३=६ | " | " | १५६७ | २० | |
| १४२ | ७४०६ | योगशास्त्रप्रकाश (चतुर्थ) | " | १६७७ | १४ | लि. स्था. इलकुर्ग |
| १४३ | ५५६५ | योगसूत्र (अभिनवभाष्य) | भवदेवमहोपाध्याय | १६१६ | ३६ | |
| १४४ | ५५६८ | योगसूत्रभाष्य | पतञ्जलि | " | ४३ | |
| १४५ | ५६२० | योगसूत्रभाष्यवृत्ति | वाचस्पति | १६२३ | ० | लि. क. साधु श्रीराम, जयनगर |
| १४६ | ५५६६ | योगसूत्रवृत्ति | धारेस्वर | १६१६ | ३५ | |
| १४७ | ४४२६ | योगाख्यान (योगतत्व) | याज्ञवल्क्य | १६वीं श. | ४८ | |
| १४८ | ४२५२ | रामगीता | | १८वीं श. | १५ | |
| १४९ | ६६६५ | " | महीधर | १८३६ | ६ | लि. पुरोधो देवकृष्ण |
| १५० | ६२२४ | रामगीताविवृति | " | १६०० | १७ | लि. रामचरण |
| १५१ | ६५०३ | " | शंकराचार्य | १८१८ | १७ | लि. शुभराम |
| १५२ | ७७५७ (१२) | वज्रसूची | शंकराचार्य | १८५० | २३३-२४४ | लि. भट्ट भास्कर काश्मीरनिवासी |
| १५३ | ६२८० (३) | " | श्रीनिवासदास | १६०६ | १६-२० | लि. पुजारी हरदेवदास |
| १५४ | ५३०० | वज्रसूचीसंदर्शनी | | १८५१ | ३ | लि. घासीराम |
| १५५ | ५७३३ | वाक्यसुधाप्रकरण | शंकराचार्य | १६वीं श. | २७ | |
| १५६ | ४५८० | " सटीक | | १८३६ | १४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; ७-वेदान्त] | कृता यादि ज्ञातव्य | तिथि समग्र | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|------------------------------------------|------------------------|------------|-------------|------------------------|
| | | पद्म नाम | शठारि ? | | | |
| | | (अथवापरांग्रह (प्रमाणसार) | | १६वीं श. | ५७ | |
| | | अथवापरांग्रह | कविराज भिभु | १८ वीं श. | ३१ | लि. माखनलाल |
| | | अथवापरांग्रह | श्री गिठुल | १६०८ | ६४ | लि. जालिग्राम |
| | | अथवापरांग्रह | " | १६०० | ४६ | लि. जेठवी जीवणाराम |
| | | अथवापरांग्रह | श्रीचिरंजीव भट्टाचार्य | १८४६ | ३४ | |
| | | अथवापरांग्रह | " | १६वीं श. | ४० | |
| | | अथवापरांग्रह | लक्ष्मणाचार्य | १८४३ | ३२ | प्रथम दो पत्र अप्राप्त |
| | | अथवापरांग्रह | श्रीरामानुजदास | १८वीं श. | २२ | |
| | | अथवापरांग्रह | शंकराचार्य | १६वीं श. | ६ | लि. ललिताप्रसाद पारीक |
| | | अथवापरांग्रह | अनन्तराम | १६२१ | ३२ | |
| | | अथवापरांग्रह | रामानुजाचार्य | १६वीं श. | २५ | |
| | | अथवापरांग्रह | शंकराचार्य | " | ४ | |
| | | अथवापरांग्रह | धर्मराजाध्वरीन्द्र | " | ४७ | लि. रामनारायण |
| | | अथवापरांग्रह | परमानन्ददेव | १८८८ | २५ | |
| | | अथवापरांग्रह | शंकराचार्य | १८५० | २३२-२३३ | |
| | | अथवापरांग्रह | सदानन्द | १६वीं श. | १४ | |
| | | अथवापरांग्रह | " | १८वीं श. | १७ | पत्र २, ३ अप्राप्त |
| | | अथवापरांग्रह | कुणानन्द | १६वीं श. | ११ | लि. दुर्गादत्त |
| | | अथवापरांग्रह | सदानन्द | " | १६ | |
| | | अथवापरांग्रह | | १८४१ | ११ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------------------|------------------------------------|----------|-------------|--------------------------|
| १७८ | ५७०१ | वेदान्तसार | सदानन्द | १६वीं श. | १३ | लि. ठक्कुर नरहरबल्लाल |
| १७९ | ६२५१ | " | " | १८३६ | २३ | लि. रूपराममिश्र बल्लभगढ़ |
| १८० | ६२८३ | " | " | १८वीं श. | १३ | लि. पण्डा शिवदत्त |
| १८१ | ६५१८ | " | " | १७९७ | २४ | |
| १८२ | ७६१७ | " | " | १६वीं श. | १४ | |
| १८३ | ४६२१ | " | शंकराचार्य | १८वीं श. | १४ | |
| १८४ | ४६४० | " | " | १६वीं श. | २५ | लि. श्यामदास |
| १८५ | ४२७८ | " (सुबोधिनीटीकायुक्त) | नरसिंहरस्वती | १७२६ | | स्थान उरपत्तनग्राम |
| १८६ | ६१७२ | वेदान्तसारटीका (सुबोधिनी) | " | १७४० | ५१ | लि. रामसुख रामनारायण |
| १८७ | ६५७९ | वेदान्तसारटीका | " | १८८६ | २९ | |
| १८८ | ६१५९ | वेदान्तसिद्धांतसंग्रह (सटीक) | वनमाली | १८वीं श. | १२३ | |
| १८९ | ४५७९ | वेदान्तसूत्र | ब्रह्मानन्द | १६वीं श. | १९ | |
| १९० | ४५९३ | वेदार्थसारसंग्रह | | " | ४३ | |
| १९१ | ६१६५ | वैकुण्ठगद्य | ब्रह्मानन्द | १८९० | १६ | |
| १९२ | ५७७३ | वैराग्यप्रकरणम् (रामायणान्तर्गत) | वाल्मीकि | १८वीं श. | १२९ | |
| १९३ | ४५५० | ज्ञातसूत्रीयभाष्य | मू०शाण्डिल्यभाष्यस्वप्नेश्वराचार्य | १८३९ | ३१ | लि. ज्योस रामरतन |
| १९४ | ७६०० | शारीरकमीमांसा | शंकराचार्य | १८४८ | १३ | |
| १९५ | ५९६४ | शारीरकमीमांसाभाष्य (प्रथमअध्याय) | शंकराचार्य | १६वीं श. | १४२ | |
| १९६ | ५९६५ | " (द्वितीय अध्याय) | " | " | १२८ | |
| १९७ | ५९६६ | " (तृतीय अध्याय) | " | " | १३२ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------------------|-----------------------------------|----------|-------------|--------------------------------|
| १६८ | ५६५७ | शारीरकसीमासाभाष्य (चतु.ग्रन्थाय) | शंकराचार्य | १८७४ | ५३ | लि. गिरधारीरामशर्मा गौड़ |
| १६९ | ६२२३ | " | " | १७३१ | २१८ | |
| २०० | ६२३८ | " | " | १८५१ | २३७ | |
| २०१ | ६७८३ | स्वयम्बोध | ईश्वरप्रोक्त | १६वीं श. | १० | |
| २०२ | ६५८१ | स्वरूपप्रकरण | शंकराचार्य | " | ३ | लि. रामनारायण |
| २०३ | ६३६७ | स्वरोदय | तन्त्रोक्त | १६१३ | ६ | लि. बलूराम, दीर्घपुर |
| २०४ | ६७३० | स्वात्मनिरूपण | नारदपांचरात्रतन्त्रोक्त | १६वीं श. | २० | |
| २०५ | ५७८६ | स्वात्मनिरूपणप्रकरणार्थवित्तक | शंकराचार्य | " | ११ | इस ग्रन्थमें १५६ आर्था छंद हैं |
| २०६ | ४६४४ | स्वात्मबोध | | " | २१ | |
| २०७ | ५२०५ (६) | सन्न्यासनिर्णयः | वल्लभाचार्य | १८वीं श. | ३८-३९ | |
| २०८ | ७५७७ | सन्न्यासनिर्णयविवरण | पुरुषोत्तम | १६१३ | २४ | |
| २०९ | ७५८३ | सन्न्यासनिर्णयविवृति | गोपेन्द्र | १६वीं श. | २३ | |
| २१० | ५२०५ (७) | सर्वसिद्धान्तबालबोध | वल्लभाचार्य | १८वीं श. | ३६वां | |
| २११ | ६२६६ | सर्वोत्तमविवृति | श्रीवल्लभ | १६३६ | ४६ | |
| २१२ | ५६२६ | समाधितन्त्र (बालावबोधिनीटीका) | पर्वतधर्मार्थकुन्दकुंदाचार्यशिष्य | १७४६ | ७० | |
| २१३ | ४४६८ | सांख्यवृत्ति | कपिलोक्त | १८वीं श. | १५ | |
| २१४ | ६७६६ | सामवेदरहस्योपनिषत् | विद्याभूषण टी० नन्दमिश्र | १८०३ | २१ | पत्र १-३ अप्राप्त |
| २१५ | ६५६१ | सिद्धांतदर्पण | मधुसूदनसरस्वती | १६वीं श. | १२ | लि. साधरामदास स्या. भारोठ |
| २१६ | ४५४७ | सिद्धांतबिन्दुः | " | १७६५ | ५५ | |
| २१७ | ७३७० | " | वल्लभाचार्य | १७७६ | ३२-३३ | |
| २१८ | ५२०५ (२) | सिद्धांतमुक्तावली | | १८वीं श. | | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-----------------------|-----------------------|----------|-------------|------------------------------------------------------------------------|
| २१६ | ७०७१ | सेवाप्रकाशशतकव्याख्या | गोस्वामी श्रीव्रजलाल | १८२४ | ६३ | रचनाकाल १७५५, लि. क. श्वेताम्बर नागिराम पत्र ७ से २६ तक अप्रान्त |
| २२० | ५२०५ (६) | सेवाफलम् | वल्लभाचार्य | १८वीं श. | ४१-४२ | |
| २२१ | ४५६७ | हठप्रदीपिका | स्वात्माराम योगीन्द्र | १९वीं श. | २२ | |
| २२२ | ५८७३ | " | " | १८६४ | २६ | |
| २२३ | ६०७६ | " | " | १८६७ | २७ | |
| २२४ | ६७५६ | " | " | १७६५ | १७१ | लि. तुलाराम |
| २२५ | ७७५७ (१) | " | " | १८५० | १-५६ | लि. काश्मीरनिवासीभास्करभट्ट |
| २२६ | ५८३३ | हठरत्नावली | भट्ट श्रीनिवास | १९०४ | ३१ | पत्र ३०वां अप्रान्त लि. व्रजवासी रोमापुरे |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; द-न्याय-दर्शन]

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|------------------------------|---------------------|----------|-------------|-----------------------|
| १ | ६६४० | अनुमानमणिदीधिति | रघुनाथ | १६०८ | २१५ | लि. मथुरानाथ शर्मा |
| २ | ६५१५ | अनुमितिपरामर्श | रघुदेवभट्टाचार्य | १८४६ | ३४ | |
| ३ | ६१५२ | आप्तपरीक्षा | विद्यानाथ | १६७८ | १३३ | लि. जीवेश्वर |
| ४ | ४४६६ | कारिकानिबन्ध | विश्वनाथ | १८वीं श. | १३ | |
| ५ | ५६२२ | किरणावलीसूत्र | उदयनाचार्य | १७०५ | ५२ | |
| ६ | ५६५६ | खण्डनखण्डकाव्य | श्रीहर्ष | १६वीं श. | ३४१ | अपूर्ण |
| ७ | ५६८६ | " | " | " | २३२ | |
| ८ | ६६३६ | जागदीशोन्मायव्याख्या | श्रीगंगेश्वर | १६०६ | ११६ | लि. मथुरानाथशर्मा |
| ९ | ४३४३ | तत्त्वचिन्तामणि शब्दखण्ड | अमृतचन्द | १७वीं श. | १४५ | |
| १० | ६१८१ | तत्त्वदीपिका | विश्वेश्वराश्रम | १८वीं श. | १०२ | |
| ११ | ४४६६ | तर्कचन्द्रिका | भवदेव | १८१४ | २१ | लि. शम्भूराम |
| १२ | ६८७४ | तर्कप्रदीप | केशवमिश्र | १६वीं श. | ६ | |
| १३ | ६०२१ | तर्कभाषा | गौरीकान्तभट्टाचार्य | १८११ | २६ | पत्र १६वां अप्राप्त |
| १४ | ६०४२ | तर्कभाषाटीका (भावार्थदीपिका) | अज्ञंभट्ट | १८वीं श. | ६२ | |
| १५ | ४४६५ | तर्कसंग्रह | " | १६वीं श. | ६ | |
| १६ | ४५०० | " | " | १८०५ | ११ | लि. चैनराम, गीजगढ़ |
| १७ | ५३२५ | " | " | १८३६ | ३ | |
| १८ | ६०३७ | " | " | १८वीं श. | ७ | |
| १९ | ६३६५ | " | " | १६०० | ८ | पत्र ६ठा अप्राप्त |
| २० | ६८६७ | " | " | १६०० | २३ | लि. पं. पन्नालाल, लखर |
| २१ | ६६६४ | " | " | ७३२ | ६ | लि. श्रीगोविन्दभट्ट |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------------------------------|----------------------------|----------|-------------|-------------------------------------------------------|
| २२ | ७७१२ | तर्कसंग्रह | अन्नभट्ट | १८६२ | ६ | लि. वज्रवासी सिल्लु; |
| २३ | ६१७१ | तर्कसंग्रहतत्त्वदीपिका | मदनभट्टोपाध्याय | १८६४ | २४ | लि. गोस्वामी बलदेव |
| २४ | ६८६२ | तर्कसंग्रहन्यायबोधिनीटीका | गोवर्द्धनमुधी | १८६१ | २३ | |
| २५ | ४४३६ | तर्कमूल | जगदीशभट्टाचार्य | १०१५ | १३ | लि. रामनारायण मिश्र |
| २६ | ४३४१ | न्यायरत्नप्रकरण | शशधर | १६वीं श. | ३८ | |
| २७ | ६६६६ | न्यायसिद्धांतमञ्जरी | चूडामणिभट्टाचार्य | १८८४ | ३१ | |
| २८ | ५३३५ | न्यायसिद्धांतमञ्जरीतर्कप्रकाशाख्य- दीपिका | टी० क्षितिकंठशर्मा | १८वीं श. | ६२ | |
| २९ | ५६०४ | न्यायार्थमंजूषा (न्यायवह्द्वृत्ति) | हेमहंस | १५१५ | ६७ | |
| ३० | ७२४५ | नयचक्र | देवसेनपण्डित | १८१५ | ११ | पथम पत्र अप्राप्त लि. साधु मुखरामदास शहर वेथममध्ये |
| ३१ | ७३५७ | नयचक्र (मुखबोधार्थमालापद्धति) | देवसेन | १८१३ | ६ | लि. सुज्ञानसागर |
| ३२ | ७५८६ | नयचक्र | " | १६०३ | ४ | लि. हमीरविजय |
| ३३ | ७४१४ | " | सिद्धसेन | १७८६ | ५ | लि. ऋषिसुखदेव |
| ३४ | ६५१६ | निरुचयतत्त्वनिरुक्ति | रघुदेव तर्कलंकार | १६वीं श. | ८ | |
| ३५ | ५६२६ | प्रमाणमंजरी | सर्वदेव | १७वीं श. | ७ | |
| ३६ | ५६२३ | प्रमाणमंजरीटीका | टी० अहयारण्य | १६वीं श. | ७ | |
| ३७ | ४४३१ | पदार्थमाला | जयराम न्यायपंचानन | १६६६ | १५६ | |
| ३८ | ५१७२ | भाषापरिच्छेद | भट्टाचार्य सिद्धान्तपंचानन | १८२३ | २८ | |
| ३९ | ६६५१ | " | सिद्धान्तवागीश | १६वीं श. | ८ | |
| ४० | ६७१८ | भाषारत्न | श्रीकृष्णद | " | ४७ | ११वां पत्र अप्राप्त |

| क्रमाङ्क | ग्रथाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|----------|-------------------------------------|---------------------------|----------|-------------|-----------------------------------|
| ४१ | ७७१४ | मुक्तावलीकारिका | पंचानन भट्टाचार्य | १८६२ | ६ | लि. व्रजवासी सिल्लुः |
| ४२ | ५६३६ | 'रत्नाकरावतारिकापंजिका | देवसूरि | १७०० | २५ | लि. तीर्थचन्द्रगणि |
| ४३ | ४४३८ | शब्दानिरूपण पूर्वार्द्ध | | १७वीं श. | १३१ | |
| ४४ | ७२५५ | षड्दर्शनसमुच्चयवृत्ति | हरिभद्रसूरि | १६१२ | २० | |
| ४५ | ७३६० | षड्दर्शनसमुच्चयटीका | हरिभद्रसूरि | १७वीं श. | २६ | |
| ४६ | ४३५० | षड्दर्शनसमुच्चयसावधूरि | हरिभद्र | १७१० | ६ | लि. मुनिप्रकाशपाल स्थान-सिरोही |
| ४७ | ७४८६ | स्याद्वादमंजरी | हेमचन्द्राचार्य | १५२१ | ६६ | |
| ४८ | ७३४८ | " | | १५वीं श. | ५३ | |
| ४९ | ४४१६ | सन्देशदोलावलीसटीक | जिनदत्तसूरि | १६वीं श. | २० | लि. नयनसुन्दरगणि |
| ५० | ४३४२ | सप्तपदार्थी | शिवादित्य | ७वीं श. | ७ | |
| ५१ | ५६८८ | " | " | " | ६ | |
| ५२ | ५६०० | सप्तपदार्थटीका | शेषानन्दपण्डित | १७०४ | २५ | प्रथम पृष्ठ शोभन |
| ५३ | ७१६० | सप्तपदार्थवृत्ति | वल्लभ | १७वीं श. | ६ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ५४ | ५४४६ | समासवाद | जयराम भट्टाचार्य | १६वीं श. | ११ | |
| ५५ | ५१३३ | निष्ठान्तचन्द्रोदय (तर्कसंग्रहटीका) | | १८वीं श. | ५६ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ५६ | ४४३७ | निष्ठान्तमुक्तावली | विश्वनाथ पंचाननभट्टाचार्य | १६वीं श. | १२० | |
| ५७ | ६६५५ | " | " | १८८४ | ७३ | |
| ५८ | ५६६४ | " | प्रकाशानन्द | १८१० | ५७ | |
| ५९ | ६६३८ | " | विश्वनाथ | १८६४ | ६५ | |

राजस्थान पुरातत्त्वविशेषण मंदिर — हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ६-व्याकरण

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-------------------------------------|---------------------|----------|-------------|--------------------------------------|
| १ | ६१०२ | अनित्कारिका | | २०वीं श. | ३ | |
| २ | ६११७ | " | | १६वीं श. | ३ | |
| ३ | ६११२ | " | | " | ३ | |
| ४ | ५६८१ | अनुबन्धफलसावचूरिपंचपाठ | हेमचन्द्र | १८वीं श. | १ | लि. नन्दराम ब्राह्मण सर्वाज्ञपत्तनगर |
| ५ | ६६१६ | अव्ययव्याख्यान | | १६वीं श. | ५ | |
| ६ | ४३६३ | अव्ययव्याख्यान | | १६वीं श. | ४ | |
| ७ | ६७०० | अव्ययार्थप्रकाश | पतञ्जलि | १८४० | ७ | लि. मंगाविष्णु |
| ८ | ५०३२ | अष्टाध्यायी व्याकरण | पाणिनि | १७६६ | ११२ | लि. महता नागेश्वर श्रीदीक्ष्य |
| ९ | ४३७३ | आख्यातवाटोका | रघुदेव | १८८३ | ३५ | लि. रामलाल |
| १० | ४३७७ | आख्यातविवेक | भट्टाचार्य शिरोमणि | १६वीं श. | ७ | |
| ११ | ७४३१ | उणाद्विगणसूत्रविवरण | हेमचन्द्र | १५वीं श. | ४० | |
| १२ | ५२१६ | उणाद्विगण (पंचमपादान्त) | उज्ज्वलदत्त | १७वीं श. | ३२ | |
| १३ | ७४७१ | उणादिसूत्रसटीक | महेश्वर कवि | १७६२ | १२ | लि. रत्नसुन्दर |
| १४ | ४३६६ | ऊष्मभेद | | १८४७ | १७ | लि. चिमनराम तेरागंवी |
| १५ | ५३८२ (५) | कातन्त्रव्याख्या (दीर्घासिंहसूत्रि) | | १६वीं श. | १७७-१८६ | |
| १६ | ५६५८ | कातन्त्रविभ्रम | तर्कसिंह भट्टाचार्य | १७वीं श. | ६ | लि. शक्तिप्राम |
| १७ | ५८७१ | कारककण्ठमण्डन | " | १७वीं श. | ५ | लि. मानकलोल |
| १८ | ६१६८ | " | मनिकण्ठ भट्टाचार्य | १७१६ | ८ | लि. दीपचन्द्र |
| १९ | ७४५६ | " | वरदास | १८४७ | ८ | |
| २० | ६१६१ | कारककण्ठम | पद्मपति राजेश्वर | १८वीं श. | १३ | |
| २१ | ६०३१ | कारकसरोभा | | १८वीं श. | ६ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-------------------------------------|--------------------------|----------|-------------|---------------------------------------------------|
| २२ | ४२८१ | कारकविलास | | १६२० | ५४ | |
| २३ | ७४७३ | कारकविवेचन | | १८वीं श. | ४ | |
| २४ | ५४६२ | कुदन्तप्रक्रिया (चन्द्रिका) | रामचन्द्राश्रम | १८६६ | २४ | लि. बलदेव |
| २५ | ४३६४ | गणरत्नमहोदधिसवृत्तिक | वर्द्धमान सूरि | १७वीं श. | ६६ | १ से ६ पत्र अप्राप्त, रचनाकाल सं० ११६७ |
| २६ | ६५८३ | गणपाठ (पाणिनीय) | | १८६६ | १४ | |
| २७ | ५०८६ | दशबलकारिकारूपोधातुपाठः | | १७५६ | २ | |
| २८ | ७३११ | धातुतरंगिणी (स्वोपज्ञधातुपाठ-धिवरण) | हर्षकीर्ति सूरि | १७वीं श. | ८५ | |
| २९ | ६१०० | धातुपाठ | | १८६० | २१ | |
| ३० | ६२७० | धातुरूपावली | | १६वीं श. | ६ | |
| ३१ | ५४८६ | प्रक्रियाकौमुदी (प्रथमभाग) | रामचन्द्र | १७वीं श. | ६३ | पत्र ६३, ८७, ८८, ९०, ९१, ९२ अप्राप्त |
| ३२ | ७४६२ | " | " | १७०१ | १६० | |
| ३३ | ५१४५ | " सटीक (द्विस्तप्रक्रियात्) | श्रीकृष्णनरसिंह सूरिसूनु | १८वीं श. | ३२१ | |
| ३४ | ५४८६ | " सुवन्तप्रकरण | रामचन्द्र | १७वीं श. | ५९ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ३५ | ५४८८ | " तद्धितप्रक्रिया | रामचन्द्र | " | ११४ | पत्र ४२, ४६, ६१, ७३, ८१ से ८६ तक, ९३ वीं अप्राप्त |
| ३६ | ५४८७ | " कुदन्तप्रक्रिया | " | " | ८८ | पत्र ७६ से ८६ तक अप्राप्त |
| ३७ | ५००६ | प्रबोधचन्द्रिका | वैजलभूपति | १६०६ | ४२ | |
| ३८ | ५२५१ | " | " | १६२० | ४५ | लि. श्री नृसिंह गुसाई |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------------------|--------------------|----------|-------------|-------------------------|
| ३६ | ६५७० | प्रबोधचन्द्रिका | वैजलभूषित | १६वीं श. | १६ | |
| ४० | ५१५३ | प्रौढमनोरमा (पूर्ववृत्ति | भट्टोजी दीक्षित | " | ४४६ | |
| ४१ | ५१५४ | " (तिङन्तकाण्ड) | " | " | १५३ | अपूर्ण |
| ४२ | ५१४७ | " | " | " | १४४ | |
| ४३ | ४४७१ | परिभाषासूत्र (सिद्धान्तकौमुद्याः) | | " | २ | लि. गोपीनाथ |
| ४४ | ६६६४ | परिभाषासूत्राणि | | १६१६ | ८ | |
| ४५ | ५१५५ | परिभाषेन्दुशेखर | नागेश भट्ट | १८०० | १०३ | |
| ४६ | ५६२४ | पाणिनीयव्याकरणसूत्रपाठः | पाणिनि | १७वीं श. | २१ | अपूर्ण |
| ४७ | ५५७६ | पाणिनीयशिक्षा | " | १८वीं श. | २७ | |
| ४८ | ६१६६ | भाष्यप्रदीपव्याख्यात (प्रथमखण्ड) | नागोजी भट्ट | १८५५ | १८६ | |
| ४९ | ६१७० | " (द्वितीयखण्ड) | " | " | ११२ | |
| ५० | ६०५१ | भीमसेनधातुपाठः | भीमसेन | १६३० | ६ | राजनगरे लिखितम् |
| ५१ | ५६६६ | भूधातुवृत्ति | क्षमा कल्याण | १८२६ | ३४ | |
| ५२ | ५१५० | मध्यकौमुदी (पूर्वभाग) | वरदराज | १८वीं श. | ६८ | |
| ५३ | ५१५१ | " (उत्तरभाग) | " | १८१२ | ६३ | |
| ५४ | ६४५६ | " (विलासनाम्नीटीकासहित) | " टी. जयकुण्ज | १६वीं श. | ११३ | |
| | | अव्ययपर्यन्त | | | | |
| ५५ | ६४६० | " (आख्यातप्रक्रिया) | " | " | ८६ | पत्र ६६, ६७वां अप्राप्त |
| ५६ | ६४६१ | " (कृदन्तप्रक्रिया) | " | १८३४ | ६८ | लि. जती चैनसागर, जैनगर |
| ५७ | ५१४६ | महाभाष्य (तृतीयचतुर्थाध्यायी | पतञ्जलि | १८वीं श. | १६८ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|------------------------------|---------------------------|----------|-------------|----------------------------------------|
| ५८ | ५५४८ | लघुकौमुदी (उत्तरार्द्ध) | वरदराज | १६१२ | ५७ | लि. नन्दलाल |
| ५९ | ६६७० | लघुशब्देन्दुशेखर | नागेश | १८वीं श. | १६५ | |
| ६० | ५११४८ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | वरदराज | १६१० | ७६ | |
| ६१ | ६१०३ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | वरदराज | १६०४ | ६८ | |
| ६२ | ७६८६ | " | " | १८७४ | ६० | लि. उमाशंकर |
| ६३ | ६८६५ | लिङ्गानुशासन | हेमचन्द्र सूरि | १८वीं श. | ८ | |
| ६४ | ७२०५ | लिङ्गानुशासनविवरण (स्वोपज्ञ) | हेमचन्द्राचार्य | १६४५ | ७४ | लि. श्रीभा रत्न |
| ६५ | ६५२१ | व्याकरणलघुभाष्य (पूर्वखण्ड) | | १६वीं श. | २८२ | |
| ६६ | ५३१० | वाक्यप्रदीप | | १७वीं श. | २५ | अपूर्ण |
| ६७ | ६३३२ | विदग्धबोध | भूपतिमिश्र | १८६० | १४ | वैरिगरमध्ये लिखितम् |
| ६८ | ६११५ | विपरीतग्रहणप्रकरण | | १६वीं श. | २ | |
| ७० | ७४५७ | वैयाकरणभूषणटीका | कृष्णमिश्र | १८वीं श. | १७ | |
| ७१ | ५१५२ | वैयाकरणभूषणसार (स्फोटवाद) | कौण्डिभट्ट | " | ५० | |
| ७२ | ५१७४ | वैयाकरणसार (शक्तिनिर्णय) | | " | ७ | |
| ७३ | ७४५१ | शब्दप्रभेदटीका | मू. महेश्वर टी. ज्ञानविमल | " | ११० | |
| ७४ | ६०१४ | शब्दभेदप्रकाश | पुरुषोत्तमदेव | १८७६ | २ | |
| ७५ | ५६२८ | शब्दशोभा | नीलकंठ शुक्ल | १७२१ | २६ | रचनाकाल १६८६ सांगानेर- मध्ये लिखितं |
| ७६ | ५२१७ | शब्दसंचयः | केनचिज्जैनमुनिना संकलितः | १७वीं श. | १६ | अपूर्ण |
| ७७ | ७५१८ | शब्दार्थसंग्रह | | १८६१ | ३ | लि. ब्रजवासी सिल्लुः |
| ७८ | ६५०८ | षट्कारकव्याख्यान | भैवानन्द | १८५२ | ११ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|------------------------------------------|----------------------|----------|-------------|---------------------------------|
| ७८ | ७४४४ (१८) | सारस्वत (पञ्चसंध्यन्त) | अनुभूति स्वरूपाचार्य | १८८६ | ३०३-३१० | लि. ऋषिचतुर्भुज उदपुरमेंलिखित |
| ७९ | ५१४४ | सारस्वतसूत्रपाठ | " | १९वीं श. | ८ | |
| ८० | ६७८० | " | " | १९२५ | ८ | लि. किशोरदास हमीरगढ़मध्ये |
| ८१ | ७६६४ | " | " | १८५६ | ११ | |
| ८२ | ४४७० | " (क्रम) | " | १९वीं श. | ८ | |
| ८३ | ४३६५ | सारस्वत प्रथमाधूति (तद्धित प्रक्रियान्त) | माधव | १८४२ | ६६ | लि. मथेरण सरूपचन्द मेड़तानगर |
| ८४ | ६६४१ | सारस्वत (द्वितीयाधूति) | अनुभूति स्वरूपाचार्य | १७वीं श. | ४६ | लि. रघुनाथ |
| ८५ | ६६४२ | " (तृतीयाधूति) | " | १६६८ | १२ | |
| ८६ | ७६४६ | " प्रथमसन्धिसायादीका | " | १९वीं श. | ४ | अपूर्ण |
| ८७ | ४४७२ | सारस्वतप्रक्रिया | " | १७६१ | ५६ | लि. स्था.-सुदामापुर |
| ८८ | ५२४१ | " (पंचसंध्यन्त) | " | १९वीं श. | २३ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ८९ | ५०४५ | " (विसर्गसंध्यन्त) | " | " | १२ | |
| ९० | ६११६ | " | अनुभूति स्वरूपाचार्य | " | ७३ | अपूर्ण |
| ९१ | ६८२३ | सारस्वतप्रक्रिया (सार्य) | " | १८वीं श. | ६ | अपूर्ण |
| ९२ | ६९२३ | " | महीदास | १७वीं | १४ | |
| ९३ | ६५०४ | सारस्वत (आख्यातप्रक्रिया) | " | १८५७ | ५६ | लि. महात्मा रामलाल नेवठा निवासी |
| ९४ | ६९६५ | " | अनुभूति स्वरूपाचार्य | १८८८ | ५८ | |
| ९५ | ६८६३ | " तद्धितप्रक्रियान्त | " | १७४२ | ४४ | |
| ९६ | ७५६६ | " तद्धितप्रक्रिया | " | १९वीं श. | १५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|--------------------------------------------|----------------------------------------------|----------|-------------|----------------------------------|
| ६७ | ६८८६ | सारस्वत (कृतप्रक्रिया) | अनुभूतिस्वरूपाचार्य | १७४७ | ४६ | लि. मुनि तेजपाल सिलीवदग्रामे |
| ६८ | ७५८८ | " (कृतप्रक्रिया) | " | १८५७ | ५५ | लि. महात्मा रामलाल नेवटा |
| ६९ | ७५६८ | " | " | १८१६ | २७ | |
| १०० | ७६३६ | " | " | १९वीं श. | ११२ | लि. देवचन्द्र |
| १०१ | ६००४ | सारस्वतसाधवीवृत्तिः (सिद्धान्तस्तनावली) | साधव भट्ट | १८२५ | | |
| १०२ | ४१६५ | सारस्वतसटीक | अनुभूति स्वरूपाचार्य टी. पुञ्जराजनरेन्द्र | १६५४ | ६२ | |
| १०३ | ४६५६ | " पूर्वार्द्ध | " | १७वीं श. | ५१ | पत्र सं० ३६ से ४२ तक अप्राप्त |
| १०४ | ६८६८ | सारस्वतटीका | पुञ्जराज | १८वीं श. | १०० | आद्य २ पत्र अप्राप्त लि. भैरवबकस |
| १०५ | ५५०२ | सारस्वतचन्द्रिका | चन्द्रकीर्ति | " | २०८ | व्यास कैकड़ी में लिखित |
| १०६ | ६६५५ | सारस्वत (चन्द्रकीर्तिव्याख्या) | अनुभूतिस्वरूपाचार्य | १७वीं श. | १८४ | पत्र ६३, ६४, ६५ अप्राप्त |
| १०७ | ६८८३ | सारस्वतटीका | चन्द्रकीर्ति | १७४५ | १७० | आद्य पत्र १ से १० तक, |
| १०८ | ६८८७ | " | " | १८वीं श. | २४६ | ११८, १३३वां अप्राप्त |
| १०९ | ७४२२ | सारस्वतसटीक | " | १७वीं श. | १८७ | |
| ११० | ७२३६ | " | " | | १२८ | |
| १११ | ७५११ | सारस्वतदीपिका | चन्द्रकीर्तिसूरि | १६४४ | ६५ | |
| ११२ | ४१६६ | सारस्वत (प्रसादटीकोपेत) | वासुदेवभट्ट | १८वीं श. | ७६ | |
| ११३ | ७४६० | सारस्वतवृत्ति (आख्यातपर्यन्त) | गोपाल | " | ११८ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|---------------------------------------------|---------------------|----------|-------------|------------------------|
| ११४ | ६०४७ | सारस्वत (पूर्वार्द्ध) भाषाटीकासह | अनुभूतिस्वरूपाचार्य | १६वीं श. | ५२ | |
| ११५ | ६०४८ | " (कृदन्तप्रक्रिया) | " | " | ६० | |
| ११६ | ५१४६ | सारस्वतधातुपाठ | हर्षकीर्तिसूरि | १८०४ | ४२ | लि. स्था.-मौलत्राण |
| ११७ | ५६५१ | " | " | १६६३ | ६२ | लि. मंगलपुर |
| ११८ | ५६५१ | " | " | १७४५ | ४१ | लि. द्याततमुनि |
| ११९ | ५६८७ | " | पद्मसुन्दर | १८६० | ६ | सावतगंजमध्ये लोहमण्डवी |
| १२० | ६०२३ | सारस्वतरूपमाला | | | | |
| १२० | ६७६३ | सारस्वतीप्रक्रिया | अनुभूतिस्वरूपाचार्य | १८वीं श. | ५३ | लि. रामदास |
| १२१ | ६६६८ | सारस्वतीप्रक्रिया (कृदन्त) | अनुभूतिस्वरूपाचार्य | १८८८ | १७ | लि. " |
| १२२ | ६७५८ | " तृतीयावृत्ति | नरेन्द्रपुरी | १६०७ | ६३ | |
| १२३ | ४२०१ | सारसिद्धान्तकोमुदी | वरदराज | १८६६ | २१ | |
| १२४ | ४२०२ | " | " | १८वीं श. | ४६ | |
| १२५ | ७२०८ | सिद्धहैमशब्दानुशासन | हेमचन्द्राचार्य | १५वीं श. | २५ | |
| १२६ | ४३६८ | " (दुर्गपदव्याख्या) | " | " | ८ | लि. पं. मुखनिधानमुनि |
| १२७ | ५६१७ | सिद्धहैमशब्दानुशासनलघुवृत्ति (अष्टमोऽध्याय) | " | १६४५ | ३४ | |
| १२८ | ५६२० | सिद्धहैमशब्दानुशासनाध्याय चतुष्कावचूरि | " | १६वीं श. | २० | |
| १२९ | ५६१६ | सिद्धहैमशब्दानुशासनपदपादावचूरि | " | " | २७ | |
| १३० | ५६२१ | सिद्धहैमशब्दानुशासनधातुपाठः | " | १८वीं श. | ८ | |
| १३१ | ५६७६ | सिद्धहैमशब्दानुशासनलघुवृत्ति | " | " | ११३ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|------------------------------|--------------------|----------|-------------|------------------------------------------------------|
| १३२ | ५६१४ | सिद्धहैमशब्दानुशासनलघुवृत्ति | हेमचन्द्राचार्य | १५वीं श. | १८ | तृतीयाध्यायस्य तृतीयपादादारभ्य चतुर्थाध्यायपर्यन्तम् |
| १३३ | ५६१८ | " " | " | १६वीं श. | १५ | |
| १३४ | ५६१५ | " " पंचमाध्यायः | " | " | २६ | |
| १३५ | ५६१६ | " " षष्ठसप्तमाध्यायौ | " | " | २५ | |
| १३६ | ५८६८ | सिद्धहैमशब्दानुशासनलघुवृत्ति | हेमचन्द्र | १५वीं श. | ३६ | तृतीयाध्यायस्य तृतीयपादादारभ्य चतुर्थाध्यायपर्यन्तम् |
| १३७ | ५८६७ | " " | " | " | ४७ | तृतीयाध्यायद्वितीयपादान्त |
| १३८ | ७१६० | " " | " | " | २५ | द्वितीयाध्यायद्वितीयपादपर्यन्त |
| १३९ | ७१६४ | सिद्धहैमशब्दानुशासनसूत्रपाठ | " | १५३३ | १० | लि. पं. धर्ममंगलगणि देलुलिप्याम् |
| १४० | ७१६८ | " " | " | १६वीं श. | ५ | |
| १४१ | ५४६६ | सिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजीदीक्षित | १८३४ | ३१२ | |
| १४२ | ७०७४ | " " | " | १८वीं श. | ३५ | |
| १४३ | ४३७५ | " " | " | " | १२३ | द्विखतप्रक्रियान्त |
| १४४ | ५५३६ | " " | " | " | ७३ | तिङन्तप्रकरण |
| १४५ | ४३२१ | " " | " | " | ३०८ | कुदन्तपर्यन्त |
| १४६ | ६७६० | " " | " | १८५४ | ४१ | कृतप्रक्रिया |
| १४७ | ६८०८ | " " | " | १९वीं श. | २०६ | |
| १४८ | ४२७६ | " तत्त्वबोधिनीव्याख्या | ज्ञानेन्द्रसरस्वती | " | १२६ | तिङन्तवाण्ड |
| १४९ | ६४६२ | " " | " | १८३० | ८७ | कुदन्तमात्र |
| १५० | ७१२४ | " व्याख्या | भट्टोजीदीक्षित | १९वीं श. | ३-६४ | |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|-----------------------------------|--------------------|----------|-------------|------------------------------------|
| १५१ | ४३७४ | सिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजि नागेश | १६वीं श. | ३१२ | समासाश्रयविधिपर्यन्त |
| १५२ | ४३७६ | लघुशब्देन्दुशेखरसहित (त्रिपाठ) | भट्टोजि नागेश | " | १२६ | तद्धितप्रक्रिया द्विरुक्तप्रक्रिया |
| १५३ | ६८६५ | सिद्धान्तकौमुदी | रामचन्द्राश्रम | १७८० | ६५ | लि. क. पं. नरसिंह |
| १५४ | ६८६६ | लघुपरिभाषेन्दुशेखरसहित (त्रिपाठ) | " | १६२३ | १४५ | लि. क. लक्ष्मीचन्द्र बलदेव |
| १५५ | ७०६२ | सिद्धान्तचन्द्रिका | " | १६वीं श. | ५६ | |
| १५६ | ६७६८ | " | चन्द्रकीर्ति | १८वीं श. | २५ | लि. लक्ष्मीचन्द्र |
| १५७ | ६८८८ | चुरादिप्रकरण | रामचन्द्राश्रम | १६२५ | ११२ | लि. चक्रपाणि |
| १५८ | ६८८८ | " (कृतप्रक्रियान्त) | " | १८७६ | १४० | |
| १५९ | ५८८२ | सटिप्पण | " | १६वीं श. | ६४ | अपूर्ण |
| १६० | ५८८३ | पूर्वार्द्ध | " | १८वीं श. | ३०३ | |
| १६१ | ७३५० | सटीक | " | १६वीं श. | १४२ | |
| १६२ | ६५२२ | सुबोधनाम्नीव्याख्यापूर्वार्द्ध | सदानन्दगणि | १८८३ | ६ | |
| १६३ | ६२६५ | " | " | १८८३ | ४३ | |
| १६४ | ५६७१ | सिद्धान्तरत्नशब्दानुशासन | जिनचन्द्र | १६वीं श. | १०० | संवत् १६६१ में जोधपुरमें |
| १६५ | ५३८५ (५) | 'सिद्धोसूत्र' (पंचसंधिपर्यन्त) | हेमचन्द्र | १७वीं श. | ४४ | श्री सूरसिंहके राज्यमें रचित |
| १६६ | ५८६६ | हेमघातुपारायण | श्रीवल्लभगणि | " | | |
| १६७ | ५८६८ | हेमलिङ्गानुशासनम् (दुर्गपदप्रबोध) | | | | |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १०-कोषग्रन्थ]

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि जातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|------------------------------------------|----------------------------|----------|-------------|------------------------------|
| १ | ४४८३ | अनेकार्थध्वनिमञ्जरी | काश्मीरक महाक्षणक | १६वीं श. | १३ | लि. क. कन्होराम मिश्र |
| २ | ४४८४ | " | " | १७१४ | २१ | लि. क. नाथूराम त्रवाड़ी |
| ३ | ६३२५ | " | " | १८२५ | १३ | पल्लीवाल |
| ४ | ६३३३ | " | " | १६वीं श. | १६ | लि. क. रामनारायण |
| ५ | ६२२६ | " | " | १८४७ | १७ | आद्य पत्र नहीं । तृतीयसे |
| ६ | ७००२ | " | अमरसिंह ? | १८७४ | १७ | षष्ठकाण्ड तक |
| ७ | ६५६६ | " | हेमचन्द्र | १८८१ | ६ | सारोद्वार टीका |
| ८ | ४३०५ | अभिधानचिन्तामणिनामसाला | हेमचन्द्र | १७वीं श. | ७० | तृतीय काण्डान्त |
| ९ | ४३२२ | " | " | १५३८ | ८१ | स्वोपज्ञ टीका |
| १० | ४३२३ | " | टी. वल्लभगणि | १७वीं श. | २१४ | श्री पत्तनमें लिखित |
| ११ | ४४८१ | " | हेमचन्द्र | १८वीं श. | ३१ | लि. यशोविजय |
| १२ | ६११८ | " | " | १६२७ | १४८ | लि. क. रामकृष्ण ज्योतिर्वित् |
| १३ | ७२१० | " | " | १६०२ | २०७ | विष्णुदुर्गे (कृष्णगढ़ ?) |
| १४ | ५७३४ | " | " | १८५२ | ५६ | स्वोपज्ञ टीका |
| १५ | ७१६५ | " | " | १८वीं श. | ४७ | लि. क. रामकृष्ण ज्योतिर्वित् |
| १६ | ७२३७ | " | " | १७८० | ७० | विष्णुदुर्गे (कृष्णगढ़ ?) |
| १७ | ७३३५ | अभिधानचिन्तामणिटीका | " | १६वीं श. | १६६ | स्वोपज्ञ टीका |
| १८ | ७४५६ | " (व्युत्पत्ति रत्नाकर- नाम्नीवृत्ति) | टी. देवसागर रविचन्द्रशिष्य | १६वीं श. | ४०७ | |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि जातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|-------------------------------|-------------------------|----------|-------------|-----------------------------------------|
| १६ | ४३२४ | अमरकोश (अमरचन्द्रिकाटीका) | डॉ. परमानन्द विष्णुपुरी | १७८३ | ८७ | |
| २० | ४४७३ | अमरकोश (प्रथमकाण्ड) | वण्डिपुत्र | | | |
| २१ | ४४७४ | " (द्वितीयकाण्डान्त) | अमरसिंह | १८२६ | ३८ | |
| २२ | ४४७५ | " (तीनों काण्ड) | " | १६वीं श. | ६३ | |
| २३ | ५४४६ | " सटीक | " | १८६३ | २६ | |
| २४ | ५४६३ | " | डॉ. क्षीरस्वामी | १६५६ | ८१ | मधुपुरीमध्ये केशवराज्ये कालिन्दीतिटे |
| २५ | ६१२६ | " | अमरसिंह | १६वीं श. | १६७ | १५२ वां पत्र अप्राप्त |
| २६ | ६०२६ | " द्वितीयकाण्डान्त | " | १८वीं श. | ३६ | |
| २७ | ६२६८ | " सुधाख्याटीका | डॉ. भानुजी दीक्षित | १६वीं श. | २७७ | |
| २८ | ६४५६ | " | " | १८६५ | ११४ | लि. बलदेव गोस्वामी |
| २९ | ६४५७ | " अमरविवेकाख्या | डॉ. महेश्वर शर्मा | १६वीं श. | ४८ | प्रथमकाण्ड |
| ३० | ६४५८ | " | " | " | १४२ | द्वितीयकाण्ड |
| ३१ | ६५१७ | " तृतीयकाण्ड | " | " | १०८ | "पुण्यपत्तने पाठशालायां |
| ३२ | ६६१३ | " | अमरसिंह | १८६८ | | शिलाधारयन्त्रे मुद्रितम् १७७३ |
| ३३ | ६७४४ | अमरकोषटीका (द्वितीयकाण्डान्त) | " | १६वीं श. | | शाके" ऐसा श्रुतमें लिखा है |
| ३४ | ६८८१ | " सटिप्पण | डॉ. बृहस्पति | १७वीं श. | ४२१ | लि. क. वंशीधर कवीश्वर |
| | | | | १७वीं श. | | ५२वां व ६५ वां पत्र अप्राप्त |
| | | | | | | जीर्ण प्रति |
| | | | | | ६६ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि जातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|------------------------------------------|------------------|----------|-------------|--------------------------------|
| ३५ | ६८८६ | अमरकोषटीका सटिप्पण (द्वितीयकाण्डान्त) | अमरसिंह | १८वीं श. | ५३ | पृथ्वीवर्ग से द्वितीयकाण्डान्त |
| ३६ | ६८९१ | " (अव्ययवर्ग, सविवरण) | " | १७४२(?) | ३३ | अपूर्ण |
| ३७ | ७००४ | " | " | १९वीं श. | ७९से१०६ | |
| ३८ | ७००५ | " (द्वितीयकाण्ड) | " | १८६४ | ११९ | |
| ३९ | ७१३० | " | " | १८९३ | ११२ | चित्र सं० २ |
| ४० | ७७६९ (३) | अमरकोष | अमरसिंह | १८५६ | ९७ | |
| ४१ | ७४६१ | अमरकोषोद्धाटन | क्षीरस्वामी | १६वीं श. | १५१ | |
| ४२ | ५९६८ (१) | एकाक्षरनामकोश | क्षणक | १९वीं श. | १-३ | |
| ४३ | ५४१४ (१) | एकाक्षरीकोष | | १९वीं श. | १-४५ | |
| ४४ | ५९४८ | घनञ्जयनाममाला | घनञ्जय | १६१५ | १७ | |
| ४५ | ५३८५ (३) | " | " | १६वीं श. | १६६-१७७ | |
| ४६ | ६११४ | शारदीया नाममाला | हर्षकीर्ति | १८वीं श. | २३ | प्रदर्शनीय; चित्र २ |
| ४७ | ६७५४ | " | " | १८९९ | २८ | लि. क. मोतीगर गांव लाभूडामध्ये |
| ४८ | ७३७० | " | " | १८९४ | १९ | लि. क. ज्ञानसागर उदयपुरमध्ये |
| ४९ | ५९५० | शिलोञ्छनाममाला | हेमचन्द्र | १६४५ | ३ | लि. क. कुशलगणि वाचनाचार्य |
| ५० | ५९१० | शेषनाममाला | " | १६वीं श. | ६ | स्वोपज्ञ |
| ५१ | ५९३७ | हैमलिङ्गानुशासन सविवरण | " | १७वीं श. | ८० | |
| ५२ | ६१७९ | हैमलिङ्गानुशासन | " | १८वीं श. | ९ | लि. मोहनमुनि बाडोलीग्रामे |
| ५३ | ६९८३ | हैमीनाममाला | " | १७६३ | ६० | |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; ११-ज्योतिष]

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|---------------------------|---------------------------------------------|-----------|-------------|---------------------------------------------------------------------|
| १ | ४७७१ (२) | अङ्कनियण्डु | देवज्ञविनासगत | १८५० | ४५-४६ | * प्रथम पत्र अप्राप्त लि. क. पुरोहित सदाराम लि. स्था. शिवपुरी |
| २ | ६८३३ (६) | अक्षतजोवानाश्लोक | | १८३० | ५०-५१ | |
| ३ | ६२८१ | अक्षरचिन्तामणि | | १० वीं श. | १२२ वीं | |
| ४ | ४४५२ (७२) | अग-यादिचतुर्मुखफल | बलालसेन | १७८७ | १७६ | |
| ५ | ४४४२ | अद्भुतसागर | | | | |
| ६ | ४६३० | अङ्गुतसागर प्रथमखंड | " | १६वीं | १८४ | लि. क. जीवन |
| ७ | ४३१४ | अयनांशादिकरणविधि | | १७३३ | २४ | |
| ८ | ४७६६ (१) | अर्घकाण्ड (साठसंवत्सरोफल) | दुर्गादेव | १७७५ | १० (११) | |
| ९ | ५०६६ | अर्घकाण्डम् | | १६४२ | २ | |
| १० | ५३१५ | अष्टमलग्नवरिसर | | १६वीं श. | ५ | |
| ११ | ७०६६ | अष्टादशयोगाः | गौरीजातकगत | १८वीं श. | ५ | लि. क. जीवन |
| १२ | ४८५२ | अष्टोत्तरीदशाफल | | " | ६ | |
| १३ | ४८७८ | " | हर्षसौभाग्य सूर्यसौभाग्यशिल्प्य विघ्नराज | १६५८ | ११ | |
| १४ | ७०६१ | आकाशपुखचित्र | उदयप्रभ वार्त्तिककारहेमहंसगणि | १८६३ | १ | |
| १५ | ४८६१ | आयप्रश्नग्रन्थ | वाचनाचार्य | १६वीं श. | ५ | |
| १६ | ५६३८ | आरम्भसिद्धिवातिक | उदयप्रभ | १७वीं श. | ६७ | लि. क. जीवन |
| १७ | ५६२७ | आरम्भसिद्धि सावचरि | | १६वीं श. | १४ | |
| १८ | ५२६२ | इष्टशोधनप्रकार | | १६वीं श. | ६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि जातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------------------|------------------------------------------------------------------------------|----------|-------------|--------------------------------------------------------|
| १६ | ५८२७ | उडुदायश्रीप (लघुपाराशरी) | टी.—लक्ष्मीपति कृष्णानन्दसुत गौरीजातकान्तर्गत समरसिंह वृत्तिकार अज्ञात | १६२१ | ५५ | आद्य दो पत्र अप्राप्त |
| २० | ४७५३ | उपदशाकोष्ठकानि | | १६८० | १० | लि. क. नरहरि |
| २१ | ७१०२ | उपदशाफलम् | | १८वीं श. | २ | |
| २२ | ६२८५ | कर्मप्रकाशिकावृत्ति | | १८६३ | १३ | |
| २३ | ७६११ | कर्मविपाक (भर्तृहरिरजेश्वरसंवाद) | | १८४४ | ४ | लि. क. कैशवदास |
| २४ | ७६१५ | कर्मविपाक (सूर्यार्णवगत) | ब्रह्मनारदसंवाद | १८०६ | ५१ | गढ बदनोरमध्ये लि. क. शिवशङ्करव्यास हरिदुर्गमध्ये |
| २५ | ६२३५ | कर्मविपाक | " | १८३२ | ४१ | लि. क. चतुरविजयगणि |
| २६ | ४६६० | करणकुतूहल सस्तवक | | १८५० | २१ | पुष्पावतीनगरे प्रथमपत्र अप्राप्त |
| २७ | ४८७३ | करणकुतूहल | भास्कराचार्य | १७७८ | ११ | लि. क. औदुम्बरज्ञातीय विश्वेश्वरात्मज केवल |
| २८ | ४८८४ | " | " | १७०२ | २२ | श्रीपाटणनगरे हरजीसुत सुरजील्लिखितम् |
| २९ | ५७०५ | " | " | १६वीं श. | १६ | |
| ३० | ६४३५ | " (मूल) | " | १८४४ | १० | लि. क. अजदसुन्दर खेरवामध्ये |
| ३१ | ६८२४ | करणसारिणी (ब्रह्मसुत्य) | विह्वल | १८वीं श. | १६ | प्रथमपत्र अप्राप्त |
| ३२ | ५७११ | कल्पवल्लीहोरा | | १८६४ | ५ | लि. क. ब्रजवासी |
| ३३ | ४८५६ | किरणावली | सूर्यसिद्धान्तगत | १६वीं श. | ३६ | सिल्लु; ललिताघट्टे कादयाम् प्रथम ४ पत्र खंडित |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|------------------------------|--------------------|----------|-------------|-------------------------------------------|
| ३४ | ६०६४ | कामधेनुपद्धति (कामधेनुजातक) | जयराम भट्ट | १८७६ | ७६ | लि. क. जगन्नाथ ध्यास पत्र ६६, ६७ अप्राप्त |
| ३५ | ४६६२ | कामधेनुसारिणी | | १८४४ | १६ | लि. क. चतुरविजयगणि पोहकरणमध्ये |
| ३६ | ५२४६ | कालज्ञान | | १६वीं श. | ५ | |
| ३७ | ५५२६ | केरलजातकरत्नावली | | १६२५ | २१ | |
| ३८ | ५७५८ | केरलप्रद्वन | | १८वीं श. | ५ | |
| ३९ | ६३७७ | केरलप्रद्वनशास्त्र | नन्दराम | १८२४ | २७ | |
| ४० | ७०२५ | केशवीयजातकपद्धत्युदाहरण | विश्वनाथ देवज्ञ | १८वीं श. | २६ | रचनाकाल १५४० |
| ४१ | ६५४० | केशवीयपद्धत्युदाहरण | " | १७६० | २५ | लि. क. उद्यविजय |
| ४२ | ५३१४ | केशवीयपद्धति: | केशव | १८२८ | २२ | लि. क. स्वामीवालचन्द्र खालियरमध्ये |
| ४३ | ७१०० | केशवीयसूत्राणि (जातकपद्धति:) | " | १८वीं श. | ४ | |
| ४४ | ६०६५ | कोष्ठक (नरपतिजयचर्यागत) | नरपति कवि चन्द्र | १६वीं श. | २ | |
| ४५ | ४८८० | खेटकर्म (करणकुसुहलान्तर्गत) | भास्कराचार्य | १७६८ | ६६ | लि. क. गणि भाग्य सौभाग्य रचनाकाल १५३४ आके |
| ४६ | ५७६६ | खेटकुसुहलोदाहति | विश्वनाथ | १६वीं श. | २ | रचनाकाल सं० १६७६ |
| ४७ | ६३८४ | खेटकौतूहलम् | सूरविप्र | १८वीं श. | ३० | रचनाकाल संवत् १६३५ |
| ४८ | ४७३१ | खेटसिद्धि | दिनकर | १६वीं श. | ३ | |
| ४९ | ५७१२ | ग्रहगोचरफल | मिश्र नन्दराम | १६वीं श. | ५ | * रचनाकाल संवत् १८२० स्थान-काम्यकवन |
| ५० | ४१०४ | ग्रहणपद्धति | | १८३२ | | |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग २; ११-ज्योतिष]

[८२]

| क्रमाङ्कः | ग्रन्थाङ्कः | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|-----------|-------------|-----------------------------------|-------------------------|----------|-------------|-----------------------|
| ५१ | ४७६१ | ग्रहणपद्धति | मिश्रनन्दराम | १६वीं श. | ६ | |
| ५२ | ५३२४ | ग्रहभावविचार | विश्वनाथ | १८वीं श. | १० | |
| ५३ | ४८५४ | ग्रहलाघवटीका | गणेशदेवज्ञ टी. विश्वनाथ | " | ५० | |
| ५४ | ४६७७ | ग्रहलाघवटीकोदाहरण | विश्वनाथ | १८४२ | ४१ | लि. क. ऋषि भाणजी |
| ५५ | ७६६३ | ग्रहलाघवसिद्धान्तरहस्योदाहरण | " | १६३० | १४१ | |
| ५६ | ५२१६ | ग्रहलाघवविवरण | विश्वनाथ देवज्ञ | १६२४ | ६२ | पत्र १७वां अप्राप्त |
| ५७ | ५५३८ | ग्रहलाघवाख्यसिद्धान्तरहस्योदाहृति | " | १८०० | ३८ | लि. क. कल्हा कैसोराय |
| ५८ | ४८६२ | ग्रहसिद्धि | महादेव | १८वीं श. | ३ | श्री रूपनगरमें लिखित |
| ५९ | ७६७१ | ग्रहान्तविचारतन्त्र | दुर्गाशङ्कर पाठक | १६वीं श. | १ | |
| ६० | ५१७१ | गणकमण्डन | नन्दिकेश्वर | १७६४ | ५२ | |
| ६१ | ४३६२ | गणितनाममाला | हरिदत्त | १८वीं श. | ४ | * लि. क. जीवकीर्तिगणि |
| ६२ | ४७२० | गणितक्रीमदी | नारायणपंडित | १६वीं श. | ३७ | लि. स्था.-तलवाड़ा |
| ६३ | ४७७१ (१) | गणितलीलावती आदि | (नीसह देवज्ञसुत) | १८०५ | ५४१-४५ | * |
| ६४ | ७१११ | गणितनाममाला | भास्कराचार्य | १८वीं श. | ६ | |
| ६५ | ६७६४ | " | हरिदत्त | १६०६ | ८ | |
| ६६ | ७६१८ | गर्गमनोरमा | गर्गऋषि | १६वीं श. | १० | लि. क. गोपीनाथ |
| ६७ | ६६०४ | गर्गमनोरमा टीका | " | " | १४ | भगवानदास विजयपुरमध्ये |
| ६८ | ७०७८ | गुरुचार | " | १८८० | ३७ | " |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|---------------------------------------------------------------------------|-----------------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------------------------------------|
| ६६ | ५६३६ | गूढार्थप्रकाश पूर्वखण्ड (सूर्यसिद्धान्तकी टीका) | रङ्गनाथ | १६०६ | १८६ | |
| ७० | ५७७५ | गृहप्रवेशप्रकरण (अमिताक्षरा व्याख्यासहित, मुहूर्तचिन्तामण्यन्तर्गत) | रामदेवज्ञ | १६वीं श. | १२ | र. का. भुज-भुजेषुचन्द्रािमते शके (१५२२) |
| ७१ | ६७६१ | गोचरग्रहप्रकाश | श्रीपति भट्ट | १६वीं श. | ४ | |
| ७२ | ५६४६ | गोतमीयजातक सटीक (त्रिपाठ) | गोतम मुनि टीका-लक्ष्मीपति | १८८४ | ६ | |
| ७३ | ५८०८ | चन्द्रसूर्यग्रहणविधि | | १६वीं श. | १६ | |
| ७४ | ४७४५ | चन्द्रार्की | | १८वीं श. | १४ | |
| ७५ | ४८७० | " | दिनकर | १८३६ | ३ | लि.क. औमुम्बर शिवानंद वाटोजाख्ये ग्रामे रचना |
| ७६ | ४८६३ | चन्द्रार्की पद्धति | | १८वीं श. | ३ | |
| ७७ | ५२६३ | चन्द्रोन्मीलनदोषिका | | १६२१ | ४३ | |
| ७८ | ४६७२ | चमत्कारचिन्तामणि | नारायण | १६०० | ७ | |
| ७९ | ६८३३ (८) | " | | १८५० | ४०-५० | गोस्वामी भोलानाथजीकी पोथीसू लिखी कृष्णगढ मध्ये |
| ८० | ५५४४ | " (त्रुटित) | | १८३० | ८ | लि.क. राधाकृष्ण ब्राह्मण |
| ८१ | ४६६८ | चमत्कारचिन्तामणिटीका अन्वयार्थदोषिका | नारायण, टी० धर्मेश्वरमालवीय | १६०१ | २८ | लि.क. सायलपुर वास्तव्य श्रीदीच्यज्ञातीय व्यास श्रीकेशवजी यादवजी, सरधर मध्ये |
| ८२ | ५७७१ | चमत्कारचिन्तामणिव्याख्या | सू० नारायण | १८४० | १६ | लि.क. चन्द्र मिश्र |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-----------------------------------|---------------------|----------|-------------|------------------------------------|
| ८३ | ६६२६ | चमत्कारचिन्तामणि सटीक | नारायण | १८२८ | ३० | लि.क. कंवर विजयलालराम |
| ८४ | ४६६४ | " सस्तवक | राजर्षिभट्ट | १८२४ | १२ | " प्रमोद विजय |
| ८५ | ४६७२ | " सार्थ | | १८२१ | २१ | प्रति कीटविद्ध है |
| ८६ | ५०५१ | चौरयोगप्रकरण | | १६०६ | ११ | लि.क. महात्मा जोशी पन्नालाल |
| ८७ | ६७७७ | चौरासीदोषनामानि | कालिदास | १६वीं श. | १ | |
| ८८ | ५६२४ | ज्योतिर्विदाभरण | " टीका-भावमुनि | १६०३ | १०० | रचनाकाल सं० २४ (?) |
| ८९ | ६६०४ | ज्योतिर्विदाभरणटीका | शेषनाग | १६वीं श. | २१८ | अपूर्ण |
| ९० | ५७२१ | ज्योतिश्शास्त्रभाष्य | | १८७५ | ३२ | |
| ९१ | ६८३३ (७) | ज्योतिष के स्फुट श्लोक | महादेव (होरामणिसुत, | १६वीं श. | ३७-३६ | |
| ९२ | ४६६६ | ज्योतिश्चन्द्रार्क | हेरम्बपौत्र) | १८३६ | ५१ | रचनाकाल सं० १७८३ |
| ९३ | ५२६६ | ज्योतिषनिबन्ध | | १८वीं श. | ४५-७५ | लि.क. नन्दराम |
| ९४ | ४८६६ | ज्योतिषमकरन्द | अमरसिंहसूनुनन्दन | " | ६ | अपूर्ण |
| ९५ | ७०६७ | ज्योतिषमाला | | १८वीं श. | २ | लि.क. यति भवानीराम |
| ९६ | ४२८६ | ज्योतिषरत्नमाला | श्री श्रीपति | १७वीं श. | १६ | ग्रामभूरा मध्ये * |
| ९७ | ४४०५ | " | " | १६४६ | ३३ | * प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ९८ | ४७६८ | " | टीका-वैजार्ण्डित | १७५७ | १०७ | |
| ९९ | ६८७७ | " | श्रीपतिभट्ट | १७५५ | १७ | लि.क. राजसोम |
| १०० | ७०४६ | " | " | १७४६ | ५७ | " व्यास चतुर्भुज |
| १०१ | ७०६६ | ज्योतिषरत्नमाला (वृन्दावनशास्त्र) | | १८वीं श. | ३ | विवाह सम्बन्धी लग्नदोषादि का वर्णन |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------------|------------------------|----------|-------------|----------------------------------------------------------------------|
| १०२ | ६३५० | ज्योतिषरत्नमाला षट्षोडशिका | श्रीपति | १६२० | ८२ | योगिनीपुरमध्ये लिखित |
| १०३ | ६२७८ | ज्योतिषसार भुवनदीपक आदि | " | १६वीं श. | ४४ | लि.क. गम्भीरचन्द खिलचीपुर |
| १०४ | ७८२५ | ज्योतिषरत्नमालाव्याख्या | " | १८७१ | ६४ | अपूर्ण |
| १०५ | ६६७२ | ज्योतिषसंग्रह गुटका | " | १६वीं श. | १५५ | |
| १०६ | ५८१३ | ज्योतिषसार | " | १६वीं श. | ६८ | |
| १०७ | ४८६१ | " सस्तबक | " | १८वीं श. | २० | |
| १०८ | ४४०७ | ज्योतिषसारसंग्रह (सस्तबक) | अज्ञात | १७८६ | २५ | * लि.क. पं० श्री खुसालसागर गुणविजय स्थान-नरायणानगर |
| १०९ | ४४१० | " (सार्य) | " | १८वीं श. | २६ | * |
| ११० | ६५३७ | " (सस्तबक) | " | १८१७ | ३३ | लि.क. नवनिधिविजय महिमापुरमध्ये |
| १११ | ५६३१ | ज्योतिषसिद्धान्तसार | मथुरानाथ मालवीय श्रुवत | | | रचनाकाल शके १७०४ |
| ११२ | ४८६४ | जगद्भूषण | हरिवत्त भट्ट | १७वीं श. | ४ | डालचन्द्र नृपतिराया ग्रन्थ रचना महाराणा जगतसिंह नामाङ्कित जगद्भूषण । |
| ११३ | ४७१० | जगद्भूषणसारिणी | | १८२६ | ६५ | रचनाकाल-सं० १६६५ |
| ११४ | ४७२७ | " | | १६वीं श. | ६० | रचनाकाल सं० १७६८ |
| ११५ | ४७८७ | " | | १८वीं श. | ५५ | लि.क.माणिक्यविजय ज्ञान- |
| ११६ | ४८८२ | " | | १७३७ | ५३ | विजयविश्व चन्देलगाममध्ये |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------------------|----------------------|----------|-------------|-------------------------------------------------|
| १३४ | ५५०६ | जातकग्रहफल (जातकपद्धति) | महादेवदेवज्ञ | १७५२ | २४ | लि.क. कल्याणहंसगणि अमरगबाद |
| १३५ | ४६६१ | जातकदीपिका | हर्यायजय | १८८६ | ७ | लि.क. नरेन्द्रविजय राजस्थानी भाषासहित |
| १३६ | ४६६६ | " | " | १८४९ | ६ | |
| १३७ | ४८४२ | " (सस्तवक) | " | १८२२ | १८ | लि.क. श्रीकमजीशिशय |
| १३८ | ४५२२ | जातकदीपिकाभिधानपद्धति (सस्तवक) | " | १८६२ | ११ | रचनाकाल सं० १७६५ रचनास्थान नराकरपत्तन |
| १३९ | ४७०५ | जातकपद्धति | केशव | १८१४ | ५ | लि.क. ऋषि मेघजी स्थान पोचुमंदपुर |
| १४० | ४६६३ | " | " | १८६६ | ६ | लि.क. शिवलाल |
| १४१ | ७१६२ | " (उदाहरण) | विश्वनाथ | १८३६ | ३७ | |
| १४२ | ५४३३ (२) | जातकरत्न (जैमिनीयसूत्रसार) | मदनस्वामी | १९वीं श. | ५५-५६ | अपूर्ण |
| १४३ | ५६१३ | जातकसंग्रह | | १९वीं श. | २१३ | रचनाकाल सं० १९०० |
| १४४ | ५०४७ | जातकसार | | १८वीं श. | ३ से १६४ | अपूर्ण |
| १४५ | ६३६१ | " (चमत्कारचिन्तामणिभाषाटीका) | विद्वत्सारायण | १८१७ | ११ | राजस्थानी भाषासहित |
| १४६ | ६३६३ | " | " | १८२७ | १७ | श्रीकृष्णगढ में लिखित |
| १४७ | ६७६४ | जातकाभरण | दुण्डिराज | १८७८ | ६० | राजस्थानी भाषासहित |
| १४८ | ५३०६ | जातकालङ्कार | गणेशदेवज्ञ | १९०६ | ३७ | लि. कल्याणपुरीमध्ये लि.क. रामवल्लभ अपूर्ण |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------------|------------------------|----------|-------------|----------------------------------------------|
| १६६ | ६२४२ | ताजिकभूषण | गणेशगणक दुर्धिराजात्मज | १८२१ | ३१ | लि. मन्तसाराम उपाध्याय |
| १६७ | ७०५३ | " | " | १७४३ | ४२ | लि. चतुर्भुज व्यास कृष्णगढमध्ये |
| १६८ | ७१२७ | " | " | १८६१ | ४३ | लि. आत्माराम तिवारी पत्र ६ से १३ अप्रान्त |
| १६९ | ५४५३ | ताजिकभूषणटीका बालबोधिकाख्या | मुञ्जादित्य | १६वीं श. | ४२ | |
| १७० | ४७७० | ताजिकसार जिणरस | हरिभट्ट | १८७१ | ६४ | भाषार्थसहित अपूर्ण |
| १७१ | ४८४६ | ताजिकसार | " | १८०५ | १६ | लि. क. मुनि गांगजी मुनिजी धनजीशिव्य |
| १७२ | ६०५५ | " | " | १७३६ | २६ | |
| १७३ | ६८७८ | " | " | १७६५ | २३ | |
| १७४ | ६४२० | ताजिकसारवृत्ति | सामन्तहर्षरत्नशिष्य | १८वीं श. | २३ | * |
| १७५ | ७४५५ | ताजिकसिद्धान्तसार | समरसिंह | १८६४ | २५ | लि. फतेहचन्द मारोठ स्या. सीकर |
| १७६ | ४६६० | ताजिकालंकार | सूर्यकवि | १८४१ | १० | लि. उदयराम ब्राह्मण |
| १७७ | ७०६५ | ताजिकालङ्कार | " | १८४६ | | लि. क. शिवशङ्कर |
| १७८ | ५३५० | ताजिकोदाहरण | नीलकण्ठ | १६वीं श. | २३ | अपूर्ण |
| १७९ | ५१२७ | तात्कालिकचतुर्विधविवरण | शामभवैद्यनाथ | १६०० | १२ | लि. अखैराम |
| १८० | ७५७६ | तारावित्तास | | १६वीं श. | २ | लि. रामगोपाल |
| १८१ | ४७४४ | तिथिकल्पद्रुम | गणेशदेवस | १८वीं श. | १५ | राजस्थानी भाषासहित |
| १८२ | ४७६२ | तिथिचिन्तामणि | | " | १८ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|---------------------------|-------------------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------|
| १८३ | ४७४२ | तिथिमञ्जरी | | १८वीं श. | २२ | राजस्थानी भाषासहित १६०३ शाके का उदाहरण है। |
| १८४ | ७५६६ | द्वादशभावफल | | १८२३ | ३६ | |
| १८५ | ४७७२ | द्वादशभावश्लोक | | १६वीं श. | १४ | लि.क. सीताराम चांदसेणमध्ये |
| १८६ | ४७१३ | दशाफल | | " | ३ | |
| १८७ | ४८६७ | दीपप्रकाश (वृद्धपाराशरीय) | (ताजिकरत्नान्तर्गत) | १६२६ | ४५ | |
| १८८ | ७३८० | दीपवृत्त्या | | १८वीं श. | १ | लि.क. बाछूराम व्यास |
| १८९ | ५७५१ | ध्रुवभ्रमयन्त्र | नर्मदाप्रसादसुत | १६१४ | ६ | जाट का कूवा जयपुर |
| १९० | ५५५५ | नरपतिजयचर्या | नरपतिकवि | १८वीं श. | १७७ | राजस्थानी श्रथ सहित |
| १९१ | ५८३० | (जयलक्ष्मीनाम्नीटीकासहित) | | | | लि.कं. व्रजवासी, जयपुर |
| १९२ | ५६४० | नरपतिजयचर्या | " | १८६६ | | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| १९३ | ६०६१ | " (भूवलपर्यन्त) | " | १७५८ | १२६ | * ७३वां पत्र अप्राप्त |
| १९४ | ६६१० | " | " | १६वीं श. | ६० | लि. परमानन्द मिश्र |
| १९५ | ७१३२ | " | " | १६वीं श. | ४३ | चित्रयन्त्रयुक्त |
| १९६ | ७८३६ | " | " | १६वीं श. | ६१ | १ से १६ व ८४ से ८८ तक अप्राप्त |
| १९७ | ७५८७ | नरपतिजयचर्याटीका | " | १८४६ | ३६-८० | अपूर्ण |
| १९८ | ४७७१ (३) | नवग्रहयन्त्रविधि | " | १६वीं श. | १२४ | अपूर्ण, रचना १२३२ (?) |
| १९९ | ४८५१ | नवरोजप्रकाश | महाभारतान्तर्गत शिवलालपाठक | १६वीं श. | ६७ | पत्र ३, ६, २७, अप्राप्त |
| | | | | १८०५ | ४६-५२ | |
| | | | | १६वीं श. | ३ | * |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------------------|--------------------------|----------|-------------|--------------------------|
| २०० | ७८१८ | नष्टजातक | (चन्द्रसंहितान्तर्गत) | १८वीं श. | ७६ | * |
| २०१ | ७०८८ | नष्टोद्दिष्टविधिः | | " | २ | |
| २०२ | ४७७१ (४) | नक्षत्रनिघंटु, ग्रहनिघंटु | | १८०५ | ५३-५४ | |
| २०३ | ७६५२ | ताडोसमुच्चय | नारचन्द्र | १६वीं श. | ३ | |
| २०४ | ७६६६ | नारचन्द्र | " | १८६६ | १८ | लि.क. अमृतविजय |
| २०५ | ६८२१ | " प्रथम प्रकरण | " | १७५६ | ११ | लि.क. रतना तिलकधोरशिष्या |
| २०६ | ४७४७ | " | " | १८वीं श. | १४ | जैतारणमध्ये |
| २०७ | ७०१० | " य प्रकरण | " | १८०६ | २७ | * |
| २०८ | ४३५२ | नारचन्द्रयंत्रकोट्टार सटिप्पण | " टी. श्रीसागरचन्द्रसूरि | १६५१ | ३० | लि. स्था. कोरंटातनगर |
| २०९ | ६६५० | नारचन्द्र सटिप्पण (प्रथम प्रकरण) | टी. सागरचन्द्रसूरि | १८वीं श. | २६ | राजस्थानी भाषासहित |
| २१० | ६७७६ | नारचन्द्रसूत्र | नारचन्द्र | १७६६ | १६ | अपूर्ण |
| २११ | ५३३६ | निबन्धचूडामणि | मिश्र यशोधर | १६वीं श. | ६६ | |
| २१२ | ६२५२ | " | कंसारिमिश्रात्मज | | | |
| २१३ | ६७०३ | प्रश्नकौमुदी (ताजिकमतानुसार) | " | १७५१ | २० | |
| २१४ | ४८६८ | प्रश्नग्रन्थ | " | १६२५ | ४८ | |
| २१५ | ५०६३ | प्रश्नचूडामणि | " | १८वीं श. | २२ | |
| २१६ | ४६८३ | प्रश्नचूडामणिसार | " | १६वीं श. | २३ | |
| २१७ | ५८११ | प्रश्नतत्व | चक्रपाणि सत्यधरात्मज | १६४३ | ७ | लि. बुद्धिसागरगणि |
| | | | | १६वीं श. | १६ | काच्छदेवसमर्थे |

| क्रमाङ्क | ग्रथाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|----------|----------------------------------------------|----------------------|---------------|-------------|----------------------------------------------------------------------------------------------|
| २१८ | ५५६७ | प्रश्नतन्त्र | दुर्योधन | १८३८ | ३१ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| २१९ | ५२६० | प्रश्नप्रकरण | नीलकण्ठ | १९वीं श. | ५ | |
| २२० | ५७६८ | " (ज्योतिषकौमुदीगत) | " | १८८८ से पूर्व | २८ | |
| २२१ | ४८६४ | " | काशीनाथ | १९वीं श. | ४४ | आद्य पत्र खंडित |
| २२२ | ४७१४ | प्रश्नप्रदीपक | " | " | ११ | |
| २२३ | ५२६७ | " | गर्ग | १८वीं श. | ८ | |
| २२४ | ४७५५ | प्रश्नमनोरमा | " | " | २ | |
| २२५ | ५२६१ | " | " | १९वीं श. | ४ | |
| २२६ | ५७२४ | " सटीक | " | १८वीं श. | ५ | लि.क. विद्यार्थी लोकमणि, काठ्याम् अपूर्ण * अपूर्ण रचनाकाल १८२४ टीका रचना १८२७ |
| २२७ | ७५०१ | प्रश्नमाणिक्यमाला | परमानंद शर्मा | १९वीं श. | १७८ | |
| २२८ | ४१८३ | प्रश्नमार्ग | अज्ञात | " | १९६ | |
| २२९ | ५६३५ | प्रश्नरत्न (सट्टिपण) (त्रिपाठ) (स्वोपज्ञ) | नन्दराम कामानिवासी | " | ४९ | |
| २३० | ५३३८ | प्रश्नरत्न (केरलीय) | नंदराम मिश्र | १८३७ | ८ | |
| २३१ | ५२३९ | न वद्या | | १९वीं श. | ८ | द्वितीय पत्र अप्राप्त |
| २३२ | ४७१९ | प्रश्नवैष्णव | नारायणदास सिद्ध | १९१५ | ४७ | लि.क. केवलचन्द्र गोविन्दजी |
| २३३ | ५२६९ | " | ब्रह्मदासमुत " | १८वीं श. | ३४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------------------------|------------------------------|----------|-------------|-------------------------------------------|
| २३४ | ६४३२ | प्रश्नवैष्णव | नारायणदास सिद्ध ब्रह्मदाससुत | १६वीं श. | २६ | |
| २३५ | ७०५० | " | " | १८वीं श. | २७ | |
| २३६ | ५५३४ | " | " | १६वीं श. | ३४ | अपूर्ण |
| २३७ | ४६०० | प्रश्नशत | | १७६७ | २३ | |
| २३८ | ४७३६ | " (प्रश्नज्ञान) | भट्टोत्पल | १७६४ | ४ | यह ग्रन्थ ७० श्रार्या छन्दोंमें आबद्ध है। |
| २३९ | ६५११ | प्रश्नशास्त्र (बादरायण) | उत्पल भट्ट | १८५३ | ६ | |
| २४० | ४७४० | टीका चिन्तामणिनाम्नी | | १७१० | ७ | |
| २४१ | ५५०५ | प्रश्नशास्त्रटीका | रुद्रमणि | १६२४ | १५ | आद्य दो पत्र अप्राप्त |
| २४२ | ४६६५ | प्रश्नशिरोमणि | | १६वीं श. | ८ | |
| २४३ | ४८८३ | प्रश्नसंग्रह | | १८८१ | ८ | |
| | | प्रश्नसंग्रहसार, हंसचक्र- अवधिविचार | | | | |
| २४४ | ५२६६ | प्रश्नसंग्रह | भट्टोत्पल | १६वीं श. | १७ | |
| २४५ | ५५३२ | प्रश्नसप्तति | जीवा गुर्जर याज्ञिक नरहरिसुत | १६०६ | १७ | लि.क. पुरुषोत्तम मिश्र |
| २४६ | ७७१५ | प्रश्नसार | गोविन्ददेवस विष्णुदेवससुत | १८६२ | ३ | लि.क. वज्रवासी सिल्लुः |
| २४७ | ६४६५ | प्रश्नसार (सटीक) | लालमणि (जगन्नामात्मज) | १८२७ | १३ | राजस्थानी भाषा सहित |
| २४८ | ४६७० | प्रश्नसुधाकर | भट्टोत्पल | १६वीं श. | ८१ | |
| २४९ | ५७४३ | प्रश्नज्ञान (आर्यासप्तति) | | १६७० | ४ | |
| २५० | ५४६४ (२) | प्रश्नोत्तरीरत्नमाला | | १६२८ | ४ | |
| २५१ | ५७३१ | प्रासादमण्डन | सूत्रधार मण्डन | १६२८ | २८ | लि.क. गोपाल |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|---------------------------|-------------------------------|-----------|-------------|--------------------------|
| २५२ | ६०६६ | पञ्चतत्त्वविचार | रुद्रोवत | १६वीं श. | ४ | राजस्थानी भाषा सहित |
| २५३ | ५५३५ | पञ्चपक्षी सटीक त्रिपाठ | डो. कल्याणकर | १६२४ | १५ | लि.क. पुरुषोत्तम |
| २५४ | ५७६३ | पञ्चपक्षीसटिप्पण | महादेव | १६०८ | २ | लि.क. ब्रजवासी, मथुरा |
| २५५ | ४४५२ (३६) | पञ्चपक्षीप्रश्न | | १८वीं श. | ४२-४३ | * लि.क. पं. प्रीतसौभाग्य |
| २५६ | ४५२३ | पञ्चपक्षीशकुन | | १८३१ | २ | स्था. वणहेड़ा ग्राम |
| २५७ | ६५२४ | " | वालकृष्ण | १६२४ | ११ | लि.क. नागेश्वर |
| २५८ | ७६७२ | पञ्चश्लोकीताजिक टीका | | १८६३ | ५ | प्रथम पत्र अप्रान्त |
| २५९ | ६५२४ | पञ्चशर (पञ्चस्वरा) | परममुखोपाध्याय | १६वीं श. | ६ | लि.क. ब्रजवासी सिल्लुः |
| २६० | ५७५३ | पञ्चशरनिर्णय (पञ्चस्वर) | प्रजापतिदास | " | ५ | वाराणस्यां ललिताघट्ट |
| २६१ | ५६४० | पञ्चशरविवृति (पञ्चस्वरा) | " अप्पय दीक्षित | १६७६ शाके | १४ | |
| २६२ | ५७३० | पञ्चस्वरा (द्वितीयाध्याय) | परममुखोपाध्याय | १६वीं श. | ६ | |
| २६३ | ५६८३ | पञ्चसिद्धातमत्त | शतानन्द गंगाधर | १८६२ | १२ | लि.क. ब्रजवासी सिल्लुः |
| २६४ | ५७६६ | (भास्वत्युदाहरण टीका) | बाबादैवज्ञ, रामपुत्र, शिवानुज | १६०७ | ५ | मण्डीमध्ये |
| २६५ | ६७५६ | पञ्चाङ्गाभिधपत्र | | १६वीं श. | ७ | मुसुजगेश्वरप्रोत्यै रचित |
| २६६ | ७७१६ | (लग्नसाधनविधि) | शङ्कराचार्य | १६वीं श. | | लि.क. ब्रजवासी काश्याम् |
| २६७ | ४७४८ | पञ्चाशत्प्रश्न | दिवाकर | १८६२ | ६ | राजस्थानी सहित |
| | | पद्धतिप्रकाश | | | ६ | लि.क. जोशी आशाराम |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------------------------------|--------------------------------|----------|-------------|----------------------------------------------------------|
| २६८ | ४८६३ | पद्धतिप्रकाश | दिवाकर | १६वीं श. | ८ | * |
| २६९ | ४८६६ | पद्धतिप्रकाशोदाहरण (गणिततत्त्वचिन्तामणेः) | " | " | ४९ | |
| २७० | ४६६५ | पद्मकोश | | " | १० | |
| २७१ | ७६६६ | " | गोवर्द्धन कण्डोलक द्विज रामसुत | १८७२ | ९ | रचनाकाल १६०१ लि.क. धीरा, रूपनगर |
| २७२ | ६३०९ | पद्मताजिक | | १६वीं श. | १६ | |
| २७३ | ५८१५ | पवनविजयग्रन्थ | ईश्वरप्रोक्त | १६०५ | १८ | |
| २७४ | ५७७६ | पवनविजयस्वरोदय | शिवप्रोक्त | १६वीं श. | १२ | |
| २७५ | ७०९१ | पञ्चीमागदर्शन, योगसंग्रह | | १८वीं श. | ८४ | अपूर्णा/राजस्थानीअर्थसहित/पत्र १-१४ व १६वां. अप्राप्त |
| २७६ | ६२८४ | पाराशरीहोरा | | १६वीं श. | ३१ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| २७७ | ४७३९ | पाशाकैवली | गर्गाचार्य | १७९१ | १० | लि.क. आ. नागरेण द्वारा |
| २७८ | ४७५२ | " | " | १६वीं श. | ६ | लिखित हरिदत्तजी पठनार्थ |
| २७९ | ६२५७ | " | " | " | १६ | लि.क. अमरचन्द्र |
| २८० | ६४३१ | " | " | " | ९ | " गुरुदयाल सौदावादासी |
| २८१ | ६६२० | " | " | १६२७ | ११ | * |
| २८२ | ४६७८ | पैतामहीसारिणी | मधुसूदन देवज्ञ श्रीपतिशिव्य | १६वीं श. | ३ | लि.क. पुण्यत्रिजय श्रीमत्पत्तनपत्तने |
| २८३ | ६४२८ | फलकल्पलता (वार्तिक) | | १७७४ | ५ | लि.क. हेमसागरशिव्य |
| २८४ | ४७३५ | ब्रह्मतुल्यगणितक्रम | करणकुतूहलगत | १८८४ | ३५ | गुमानसागर |

| क्रमाङ्कः | ग्रन्थाङ्कः | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|-----------|-------------|------------------------------------------------|------------------------------------------------|----------|-------------|------------------------------------|
| २८५ | ५६४२ | ब्रह्मतुल्योदाहरण (कुलभाष्य) | शाकल्यसंहितागत | १६वीं श. | ५२ | आद्यपत्र अप्राप्त । लिपिस्थान काशी |
| २८६ | ५८२६ | ब्रह्मसिद्धान्त | टी. पद्मनाभ नर्मदात्मज | " | ४५ | लि.स्था.मथुरा। लि.क. जटमल गौड़ |
| २८७ | ६१७८ | " सटीक | श्रीलान्द्विदत्तद्विज | १७०० | ७८ | श्रीपतिपादपद्मभूषणः |
| २८८ | ४८६५ | वानवोगिनी | श्रीलान्द्विदत्तद्विज | १६वीं श. | ७ | श्रीलान्द्विदत्तद्विजः |
| २८९ | ४२७७ | बालावबोध | भुज्जादित्य | १७६९ | १७ | * लि.क. खरतराजश्रेष्ठ वालचन्द्र |
| २९० | ४२५८ | बालबोध | " | १८४७ | ३४ | स्थान. पारापुर/प्रथम पत्र अप्राप्त |
| २९१ | ४७२८ | " | " | १६वीं श. | १२ | लि.क. गंगाविष्णुकान्धकुब्ज |
| २९२ | ४८७६ | " | " | १८७६ | ४८ | स्थान नगर बौली |
| २९३ | ७०३४ | " | " | १६वीं श. | २१ | वंकपुरमध्ये लिखितम् |
| २९४ | ७११२ | " | हरिकर्ण | १८वीं श. | २ | अपूर्ण |
| २९५ | ५६२६ | बीजगणितबालबोधिनीटीका | भास्कराचार्य टी. कृपाराममिश्र | १८वीं श. | २६ | * लि.क. वजवासी सिल्लुः काशी |
| २९६ | ६२१२ | बीजवासनाभाष्य | व्रजनाथसूनु | १७७६ | १५४ | रचनाकाल शके १७१४ |
| २९७ | ५७४७ | बृहच्चिन्तामणिवासनाभाष्य (संज्ञाध्यायमात्र) | सू. गणेश देवज्ञ टी. विष्णु देवज्ञ दिवाकरसुत | १६वीं श. | २१ | * आद्य १९ पत्र अप्राप्त |
| २९८ | ४१८६ | बृहज्जातक | वराहमिहिर | १६वीं श. | ६६ | * पत्र ४३, ४४, ४५ अप्राप्त |
| २९९ | ४६५८ | " | " | १८६५ | ५८ | लि.क. जोसी जीवणराम |
| ३०० | ४६६७ | " | " | १८०१ | २१ | " सारङ्ग नरपति |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-------------------------|--------------------|----------|-------------|----------------------------------|
| ३०१ | ४६६७ | बृहज्जातक | वराहमिहिर | १८३७ | ४६ | लि.क. महाराजा प्रतापसिंह राज्ये |
| ३०२ | ४८८६ | " | " | १७२३ | ५० | आद्यन्तपत्र खंडित |
| ३०३ | ४६७४ | " | " | १८६६ | ७२ | लि.क. सदासुख |
| ३०४ | ६१०५ | " | " | १८३५ | १६ | लि.क. स्वामीबालचन्द्र स्थान—नरवर |
| ३०५ | ६२०८ | " | " | १८६३ | १८६ | |
| ३०६ | ७०५५ | " | " | १८४१ | ५५ | |
| ३०७ | ७०१३ | " (उपसंहाराध्याय) | " | १७८५ | १६ | लि.क. स्थान—कुण्ठगढ़ |
| ३०८ | ५३२६ | बृहज्जातकटीका | भट्टोत्पल | १६वीं श. | ६६ | १, २, ३४, ४४ पत्र अप्राप्त |
| ३०९ | ६२३६ | बृहज्जातकविवरण | महीधर | १८५१ | ८४ | |
| ३१० | ५५३१ | बृहज्जातक (सट्टिपण) | वराहमिहिर | १६२२ | ३४ | |
| ३११ | ५८२८ | " | " | १६वीं श. | ४६ | अन्तिम पत्र अप्राप्त |
| ३१२ | ७६२२ | बृहत्संहिता | " | १६वीं श. | १७४ | |
| ३१३ | ५५३६ | बृहत्सारचन्द्रसारीद्वार | नारचन्द्र | १८वीं श. | १० | |
| ३१४ | ५५४० | " | " | १७वीं श. | १८ | |
| ३१५ | ५६६८ | बृहत्स्युक्तिकाण्ड | शिवपार्वती संवाद | १६वीं श. | ६ | |
| ३१६ | ४६८१ | भ्रमणसारिणी | | १६वीं श. | १३८ | |
| ३१७ | ५६४८ | भावविवृति | माधव | १८६० | १८ | लि. शिवदास वाराणसी |
| ३१८ | ४७६४ | भावाध्याय | ताजिकभूषणमत | १६वीं श. | ५ | |
| ३१९ | ४७१८ | " | रत्नसारान्तर्गत | १८१० | १६ | लि.क. ऋषि नागजी |
| ३२० | ४८५३ | भावेशफल | | १६वीं श. | १३ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-------------------------------------------|-------------------------------|----------|-------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ३२१ | ५७३५ | भावैशफलाध्याय | जातककामधेनुगत | १६०२ | | लि.क. ब्रजवासीसिल्लुःरीमापुरे |
| ३२२ | ६८६६ | भास्वती | शतानन्द | १६०२ | १५ | ” ऋषि लाला लक्ष्मीचन्द्र |
| ३२३ | ४६६३ | भुवनदीपक | पद्मप्रभसूरि | १७०२ | ४ | ” मुनि दामाध्व |
| ३२४ | ५७०८ | ” | ” | १६वीं श. | ६४ | रचनाकाल—शके पंचरसाधने: |
| ३२५ | ४७५० | ” सस्तबक | ” | १६वीं श. | १० | राजस्थानी भाषा सहित |
| ३२६ | ४४११ | ” सटीक | ” टी. सिंहलिलक | १६वीं श. | ५३ | * टीका रचनाकाल-१३२६ |
| ३२७ | ४४५२ (८१) | भैरवीचक्र | | १६वीं श. | १२३वां | स्थान—बीजापुर इस चक्रमें दिशानुसार भैरवीके बोलने पर शुभाशुभ फलका निर्णय किया गया है लि.क. आनंदसिंह |
| ३२८ | ६३०१ | मकरन्दकारिका | कृपाराम | १६२२ | ६ | |
| ३२९ | ७५१६ | मकरन्दभावविवृति | नीलकण्ठ | २०वीं श. | ५ | |
| ३३० | ५७३२ | मकरन्दविवरण | दिवाकर नृसिंहसुत | १८६४ | ६ | लि.क. ब्रजवासी सिल्लुः मणि- कर्णिकातीरे |
| ३३१ | ७५१५ | ” | श्रीपतिभट्ट | १६३६ | १२ | |
| ३३२ | ७५१६ | ” | दिवाकर नृसिंहसुत शिवगुरुशिष्य | १६३६ | २१ | |
| ३३३ | ६२७५ | मकरन्दसाधनप्रक्रिया | चूड़ामणिचक्रवर्ती | १८६० | १२ | |
| ३३४ | ५७६४ | मकरन्दोदाहरण (सूर्यसिद्धांतमत्तानुसार) | विश्वनाथ | १६वीं श. | १६ | |
| ३३५ | ५८२२ | मकरन्दोदाहरण | ” | १८६७ | २७ | पत्र १ व ८वां अप्राप्त |
| ३३६ | ५८१० | मकरन्दोदाहृति | ” | १६३६ | ५७ | |
| ३३७ | ६८५६ | मकरसंक्रान्तिपत्रक (खरडा) | | १६वीं श. | १ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|---------------------|----------------------------------------|----------|-------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ३३८ | ६६४३ | मयूरचित्र | नारदश्रोक्त | १८६८ | २० | लि.क. मिश्र भवानीदास, जयनगर |
| ३३९ | ४२८४ | " (मयूरपदपूर्वक) | " | १८६७ | १६ | * लि.क. शीरपाणिपुत्रः |
| ३४० | ६२२२ | मयूरचित्रक | वराहमिहिर | १८वीं श. | १० | |
| ३४१ | ५७७२ | मयूरचित्रकादि | | १६वीं श. | २६ | |
| ३४२ | ४८४६ | महादशाफल | | " | ७ | |
| ३४३ | ७१३६ | महादेवीवृत्तिदीपिका | धनराजगणि भुवनराजगणौदशिक्ष्य | १८वीं श. | ६ से ३२ | |
| ३४४ | ४६८० | महादेवीसारिणी | | १६वीं श. | ६१ | |
| ३४५ | ४७४१ | " | | १८१४ | १२६ | आद्य तपूष्ठ सचित्र शोभन |
| ३४६ | ४७८६ | " | | १८४६ | १५२ | रचनाकाल अनुमानतः १२३८ शक लि.क. खरतरगच्छीय शोभा- चन्द्रजीशिक्ष्य चन्द्रभाण स्थान—मुम्बटपुर |
| ३४७ | ७४७० | मानसागरीपद्धति | नानाप्रयोद्धत | १६वीं श. | ७७ | राजस्थानी भाषा सहित |
| ३४८ | ६७१५ | मासभावाध्याय | ताजिककल्पनोक्त | १७६८ | ८ | लि.क. आचार्य किशोरदास |
| ३४९ | ४२८३ | माससारिणी | | १८वीं श. | १५ | * ओडुम्बर मोडासावासी |
| ३५० | ६४३६ | मासेश-मासभावफल | ताजिकमतानुसार | १७८७ | १० | * लि.क. लब्धिसुन्दर कल्याण- सुन्दरशिक्ष्य, फतेपुर |
| ३५१ | ४७२३ | मृत्थाफल | | १६वीं श. | १ | राजस्थानी भाषार्थ सहित |
| ३५२ | ७८२८ | मृष्टिज्ञान | | १८वीं श. | २ | २४ वां पत्र अप्राप्त |
| ३५३ | ४६७३ | मुहूर्तगणपतिसार | गणपतिदेवज्ञ (रावल हरिशंकर सूरिसुनु) | १८७३ | ५१ | रचनाकाल १७५० |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|----------------------------------------------|--------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------------|
| ३५४ | ४८४३ | मुहूर्तचिन्तामणि | रामदेवज्ञ | १८०० | ४० | रचनाकाल—१५२२ शके लि.क. रूपनारायण गौड़ |
| ३५५ | ७०११ | " | " | १७६२ | २६ | रचनाकाल—१५२२ शके लि.क. पं० गुणमूर्ति |
| ३५६ | ४११० | " (प्रमिताक्षराटीकोपेता) | " | १८६६ | १५६ | लि.क. राममुख, जयपुर |
| ३५७ | ६२५८ | " | " | १८३२ | ८२ | पत्र ११ से १६, ७५, ७६, ८१वाँ अप्राप्त |
| ३५८ | ४६४८ | " सटीक | " | १६०३ | २१५ | लि.क. व्यास बालकृष्ण नरवर- मध्ये |
| ३५९ | ५६८६ | " (पीयूषधारा सहित) | " | १६वीं श. | ३६ | शुभाशुभप्रकरण मात्र |
| ३६० | ५६८७ | " | " | " | ३६ | नक्षत्रप्रकरण मात्र |
| ३६१ | ५६८८ | " | " | " | ११ | संक्रान्तिप्रकरण मात्र |
| ३६२ | ५६८९ | मुहूर्तचिन्तामणि सटीक (पीयूषधारा टीकोपेत) | " | " | ८ | गोचरप्रकरण मात्र |
| ३६३ | ५६९० | " | " | " | ३६ | संस्कारप्रकरण मात्र |
| ३६४ | ५६९१ | " | " | " | ६३ | राज्याभिवेकप्रकरण मात्र |
| ३६५ | ५६९२ | " | " | १६२० | ८२ | यात्राप्रकरण |
| ३६६ | ५६९३ | " | " | १६२१ | २४ | गृहारम्भप्रकरण मात्र |
| ३६७ | ५६९४ | " | " | १६२० | १७ | गृहप्रवेशप्रकरण लि.क. भण्डाराम प्रदनोरा (मधुपुर्या) |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------------|---------------------------------------|----------|-------------|------------------------------------------------------|
| ३६८ | ६२६३ | मुहूर्तचिन्तामणिः सटबाथं | रामदेवज्ञ, टी. चतुरविजयगणि | १८३० | १०२ | रचनाकाल सं० १७५७ पत्र १ से ८ तक अप्राप्त |
| ३६९ | ४७११ | " सस्तबक | रामदेवज्ञ | १८२७ | ५० | लि.क. जीवनविजयगणि |
| ३७० | ५६६६ | मुहूर्ततत्त्व दीपिकाटीकोपेत | केशवदेवज्ञ टी. गणेशदेवज्ञ | १७६३ | १०८ | |
| ३७१ | ४६४७ | मुहूर्तदर्पण | ज्योतिर्विलालमणि जगद्रामसुत | १८२२ | . | ओरछाग्रामवास्तव्यश्यामजू- लिखितम् |
| ३७२ | ४८७६ | मुहूर्तदीपक | गंगाराम पौत्र | १६६२ | १० | लि.क. परमानन्द |
| ३७३ | ५७७० | मुहूर्तमञ्जरी | महादेव काट्हेजीबाडसुत यदुनन्दन | १६०५ | | लि.क. अर्जुन पण्डित रचनाकाल १७०६ (?) |
| ३७४ | ५३४८ | " सटीक | " टी. मतसाराम | १८५६ | २१ | " १७२६ * लि.क. वृचाराम गढ़ भरतपुर मध्ये |
| ३७५ | ४६६४ | मुहूर्तमार्तण्ड | रामकृष्णसुत नारायणदेवज्ञ अनन्ताख्य | १६०० | २० | लि.क. ओदीच्यज्ञातीय देराश्री पुरुषोत्तमसुत लीलाधर |
| ३७६ | ४७३२ | मुहूर्तमार्तण्ड (मूल) | चातुर्मास्य पुत्र | १८३७ | २६ | रचनाकाल १४६३ शके |
| ३७७ | ४८८७ | " | नारायण | १८६० | २३ | लि.क. विजयलाल ओडुम्बरज्ञातीय |
| ३७८ | ५२४६ | " | " | १८५५ | २७ | संक्रान्तिप्रकरणान्त |
| ३७९ | ६७६५ | " | " | १६०३ | ३५ | लि.क. मोती |
| ३८० | ७०४८ | " | " | १८६२ | २७ | लि.क. दयाशङ्कर व्यास मोतीरामसुत |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|---------------------------------------------|--------------------------|----------|-------------|----------------------------------------------------------------|
| ३८१ | ४६७१ | मुहूर्तसार्त्तण्ड सटीक | नारायण | १७८६ | ८२ | लि.क. महाजन नरसिंह, जयपुर |
| ३८२ | ४७०६ | मुहूर्तसार्त्तण्ड टीका | " | १६वीं श. | ७८ | रचनाकाल सं० १६२६ |
| ३८३ | ४७२६ | " | " | " | १२१ | किंचिदपूर्ण |
| ३८४ | ६१३० | " | " | १८३७ | ५६ | रचनाकाल १६२६ |
| ३८५ | ५५२५ | मुहूर्तसार्त्तण्ड (वल्लभाख्या टीका सहित) | " | १६वीं श. | ४७ | " १४६३ शके अपूर्ण |
| ३८६ | ७३७१ | मुहूर्तसार्त्तण्ड टीका (सट्कार्य) | हरिभट्ट | १८४६ | १० | लछमनपठनार्थ करहेड़ा मध्ये |
| ३८७ | ६३६४ | " (सट्कार्य) | | १६वीं श. | ८ | राजस्थानी भाषार्थ सहित |
| ३८८ | ४७१७ | " (सस्तक) | | १६६७ | ६ | लि.क. ऋषि नानजी |
| ३८९ | ४८७४ | " (मुहूर्तप्रदीप) | | १७०२ | ११ | लि.क. मेदपाटजातीय जोशी |
| ३९० | ७६५१ | " | रघुवीर | १८४७ | ८ | सुरजीकेन लिखितम् |
| ३९१ | ५७१४ | (प्राचीन राजस्थानी भाषार्थसहित) | | १८वीं श. | ० | घोड़ेलावग्राम मध्ये |
| ३९२ | ७१०४ | मुहूर्तसर्वस्व | | १८वीं श. | १६ | लि.क. रत्नसागर समेगमध्ये |
| ३९३ | ६३६२ | मूलजातकविधान | | " | २ | रचनाकाल १५५७ शके |
| ३९४ | ५६४६ | मेघमाला | दामोदर | १६वीं श. | १६ | |
| ३९५ | ५३१७ | यन्त्रचिन्तामणि | जगद्देव (?) टी. रामदेव | १६१८ | ६१ | |
| ३९६ | ५३१७ | " सटीक | | १८४५ | १६ | लि.क. मनसाराम |
| ३९७ | ५६१६ | यन्त्रचिन्तामणि टीका (यन्त्रदीपिकाख्या) | " | १८४५ | १३ | प्रथम पत्र अप्राप्त लि.क. वजवासी मिश्र, ललिताघट्ट काश्या |

राजस्थान पुरातत्त्वव्यवस्थापन मन्दिर-हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; ११-ज्योतिष]

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|--------------------------|----------------------------|-------------|-------------|-------------------------------|
| ३६७ | ६१०८ | यन्त्रचिन्तामणि सटीक | चक्रधर वामनात्मज | १८५४ | २६ | लि.क. लाला लक्ष्मीचंद |
| ३६८ | ६८८५ | " | डी. रामदेवज्ञ मधुसूदनात्मज | १६०३ | ३६ | * |
| ३६९ | ४१३२ | यन्त्रराज | महेन्द्रसूरि | १८४७ | १६ | लि.क. सर्वेश्वर |
| ४०० | ५६८२ | " | " | १६३६ | ५० | वृद्धयवनजातक |
| ४०१ | ६२५४ | यन्त्रराज टीका | टी. मलयेन्द्रसूरि | १६०१ | ४७ | * लि.क. पं. लिखमीराम |
| ४०२ | ७०१२ | यवनजातक (जातकाभरण) | डुण्डिराज | १६१६ | १०५ | स्थान नेवय मध्ये (निवाह) |
| ४०३ | ४४०६ | यानयोगार्णव | शिवोदित | १८२५ | २३ | |
| ४०४ | ६५१० | युद्धकौशल | श्रीरुद्रः | १६वीं श. | ७ | |
| ४०५ | ७६४२ | " | गंगाराम | " | १६ | लि.क. मोतीगरू |
| ४०६ | ६७७५ | युद्धजयोत्सव | हर्षकीर्तिसूरि बा. नरसिंह | १८६६ | १७ | लि.क. रङ्गविमल कालूग्रामे |
| ४०७ | ६८६१ | योगचिन्तामणि (सवालावबोध) | रतनराज गणेशिष्य | १७२४ | ७३ | |
| ४०८ | ५७४६ | योगज्ञातक | बलभद्र | १६वीं श. | १२ | |
| ४०९ | ४८६३ | योगार्णव | वैकटेश | " | १८ | लि. वज्रवासी सिल्लुः |
| ४१० | ५७३६ | " | " | १६२१ | १३ | प्रति की लिपि दो प्रकार की है |
| ४११ | ५७६६ | योगावली | " | १६-२०वीं श. | २० | लि.क. भैरवदास |
| ४१२ | ६०४० | योगिनीदशाकरण | राजकृष्ण | १८११ | १२ | |
| ४१३ | ४८६५ | योगिनीदशान्तर्दशाफल | | १८वीं श. | ७ | |
| ४१४ | ४६५४ | योगिनीदशाफल | रुद्रयामलोक्त | " | ७ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|----------------------------------|--------------------------------|----------|-------------|----------------------------------|
| ४१५ | ७६४५ | रत्नप्रदीप | महादेव | १८०६ | १६ | लि.क. हरवल्लभ पारीक |
| ४१६ | ५६०६ | रत्नमाला | | १८६८ | २३ | जोसी भूधरजीसुत, ढाण्या |
| ४१७ | ५८३१ | रत्नमाला (विवरणनाम्नी टीका) | श्रीपति टी. महादेव लूणिय पुत्र | १९वीं श. | २१४ | लि.क. भागीरथ ब्राह्मण |
| ४१८ | ७५७२ | रमलग्रन्थ (रमलेन्दुप्रकाशसम्मत) | | १८वीं श. | २० | रचनाकाल ११८५ शके |
| ४१९ | ७५७५ | " (विन्दुरमलाख्य) | | १९वीं श. | ११ | ४६, ४७, ६१, २०८वां पत्र अप्राप्त |
| ४२० | ४७५६ | रमलचिन्तामणि संज्ञातंत्र (प्रथम) | चिन्तामणि पंडित | १८वीं श. | १० | ग्रन्थस्वामी भट्ट हरिदत्त |
| ४२१ | ४७६० | " (प्रज्ञतन्त्र) द्वितीय | " | " | १० | |
| ४२२ | ५१६५ | रमलनवरत्न | परममुख उपाध्याय | " | ३७ | * |
| ४२३ | ५३०४ | रमलनवरत्नम् | परममुखोपाध्याय | १८८८ | २६ | |
| ४२४ | ५६०८ | " | " | १९वीं श. | ३५ | रचनाकाल-१८६७ |
| ४२५ | ५७६७ | रमलविन्दु | | " | ११ | प्रति के कोण खंडित है |
| ४२६ | ४४५३ | रमलशास्त्र | राम | १७८० | १२ | भुजद्वंगमध्ये लिखितं |
| ४२७ | ५३२१ | " | रामरुद्र | १७१५ | ७ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ४२८ | ५४७६ | " | रामदेवज्ञ | १९वीं श. | ४६ | |
| ४२९ | ६८३३ (२) | " | " | १८४८ | ६-७ | लि.क. लाला अमृतराम |
| ४३० | ७५७४ | " | " | १९वीं श. | १७ | * |
| ४३१ | ६८३३ (११) | " | श्रीपति | १८५२ | ५५-६६ | |
| ४३२ | ४७६६ | रमलसार | रुद्रधर त्रिपाठी | १८४२ | १६ | |
| ४३३ | ४६५१ | रमलेन्दुप्रकाश | | १९वीं श. | ३४ | |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|------------------------|--------------------------|----------|-------------|---------------------------------------------------------------------------------------|
| ४३४ | ७५७३ | रमलेन्दुप्रकाश | रुद्रधर त्रिपाठी | १८३८ | २८ | |
| ४३५ | ५६०७ | राजवल्लभ वास्तुशास्त्र | मण्डन सूत्रधार | १६०६ | ४४ | |
| ४३६ | ७५१२ | रामविनोद | रामभट्ट | १७५५ | १३ | लिपिस्थान-नरायणा कूर्मवंशो- द्भूत महाराजाधिराज श्री राम- दास की आज्ञा से रचित । |
| ४३७ | ५५६४ | रेखागणित | जगन्नाथ सम्राट् | १६२० | २६४ | सवाईजयसिंहनुष्टयै |
| ४३८ | ७०६३ | लघुचंद्रिका | | १८वीं श. | ३४ | प्रथम पत्र शोभन |
| ४३९ | ५५६८ | " (जन्मपत्रीलेलोदाहरण) | काशीनाथ | १६वीं श. | १८ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ४४० | ७६०५ | लग्नवाद | श्री गिरधारी मिश्र मैथिल | " | १ | |
| ४४१ | ४६८२ | लग्नसाधनविधि | | " | ८ | |
| ४४२ | ६४२६ | " | | १८६८ | ६ | |
| ४४३ | ४७३० | लग्नोदाहरण | | १६वीं श. | ४ | नागोर मध्ये लिखितम् |
| ४४४ | ६४६४ | लघुकामधेनुसारिणी | केशव | १८वीं श. | १० | लि.क. धर्मविजयगणि रूपनगर रचनास्थान-काशी |
| ४४५ | ५५२३ | लघुजातक | वराहमिहिर | १६१६ | १७ | लि.क. विप्र रामगोपाल, केकड़ी |
| ४४६ | ६३८२ | " | " | १८१२ | ७ | " पं. उदयसुन्दर श्रीवीकानगरे द्वितीय पत्र अप्राप्त |
| ४४७ | ६८२२ | " | " | १७वीं श. | ६ | |
| ४४८ | ६६०७ | " | " | १८४४ | | लि.क. उदयसुन्दर क्षमासुन्दर- शिष्य |
| ४४९ | ७०६८ | " (श्रिष्टाध्यायान्त) | " | १८वीं श. | ३ | आर्यपद्यबद्ध ग्रन्थ है |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|---------------------------------------|------------------------------|----------|-------------|------------------------------------------------------------|
| ४५० | ४१८७ | लघुजातक सटीक | वराहमिहिर | १६५४ | ५६ | * |
| ४५१ | ४६८४ | " सवृत्तिक | " टी.-मत्तिसागर उपाध्याय | १८८५ | ३० | |
| ४५२ | ४७४६ | " सटीक (त्रिपाठ) | वराहमिहिर, टी.-उत्पलभट्ट | १७२३ | १६ | |
| ४५३ | ४७५४ | " " | " | १८४२ | १८ | लि.क. सन्तोषदास वणव |
| ४५४ | ७१०१ | " सटिप्पण | " | १८वीं श. | २ | |
| ४५५ | ५६८५ | लघुपाराशरी (योगाध्यायमात्र) | पाराशर ऋषि | १६३२ | २ | |
| ४५६ | ७६४३ | लघुपाराशरी (उडुदायप्रदीपोद्योत) | भैरवदत्त पं. हरिरामशर्मपुत्र | १६वीं श. | २६ | पत्र १, २, ३, अप्राप्त |
| ४५७ | ५७४६ | लघुपाराशरी सटीक (राजयोगाध्यायान्त) | पाराशर ऋषि | १८६४ | ६ | लि.क. ब्रजवासी सिल्लु:मणि- कर्णिका तीरे अमृतपातालदेवालय |
| ४५८ | ४७५८ | लघुमातण्ड, मुहूर्तदीपक | नारायण देवज्ञ कौशिक | १६वीं श. | १४ | * |
| ४५९ | ५६१३ | लघुक्षेत्र समास विवरण | चंद्रशेखर | १४८८ | ३२ | लि. स्था.चित्रकूट दुर्ग |
| ४६० | ५७४२ | लम्पाकशास्त्र | पद्मनाभ | १८६७ | ८ | लि.क. देवीचन्द्र ग्राम सलहड़ी काश्याम् |
| ४६१ | ५६३४ | " सटीक (त्रिपाठ) | " | १६०५ | ३४ | लि. ब्रजवासी सिल्लु: काश्याम् |
| ४६२ | ६३७२ | लल्लवाराही | लल्ल | १८वीं श. | ३ | |
| ४६३ | ५७२३ | लीलावती | भास्कराचार्य | १६वीं श. | ४२ | |
| ४६४ | ५७०४ | लीलावती विवरण | " टीका-रामकृष्ण | | | * |
| ४६५ | ४७६७ | वर्षगणितपद्धति (दिवाकरीपद्धति) | दिवाकर नृसिंहसुत | १८४७ | ६३ | |
| ४६६ | ६३११ | वर्षतन्त्र | नीलकण्ठ | १८३२ | ५ | लि. मन्तरूप व्यास |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|--------------------------------|-----------------------|----------|-------------|---------------------------------------|
| ४६७ | ६५४५ | वर्षतन्त्र | नीलकण्ठ | १८७२ | ४७ | लि.क. रतनविजय |
| ४६८ | ४७०६ | " सटीक | " टीन-विश्वनाथ | १७५२ | ३१ | २७,२८ २६वां पत्र अप्राप्त |
| ४६९ | ७१४२ | वर्षसारिणी (वर्षफलपद्धतिसार्य) | | १८०२ | १६ | लि.क. चिरञ्जी सीतर |
| ४७० | ४३५५ | वसन्तराज शाकुन | वसन्तराज भट्ट | १७७१ | ३७ | * लि.क. विद्याविलास पाठक |
| ४७१ | ६२०८ | " | " | १८२३ | ६३ | लि.स्था. श्री बेनातट नगर |
| ४७२ | ६७८८ | " | " | १८१२ | १५७ | |
| ४७३ | ७८२६ | " | " | १८४२ | ८२ | लि.क. गङ्गाराम |
| ४७४ | ५५६३ | वसिष्ठसंहिता | वसिष्ठप्रोक्त | १८१६ | १३३ | |
| ४७५ | ६४२१ | वामवेधफल | | १७६६ | ८ | लि.क. देवचन्द्र, मण्डोवरमध्ये |
| ४७६ | ५१३२ | वास्तुशास्त्र | | १६०६ | ७२ | |
| ४७७ | ४८७७ | विशोत्तरीदशाफल | विश्वकर्माप्रकाशगत | १८५८ | १० | |
| ४७८ | ४६५६ | विजयप्रशस्ति | स्वच्छन्द शङ्कराचार्य | १८२४ | १३ | * लि.स्था. जयपुर, रचनाकाल सं० १७४२ |
| ४७९ | ५६३३ | विरोधप्रकाश | यशोवन्तर | १८६३ | ३ | लि.क. ब्रजवासी सिल्लुः |
| ४८० | ४७१२ | विवाहपटल | | १८५६ | ६ | राजस्थानी भाषार्थ सहित |
| ४८१ | ५५३७ | विवाहपटलटीका | | १८१२ | १२ | काशिनाथकृत श्रीब्रम्होद्यानुसार |
| | | | | | | लि.क. इन्द्रमुन्दर |
| ४८२ | ६३५२ | विवाहपटलसस्तबक | | १८वीं श. | १६ | राजस्थानी भाषार्थ सहित |
| ४८३ | ७६५० | विवाहपटल | | १८१८ | १७ | लि.क. नवनिधिविजय |
| ४८४ | ७६५८ | " | | १७८४ | २० | राजस्थानी भाषार्थ सहित |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-------------------------------|-------------------------|----------|-------------|-------------------------------------------|
| ४८५ | ६४२२ | विवाहमासनिर्णयादि | केशव | १८वीं श. | २ | |
| ४८६ | ४८५७ | विवाहवृन्दावन | | १९वीं श. | २८ | |
| ४८७ | ६०९९ | " | | १७११ | २० | लि.क. कल्याण |
| ४८८ | ६३३९ | विवाहवृन्दावन टीका | गणेश देवत | १८६० | ६२ | |
| ४८९ | ७०५१ | विवाहवृन्दावनभाष्य | केशवार्क, भाष्य-शिवशंकर | १८२१ | ५७ | प्रति की लिपि दो प्रकार की है |
| ४९० | ६८३४ | वेगराजविवेकनिबन्ध (कर्मविपाक) | | १८७८ | ३८ | लि.क. सुमतिशगर |
| ४९१ | ४६५७ | शकुनप्रदीपचूडामणि | ज्येन्द्र | १७९९ | १२ | लि.क. छत्रीनाराम अंगलपुरमः |
| ४९२ | ६३३० | शकुनसार | | १९वीं श. | ३ | |
| ४९३ | ५४५२ | शकुनावली | रङ्गनाथ | १९१० | ८ | |
| ४९४ | ७६३७ | शरत्पद्धति | | १७५३ | ५ | लि.क. व्यास पुरुषोत्तम, स्थान-मथुरा |
| ४९५ | ५२२२ | शिवालिखित मुहूर्त | सुद्रयामलोकत | १८वीं श. | ४ | |
| ४९६ | ४६५३ | शिवालिखित " | | " | ६ | |
| ४९७ | ६४३६ | शिवालिखित मुहूर्तमालिका | शिवोक्त | " | ६ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ४९८ | ४१५५ | श्रीघबोध | काशीनाथ | १९वीं श. | ४० | लि.क. रामचन्द्र ब्राह्मण |
| ४९९ | ४७५६ | " | " | १७९७ | २९ | |
| ५०० | ५०५० | " | " | १८९९ | ३१ | |
| ५०१ | ५७३८ | " | " | १८८५ | ४६ | लि.क. देवीदयाल कायस्थ, काशी |
| ५०२ | ६३९७ | " | " | १८५१ | ३४ | |
| ५०३ | ७१५२ | श्रीघबोध, भट्टली के दोहे | " भट्टली | १८६१ | ६३ | लि.क. यति प्रेमचन्द, हीरापुरीमध्ये |
| ५०४ | ७६२५ | श्रीघबोध | काशीनाथ | १८७३ | ७ | " धीरविजय, कुल्यागढ़, प्रथम पत्र अप्राप्त |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|------------------------|--------------------------|----------|-------------|-------------------------------------------|
| ५०५ | ४८७१ | शुक्जातक | शुकमुखोक्त | १८४२ | ३ | लि.क. मुरुजित्सुत दुर्गादत्त |
| ५०६ | ४४०६ | शेषवासना | कमलाकर | १७८६ | ४४ | „ रामकृष्ण कायस्थ |
| ५०७ | ५१०६ | षट्पञ्चाशिका | भट्टोत्पल | १८१८ | ६ | „ हरिकृष्ण ब्राह्मण, दशपुर- ग्राममध्ये |
| ५०८ | ४६५० | षट्पञ्चाशिका सटीक | पृथुयशाः, टी. उत्पल भट्ट | १६वीं श. | २१ | लि.क. जीवनविजय, बालीमध्ये |
| ५०९ | ४६८७ | „ (सबालावबोध) | पृथुयशाः | १८वीं श. | १४ | „ ज्योतिर्विच्छम्भुराम |
| ५१० | ४६६२ | „ सटीक | „ | १८१६ | २२ | राजस्थानी भाषार्थ साहित |
| ५११ | ४८४१ | „ | „ | १८२२ | १० | लि.क. कृष्णचन्द्र विजयराम |
| ५१२ | ५७१३ | षट्पञ्चाशिकावृत्ति | उत्पल भट्ट | १८३६ | २२ | „ रामनारायण ब्राह्मण |
| ५१३ | ६५६४ | „ | „ | १८८४ | १७ | „ ऊदा |
| ५१४ | ६८१६ | „ | „ | १६४५ | १६ | „ |
| ५१५ | ७५७८ | षट्पञ्चाशिकाटीका | मनोराम | १७६६ | ११ | „ पुरुषोत्तमसुत लीलाधर देराश्री |
| ५१६ | ४६७३ | „ सस्तबक | भट्टोत्पल | १६०१ | ६ | „ |
| ५१७ | ४८०० | „ (होराध्यायान्त) | पृथुयशाः | १६वीं श. | ४ | „ |
| ५१८ | ७६२७ | „ सबालावबोध | „ | १८१६ | ६ | „ दानसौभाग्यगणि |
| ५१९ | ६८३३ (१०) | यष्टिसंवत्सरफलम् | इयामल | १८५२ | ५०-५५ | लि. नृजवासी तिल्लुः, काश्याम् |
| ५२० | ४८६६ | स्त्रीजातक | यवनजातकान्तर्गत | १७६७ | १० | „ रावल जीवा सुत ब्रम्बराम |
| ५२१ | ५७६१ | „ | „ | १८६५ | ११ | „ |
| ५२२ | ४७६३ | स्त्रीजातकपद्धति | „ | १८५८ | १२ | „ |
| ५२३ | ६७४८ | स्त्रीजातक (कुण्डलीफल) | प्रस्ताव रत्नाकरोक्त | १६वीं श. | १ | „ |
| ५२४ | ४५२५ | स्वप्नाध्याय | „ | १८वीं श. | ३ | „ |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पृथ संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-----------------------------------|----------------------------------|----------|------------|-----------------------------|
| ५२५ | ४६५५ | स्वप्नाध्याय | | १८०८ | ३ | लि.क. त्रैजनाथ |
| ५२६ | ५६१४ | " | | १६१६ | ७ | लि.क. रामगोपाल |
| ५२७ | ५६०६ | स्वप्नाङ्गुतावर्तप्रकरण | | १६वीं श. | ११ | |
| ५२८ | ४१०५ | स्वरपञ्चाशिका | अङ्गुतसागरगत मिश्र नन्दराम | १८३२ | ३ | रचनाकाल १८२२ |
| ५२९ | ५३१८ | " | " | १८६५ | ४ | स्यान-काम्यकवन |
| ५३० | ५३२२ | " | " | १७१५ | ७ | लि.क. हरदेवलाल |
| ५३१ | ७१२३ | स्वरोदय (सटीक) | शिवप्रोवत | २०वीं श. | ४० | लि.क. नरहरिदास |
| ५३२ | ४६७९ | स्वरोदय शास्त्र | " | १६वीं श. | २१ | |
| ५३३ | ४८६८ | " | " | १८३३ | १० | लि.क. वलतराम तिवारी, देवगढ़ |
| ५३४ | ४८९० | " | " | २०वीं श. | २४ | |
| ५३५ | ५५१७ | " विश्वम्भरी | जीवनाथ | १६१६ | ३६ | |
| ५३६ | ५४३३ (१) | संकेतकीमुदी | उमामहेश्वरसंवादगत (प्रश्नोत्तरी) | | १-५४ | |
| ५३७ | ५८०२ | " | हरिनाथ | १६वीं श. | १८ | |
| ५३८ | ४९९६ | संज्ञातन्त्र | " | " | २१ | |
| ५३९ | ५८०४ | " | नीलकण्ठ | १८६६ | २५ | |
| ५४० | ६६६० | " | " | १६वीं श. | २० | |
| ५४१ | ५१८५ | " | " | १६१० | ५४ | |
| ५४२ | ५५३० | " | " | १६वीं श. | ८९ | |
| ५४३ | ६०४६ | संज्ञातन्त्रोदाहरणम् | " | १८२२ | १०१ | लि.क. कावीनाथ |
| ५४४ | ५४७३ | संज्ञाप्रविकविवृति: (रसाज्ञाभिधा) | नीलकण्ठमुल गोविन्द देवल | १८६२ | ३८ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|---------------------------------|---------------------------------|----------|-------------|------------------------------------------------------------------------------|
| ५४५ | ५५८२ | संज्ञाविवेकविवृति (पूर्वार्द्ध) | नीलकण्ठमुत गोविन्ददेवज | १६वीं श. | १४४ | रचनाकाल १५४४ |
| ५४६ | ५५८३ | " | " | " | १२३ | |
| ५४७ | ६०४६ | संज्ञाविवेक टीका | " | १८वीं श. | ३६ | |
| ५४८ | ५७६४ | सन्तानदीपिका | भावचिन्तामणिगत | १८६४ | ५ | लि.क. व्रजवासी सिल्लुः इसमें वर्षा सम्बन्धी योगों का वर्णन किया गया है |
| ५४९ | ४४५२ (८८) | सप्तनाडीचक्र | | १८वीं श. | १२८वां | लि.क. पं. प्रतिसीभाग्य स्थान-बणहेड़ा ग्राम |
| ५५० | ५७२७ | सर्वतोभद्रचक्र | | १८६७ | १२ | |
| ५५१ | ५६७५ | सर्वार्थचिन्तामणि (पूर्वार्द्ध) | श्री वैकुण्ठेशस्त्रिय अप्पय (?) | १६वीं श. | ४६ | |
| ५५२ | ५६७६ | " | " | १६०६ | ५१ | |
| ५५३ | ५२८८ | सर्वार्थचिन्तामणि | " | १८वीं श. | ६२ | |
| ५५४ | ४१०८ | समरसार | राम | १६वीं श. | ७ | * लि.क. हरिचयन सवाई जयपुर |
| ५५५ | ४२७४ | " | | १७६७ | ११ | |
| ५५६ | ४६६८ | " | रामचन्द्राचार्य सोमयाजी | १६वीं श. | १० | |
| ५५७ | ४८५६ | " | रामवाजपेयी | " | १० | |
| ५५८ | ५७७४ | " | रामचन्द्र | " | १७ | |
| ५५९ | ६२४१ | " | " | १८६२ | ७ | |
| ५६० | ६३०८ | " | " | १८वीं श. | ४ | |
| ५६१ | ४७०३ | समरसार सटीक | रामचन्द्र, डी. भरत | १८६१ | ३२ | लि.क. व्रजवासी सिल्लुः, दवां पत्र अप्राप्त |
| ५६२ | ५८१६ | " | " | १८६३ | २३ | |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|-----------------------------------------------|--------------------|----------|-------------|--------------------------------------------------------------------------------------------|
| ५६३ | ५३८८ | समरसार सटीक | रामचन्द्र, टी. भरत | १८५७ | ३१ | |
| ५६४ | ६१०७ | " | " | १८४० | ४१ | लि.क. व्रजवासी, |
| ५६५ | ७५०३ | " | " | १९१३ | ३० | आद्य पत्र नृदित |
| ५६६ | ७८२१ | साधितग्रह कुण्डली संग्रह | | १९वीं श. | गुटका | |
| ५६७ | ४३६४ | सामुद्रिक (पुरुष स्त्री लक्षण) | समुद्र | १६९४ | ९ | लि.क. ऋषि मति कीर्ति, स्थान—नांदसमा गाम |
| ५६८ | ४४०८ | (१) सामुद्रिक, (२) नारचन्द्र (३) भावाध्याय | | १७८६ | १७ | (१) पृष्ठ क से ७ तक, (२) ७ से १४ (३) १४ से १७ लि.क. चैरागी राजपाल स्थान—पालहुणपुर |
| ५६९ | ५९६८(२) | सामुद्रिक | | १९वीं श. | ३-१९ | |
| ५७० | ५३७३(३) | " सटीक | | १८०९ | ७४-९७ | |
| ५७१ | ४६५९ | " सार्य | नृपति भूपति | १७०८ | १३ | लि.क. मिश्र रघुनाथ |
| ५७२ | ७५१४ | सारमञ्जरी पद्धति | | १८वीं श. | ३३ | " जयकृष्ण |
| ५७३ | ४७३४ | सारसंग्रह | महदेव राजगुरु | १८८४ | १२ | " गुमानसागर, र.का. १७१८, स्थान—भुजपत्तन |
| ५७४ | ६०१२ | सारावली | राजगुरु | | | |
| ५७५ | ५३१३ | सिद्धान्तज्योतिष स्फुटपद्याणि | कल्याण वर्मा | १८वीं श. | ११८ | |
| ५७६ | ५६२२ | सिद्धान्ततत्त्व | | १९वीं श. | १४-३९ | |
| ५७७ | ५०४३ | सिद्धान्तरहस्योदाहरण | त्रिविक्रमाचार्य | १८९५ | ७ | लि.क. व्रजवासी सिल्लुः |
| | | | विश्वनाथ | १९वीं श. | ६२ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------------------------|----------------------|----------|-------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ५७८ | ६२२६ | सिद्धान्तसहस्रोदाहरण | विश्वनाथ | १८२२ | ५५ | कुम्भेश्वर क्षेत्र लिखितम् |
| ५७९ | ५८०१ | " | " | १७वीं श. | ७६ | |
| ५८० | ५२६१ | सिद्धान्तशिरोमणि | भास्कराचार्य | १८२८ | ३३ | |
| ५८१ | ५२६२ | " | " | १६वीं श. | ३० | |
| ५८२ | ५३३७ | " | " | १८७७ | ५५ | |
| ५८३ | ५६६६ | सिद्धान्तशिरोमणि मरीचि | श्री रंगनाथ | १७वीं श. | १८३ | रचनाकाल-शके १५४३ लि. स्या० कलकत्ता लि. क. हरिसुख ब्राह्मण प्रथम श्राठ पत्र अप्राप्त लि. क. रामनारायण आरम्भ के १० श्लोक नहीं हैं |
| ५८४ | ५६२६ | सिद्धान्तशिरोमणि वार्तिक (पूर्वार्द्ध) | भास्कराचार्य | १६वीं श. | ८१ | |
| ५८५ | ५६३० | " | " | " | ५० | |
| ५८६ | ५७८७ | सिद्धान्तशिरोमणि वासनाभाव्य | " | १८८२ | १७६ | |
| ५८७ | ४७३३ | सिद्धान्तसुन्दर | ज्ञानराज | १८४३ | ३१ | |
| ५८८ | ५५४६ | सुदर्शनचक्रम् | मिथुन शुक्ल | १६वीं श. | ७ | लि. क. ब्रजवासी सिल्लुः * लि. क. बालचन्द्र " देवमुन्दर " बालचन्द्र स्वामी, ग्वालियर |
| ५८९ | ५७५० | सुश्लोकशतक | " | १६०३ | २ | |
| ५९० | ४४५२ (८७) | सूतिकाज्ञान | " | १८वीं श. | १२६-१२७ | |
| ५९१ | ५२५६ | सूर्यचन्द्रग्रहणसारिणी | दुर्गाशंकर | १६वीं श. | ५ | |
| ५९२ | ५६५३ | सूर्यग्रहादिसाधनसिद्धान्त | अज्ञात | १८६३ | ६०५ | |
| ५९३ | ४४५२ (८) | सूर्यपुरुषचक्रादि | मयासुर | १८वीं श. | १२८ | लि. क. बालचन्द्र " देवमुन्दर " बालचन्द्र स्वामी, ग्वालियर |
| ५९४ | ६३७४ | सूर्यसिद्धान्त | " | १६२६ | ४७ | |
| ५९५ | ६८६२ | " | " | १८वीं श. | १० | |
| ५९६ | ४५२८ | " | " | १६वीं श. | ३४ | |
| ५९७ | ५८७६ | " | " | १८५५ | १० | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|------------------------------|--------------------|----------|-------------|-------------------------------|
| ५६८ | ४६५२ | सूर्यसिद्धान्त टीका | नृसिंह देवज्ञ | १८वीं श. | ६१ | लि. क. र (मजीवन) |
| ५६९ | ५५६२ | सूर्यसिद्धान्तोदाहरणव्याख्या | विश्वनाथ देवज्ञ | १६१२ | १५० | " हेमराजाचार्य, सवाईजयपुर |
| ६०० | ४७५७ | सौरवासना | कमलाकर | १८०० | ४६ | |
| ६०१ | ६५७४ | हस्तरेखाप्रकरण | | १६वीं श. | २ | |
| ६०२ | ६२१० | हस्तसंजीवन | | १६२३ | १७ | |
| ६०३ | ५७८६ | " | | १६वीं श. | ३३ | |
| ६०४ | ४१८२ | हायनरत्न | बलभद्र | १८३१ | १०७ | * लि. क. हरिप्रसाद |
| ६०५ | ६८३३ (४) | हायनसुन्दर | | १६वीं श. | २६-३२ | |
| ६०६ | ४८६० | हिल्लाजदीपिका | नृसिंह | १६वीं श. | १० | |
| ६०७ | ५७१८ | " | " | १८६५ | १४ | |
| ६०८ | ४८८५ | होराप्रदीप (कर्माविपाकोपत) | उमामहेश्वर संवाद | १६३६ | ११ | |
| ६०९ | ४७६५ | होरासकरद | गुणाकर | १८२४ | २४ | |
| ६१० | ५६७४ | होरातन्त्र | बलभद्र | १६वीं श. | ४६८ | रचनाकाल-१७१० |
| ६११ | ४६११ | त्रिपताकीचक्रादि | जातकार्णवान्तर्गत | १८२८ | ५ | लि. क. चतुरविजयगणि, पालीनगरे |
| ६१२ | ४२८५ | त्रिकालज्ञानमनोविचितामणि | शिवोक्त | १६वीं श. | ८ | * |
| ६१३ | ४२८० | त्रैलोक्यप्रकाश (ज्ञानदर्पण) | हेमप्रभ सूरि | १७७२ | २३ | * लि. क. बीरसुन्दर मणि |
| ६१४ | ४३५४ | " (अष्ट्यकाण्ड) | " | १७१५ | २६ | * ब्राह्म दो पत्र अप्राप्त |
| ६१५ | ७०३७ | " | " | १७७५ | ३१ | लि. क. पं. विजयसोमगणि |
| ६१६ | ५७५४ | ज्ञानप्रदीप (प्रश्नादर्श) | " | १६वीं श. | १६ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| | | | | | | लि. क. सुखविजय, शाकम्भरी नगरे |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ११-ज्योतिष]

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|------------------------------|---------------------------------------------|----------|-------------|--------------------------------------------------|
| ६१७ | ४७७३ | ज्ञानप्रदीप प्रश्नाधिकार | महर्षि ऋषिशर्मचार्य सोमनाथ (रीवा निवासी) | १६वीं श. | २ | लि.क. बालमुकुन्द |
| ६१८ | ७६२४ | ज्ञानप्रदीपिका | | १६०६ | ३४ | लि.क. गोवर्द्धननाथ, जयपुर |
| ६१९ | ४४६४ | ज्ञानमंजरी (प्रश्नविषयक) | | १८७८ | २६ | रीवाभिधाने नगरे चतुर्वर्णसमा- |
| ६२० | ५६२१ | ज्ञानमंजरी | | १६०४ | १७ | कुले । तत्रावसन् सोमनाथः करोमि ज्ञानमंजरीम् ॥ |
| ६२१ | ७१३१ | क्षेत्रसमाप्तवृत्ति (अपूर्ण) | म. सोमतिलकसूरि, प्रबचूरि-गुणरत्नसूरि | १७वीं | ३३ | २५, २६, ३१वां अप्राप्त |
| ६२२ | ५०८८ | " | | १७५३ | १३ | लि.क. दुर्गादास यति |
| ६२३ | ४४२७ | क्षेत्रसमाप्तावचूरि | | १६वीं | ३२ | |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १२-छन्दःशास्त्र]

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------|--------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------|
| १ | ६२२५ | छन्दःकौस्तुभ (सभाष्य) | राधादासोदरदास | १६०६ | २७ | लि. क. बलदेव गोस्वामी |
| २ | ५६६० | छन्दःपीयूष | भा. विद्याभूषण | १६०६ | ४४ | लि. स्था. वृन्दावने आनन्दघट्टे |
| ३ | ५५८१ | छन्दोमञ्जरी | जगन्नाथ मिश्र | १६वीं श. | ३० | |
| ४ | ४४३२ | वृत्तसुक्तावली | गङ्गादास | १६वीं | १२ | * लि. क. कालिग बस्मणभट्टात्मज वराहग्रामस्थ |
| ५ | ४३०० | वृत्तरत्नाकर | केदार भट्ट | १८२१ | ६ | लि. स्था. कर्णपुरग्राम |
| ६ | ४४६४ | " | " | १६वीं श. | १५ | लि. क. लक्ष्मण, पृथार |
| ७ | ६६५६ | " | " | १६२० | १० | लि. क. गुणाकर विद्यार्थी |
| ८ | ४३३६ | " (सटीक) | " | १५८२ | ३८ | प्रति जीर्ण, दीप्तक खाई दुई |
| ९ | ४४३३ | " | डो. भास्कर शर्मा | १८१३ | ३६ | टीका का रचनाकाल चै.श. १ सं. १७३१ |
| १० | ४०३२ | " सवालचवोध | डो. मेरुमुन्दर | १८वीं | ११ | डो. गुर्जर भाषा में |
| ११ | ५१४१ | " सटीक त्रिपाठ | " | " | २० | अपूर्ण, त्रुटक |
| १२ | ५५५८ | " सटीक | डो. श्रीकण्ठ | १६वीं श. | १५ | |
| १३ | ६४४७ | " (तेतु टीका सहित) | डो. भास्कर शर्मा | १६०३ | ३२ | अक्षवलिहयभूमितदर्थे डो. रचना |
| १४ | ७४८२ | " सटीक पञ्चपाठ | डो. सोमचन्द्र | १७वीं | २० | लि. क. कन्हैयाराम |
| १५ | ७५१३ | " वृत्ति | वृ. समयमुन्दर | १७५५ | ३४ | * |
| १६ | ४३५६ | " सटिप्पण | डो. क्षेमहंस | १७वीं | १३ | पत्र जीर्ण एवं कीटविद्ध |
| १७ | ६०४३ | वृत्तरत्नाकर सटिप्पण | | १८वीं | ६ | |
| १८ | ४४६२ | श्रुतबोध | कालिदास | १७६२ | २ | लि. क. मुरलीधर प्रोद्युम्बर, काठग्राम |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|----------------------------|------------------------------------------------------------|----------|-------------|---------------------------------------------------------------------------------------------|
| १६ | ४४६३ | श्रुतबोध | कालिदास | १८वीं | ५ | टीका का रचनाकाल—भूतक- बाणेंदुमित्तेशकाब्दे १५६० शाके (१६६५ वि०) अनन्तराजस्य राज्ये |
| २० | ५१८० | " | " | " | ७ | |
| २१ | ६६७१ | " | " | १६११ | ४ | |
| २२ | ६०२६ | " | " | १६वीं | ३ | |
| २३ | ५२१८ | " (ज्योत्स्नाभिषेकीकासहित) | टी. माधव देवज्ञ गोविन्दसुत नीलकण्ठपोत्र गार्ग्यवंशोद्भव | " | १४ | |
| २४ | ५६६३ | सुवृत्ततिलक | क्षेमेन्द्र | २०वीं | २३ | |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १३-संगीतशास्त्र]

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------|----------|-------------|-----------------|
| १ | ६७४१ | अनूपसंगीतरत्नाकर (द्वितीय- रागाध्यायः) रागमाला | भाव भट्ट जनावंनसूनु व्रजनाथदीक्षित पञ्चनदीय (गोकुलस्थ) | १८वीं | २५६ | जीर्ण प्रति * |
| २ | ४१६६ | | | १८६४ | १० | * |
| ३ | ५०६४ | ” | | १६वीं | २ | |

राजस्थान पुरातत्वावेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; १४-कामशास्त्र]

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि नातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-------------------------|------------------|----------|-------------|-----------------|
| १ | ४७७४ | कोकशास्त्र भाषायां सहित | कोक | १६वीं | १५ | |
| २ | ५७२० | पञ्चसायक | कवि शेर | १६वीं | ३२ | |
| ३ | ४४२६ | रतिरहस्य | कुबकोक पण्डित | १६वीं | २८ | |
| ४ | ४७७५ | " | " | १६८३ | ४२ | |

राजस्थान पुरातत्वान्वेषण मन्दिर — हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १५-काव्य-नाटक -चम्पू]

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-----------------------------------|---------------------------------------|----------|-------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| १ | ७०२६ | अद्भुतरामायण | चाल्मीकिमुनि | १८६० | ४३ | लि.क. हरिलाल |
| २ | ४३७६ | अध्यात्मरामायण (सुन्दरकाण्ड सटीक) | टी. श्रीराम वर्मा हिम्मतवर्मणः पुत्र | १६२७ | १७ | लि.क. व्यास घासीराम |
| ३ | ४५२० | अध्यात्मरामायण सटीक त्रिपाठ | " | १८वीं श. | १७६ | |
| ४ | ५५८६ | अध्यात्मरामायण (अयोध्याकाण्ड) | " | १६०४ | ३५ | |
| ५ | ५५८७ | " (बालकाण्ड) | " | " | २४ | |
| ६ | ५५८८ | " (सुन्दरकाण्ड) | " | " | १७ | |
| ७ | ५५८९ | " (किष्किन्धाकाण्ड) | " | " | २८ | |
| ८ | ५५९० | " (अरण्यकाण्ड) | " | " | २६ | |
| ९ | ५५९१ | " (युद्धकाण्ड) | " | " | ५२ | |
| १० | ४३३१ | अनर्घराघव | मुरारि | १७वीं श. | २० | टी. लौआलकुलोद्भव |
| ११ | ६६६८ | " टीका | मू. मुरारि, टी. महोपाध्याय रुचिपति | १८वीं श. | ४१से१८६ | वैजोलिया ग्रामवास्तव्य हरि- नारायण-पद-समलंकृत महाराजा- धिराज श्रीमद्भैरवसिंहदेव- प्रोत्साहित लि.क. दवे विश्वेवर गोलवाल जयपुरमध्ये पञ्चमोंकपर्यन्त |
| १२ | ६४०२ | ग्रन्थापदेशशतक | मधुसूदन | १८वीं श. | ६ | |
| १३ | ७५१७ | अभिज्ञानशाकुन्तल | कालिदास | " | २१ | |
| १४ | ४३२५ | अमरुशतक सटिप्पण | श्रीशङ्कराचार्य (अमरक) | १८६१ | ३६ | |
| १५ | ५६६५ | अमरुशतकम् | अमरक | १८२७ | ६ | लिखितं पंडितदेववत्तेन नाहुटा जसरूपपठनार्थम् |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|------------------------------------|------------------------------|----------|-------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------|
| १६ | ६६८१ | अमरशतक (भावचिन्तामणि व्याख्यासहित) | अमरक, टी. चतुर्भुज मिश्र | १८६० | ६२ | लि.क. नंगसागर. |
| १७ | ५१६८ | उद्धवसन्देश | श्रीरूप गोस्वामी | १८वीं | ८ | खण्डित । ६ से ८ तक पत्र कीटखिड़ |
| १८ | ४३३० | ऋतुसंहार | कालिदास | १७६८ | ८ | लि.क. मुनि श्रीराघव लि.स्था. हिसार |
| १९ | ७४६९ | कर्णामृत सटीक | मू. लीलामुक्त, टी. चैतन्यदास | १८वीं | १८ | १२वां पत्र अप्राप्त |
| २० | ५१६७ | कादम्बरी (पूर्वभाग) | बाण भट्ट | " | १८५ | प्रति सुन्दर है |
| २१ | ६१७४ | उत्तरार्द्ध | बाण भट्ट तनय (पुलिनन्द) | १८१५ | ८२ | लि.क. लालबिहारी माथुर |
| २२ | ६६२९ | " " | " | १८८० | ८२ | प्रथम पत्र अप्राप्त लि.क. वैष्णव हरिदास जयपुरमध्ये |
| २३ | ६६७४ | " पूर्वखण्ड | बाण भट्ट | १८व | १५६ | |
| २४ | ४२०४ | किराताजुनीयम् | भारवि | १८११ | ११८ | लि.क. चूड़ामणि सलावदनगरे |
| २५ | ५१२५ | सटीक | मू. भारवि, टी. मल्लिनाथ | १८२५ | १३४ | आदितः ऋद्धमसर्गपर्यन्त, प्रथम पत्र अप्राप्त |
| २६ | ६००१ | " " | टी. अज्ञात | १७वीं | ४३ | पञ्चदशसर्गपर्यन्त |
| २७ | ६३१३ | " " | " | " | १३ | पञ्चदशसर्गपर्यन्त |
| २८ | ६७६१ | " सावचूरि | भारवि | १८वीं | ५४ | आद्य ८ पत्र अप्राप्त |
| २९ | ६६८२ | " मूल | " | १७७१ | ६० | लि.क. 'साकवाटा (सागवाडा?) ग्रामस्थितेन रणावस्वीरस वसदादसात्मजेन देवकृष्णेन-ल्लिखितमिदम्, लवणपुरे' |
| ३० | ४३६५ | कुमारविहारशतक | रामचन्द्र | १७वीं | ५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|---------------------|---------------------------------------------------------|----------|-------------|-------------------------------------------------------------------------------------------|
| ३१ | ४३६७ | कुमारसम्भव सटीक | मू. कालिदास, टी. मल्लिनाथ | १६८४ | ५० | लि.क. उदयनिधान मुनि लि.स्था. योधपुर, आदि के २ पत्र |
| ३२ | ७५८६ | " | " | १७५४ | ६६ | अप्राप्त, सप्तम सर्गपर्यन्त लि.क. राधाकृष्ण, लि.स्था.कृष्ण- गढ़ १०वाँ पत्र अप्राप्त |
| ३३ | ४१६७(१) | " मूल | कालिदास | १८४२ | ५४ | सप्तम सर्ग पर्यन्त, लि.क. पुरुषोत्तम आचार्य |
| ३४ | ६००५ | " | " | १७वीं श. | ३८ | सप्तमसर्गपर्यन्त, ३७वाँ पत्र अप्राप्त |
| ३५ | ६८७० | " सवृत्तिक | " | १८वीं श. | ७० | सप्तसर्गात्मक |
| ३६ | ५५१० | " सटीक | मू. कालिदास, टी. मल्लिनाथ | १७१२ | १११ | |
| ३७ | ४१६३ | " अष्टम सर्ग | कालिदास | १६१४ | ५ | लि.क. अलवेस्वर नागर ब्राह्मण |
| ३८ | ४४८५ | " अष्टमसर्गपर्यन्त | " | १८६१ | ४६ | लि.क. व्यास रतनेश्वर लि.स्था. जयपुर |
| ३९ | ७००१ | " सटीक | मू. कालिदास, टी. मल्लिनाथ | १८वीं श. | १३३ | षट्सर्ग के ७४वें श्लोकपर्यन्त |
| ४० | ५१०७ | " " | मू. कालिदास, टी. परमहंस परिव्राजकाचार्य सरस्वतीतीर्थ | १७वीं श. | ३२ | प्रथम पत्र अप्राप्त, प्रथम सर्ग के छठे श्लोक से पञ्चमसर्ग के २०वें श्लोक तक टीका है |
| ४१ | ७७६४ | कृष्णगणोद्देशदीपिका | हनुमत्कवि | १६वीं श. | ६ | लि.क. धर्मेश्वर अम्बावतीवास्तव्य |
| ४२ | ५२७१ | खण्डप्रशस्ति | " | १७५६ | २८ | |
| ४३ | ४३३८ | " | " | १८वीं श. | ३० | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-----------------------|--------------------------------|----------|-------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ४४ | ५६६८ | खण्डप्रशस्ति | हनुमत्कवि | १६वीं श. | ६ | जीर्ण और प्राचीन प्रति |
| ४५ | ४२७६ | खण्डप्रशस्तिवृत्ति | वृत्तिकार गुणविनय | १८वीं श. | २० | |
| ४६ | ५०६० | गीतगोविन्द | जयदेव | १६वीं श. | ३४ | |
| ४७ | ५२०५ (१६) | " | " | १८वीं श. | ६६से८६ | |
| ४८ | ६०६० | " (सटीक त्रिपाठ) | " डी. चैतन्यदास | १६वीं श. | ४६ | |
| ४९ | ६७३४ | " | जयदेव | १८वीं श. | ३४ | |
| ५० | ६०६८ | " सटीक | मू. " डी. चैतन्यदास | १८१८ | ५१ | बालवोधिनी टीका, लि. मथुरामध्ये |
| ५१ | ६७८६ | " | जयदेव | १८७७ | ६५ | १२, ११, १२, १३, १४, ६१, ६२ |
| ५२ | ६८५७ | " | " | " | ७२ | ६३ वां पत्र अग्राप्त |
| ५३ | ७६२८ | " | " | १८वीं श. | १० | अपूर्ण, प्रथम पत्र शोभन |
| ५४ | ७७५१ | " सार्थ, पदसंग्रह | " | १६८३ | १७७ | गुटके के अंतर्गत सुरदास, हरदास परमानन्ददास, कृष्णजीवनी, लच्छीराम आदिके पद व परशु- राम कविके दोहे तथा तुलसी बीजमंत्रादि लिखे हुए हैं। |
| ५५ | ७७५५ | " | " | १६वीं श. | ५७ | |
| ५६ | ५१५७ | " सटीक | जयदेव, डी. शेष कमलाकर | १८३० | ६२ | साहित्यरत्नमालाख्या टीका लि. क. हरिचंद्र मथेन (मथेरी) रूप नगरमध्ये |
| ५७ | ६६८० | गोवर्द्धनसप्तशती सटीक | मू. गोवर्द्धन, डी. अनन्तपण्डित | १८१२ | ३०५ | टीका नाम 'व्यङ्ग्य' यार्थसदायन है |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|---------------------------|------------------------------------------|----------|-------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ५८ | ४४८६ | घटखर्पर | कालिदास | १८०५ | २ | लि.क. भवानीशङ्करात्मज उदयशङ्कर |
| ५९ | ५१६६ | " | " | १८वीं श. | ४ | |
| ६० | ६३०६ | " सटीक | मू. " टी. अज्ञात | १८१६ | ६ | |
| ६१ | ५६४५ | चौरपञ्चाशिका | चौर कवि | १८वीं श. | ३ | |
| ६२ | ६६२८ | जयवंशमहाकाव्य | सीताराम पर्वणीकर | १९४१ | १३३ | जयपुर के इतिहास से सम्बद्ध काव्य |
| ६३ | ७७६३ | दुर्जनमुखचोष्टिका | रामाश्रम | १९वीं श. | ४ | |
| ६४ | ४४०१ | द्रौपदीवस्त्रदानप्रबन्ध | गोबद्धन्त | १८१४ | ८ | |
| ६५ | ५६०२ | धर्मशस्त्रमभ्युदय | हरिश्चन्द्र (आदिदेव कायस्थसुत) | १८२३ | ३६ | |
| ६६ | ५८७७ | नलोदयकाव्य | कालिदास | १८५७ | २० | चतुर्थश्रवणसपर्यन्त |
| ६७ | ४०६२ | नलोदयटीका | मू. " टी. मनोरथ कवि | १८वीं श. | ३८ | विबुधचन्द्रिका टीका |
| ६८ | ७४५८ | " | मू. " टी. कविशेखर केशव | १८३५ | ३२ | साहित्यदीपिकानाम्नी |
| ६९ | ६१६३ | " सटीक त्रिपाठ | मू. " केशव नृसिंहाश्रम- कृत टीका सहित | १८५५ | ४८ | विदुषा वषतरामेण लिपिकृतम् लिखितं भरतपुरमध्ये तृतीयोच्छ्वास के अन्त में कर्ता केशव लिखा है |
| ७० | ५६४५ | नेमिहूतम् (विक्रमकाव्यम्) | विक्रम | १७वीं श. | ५ | कालिदासकृत मेघदूत काव्य के श्लोकों के अन्यपादपूर्तियुक्त |
| ७१ | ५१६२ | नैषधीयचरित | श्रीहर्ष | १८वीं श. | २२० | अन्त्य पत्र अग्राप्त |
| ७२ | ७०४२ | " | श्रीहर्ष | " | ६६से१६० | पञ्चमसर्ग के १४वें श्लोक से नवमसर्गान्त |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; १५—काव्य-नाटक-चम्पू

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|----------------------------------|---------------------|----------|-------------|-----------------------------------|
| ७३ | ६२६१ | नैषधीयचरित टीका (पञ्चमसर्ग) | टी. विद्यारण्य योगी | १८वीं श. | १६ | |
| ७४ | ४३८८ | नृसिंहचम्पू | केशव भट्ट | १६वीं श. | १५ | लि.क. जोशी रघूनाथ, जयपुर |
| ७५ | ५१५८ | प्रसन्नराघव | जयदेव | १८१५ | ७३ | सवाईमाधोसिंहजीराज्य |
| ७६ | ५३६४ | " | " | १८५० | ३८ | लि.क. चतुर्भुज मिश्र |
| ७७ | ७२६८ | परिशिष्टपर्य (स्थविरावली-चरित्र) | हेमचन्द्र | १८वीं श. | १२० | |
| ७८ | ७२१६ | पाण्डवचरित्र | देवप्रस सूरि | १६४१ | २४१ | लि.क. राव श्री दुर्गभाणजी |
| ७९ | ५६४२ | ब्रह्मदत्तवक्त्रवर्तिचरित्र | हेमचन्द्र | १६६६ | १३ | विजयराज्ये, रामपुरामध्ये |
| ८० | ७७८६ | भट्टिकाव्य (तृतीयसर्गपर्यन्त) | जगन्नाथ पण्डितराज | १६वीं श. | ८ | त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रा- |
| ८१ | ५१६० | भामिनीविलास | नागराज टाकवंशीय | १८११ | ३६ | न्तर्गत । लि.क. पं० विद्याकीर्ति- |
| ८२ | ५२४० | भावशतक | " | १८वीं श. | ६ | पुण्यतिलकशिष्य |
| ८३ | ६६५३ | " | गोवर्द्धन | १६वीं श. | १५ | श्रुति सुन्दर प्रति |
| ८४ | ७१३५ | मधुकैलिवल्ली | श्रीवेदव्यास | १६वीं श. | ३७ | प्रथम पत्ररहित |
| ८५ | ७०२२ | महाभारत | " | १८३७ | १७१७ | पत्र ३ से १० अप्राप्त |
| ८६ | ६८१० | " | " | १६वीं श. | २१५ | लि.क. हरिदत्तनागर सावरमध्ये |
| ८७ | ७४६५ | " | " | १७वीं श. | ३५६ | अपूर्ण, खाण्डववनदाहपर्यन्त |
| ८८ | ७८३२ | " | " | १७७३ | ३७१ | लि.क. हीरानन्द श्रीदीप्यजातीय |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|------------------------------|--------------------|----------|-------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ८६ | ६२४४ | महाभारत सभापर्व | श्रीवेदव्यास | १६६४ | १४२ | लि.क. गोवर्धन |
| ८७ | ६०६७ | " " | " | १८१० | ६६ | लि.क. मनोहरदास |
| ८८ | ६१८५ | " " | " | १८वीं श. | १६ | |
| ८९ | ६६११ | महाभारत सभापर्व | " | १६४५ | १५१ | लि.क. हरिदास व्यास गागात्मज |
| ९३ | ७४६४ | " " | " | १६वीं श. | ६२ | मांडलमध्ये |
| ९४ | ६१८६ | " मौशलपर्व सटीक | टी. नीलकंठ | १८वीं श. | १ | |
| ९५ | ५४७५ | " ऐषिक, आश्रमवासिक, मौशलपर्व | श्रीवेदव्यास | " | ऐषिक ६ आश्रम ३५ मौशल १२ | |
| ९६ | ७४५८ | " मौशलपर्व | " | १६वीं श. | १३ | |
| ९७ | ६१८८ | " आश्रमवासिकपर्व सटीक | टी. नीलकंठ | १८वीं श. | १ | |
| ९८ | ६१८६ | " सौत्तिकपर्व सटीक | " | " | १ | |
| ९९ | ६४७० | " " मूल | श्रीवेदव्यास | " | १५ | |
| १०० | ७१२० | " " | " | १८२६ | ३२ | रायचन्द्र बाह्मण की शक्तिसिंह- सुत भोपतिसिंह द्वारा प्रदत्त प्रति अन्य में लिखित 'जयश्री चतुर्भुज- रायजी', स्थान-सावर |
| १०१ | ६१८७ | " आरण्यक पर्व सटीक | मू. " टी. नीलकंठ | १८वीं श. | ३६ | |
| १०२ | ५४६८ | " " मूल | श्रीवेदव्यास | " | ३४७ | |
| १०३ | ६१६० | " विराटपर्व सटीक | टी. नीलकंठ | " | ६ | |
| १०४ | ६१६१ | " उद्योगपर्व " | " | " | ३५ | |
| १०५ | ७४५३ | " " मूल | श्रीवेदव्यास | १५३१ | १७६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रथाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|----------|--------------------------------------------------|--------------------|-----------|-------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| १०६ | ५४८१ | महाभारत कर्णपर्व | श्रीवेदव्यास | १८२८ | २२५ | लि.क. विद्याधर गुर्जरगौड़ पंचोली लिखायित भोपालसिंह शक्तावत, ३२१ पत्र अप्राप्त |
| १०७ | ६१६२ | " कर्णपर्व सटीक | टी. नीलकंठ | १८वीं | ६ | |
| १०८ | ६४७१ | " " मूल | श्रीवेदव्यास | १७६३ | ११६ | |
| १०९ | ५४७७ | " भीष्मपर्व | " | १८वीं | ३१६ | |
| ११० | ७४६३ | " " | " | १५वीं | १५४ | २४वीं पत्र अप्राप्त पत्र ५६ से ७१ तक तथा १३२ से १५४ तक सं० १७५८ में लिखित, शेष १५वीं शती के हैं |
| १११ | ५५०१ | " द्रोणपर्व | " | १८वीं | ५५१ | |
| ११२ | ५४६२ | " विशाखपर्व | " | १८२६ | १२ | |
| ११३ | ५१६५ | " आश्वमेधपर्व सटीक | टी. नीलकंठ | १८वीं | १२ | |
| ११४ | ६१६३ | " शान्तिपर्व राजधर्म सटीक | " | " | १६ | |
| ११५ | ६१६४ | " आपद्धर्म " | " | " | ६ | |
| ११६ | ६८६७ | " राजधर्म | श्रीवेदव्यास | १८वीं | ११० | लि.क. साधु निरंजनी उत्तमराम लि.स्था. सावर |
| ११७ | ७१२१ | " द्रुपदपर्व | " | १८२६ | ३५ | |
| ११८ | ६१६६ | " मोक्षपर्व सटीक | टी. नीलकंठ | १८वीं (?) | ८४ | |
| ११९ | ७४५२ | " हर्षिवंश | श्रीवेदव्यास | १६३० | ७०६ | श्रुति |
| १२० | ६७०० | महाराजायण सटीक त्रिपाठ | | १८वीं | १०६ | |
| १२१ | ६५८८ | महाराजायणान्तर्गत (सीतारामाष्टिलक्षणानुवर्णन) | | १८वीं | ५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|---------------------------|------------------------------|----------|-------------|---------------------------------------------------------------------------------------------|
| १२२ | ५६७३ | महारासोत्सव | हेनुमत्संहितान्तर्गत | १८३६ | १८ | भगवान् श्रीरामचन्द्रजीकी |
| १२३ | ६२३६ | " | " | १८वीं | १४ | रासलीला वर्णनपरक |
| १२४ | ५१६१ | मिथ्याज्ञानखण्डन (नाटक) | रविदास | " | १७ | " |
| १२५ | ४३६१ | सुद्वाराक्षस सटीक त्रिपाठ | मू. विशाखदत्त, टी. ढुंडियजवा | १६वीं | ८० | श्रीद्वारकापतेः प्रसादार्थ- रचितमिदं नाटकम् |
| १२६ | ६६०६ | मूलरामायण | वाल्मीकि | १७६७ | १३ | |
| १२७ | ५०६७ | मेघदूत | कालिदास | १६७४ | १८ | लि. स्था. जोधपुर, व्यास माधव- सुत परमानन्द पठनार्थम् प्रथम पत्र रहित, लि. क. हरिकृष्ण |
| १२८ | ५१६३ | " | " | १६वीं | २ से १७ | |
| १२९ | ५७०६ | " | " | १८६४ | २१ | |
| १३० | ६१२३ | " | " | १८वीं | ११ | लि. क. मुनि विनीतसागर भाव- सागरशिष्य सूरतमध्ये लिखितं |
| १३१ | ६२४८ | " | " | " | १८ | |
| १३२ | ६१३७ | " टीका | " | " | २२ | लि. क. मुनिवीरविजय संघ- त्रिजयगणिशिष्य |
| १३३ | ७२३५ | " वृत्ति | " | १६८३ | ४१ | |
| १३४ | ४३८६ | " सटीक | " | १८०१ | २७ | लि. क. चतुरविजय गणि |
| १३५ | ४३६० | " | टी. धनेश्वर | १७६३ | २६ | लि. स्था. श्री कर्णपुर |
| १३६ | ५१५६ | " | टी. पूर्णानन्द यतीन्द्र | १७वीं | ६२ | लि. क. श्री दर्यापि |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|---------------------|---------------------------------|----------|-------------|-------------------------------------------------------------------------|
| १३७ | ५६२५ | मेघदूत सटीक | मू. कालिदास, टी. अज्ञात | १७वीं | ३० | |
| १३८ | ६०५३ | " | " | १६वीं | २४ | |
| १३९ | ६१६६ | " | " | " | ३६ | |
| १४० | ६८६६ | " | " | १७५२ | ३१ | लि.क. मुनि लालचंद पाटलिपुत्र पत्तने |
| १४१ | ५६४१ | " सावचूरि त्रिपाठ | | १७८६ | २४ | लि.क. फतेविजय गणि रंगविजय-शिष्य, विलाड़ास्थाने लिखितम् |
| १४२ | ६००३ | " " पंचपाठ | | १६वीं | ६ | विशिष्ट प्रति |
| १४३ | ७२६६ | " सावचूरि | अथचूरिकर्त्ता श्री लक्ष्मीनिवास | १८०७ | २२ | लि.क. अमरहंसगणि कल्याण-हंसगणिशिष्य, विशिष्ट प्रति |
| १४४ | ५१८१ | " सटिप्पण | | १७वीं | १६ | लि.क. राघव शर्मा |
| १४५ | ६६६३ | मोहमुद्गर | श्री शङ्कराचार्य | १७४३ | ३ | लि.क. ब्रजवासी अलवरमध्ये |
| १४६ | ५७५६ | रघुनाथार्यारत्नमाला | महामुद्गल भट्ट | १६१२ | ५ | लि.क. पुरुषोत्तम आचार्य |
| १४७ | ४१६८ | रघुवंश | कालिदास | १८४६ | १४२ | स्था. जयनगर |
| १४८ | ५१२४ | " | " | १८३६ | ११६ | लि.क. लाला मयाराम कृपाराम-सुत । लि. स्था. हिडिम्बानगर यति सुखानन्दपठनाथ |
| १४९ | ६२११ | " | " | १८४५ | १२२ | आरम्भ के कुछ पत्रों में टिप्पणियाँ हैं । |
| १५० | ६५६१ | " | " | १८६८ | ८७ | लि.क. मनीराम पण्डित कसमीरनगरे |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|------------------------------------------------|--------------------|----------|-------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| १५१ | ६७८६ | रघुवंश | श्री कालिदास | १६वीं | ८३ | द्वादशसर्गपर्यन्त |
| १५२ | ६८४७ | " | " | " | ५ | प्रथम सर्ग मात्र |
| १५३ | ६८६६ | " | " | " | ७४ | |
| १५४ | ७०५२ | " | " | १६३३ | ११६ | पत्र १ से ६ अप्राप्त । लि.क. गोपाल व्यास, श्री रङ्ग- स्यात्मज नरसिंहदास, सान्धातु- पुरमध्ये, श्रीमदकबर पात- साहिराज्ये |
| १५५ | | " सटीक (सुगमान्वयबोधिका टीका) | डॉ. सुमतिविजय | १६०१ | १६६ से ३४७ | सर्ग १२वें से १६ तक लि.क. विरधीचंद वीकानेरमध्ये |
| १५६ | ५४६६ | रघुवंश सटीक | डॉ. मल्लिनाथ | १८वीं | २२१ | पत्र ५४ से ५८ अप्राप्त |
| १५७ | ६७६२ | " | " | १७वीं | १४२ | चतुर्विंशसर्ग के ७२वें श्लोकपर्यन्त |
| १५८ | ६८१४ | " | डॉ. समयसुन्दर | १६वीं | ६१ | नवम सर्ग पर्यन्त |
| १५९ | ७३०२ | " | डॉ. धर्मसेरु गणि | १८३५ | २०३ | |
| १६० | ५४६१ | " सटिप्पण पाठांतरसहित | " | १८वीं | ३८ से १८२ | ८१वां पत्र अप्राप्त |
| १६१ | ६६७६ | " सटिप्पण | " | १५४७ | १०६ | लि.क. वाचक तिहुणकीति |
| १६२ | ४३२६ | " साक्षरि पंचपाठ | " | | | चारुचंद्रशिष्य श्री मरुस्थलदेशी |
| १६३ | ७०८३ | राधाकुण्ठ प्रेमसम्पुट काव्य | " | | | शुद्धदन्ती श्रीश्रीनगरे सातल- |
| १६४ | ७५८५ | राधामाधवलीला | " | | | विजयराज्ये मंत्रीश्वर बरणवीर |
| | | | | | | दूला श्रीचैत्रगच्छे |
| | | | | | | लि.क. वीरहंस आद्यपत्र नृदित |
| १६५ | ७०८३ | राधागोविंद मिश्र, किशोरीरमण- शिष्य नवमस्कंध | | १६२६ | ११४ | |
| १६६ | ७०८३ | राधागोविंद मिश्र, किशोरीरमण- शिष्य नवमस्कंध | | १८वीं | १७ | |
| १६७ | ७५८५ | राधागोविंद मिश्र, किशोरीरमण- शिष्य नवमस्कंध | | २०वीं | ६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|--------------------------------------------|----------------------|----------------------|-------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| १६५ | ५२७६ | रामकृष्ण काव्य | सूर्यकवि | १६वीं श. १६२३ | २ | लि.क. घनश्याम व्यास पाराशर सवाईजयपुरमध्ये |
| १६६ | ५६५७ | " सटीक | " | १६१६ | १८ | |
| १६७ | ५६८४ | रामकृष्णकाव्य सटीक त्रिपाठ | " | १६वीं श. १७वीं श. | ६ ७ | अव्ययदीपिकानाम्नी स्वोपज्ञ टीका लिपिकार ने भूल से सम्भवतः टीका का नाम 'अनूपदीपिका' लिख दिया है |
| १७० | ६२७३ | रामरास श्रीरत्न (सुदर्शनसंहितान्तर्गत) | | २०वीं श. | २४ | |
| १७१ | ४४०० | रामहनुमन्नाटक | | १७वीं श. | ८ | लि.क. हर्षहंसमुनि |
| १७२ | ७८३३ | रामानुजचरित्र (प्रपञ्चामृताभिधान काव्य) | | १८३२ | १४६ | लि.क. जोशी रघुनाथ सवाईजयपुरमध्ये |
| १७३ | ७०२० | रामायण | वाल्मीकि | १७६६ | ८३३ | |
| १७४ | ५४७१ | " बालकाण्ड | " | १८वीं श. | ६० | |
| १७५ | ५५१४ | " " (मूलरामायण मात्र) | " | " | १५ | |
| १७६ | ४२५० | " " | " | " | २० | प्राद्य पत्र सचित्र |
| १७७ | ५६६७ | " " | " | " | १२३ | प्राद्यन्त शोभन |
| १७८ | ६२६१ | " " | " | १८६० | ७४ | |
| १७९ | ७०२५ | " " | " | १८वीं श. | ६३ | " |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|--------------------------|---------------------------|----------|-------------|----------------------------------------------------------------------------------------------|
| १८० | ६१४२ | रामायण बालकाण्ड | वाल्मीकि | १६ वीं | २०३ | तिलकव्याख्यायुक्त |
| १८१ | ६५०० | " " | " | " | १५५ | " |
| १८२ | ५६६६ | रामायण अयोध्याकाण्ड | " | १८व | २२५ | |
| १८३ | ७०२६ | " " | वाल्मीकिमुनि | १८०८ | ११५ | |
| १८४ | ६४६६ | " " | " | १६वीं | ३३० | तिलकव्याख्या सहित अपूर्ण |
| १८५ | ५४४७ | " " | " | १८वीं | २३१ | अपूर्ण |
| १८६ | ६१४४ | " " | मू. वाल्मीकि, टी. महेश्वर | १६वीं | ३४+२६ | दोनों काण्ड एक ही जिल्द में हैं |
| १८७ | ५६७० | अरण्य और किष्किन्धाकाण्ड | वाल्मीकि | १६वीं | १२३ | तिलकव्याख्या सहित |
| १८८ | ६१४३ | " " | " | १६वीं | १७८ | " |
| १८९ | ६५०१ | " " | " | " | ११७ | " |
| १९० | ५०४२ | किष्किन्धाकाण्ड | " | १७६२ | ७६ | पत्र ६, ६६वां अप्राप्त, पत्र २६ से ८० तक प्रायः त्रुटित, प्रति जीर्णशीर्ण, लि.स्था. तूंगानगर |
| १९१ | ५६६८ | " " | " | १८वीं | २७ | आद्यन्तपत्र शोभन |
| १९२ | ६०१८ | " " | " | १८६६ | १२२ | प्रति अपूर्ण, अन्त के कुछ पत्र भी गे हुए हैं |
| १९३ | ६२६० | " " | " | १६वीं | १२१ | तिलकव्याख्या सहित |
| १९४ | ६५०२ | " " | " | " | १५२ | |
| १९५ | ६२०४ | सुन्दरकाण्ड | " | " | १०० | भोकाजीलक्ष्मणस्यदेव पुस्तकम् |
| १९६ | ६०१७ | " " | " | १७६६ | १३७ | पत्र सं० ११६ तक पत्र प्राचीन |
| १९७ | ६१८४ | " " | " | १८वीं | १२८ | हैं और १८वीं वा. के प्रतीत होते हैं, सं० ११७ से १२८ तक |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|--------------------------|---------------------------------------|----------|-------------|---------------------------------|
| १६८ | ५६७१ | रामायण युद्धकाण्ड | वाल्मीकि मुनि | १८वीं श. | २८८ | |
| १६९ | ६०१६ | रामायण युद्धकाण्ड | " | " | २८६ | |
| २०० | ७८०७ | " " | " | " | १६६ | |
| २०१ | ५६७२ | " उत्तरकाण्ड | " | " | १६६ | अमृतसरे लिखितम् |
| २०२ | ६०२० | " " | " | १८६७ | १८६ | लि. क. लक्ष्मण |
| २०३ | ४५२१ | रामायणसार | श्रीअग्निवेशमुनि | १६वीं श. | १२ | विद्वज्जनविनोदिनी टीका |
| २०४ | ५३६६ | राक्षसकाव्य सटीक त्रिपाठ | | १८वीं श. | ६ | प्रति सुन्दर है |
| २०५ | ५६६२ | " | टी. सुरदेव भट्ट गोपीनाथसुत | " | २ | अपूर्ण |
| २०६ | ६००६ | वासवदत्ता | सुबन्धु | १७५३ | ६६ | गोकुलचंद्र गोस्वामिना लिपीकृतम् |
| २०७ | ५३०२ | विदग्धमाधव | | १७५८ | १०० | लि. क. हुदयराम कायस्थ |
| २०८ | ५२३० | विप्रमुखपेटासस्तवक | | ६वीं श. | २६ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| २०९ | ६०६२ | विश्वगुणादर्शचम्पू | वैकटाचार्ययाजी काञ्चीनगर— वास्तव्य | १६१८ | ६० | |
| २१० | ४३३७ | वैणीसंहार | नारायण भट्ट | १७वीं श. | ५४ | |
| २११ | ६७१७ | शतश्लोकी रामायण | अग्निवेश्यमुनि | २०वीं श. | ११ | लि. क. गोपीनाथ |
| २१२ | ५६१२ | शत्रुञ्जय माहात्म्य | धनेश्वर | १५११ | १८५ | आज्ञापल्ली में लिखित |
| २१३ | ७२५३ | " | " | १६७१ | २२५ | |
| २१४ | ७०४० | शिशुपालबधम् | माधकवि | १६८३ | १३८ | आद्य २० पत्र अप्राप्त |
| २१५ | ६००६ | शिशुपालबध टीका | टी. वल्लभ (आनन्ददेवायनि) | १८वीं श. | २४३ | प्रति सुन्दर है |
| २१६ | ७०८७ | " सटिप्पण | माध वणिक (?) | १५५२ | १२८ | * विशिष्टतम प्रति |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-------------------------------------------------|-------------------------------------------------|----------|-------------|------------------------------------|
| २१७ | ७६६० | त्रिशुपालबध टीका | दी. मल्लिनाथ | १८वीं | १३१ | नवमसर्गान्त, दो लिपियाँ मिल गई हैं |
| २१८ | ५१११ | " सटीक | " | " | ३३ | प्रथम सर्ग मात्र |
| २१९ | ७८०६ | " | " | " | १२ | |
| २२० | ६५६८ | शृङ्गारतिलक | कालिदास | १९वीं | २ | |
| २२१ | ६१७६ | शृङ्गारमाला | सुखलाल | " | ७ | रचनाकाल १८०१ |
| २२२ | ४२९७ | शृङ्गारचैरग्यभक्तावली | सोमप्रभाचार्य | १७वीं | ६ | |
| २२३ | ५३०३ | संविदप्रकाश | गोविन्द कबीरद्वार | १९२२ | २५ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| २२४ | ४१२६ | सप्तशती (आर्यावृत्तबद्धा) | गोविन्द | १८०७ | ५३ | लि.क. जोसी परसराम |
| २२५ | ६०६३ | सुन्दरमणि सन्दर्भ | मधुराचार्य | १७७९ | ४० | |
| २२६ | ४७१५ | सूर्यज्ञातक | मयूर कवि | १९वीं | १६ | |
| २२७ | ५९५४ | हंसहृत सटीक | रूप गोस्वामी | " | २४ | |
| २२८ | ५१६६ | हनुमत्नाटक सटीक | दी. मोहनदास मिश्र, कमलापति- माथुरचतुर्वेदसुत | १८५९ | १११ | लि.क. पुजारी राघोदास |
| २२९ | ५५५३ | " मूल | सू. वोपदेव मधुसूदन | १८वीं | ४० | ३९वाँ पत्र अप्राप्त |
| २३० | ७५०५ | हरिलीला सटीक (भागवतानु- क्रमणिका) | सू. वोपदेव मधुसूदन | १७९२ | ३६ | ३५वाँ पत्र अप्राप्त |
| २३१ | ६१९७ | हरिवंश टीका | दी. नीलकंठ | १८वीं | ५३ | भावार्थप्रकाशभिधान व्याख्यान |
| २३२ | ६९९९ | हरिविलास प्रथम सर्ग | लोलिम्बराज | " | ४ | |
| २३३ | ५९४३ | त्रिपट्टिविलासा-पुरुष-चरित्र (परिशिष्ट पर्व) | हेमचन्द्राचार्य | १४८६ | ७० | |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १६-रसालङ्कारादि]

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विषय उल्लेखनीय |
|----------|------------|--------------------------------------------|------------------------------------|----------|-------------|---------------------------------------------------------------------------------|
| १ | ६११३ | अलङ्कारकौस्तुभ सटीक | म. लक्ष्मीधर, टी. विश्वेश्वर | १९वीं | १२५ | सेरपुरासध्ये लिखितम् |
| २ | ४३९९ | अलङ्कारचन्द्रिका (कुवलयानन्दटीका) | वैद्यनाथ | " | १२३ | रायद्वन्द्वपुरे लिखितम् |
| ३ | ७७८३ | " | " | १९०२ | १५७ | लि.क. श्रीहर्यसोमगणि |
| ४ | ५९८३ | काव्यकल्पलतावृत्ति (कवि शिक्षा) | अमरचन्द्र | १६४८ | १०२ | |
| ५ | ५९९९ | " | " | १७वीं | १२० | |
| ६ | ५२७५ | काव्यचन्द्रिका (समस्यापूरणोपाय) | न्यायवागीश भट्टाचार्य | १८वीं | ९ | |
| ७ | ५८७९ | " | " | १८११ | ११ | |
| ८ | ६००७ | काव्यप्रकाश श्लोकांशदीपिका | गोविन्द ठक्कुर | १६५६ | २५ | लि.क. गोस्वामी नंदात्मजबलदेव |
| ९ | ५९५५ | कुवलयानन्द | अप्यय दीक्षित | १८९५ | ४८ | लि.क. केशवराम |
| १० | ६२४६ | " | " | १८६७ | ४६ | लि.क. लक्ष्मीचंद ब्राह्मण |
| ११ | ४७०८ | कुवलयानन्दकारिका | " | १८१५ | १८ | |
| १२ | ५१४० | कुवलयानन्द (अलंकारचन्द्रिका) | म. जयदेव, टी. प्रद्योतम भट्टाचार्य | १८वीं | २१ से ५९ | |
| १३ | ६०७३ | चन्द्रालोक सटीक त्रिपाठ (चन्द्रालोकप्रकाश) | जगन्नाथ पण्डितराज | १८९९ | ३९ | लि.क. सालगराम |
| १४ | ६१६४ | रसगङ्गाधर | विश्वेश्वर लक्ष्मीधरपुत्र | १८वीं | २७९ | किञ्चिदपूर्ण |
| १५ | ६१२४ | रसचन्द्रिका | भानुदत्त | १८३३ | ३६ | लि.क. चुन्नीलाल |
| १६ | ६३०५ | रसतरङ्गिणी | " | १९३१ | ५१ | यह पुस्तक गुजरात पाटण |
| १७ | ७७८० | " | " | १९वीं | ३९ | वास्तव्य राव कान्होजी उमेद- सिंहजी ने अपने पढ़ने के लिये जोधपुर में लिखाई |
| १८ | ७७८१ | रसतरङ्गिणीनौका टीका | जडुपनामक गङ्गाराम कवि | १९०२ | १०७ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------------------------------|-------------------------------------------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------|
| १६ | ४३२७ | रसदीधिका | विद्याराम | १८वीं | ४८ | र. का. सं. १७०६, लि. स्था. कोटा |
| २० | ६२६४ | रसमञ्जरी | भानुदत्त मिश्र | १६०४ | २४ | लिखितं रामचरणेन |
| २१ | ६३१४ | " | " | १८५३ | ३२ | |
| २२ | ६४०४ | " | " | १७०५ | ५ | लि. क. मेघराज ऋषि |
| २३ | ६६३१ | " | " | १६वीं | १७ | |
| २४ | ६४६८ | रसमञ्जरी टीका व्यङ्ग्यार्थकोमुदी | मू. भानु कवि, टी. अनन्तपण्डित त्र्यम्बकपण्डितात्मज | १६०६ (?) | ४६ | काशिराज श्रीचन्द्रभानु- कुतूहलार्थं निर्मित |
| २५ | ७५०० | रसमञ्जरी सटीक | मू. भानु कवि, टी. शेषचितामणि | १६२१ | २४ | पत्र १-२ अप्राप्त |
| २६ | ७७८२ | " रसिकरञ्जिनी टीका | मू. भानु कवि, टी. गोपाल भट्ट | १६वीं | ७२ | अपूर्ण |
| २७ | ६६६७ | " सटिप्पण | भानु कवि | " | ४४ | लि. स्था. कुरुणगढ़ |
| २८ | ७५०७ | रसमञ्जरी प्रकाशस्वोपज्ञ टीका सहित | नागेश भट्ट श्रीकालोपनामक शिव भट्टसुत | १८३८ | ४२ | व्यास मोतीराम पठनार्थम् |
| २९ | ७७८४ | रसमञ्जरी व्याख्या व्यङ्ग्यार्थकोमुदी | अनन्त पण्डित त्र्यम्बकात्मज | १६०२ | १७४ | लि. क. साधु प्रभुदास बारहठ पंच कान्होजी उमेदसिंहजी पाटणवासी वाचनार्थ जोधपुरे लिखितम् |
| ३० | ६२६३ | रसिकमञ्जरी टीका रसिकरञ्जिनी | मू. भानु कवि, टी. गोपाल भट्ट | १६वीं | ३६ | |
| ३१ | ६००२ | वाग्भटालंकार टीका | मू. वाग्भट | १७वीं | १६ | |
| ३२ | ६८७२ | वाग्भटालंकार (पञ्चपाठ) पदभञ्जिका व्याख्या | " | " | २० | |
| ३३ | ७१६१ | वाग्भटालंकार सावचरि | " | १६वीं | ८ | |

वाग्भटालङ्कार (सटीक)
(पद्महर्षी शताब्दीमें लिखित पंचपाठ पुस्तक)

अथसंख्या ७१६३

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|---------------------------------|----------------------------------------------------------|----------|-------------|---------------------------------------------------------------------------|
| ३४ | ४३०६ | चागभटालंकारवृत्ति | धर्मदास | १६वीं | १५ | २,६,७ और १३ पृष्ठ नहीं हैं |
| ३५ | ६६४५ | विदाधमुखमण्डन | " | १६५७ | २८ | सूर्यष्टमहीभिर्द्युते विक्रमे |
| ३६ | ६६४६ | " | " | १८१२ | २४ | लि.क. राघव/कृष्ण गुरजो |
| ३७ | ७६८७ | " | " | १८४२ | ३६ | शिवरामसुत |
| ३८ | ७६६२ | " सटिप्पण | " | १६८२ | १५ | लि.क. गङ्गादास हीरानन्द- सूरीश्वर शिष्य पल्लीवरपुरे (पत्नी—मारवाड़) |
| ३९ | ६५१६ | " सावचूरि | अवचूरिकर्ता अज्ञात | १८३६ | ४५ | लि.क. शिवनाथ शिवजीरामसुत |
| ४० | ६३१० | वृत्तिवार्तिक | अप्यथ्य दीक्षित | १७वीं | १६ | |
| ४१ | ६६६६ | " | " | १८वीं | १७ | |
| ४२ | ५६०३ | अवणभूषण (विदाधमुखमण्डन टीका) | नरहरिभट्ट हरिरल्लालनन्दनः | १६वीं | ८ | |
| ४३ | ५३११ | साहित्यरत्नाकर (प्रथम तरङ्ग) | श्रीधर्मसुधी पर्वतनाथसुत पल्लभाम्बागर्भज हारीत गोत्रज | १६वीं | १६ | वाराणसी में रचित |

राजस्थान पुरातत्त्वविषय मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १७-मुभाषितादि]

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|--------------------------------|-------------------------|----------|-------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| १ | ५६६२ | उपदेशशतक (चारचरित्र्य) | क्षेमेश्वर | १६३६ | ६ | रसान्यङ्केन्दुहायने लिखितं गोपरागेण शुक्कृष्णेग्निभूतियो |
| २ | ७२७२ | एकपट्टियुतप्रश्नशत | जिनवल्लभ | १७४१ | ७ | |
| ३ | ४३४७ | कपूर्प्रकरसावचूरि | मू. हरिकवीश्वर | १६वीं | २५ | |
| ४ | ५६४७ | " | टी. जिनसागर सूरि | १५६७ | २८ | रचनाकाल १५०४ लि.क. संघमाणिक्कमणि लि.स्था. चम्पकनेर महानगर अणहिलपुरमध्ये लिखित लि.क. सोमचंद्रगणि लि.स्था. पत्तननगर (पाटण गुजरात) |
| ५ | ५६५६ | " | हरिसुनि वज्रसेनशिष्य | १५५८ | ५४ | |
| ६ | ७३६५ | वृष्टान्तशतक (राज. भाषास्य सह) | तेजसिध गणि | १७६६ | १६ | |
| ७ | ७३६७ | " | मूल | १८वीं | १८ | |
| ८ | ७५४८ | " | " लूकागच्छीय | " | ६ | लि.क. काहजी मुनि लि.क. गंगाधर |
| ९ | ४५३२ | नीतिशतक सटीक | मू. भर्तृहरि, टी. धनसार | १८२२ | २५ | |
| १० | ४४५२ (३४) | " सत्त्वक | भर्तृहरि | १८०७ | १-१३ | |
| ११ | ४५६५ | प्रश्नोत्तरमणिमाला | श्रीशङ्कराचार्य | १८वीं | ५ | |
| १२ | ७३७८ | प्रश्नोत्तरमाला | विमलसूरि | १७५७ | १ | लि.क. विनोदसागर लि.स्था. श्रीकृष्णगढ़मध्ये प्रथम पत्र अप्राप्त |
| १३ | ७४३२ | प्रश्नोत्तररत्नमालाविवरण | देवेंद्रसूरि | १६वीं | १३८ | |
| १४ | ४४१५ | प्रश्नोत्तरपट्टिशतक सटीक | जिनवल्लभसूरि | " | २३ | |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|------------------------------|--------------------------|----------|----------------------------|-------------------------------------------------------|
| १५ | ५०५४ | पद्यावली | वित्तसंगलश्रावित | १६७६ | ४५ | ऋतित |
| १६ | ५१५६ | भर्तृहरिशतक (वैराग्य शृंगार) | भर्तृहरि | १६वीं | २२ | अपूर्ण |
| १७ | ४४८२ | रत्नकोश | वैशम्पायनोक्त | १७४६ | ६ | |
| १८ | ४६०७ (२) | लघुचाणक्य | चाणक्य | १८३७ | २३-३४ | |
| १९ | ४५७१ | " | " | १८०५ | ४ | लि.क. सामन्त ऋषि स्था. राजपुर |
| २० | ६७५० | दृढज्ञाणक्य | " | १६वीं | १६ | |
| २१ | ६७७२ | वैराग्यशतक | भर्तृहरि | " | ६ | |
| २२ | ४५६१ | " सटीक | मू. भर्तृहरि, टी. धनसार | १८६० | ५१ | |
| २३ | ४४५२ (३६) | " मूल | मू. भर्तृहरि, टी. धनसार | १८०७ | २५ से ३६ | लि.क. प्रीतसौभाग्य गणि स्था. वण्डा ग्राम |
| २४ | ५४३७ | शतकत्रय | भर्तृहरि | १८वीं | ६२ | |
| २५ | ६१२७ | " | मू. भर्तृहरि, टी. रूपचंद | " | ६३ | |
| | | | | | नीतिशतक १-२० | |
| २६ | ७०८० | शृंगारशतक | भर्तृहरि | १७५६ | शृ.श. २०-३६ वै.श. ३६-६३ | लि.क. किशोरदास मुरलीदास- शिष्य |
| २७ | ४४५२ (३५) | " | " | १८०७ | १३ से २५ | लि.क. प्रीतसौभाग्य गणि स्था. वण्डा ग्राम |
| २८ | ६६६४ | सभारंजन सुभाषित | " | १६१४ | १७ | १३वां पत्र अग्रस्त |
| २९ | ४५७२ | सभाशृंगार | सभाशृंगार | १७५१ | १४ | लि.क. रामनारायण लि.क. ऋषि धनजी स्था. राजपुर नगर |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण सर्वेदर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; १७-सुभाषितादि]

[१४६]

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|--------------------------------------|------------------------------------|----------|-------------|---------------------------------------------|
| ३० | ५२७७ | संस्कृतमंजरी | अनन्तपण्डित | १८वीं | २४ | |
| ३१ | ५२७८ | " | " | " | ४ | |
| ३२ | ५५२१ | " | " | १६१७ | ६ | लि.क. रामगोपाल, स्था. बूंदी |
| ३३ | ६५७७ | " | " | १६वीं | ३ | |
| ३४ | ५६७७ | " | " | " | ३ | |
| ३५ | ६२५३ | " | " | " | १६ | |
| ३६ | ६४०५ | संस्कृतविधि (ज्ञानक्रिया संवाद पत्र) | " | १७६८ | ३ | लि.क. पं. सुखानन्द |
| ३७ | ४५७४ | सिद्धरप्रकर | सोमप्रभ | १७वीं | ५ | |
| ३८ | ६३८७ | " | " | १६६४ | ५ | लि.क. वीरसुन्दरगणि |
| ३९ | ७३१६ | " | " | १५वीं | ५ | |
| ४० | ४४०४ | " सवालावबोध | मू. सोमप्रभ, डी. पाठकर राजश्रील | १८५२ | ६१ | लि.क. क्षमातीभाग्य लि.स्था. श्रीवांतानगर |
| ४१ | ४४५६ | " सटीक | मू. सोमप्रभ, डी. हर्षकीर्ति | १८वीं | १७ | |
| ४२ | ६२७६ | " | " | १८७२ | ४३ | लि.क. ऋषि नगराज गोपाचल मय्ये |
| ४३ | ७३२६ | " | मू. सोमप्रभ, डी. पाठक राजश्रील | १८३० | ५० | लि.क. दीनतमोभाग्य श्रीद्विलाडानगरे |
| ४४ | ७२६२ | " | सोमप्रभ | १७५६ | २२ | लि.क. लक्ष्मीचंद्र जादवनगरे |
| ४५ | ४३६७ | " सावचूरि | " | १७६२ | १४ | १३वीं पत्र अप्राप्त |
| ४६ | ४४१७ | " | " | १७वीं | १२ | लि.क. ऋषि भावनेश्वर |
| ४७ | ४५७० | " सत्समक | मू. सोमप्रभ, स्त. वीरसंगरगणि | १८४७ | १६ | लि.क. चोलाजी. वांकाजेश्वर |

| क्रमांक | ग्रंथाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|-----------------------------|----------------------|----------|-------------|---------------------------------------------------------------------------|
| ४८ | ७१४६ | सिन्दूरप्रकरसूक्तिसूक्तावली | सोमप्रभ | १८६० | ७ | लि.क. प्रमाणविजय |
| ४९ | ७४४४(१६) | " | " | १८८६ | ३१०-३२४ | स्था. पोहेकरण |
| ५० | ५३५२ | " सूक्तिरत्नकोश | " | १९०१ | ६ | |
| ५१ | ४८११ | सुभाषित (प्रास्ताविक) | | १८३३ | १८ | |
| ५२ | ४४५२(१०१) | सुभाषितश्लोकाः | | १८६० | १३६वाँ | |
| ५३ | ४५६६ | " | | १८६० | ८ | |
| ५४ | ७१५३ | " | | १९०० | २५* | प्रतिलिपि योग्य, जीर्ण खरड़ा |
| ५५ | ४३४६ | सुभाषितसंग्रह | | १८०८ | | लि.क. मुनिदास शिष्य, राणपुर |
| | | | | | | एक हजार से अधिक सुभाषितों का संग्रह, महत्वपूर्ण, विशिष्ट और प्राचीन प्रति |
| ५६ | ७१०३ | " | | १८६० | २ | |
| ५७ | ४३४८ | सुभाषितसूक्तावली | | १८८२ | २७ | लि.क. विमलहर्ष भोमजी-पठनार्थम् |
| ५८ | ५६८४ | सुभाषितार्णव | | १७३६ | ६१ | लि.क. सांवल पण्डित |
| ५९ | ६३२२ | " | | १८१० | २२ | |
| ६० | ७७४१(६) | सुभाषितावली | | १७६० | ४३-७७ | |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १७-मुभापितादि]

[१४६]

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-----------------------------------------|----------------------|----------|-------------|---------------------------------------------------------|
| ६१ | ४४१४ | सूक्तावली | तेजसिध | १५वीं | ३५ | ६२ श्लोकों की व्याख्यापयन्त अपूर्ण लि.क. ऋ. मेघजी |
| ६२ | ६३६० | सूक्तिमुक्तावली (सिद्धप्रकरबालावबोध) | | १८वीं | ७६ | |
| ६३ | ५१३५ | सूक्तिरत्नावलीव्याख्या | | १६वीं | ११ | |
| ६४ | ७५६० | ज्ञानप्रकाश सस्तबक | | १८४२ | ४ | |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर —हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १८-कथा, चरित्र, आख्यानादि]

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-------------------------------------------------|--------------------|----------|-------------|-------------------------------------------------------------------|
| १ | ४३३२ | श्रंङ्गचरित्र | मुनिरत्नसूरि | १६४६ | ३१ | |
| २ | ६१३२ | अजपुत्रकथा | माणिक्यसुन्दर | १७१४ | ७ | |
| ३ | ७२५० | अमरसेन वज्रसेनकथा | | १७६३ | २१ | लि.क. लक्ष्मण, जिहानाबादनगरे |
| ४ | ७२७० | आदिनाथचरित्र | | १८वीं | ७ | लि.क. रंगहर्ष, बाहुड़मेर |
| ५ | ७३३७ | आमराजा बप्प-भट्ट-सूरि-धर्मकथा | | " | ३ | प्रतिलिपि योग्य, अन्त में राज-स्थानी भाषा में स्तवन आदि लिखे हैं। |
| ६ | ५६४४ | उत्तमकुमारचरित्र | | १६६७ | १० | (लिपिकर्ता का नाम मिटाया हुआ है) |
| ७ | ४३३५ | उत्तराध्ययनकथा (प्राकृत उत्तराध्ययनसूत्रगता) | पद्मसागरगणि | १७वीं | ११६ | रचनाकाल १६५७ |
| ८ | ५६६३ | " | " | १७२३ | ८४ | पीपाड़ग्रामे, सं. १६५७ मध्ये रचित |
| ९ | ७२८१ | " | " | १८५६ | ८२ | लि.क. कुशलकल्याणगणि |
| १० | ७८५२ | कालकथा | नेमिप्रभ | १६वीं | ८ | रचनाकाल १६५७ |
| ११ | ५६६३ | कालकाचार्यकथा | | १७६२ | १३ | रचनास्थान पीपाड़ग्रामे |
| १२ | ७८५३ | " | | १६वीं | ६ | चित्र सं० ५ |
| १३ | ७८५४ | " | | " | १ से १० तक | चित्र सं० ७ |
| १४ | ७०८१ | चतुर्दशीलाविकथा (मेघनादराजः) | | १८वीं | २ | |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १५-कथा, चरित्र, आख्यानादि]

[१५०]

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|-------------------------------------|---------------------------------------------|---------------|-------------|-------------------------------------------|
| १५ | ५३७६(६) | चन्दनषष्ठिविधानकथा | बुद्धिविजय | १८वीं १८५३ | १०७-१०८ | लि.क. रामविजय गणि |
| १६ | ४३८७ | चित्रसेन पद्मावतीकथा | | | २३ | लि.स्था. श्रीराधनपुरनगर (गुर्जरप्रांत) |
| १७ | ७२६२ | " | राजवल्लभ पाठक | १८वीं | १३ | लि.क. ऋषिचंद्रभाण, बीदासर |
| १८ | ६६२० | " सटिप्पण | " महिमानिधान शिष्य | १८४६ | ५० | मध्ये, रचनाकाल १७२२ |
| १९ | ४३६८ | " चरित्रसस्तवक | मू. राजवल्लभ, स्तवककार भक्तिविजय | १८५३ | १५४ | |
| २० | ७१४५ | दीपमालिकाव्याख्यान | | | | |
| २१ | ५३७६(१०) | दुग्धरसकथा | | १९वीं | ६ | विशिष्ट प्रति |
| २२ | ४४३५ | देवकुमारकथा | | १८वीं | ११०-१११ | मलाणाग्रामे लिखित |
| २३ | ७३६६ | धर्मदत्तकथा | | १५३४ | ७ | लिखितं नन्दस्वारनगरे |
| २४ | ७३६३ | धर्मबुद्धि पापबुद्धिकथा | | १६१२ | १८ | लि.क. जयविजय गणि |
| २५ | ४४३४ | धर्मबुद्धिमंत्रिकथा | | १७०० | ६ | स्था. भाहरजा ग्राम |
| २६ | ६४०७ | धर्मदत्तकथा | माणिक्यसुन्दरसूरि मेरुतुंग सूरेंद्रशिष्य | १६७४ | १० | |
| २७ | ६८२० | धर्मसंवाद (महाभारतीययज्ञकथान्तर्गत) | | १६३३ | १७ | आद्य पत्रद्वय अप्राप्त |
| २८ | ५३७६(८) | निशाल्यकथा | | १७८६ | १०५-१०७ | लि.क. ऊधोवास, हिंडोलीमध्ये |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-------------------------------------------------------|--------------------|----------|-------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| २६ | ६१५३ | पापबुद्धिमंत्रीकथा | भावदेव | १६वीं | ६ | लि.क. दाणाऊषि समाणेनगरमध्ये प्राचीन प्रति |
| ३० | ७२१३ | पाशर्वनाथचरित्र | | १७५६ | १३६ | |
| ३१ | ५६३३ | पाशर्वनाथचरित्र | | १५०४ | १४७ | |
| ३२ | ६३१८ | मणिमंजीराख्यान (वाल्मीकि- रामायण बालकाण्डान्तर्गत) | | १६३० | २२ | |
| ३३ | ४५६० | मथुरामाहात्म्य संग्रह (गोपालोत्तरतापिन्यादिगत) | सकलकीर्ति | १६०८ | ३३ | लिखित श्रीनथमलजी खण्डेलवाल, विलास लि.क. नानूराम जोशी जोधपुरमध्ये लि.क. भावप्रमोद, जिनरत्नसूरि शिष्य |
| ३४ | ६१४६ | मलिननाथचरित्र | | १८१३ | ५२ | |
| ३५ | ७७७६ | माधवनाटककथा | | १६१५ | २६ | |
| ३६ | ५६६४ | मुनिपतिचरित्र | | १६वीं | २२ | |
| ३७ | ४३३३ | युवराजऋषिचरित्र | रत्नकीर्ति | १६६३ | ७ | ६४,६५ १००-१०५ |
| ३८ | ५३७६ (७) | रत्नत्रयविधानकथा | | १८वीं श. | २६ | |
| ३९ | ४४०२ | रूपसेनकथा | | १७वीं | ८०-८७ | |
| ४० | ५३७६ (४) | रोहिणीकथा मोतमोक्त | | १८वीं | ११ | |
| ४१ | ४४६० | वत्सराजकथा | कनककुशल | १६४० | ३३ | लि.क. पंकवर्धनशिष्य लाल- वर्धन, लि.स्था. पाडलाग्राम लि.स्था. मेड़ता नगर |
| ४२ | ४४५८ | वरदत्तगुणमंजरीकथा | | १८वीं | | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|------------------|----------------------|----------|-------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ४३ | ६७६६ | वैतालपञ्चविंशिका | सकलकीर्ति | १८वीं | ६८ | २५वीं कथा अपूर्ण |
| ४४ | ६१८२ | श्रीपालचरित्र | अजितप्रभ सूरि | " | २५ | पत्र ११, २१ और २३वां अप्राप्त |
| ४५ | ४३३४ | शान्तिनाथचरित्र | " | १६५१ | ६५ | |
| ४६ | ५६८० | " | " | १६५४ | ६२ | |
| ४७ | ७२७६ | " | " | १६३३ | १५३ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ४८ | ७३२२ | " | भावचंद्र (?) | १८वीं | १३३ | |
| ४९ | ७२६६ | शालिभद्रचरित्र | धर्मकुमार | १६०५ | २६ | भोटापलौवासी हुम्बड़जातीय शाहदेवसहेन श्रीगुरुणामपुद्गेन मंत्रा चांपाकेत लिखित कल्प- मेरुषु, प्रथमपत्र अप्राप्त (विशिष्ट प्रति) |
| ५० | ७३८८ | " | " | १६वीं | १७ | |
| ५१ | ४३३६ | " सावचूरि | " | " | १६ | |
| ५२ | ७३८३ | सम्पत्त्वकौमुदी | | १७०५ | ३२ | लि.क. शिवचंद्रगणि, माणिक्य- चंद्रसूरिशिष्य प्राचीन प्रति |
| ५३ | ७३५४ | " | | १४६६ | ३१ | |
| ५४ | ७३४२ | " | | १६वीं | ३७ | |
| ५५ | ७४३० | " | | १५वीं | ४६ | |
| ५६ | ७०८६ | " | | १८वीं | २८ | अपूर्ण |
| ५७ | ४३२८ | सागरचन्द्रकथादि | | १७वीं | १-१२ | इस प्रति में तीन कथाएँ हैं पृ. १ से ३ तक (१) सागर- चन्द्रकथा पृ. ३ से ६ तक (२) मङ्गलकलशकथा पृ. ६ से पृ. १२ तक (३) सुदर्शन- |

[राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; १८-कथा, चरित्र, आख्यानादि]

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------|--------------------------|----------|-------------|-----------------------------------------|
| ५८ | ६४०६ | सिंहासनद्वित्रिशतिका | बलालसेन | १७७५ | १४६ | प्रथम पत्र अप्राप्त, जीर्ण प्रति |
| ५९ | ५३४४ | सौभाग्यपंचमीकथा | कनककुशल विजयसेनसूरिशिष्य | १८वीं | ५ | रचनाकाल सं० १६५५ भूतेषुरसेन्दुवत्सरे |
| ६० | ७२६३ | हरिश्चन्द्रचरित्र | भावदेवाचार्य | १६वीं | ३२ | पत्र १, २, २०, २१, २३, २४ |
| ६१ | ६७८७ | हितोपदेश | विष्णु शर्मा | १८वीं | | और २७ से ३५ तक अप्राप्त |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १६-आयुर्वेद]

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|---------------------------|--------------------|----------|-------------|------------------------------------------------------------------|
| १ | ६०६४ | अञ्जननिदान | अग्निवेश | १८८८ | ६७ | लि.क. चतुर्भुज |
| २ | ५२६८ | अग्निवेशनिदान (सटीक) | " | १८५६ | २६ | स्थान-नेनवा |
| ३ | ५८४२ | अनुपानमञ्जरी | पीताम्बर | १६०७ | ११ | |
| ४ | ५८५४ | " | " | १६२८ | ४ | लि.क. लक्ष्मीनारायण |
| ५ | ४१६२ | " सस्तबक | " | १६वीं | ६ | लि.क. खीमचन्द |
| ६ | ५८६० | अमृतमञ्जरी (अजीर्णमञ्जरी) | काशनाथ | " | ३ | |
| ७ | ५११५ | अर्कचिकित्सा | रावण | १८वीं | ६३ | रावण मन्दोदरीसिंवाद, इसमें गर्भ- रक्षण के उपाय बतलाये गये हैं |
| ८ | ५८५० | अर्कप्रकाश | " | १८३६ | ३८ | |
| ९ | ५८५१ | " | " | १६२६ | २१ | लि.क. लक्ष्मीनारायण |
| १० | ५४६० | अरिष्टनिदान (रागविनिश्चय) | | १६वीं | ५४ | |
| ११ | ५६१० | ऋतुचर्या | त्रिमल्ल | १८६५ | ५ | लि.क. सिल्लु वज्रवासी |
| १२ | ६५१४ | कल्पस्थान | वाग्भट | १७३५ | १६ | |
| १३ | ५७५२ | कालज्ञान | शिवप्रोक्त | १६४३ | १६ | लि.क. रामविलास नायलावास्तव्य |
| १४ | ६८६० | " | " | १६०४ | ३६ | लि.क. लक्ष्मीचन्द्र |
| १५ | ५८६८ | कालज्ञानवैद्यक (सस्तबक) | " | १८४३ | ४६ | लि.क. ब्राह्मण चतुर्भुज |
| १६ | ४१५० | " मूत्रपरीक्षा आदि | अनेक | १८५१ | १६२ | लि.क. परसराम |
| १७ | ५८५२ | कूटमुद्गर (सटीक) | माधवपण्डित | १६२५ | ५ | लि.क. भवतावर |
| १८ | ६८७६ | गणपठचिकित्साकलिका | | १८वीं | २ | |
| १९ | ७५०४ | गोपालविनोद | गोपालदास | " | ७२ | प्रथम व सप्तम पत्र अप्राप्त |
| २० | ५८६२ | चमत्कारचिन्तामणि | लोत्सिम्बरज | १६३४ | ६ | लि.क. लक्ष्मीनारायण |

| क्रमांक | संख्यांक | ग्रन्थ नाम | कृतों प्रादि प्राप्त | विनि समय | पत्र संख्या | विवरण उत्प्रेरणीय |
|---------|-----------|-----------------------------|----------------------|----------|-------------|----------------------------|
| २१ | ६८६४ | चिकित्सासामग्रि | वंगीत | १८११ | ३६० | प्रथम पत्र प्राप्त |
| २२ | ७४६८ | गणितसिद्धिभास्कर | कायस्थ कायस्थ | १७४३ | ५४ | |
| २३ | ४७८० | गणितप्रतीकार (गणितप्रतीकार) | त्रिमल | १८०५ | ३ | |
| २४ | ४७८२ | गणितप्रतीकार | " | १८०५ | ६ | लि.क. बंदाव नारायणदास |
| २५ | ७६६१ | गणितप्रतीकार | " | १८५१ | १६ | " रामनारायण, कृष्णगढ़ |
| २६ | ६६६३ | गणितप्रतीकार | नागार्जुन | १८५१ | १५ | |
| २७ | ५२४५ | गणितप्रतीकार | नागार्जुन | १८५१ | ६४ | पत्र ८, २०, ३५, ६१ प्राप्त |
| २८ | ७७२२ (११) | गणितप्रतीकार | नागार्जुन | " | ११५-११६ | |
| २९ | ५४७८ | गणितप्रतीकार | मदनवास भूषति | १८०६ | १२५ | |
| ३० | ५८४६ | गणितप्रतीकार | त्रिमल | १८५१ | ३३ | |
| ३१ | ६८१२ | गणितप्रतीकार | मदनपाल | १८७० | ५१ | लि.क. भागीरथराय |
| ३२ | ६८८२ | गणितप्रतीकार | मदनपाल | १७२५ | ११६ | लि.क. रामचन्द्र |
| ३३ | ७०३६ | गणितप्रतीकार | बाबक दीपचन्द्र | १८५१ | ४७ | पत्र ४, ५, ६ प्राप्त |
| ३४ | ५६५८ | गणितप्रतीकार | " | १८५१ | १० | लि.क. लक्ष्मीनारायण |
| ३५ | ५८५७ | गणितप्रतीकार | " | १८२७ | २ | लि.क. भक्तभट्ट |
| ३६ | ७००८ | गणितप्रतीकार | " | १८३७ | २० | |
| ३७ | ६६८७ | गणितप्रतीकार | " | १८५१ | २५ | |
| ३८ | ५६०४ | गणितप्रतीकार | केयदेव | १८५१ | ४६ | |
| ३९ | ५८४४ | गणितप्रतीकार | " | १८५१ | १६ | लि.क. लक्ष्मीनारायण |
| ४० | ४०६६ | गणितप्रतीकार | " | १८८७ | १६६ | |
| ४१ | ६८७१ | गणितप्रतीकार | " | १८५१ | १०३ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------|----------------------------------|----------|-------------|------------------------------------|
| ४२ | ५८४० | बालग्रहचिकित्सा | रावण | १६वीं | २१ | लि.क. लक्ष्मीनारायण |
| ४३ | ५८६४ | " | " | १६२८ | २१ | |
| ४४ | ४२०० | बालतन्त्र | कल्याण | १८वीं | ३८ | |
| ४५ | ५८४१ | " | " | १६वीं | २३ | |
| ४६ | ५८६३ | " | " | १६२८ | १२ | लि.क. लक्ष्मीनारायण |
| ४७ | ६६५७ | " | " | १८६४ | ६० | लि.क. पोकरमल ब्राह्मण भालरापाटण |
| ४८ | ५८३४ | भावप्रकाश | भावदेव | १६वीं | ३३४ | |
| ४९ | ६८०५ | भावप्रकाश (मध्यमखण्ड) | भावसिंह | १८७२ | १७६ | लि.क. भागीरथ |
| ५० | ६८०६ | " | " | १६वीं | ३५० | |
| ५१ | ७८०८ | भावप्रकाश उत्तरकाण्ड | " | २०वीं | ५७४ | |
| ५२ | ७०२३ | मदनपालनिघण्टु | मदनपाल | १८८२ | ६८ | लि.क. पं.मतिमंदिर, विक्रमपुरन |
| ५३ | ५८३७ | मदनविनोद (निघण्टु) | मदननृपति | १६०५ | ११५ | |
| ५४ | ६८०३ | मदनविनोदनिघण्टु | मदनपाल | १६वीं | २-८१ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ५५ | ६१२० | मधुकोश | वैद्य महामहोपाध्याय जयपारदीक्षित | १८५६ | ५१-६५ | |
| ५६ | ५८३८ | माधवनिदान | माधव कवि | १८६० | ११० | |
| ५७ | ६७४३ | " | " | १५६२ | ६८ | |
| ५८ | ७०२४ | " | " | १७५३ | ३६ | लि.क. महेश सूरि, बीकानेर |
| ५९ | ५२८६ | " | " | १७३६ | १२२-१८४ | |
| ६० | ६८१३ | " | " | १८वीं | १७० | |
| ६१ | ६०१३ | " सटीक | " डी. वाचस्पति | १८७३ | २३७ | |

| क्रमांक | प्रमाणक | पदप नाम | कताई पादि आसय | निमि समय | पत्र मरुता | विताय उरुनकोम |
|---------|----------|-----------------------|---------------|----------|------------|-------------------------|
| ६२ | ५६२८ | आषमिराज मटोक | डो. बाषस्यति | १६११ | २२६ | लि.क. भागबाज बिप |
| ६३ | ६८६८ | " | " | १८७४ | २१६ | लि.क. रायपुव निप |
| ६४ | ४०६८ | योगबिलासमोदकसारसंग्रह | हयंकीति मूरि | १६६६ | ४७ | लि.क. आगमोबन |
| ६५ | ४७६६ (३) | योगबिलासमि | हयंकीति | १७७५ | १-१६८ | लि.क. ससमोभारापन |
| ६६ | ५८४३ | " | " | १६२० | ५० | उर्बा पत्र अप्राप्त |
| ६७ | ६४४१ | " | " | १८३१ | ४३ | प्रथम तीन पत्र अप्राप्त |
| ६८ | ६८७३ | योगबिलासमि सटोक | हयंकीति | १८६६ | ४६ | लि.क. भक्तावर शर्मा |
| ६९ | ४२६० | " गुजरभावा टोकापुस्त | " | १६३३ | ४-२४ | प्रथम तीन पत्र अप्राप्त |
| ७० | ६८१७ | योगतरनिमो | " | १६३३ | ६ | लि.क. भक्तावर शर्मा |
| ७१ | ५८५६ | योगसात | " | १७१२ | १६ | लि.क. भक्तावर शर्मा |
| ७२ | ४७७६ | योगसातक | " | १८५६ | ६ | लि.क. भक्तुमंज गोपाल |
| ७३ | ६६०३ | " | बंछनाय | १८४२ | २७ | लि.क. भक्तुमंज गोपाल |
| ७४ | ५८७५ | " सबासाबबोध | " | १८५६ | ५ | लि.क. भक्तुमंज गोपाल |
| ७५ | ६३१२ | योगसार (योगवासिका) | " | १८५६ | ५ | लि.क. भक्तुमंज गोपाल |
| ७६ | ६८१८ | रत्नसागर | " | १८५६ | ५ | लि.क. भक्तुमंज गोपाल |
| ७७ | ६८३२ | " | " | १८५६ | ५ | लि.क. भक्तुमंज गोपाल |
| ७८ | ७५६७ | रत्नबिलासमि | प्रततेबसुरि | १८५६ | ५ | लि.क. भक्तुमंज गोपाल |
| ७९ | ५६४३ | रत्नमञ्जरी | नातिनाय | १८५६ | ५२ | लि.क. भक्तुमंज गोपाल |
| ८० | ६०८७ | रत्नमञ्जरी संग्र | " | " | ५० | लि.क. भक्तुमंज गोपाल |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १६-आयुर्वेद]

[१५८]

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|------------------------|---------------------|----------|-------------|--------------------------|
| ८१ | ७६४१ | रसरत्नाकर तन्त्र | नित्यनाथ | १६वीं | ३७ | |
| ८२ | ५८५३ | राजमार्तण्ड | भोजनरेश | १६४२ | १६ | लि.क. लक्ष्मीनारायण |
| ८३ | ५५७६ | रामनिदान | राम | १८वीं | १८ | |
| ८४ | ६८०२ | रोगविनिश्चय | | " | १-६६ | |
| ८५ | ४१६१ | व्याधिनिरुह सस्तबक | विश्राम | १८५३ | ४६ | |
| ८६ | ५८६१ | विश्ववत्सभ | सिद्ध चक्रपाणि | १६२५ | ११ | लि.क. लक्ष्मीनारायण |
| ८७ | ६४५५ | विश्वप्रकाश कोश | श्रीमहेश्वर | १७वीं | ५५ | |
| ८८ | ५४७४ | विषरोगपथ्यापथ्यविचार | | १६वीं | ३६ | |
| ८९ | ७३८६ | वैद्यकउद्धार | राजमार्तण्ड | १६३४ | १५ | लि.क. शिवदास |
| ९० | ४७७६ | वैद्यजीवन | लोलिम्बरज | १८१६ | १० | |
| ९१ | ४८४४ | " | " | १७०० | १६ | |
| ९२ | ५२६४ | " | " | १८७६ | २७ | |
| ९३ | ५८३५ | " | " | १८६३ | १५ | लि.क. लक्ष्मीनारायण |
| ९४ | ५८८० | " | " | १८४८ | ५३ | लि.क. ठण्डीराम |
| ९५ | ५५५६ | " | " | १६वीं | १२ | |
| ९६ | ६०८१ | " सटीक | " | १६०५ | ४१ | पत्र १ से ३ तक अप्राम्त |
| ९७ | ६२८८ | वैद्यजीवन टीका | टी. हरिनाथ गोस्वामी | १६२२ | ५० | लि.क. सिद्ध कल्याण शर्मा |
| ९८ | ६३२६ | वैद्यजीवन सटीक त्रिपाठ | | १८८६ | ५७ | ३२वां पत्र नहीं है |
| ९९ | ४७७८ | " सस्तबक | लोलिम्बरज | १७३४ | २७ | लि. स्या. बगड़ी |
| १०० | ५८८१ | " | " | १६वीं | १७ | |
| १०१ | ६६०० | " | " | १८६८ | २६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------|-----------------------|----------|-------------|--------------------------------------------------|
| १०२ | ५२७३ | वैद्यरत्न | शिवानन्द भट्ट | १८वीं | ४४ | लि.क. राजविजयगणि |
| १०३ | ७८२६ | वैद्यवत्सलभ (सटबार्थ) | हस्तिरुचि | १७६८ | २१ | विवोरा नगरे |
| १०४ | ५३०८ | वैद्यविनोद | शंकर भट्ट | १८वीं | ६६ | आद्य दो पत्र अप्राप्त |
| १०५ | ५८३६ | " | " | १९वीं | ४७ | लि.क. लक्ष्मीनारायण |
| १०६ | ५८४८ | " | " | १९०४ | ८० | " " गोपालमहात्मा |
| १०७ | ६६०५ | " | " | १९१२ | ७४ | प्रतापसिंहसुत रामसिंहज्ञपारचित |
| १०८ | ७८१३ | " | " | १८५७ | २४ | " |
| १०९ | ७८१४ | " | " | १९वीं | ३८-११५ | लि.क. भक्तावर |
| ११० | ५८५८ | वैद्यामृत | मोरेश्वर | १९२६ | ७ | रचनाकाल (१६०३) |
| १११ | ५८४६ | शतश्लोकी (सटिप्पण) | त्रिमल भट्ट | १९१२ | १० | लि.क. लक्ष्मीनारायण |
| ११२ | ५८५५ | " | बोपदेव | १९२३ | ७ | लि.क. भक्तावर |
| ११३ | ६६०१ | " | " | १९वीं | ३८ | |
| ११४ | ६६३२ | " | त्रिमल, टी. कृष्णदत्त | १८वीं | ७ | |
| ११५ | ६०८० | " | | १९०३ | ६१ | पत्र १ से ४ व ६, १०, २१, २२, ३१, ३३, ३४ अप्राप्त |
| ११६ | ६५८६ | शतश्लोकी टीका | " | १९वीं | १० | |
| ११७ | ४३०३ | शार्ङ्गधरसंहिता | शार्ङ्गधर | " | १३१ | |
| ११८ | ५५६३ | " | " | १९०६ | १७३ | पत्र १ से १६ व १६५ से १६६ तक अप्राप्त |
| ११९ | ५८४७ | " | " | १८९१ | १०१ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|--------------------------|--------------------|----------|-------------|-------------------------------------------|
| १२० | ६०३० | शार्ङ्गधरसंहिता | शार्ङ्गधर | १६७८ | ४७ | राजलदेसरे लिखितं |
| १२१ | ६७६५ | " | " | १८६४ | १२७ | लि.क. रूपचन्द्र |
| १२२ | ६८६० | " | " | १७वीं | ६६ | |
| १२३ | ५८२४ | " | " | १६१० | ४७१ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| १२४ | ६०८४ | " सटीक (प्रथमखंड) | " टी. काशीराम | १६वीं | ७५ | |
| १२५ | ६०८५ | " " (द्वितीय) | " | " | १४० | पत्र १, २६, २५, ३६, ३७, १००, १०१ अप्राप्त |
| १२६ | ७७६५ | " (षष्ठाध्यायपर्यन्त) | टी. आठमल्ल | " | ५७ | |
| १२७ | ७०३८ | " (अपूर्ण) | | " | १२० | |
| १२८ | ५४१४ (२) | शारीरनिबन्धसंग्रह | | " | १-७१ | |
| १२९ | ४७८३ | शोथनिदानचिकित्सा | | १८वीं | ३ | |
| १३० | ६६७२ | सन्निपातचिकित्सा | | १६वीं | ११ | |
| १३१ | ६३०० | सन्निपातप्रकरण | बोपदेव | " | १२ | लि.क. फत्तेचंद, जयपुर |
| १३२ | ५७४५ | सिद्धमन्त्रप्रकाश | " | १८वीं | २८ | आद्य पत्र शोभन |
| १३३ | ४१३७ | " (सटीक) | | १८वीं | ८२ | लि.क. सेठ आदित्यराम |
| १३४ | ६०८२ | हिकमतप्रकाश (द्वितीयखंड) | | १६वीं | ५५ | पत्र २१ से २३ व ३०वां अप्राप्त |
| १३५ | ६०८३ | " (तृतीयखंड) | | " | ४४ | |
| १३६ | ६८०१ | हितोपदेश | शिव पण्डित | १८७० | ६२ | |
| १३७ | ५६३२ | क्षेमकुतूहल | क्षेम शर्मा | १६वीं | ६६ | |
| १३८ | ७४६२ | " | " | १८वीं | ३६ | |
| १३९ | ६६३८ | त्रिशक्तिका | दास पण्डित | १८५६ | १८ | लि.क. देवीदत्त |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-------------------|--------------------|----------|-------------|----------------------------------------|
| १४० | ५८४५ | त्रिशती | शाङ्गधर | १६वीं श. | १३ | लि.क. मतसाराम |
| १४१ | ६६६१ | ” (सटिप्पण) | ” | १७७० | ५० | पत्र ६, १२, १३, १६, २८ से |
| १४२ | ६०८६ | त्रिशतश्लोकी सटीक | ” | १६वीं श. | ११० | ३१, ६६, ७६, ८३, ८५ व ८६वां अप्राप्त |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २०-राजस्थानी ग्रन्थ]

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|----------------|----------------------------|--------------------|----------|-------------|------------------------------------------------------------------------|
| १ | ७७५३ (१-१५) | अंकपाटी | हीररतन | १८३७ | १३-२६ | * पाटियों के नीचे नीति विषयक "दूहा" हैं |
| २ | ४६०७(१) | अंकपाटी | | " | १८-२२ | |
| ३ | ४६१६(५) | अंकपाटी | | १८७५ | १०८वाँ | |
| ४ | ४४५२(५२) | अंगफुरकणविचार | | १८वीं | ४३ | चित्र सं० ४३, प्रारम्भ के १० दूहे पुण्यसागर वाली प्रतियों से मिलते हैं |
| ५ | ५८६३ | अञ्जनाचौपई (सचित्र) | | १९वीं | २४ | * सं० १६८७ में रचित । लिपि-कर्ता ऋषि नीलचन्द, पोही ग्राम, ऊदावत राज्य |
| ६ | ६५२५ | अञ्जनाचौपई | पुण्यसागर | १८६८ | २० | अन्तिम पत्र त्रुटित |
| ७ | ४८१८ | अञ्जनाचौपई | पुण्यसागर | १७०२ | १३ | |
| ८ | ४१६४(१) | अञ्जनासतीरास | | १६२६ | १७ | |
| ९ | ४०४० | अञ्जनारास | | १८४६ | २१ | |
| १० | ५०६३ | अञ्जनासतीनो रास | | १८वीं | १८ | अपर नाम पवनंजयप्रिया |
| ११ | ४०३६ | अञ्जनासुन्दरीचौपई | | १९वीं | ३४ | अञ्जनासुन्दरी हनुमंत चरित्र |
| १२ | ४३१६ | अञ्जनासुन्दरीचौपई (सचित्र) | भुवनेकीति | १८६१ | १४ | चित्र सं० ४० |
| १३ | ७०४३ | अञ्जनासुन्दरीचौपई | भुवनेकीति | १८वीं | २५ | लि. क. आर्या हीरा |
| १४ | ७२१६ | अञ्जनासुन्दरीचौपई | पुण्यसागर | १८५० | | बीकानेर में लिखित |
| १५ | ६३६२ | अञ्जनासुन्दरीरास | | १८६५ | | पोरबंदर में लिखित । बाई साकर पठनाथ |
| १६ | ५२०२(१) | अकबरनामा | | १८८५ | ४-८७ | जयपुर में लिखित |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|--------------|----------------------------|---------------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------------------|
| १७ | ४६२० | अकबरनामो | भाव कवियण (?) गर्गगोत्रीय | १६वीं | १४ | |
| १८ | ४८८७ (१०) | अदीतवारकी कथा | अप्रवाल मल्लपुर | १८वीं | ४६-७७ | |
| १९ | ५३१२ | अध्यात्मगीता | राजसिंघ | १८८३ | ८५ | अपूर्ण, प्रथम ८ पत्र अप्राप्त । पाली में लिखित |
| २० | ७७४३ (१) | अध्यात्मरामायण भाषा | | १७८४ | १-३२ | * बाई सिरिकंवरीलिखित, सावर मध्ये |
| २१ | ७५२४ | अध्यात्मविचार | | १८२७ | १६ | श्रीगारियाधामध्ये लिखित |
| २२ | ५४१८ (१६) | अनन्तचतुर्वशी कथा | ब्रह्मजिणदास | १६वीं | १२१-१२४ | |
| २३ | ४६१४ (१८) | अनन्तवतरास | लेमो | १८७१ | २१२-२१८ | |
| २४ | ४०३६ | अनाथीसंधि | | १८वीं | ६ | गीत दृढाबद्ध |
| २५ | ५१०८ | अब्जदीप्रश्न | | २०वीं | ८ | अपूर्ण |
| २६ | ५४१८ (३६) | अब्जदीपाशावली | | १८वीं | १-१० | जैन धिततिसहित |
| २७ | ४४५२ (१६) | अभिसारिकावर्णन गीत आदि | देवगुप्त चन्द्रसूरीश्वर | १८वीं | १८वां | १६०६ (?) में रचित । सारण- मध्ये ऋषि कचरा भाभण- शिव्यलिखित |
| २८ | ७१४१ | अमरदत्त मित्रानन्दचरित्रास | | १७०० | २८ | सं० १६०७ ई. क्र. ६ रवि-रचना काल |
| २९ | ४३६१ | अमरदत्त मित्रानन्दरास | " | १६१७ | १६ | |
| ३० | ५११७ | अमरसेनवीरसेनचौपाई | विजयहर्ष | १८४६ | २० | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-------------------------|----------------------------|----------|-------------|----------------------------------------|
| ३१ | ६६०२ | अमृतसागर | सवाई प्रतापसिंह | १६वीं | २२८ | पत्र २, ३, ४, ५ अत्रात् |
| ३२ | ६८३१ | अमृतसागर | " | " | ४६७ | * |
| ३३ | ५८३६ | अमृतसागर | " | " | ३३८ | अपूर्ण |
| ३४ | ४२०६ | अमृतसागर | " | १८७६ | २७८ | |
| ३५ | ७१३७ | अयवंतीसुकुमाल चौपाई | शान्तिहर्ष | १६वीं | ५ | रचनाकाल १७४१ |
| ३६ | ४०४८ (२) | अयवंतीसुकुमाल स्वाध्याय | रघुनदास | १८६२ | १६-२० | लि. क. धनरूपहंस, सऊपरा ग्रामे |
| ३७ | ७७४४ (२) | अर्जुनगीता | विनीतविमल | १७५८ | ३-८ | |
| ३८ | ४४६१ | अर्जुनचलश्लोक | जिनहर्ष | १८वीं | २ | |
| ३९ | ४०३४ | अरहसकमुनिचरित्र | जिनहर्ष सूरि (?) (सुमनहंस) | १६वीं | ६ | |
| ४० | ७७२४ | अवतारचरित | नरहरिदास वारहट | १७८६ | २६७ | * |
| ४१ | ७७२६ | अवतारचरित | " | १६१८ | ६४६ | |
| ४२ | ७७३३ | अवतारचरित | " | १६१४ | ४४५ | बदनोर में हरिदास कबीरपंथी द्वारा लिखित |
| ४३ | ७३८७ | अवतिगजसुकुमाल चौपाई | जिनहर्ष | १६वीं | ६ | रचनाकाल १७४१ |
| ४४ | ७७४५ | अश्वपरीक्षा | उदयरत्न | १६४३ | ३६ | लि. क. वर्जसिंह, पहला लख्या सो |
| ४५ | ४७८४ | अष्टप्रकारपूजारास | शुभचन्द्र | १८२६ | ६१ | ब्रह्म रामगोपालजी का |
| ४६ | ५४१८ (१६) | अष्टमीकथा | शुभचन्द्र | १६वीं | १४०-१४३ | |
| ४७ | ४६१४ (२४) | अष्टाणीवरतनोरास (अठई) | श्रीसार | १८७१ | २३१-२३२ | |
| ४८ | ४८२३ (१) | आणंदश्रावकसंधि | धर्ममन्दिर | १८१६ | १-६ | |
| ४९ | ५६०२ | आत्मप्रकाश चौपाई | | १८वीं | २३ | रचनाकाल १७४२ |

| क्रमांक | प्रमाणक | ग्रन्थ नाम | कतों पारिभाष्य | निधि समय | गण संख्या | विशेष सुचोदनीय |
|---------|----------|-----------------------------|----------------|----------|-----------|-------------------|
| ५० | ५४१८(५) | प्रायसंबोधराम | बनारसी | १८वीं | ८८-६१ | |
| ५१ | ५४१४(२०) | प्रादित्यकथावत | सूत्रो ग्राह | १८वीं | २२२-२२६ | |
| ५२ | ५३७६(२) | प्रादित्यवारकथा | | | ३१-४२ | |
| ५३ | ५२७६(१३) | प्रादित्यवारकथा छोटी | | | १६७-१६८ | |
| ५४ | ५४२० | प्रायसंबोधराम | प्रातविमल | १८वीं | २१३ | प्रातविमल प्रभात |
| ५५ | ७०६४ | प्रायसंबोधराम | मुनि श्रीसार | १८वीं | २२ | लि.क. साण्डी रत्न |
| ५६ | ५०४२ | प्रायसंबोधराम (प्रायोपनिधि) | " | १७५४ | १५ | बाबरीनगर मय्ये |
| ५७ | ५४१८(३२) | प्रायसंबोधराम | " | १६वीं | १७१-१७३ | लि.क. साण्डी रत्न |
| ५८ | ५६११(२) | प्रायसंबोधराम चिन्तावली | | १८वीं | ४१-४२ | ४१ बोरो |
| ५९ | ५०३५ | प्रायसंबोधराम | समुद्र मुनि | १८वीं | ४१-४२ | लि.क. भागवत |
| ६० | ५८२३(२) | प्रायसंबोधराम | मान कवि | " | ३ | |
| ६१ | ६०४५ | प्रायसंबोधराम | सोम सूरि | १८वीं | ६-११ | |
| ६२ | ५४५२(६) | प्रायसंबोधराम | प्रायसंबोधराम | १८वीं | १३ बी | मुसलमान प्रति |
| ६३ | ७३४४ | प्रायसंबोधराम | प्रायसंबोधराम | १८वीं | ६ | |
| ६४ | ५०५१ | प्रायसंबोधराम | प्रायसंबोधराम | १८वीं | २ | बाळ गीतबद्ध |
| ६५ | ५४१८(७) | प्रायसंबोधराम | कनकसोम | " | ६७-१०७ | |
| ६६ | ५१२१ | प्रायसंबोधराम | | १८वीं | ५ | रत्नकाल १६३८ |
| ६७ | ५५७३ | प्रायसंबोधराम | | सं. १६२८ | ६ | |
| ६८ | ७२७३ | प्रायसंबोधराम | | १७वीं | ६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------|--------------------|----------|-------------|------------------------------------------|
| ६९ | ४०४३ | इलाकुमार चौपाई | ज्ञानसागर | १८४३ | ५ | रचनाकाल १७१९ आसोज सुदि २ बुधवार |
| ७० | ६५३० | इलाकुमार चौपाई | " | १८वीं | ७ | |
| ७१ | ४९१४ (२८) | उणतीसी भावना | | सं. १८७७ | २४६-२४७ | |
| ७२ | ५९७४ | उत्तमकुमार चौपाई | तत्त्वहंस | १७९५ | ३१ | जोधपुर में लिखित |
| ७३ | ५०९८ | उत्तराध्ययन गीत | | १७२२ | १३ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ७४ | ४२८७ (१३) | उपदेश की रासो | रामचन्द्र | १८वीं | ९८-११४ | स्वयं कवि द्वारा लिखित । रचनाकाल १७२९ |
| ७५ | ६१०६ | ऋषभविवाहलो | सेवक | १७२२ | २१ | |
| ७६ | ६१६६ | ऋषिदत्ता चौपाई | चौथमल | १८७९ | २५ | बील मध्ये लिखितम् |
| ७७ | ७३३३ | ऋषिभाषित कुलक | | १८वीं | २ | |
| ७८ | ४९१५ (६) | एकलगड दाढाळारी वात | | १८८७ | १३६-१३९ | |
| ७९ | ४४५२ (५५) | एकलगर वाराहरी वारता | | | १११-११३ | अपूर्ण |
| ८० | ७२६१ | एकविंशति स्थान प्रकरण | सिद्धसेन सूरि | सं. १७६६ | १० | लि. क. सुमति हंस |
| ८१ | ७७४६ | एकादशीकथा भाषा (गद्य) | | १९१३ | ५१ | २६ कथाओं का संग्रह |
| ८२ | ४२९३ (२) | एकादशीकथा संग्रह | | | १८ | २० कथाओं का संग्रह |
| ८३ | ४०५५ | एकतारा तावरी वात | | | ३ | |
| ८४ | ७४४४ (२०) | कका सञ्जाय | श्रावक चोयो | १८७६ | ३२४-३२६ | |
| ८५ | ५२११ | कधवाहोंकी वंशावली | | १८८४ | ११४ | * |
| ८६ | ४०४६ | कनकावती चौपाई | जिनहय | १९वीं | २३ | अन्तिम पत्र अप्राप्त |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्ता प्रादि ज्ञातव्य | लिपि मास | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|--------------------------|-----------------------|----------|-------------|----------------------------------------------------|
| ८७ | ७७२० (२२) | कपड़कुसुम | | १८वीं | ६ | * |
| ८८ | ४०४७ | कपोतकपोतनीरी बारता | | १८५४ | १२ | * |
| ८९ | ६६३७ (२) | कबीरजीकी बाजी | कबीर | १८११- | १०६-१८७ | लि.क. रामदास, टोकोदासशिष्य |
| ९० | ६७३६ | कयबसा बोपाई | गुणसागर | १८१६ | १० | तिराणा ग्राम लि.क. श्रुति प्रसन्न |
| ९१ | ४०४८ (१) | कयबसा बोपाई | अपरंग | १८६२ | २२ | रचनाकाल १७४१ ई. गु. न शनिवार |
| ९२ | ४०४९ | कयबसा रास | सुन्दरसूरिखन्द (?) | १८वीं | ५ | पार्थ होरी, श्रीमानाभोनी विश्वरूपी द्वारा लिखित |
| ९३ | ५६७६ | कर्मग्रन्थ पंचक बातावबोय | मतिचन्द्र | १८वीं | ११२ | |
| ९४ | ४६१४ (३३) | कर्मविपाक कीट | गुणकीर्ति | १८७७ | २५१-२५५ | |
| ९५ | ४४२५ | कसावतीचरित्र | विजयचन्द्र | १६७६ | ४ | बोपाईखण्ड, दूसरा पत्र अप्राप्त |
| ९६ | ४०२० | कविकल्पलता | श्रीगार | १८७८ | ६ | * रचनाकाल सं. १६८६ |
| ९७ | ४४५२ (२६) | कविसाधनो | उदयरज | १८वीं | २४ से २६ | |
| ९८ | ४४५२ (२५) | कवित्त | उदयरज | " | १३१ बाँ | |
| ९९ | ४४५२ (४५) | कवित्त सवैया | गंग, बृन्द | १८वीं | ६१ बाँ | |
| १०० | ४४५२ (५४) | कवित्त | प्रनेक कवि | " | १०६-११० | ५० कवित्त |
| १०१ | ४४५२ (१०३) | कवित्त रूहा प्रादि | केसरसिंघ प्रादि | " | १२६-१४१ | |
| १०२ | ४६१५ (२) | कवित्त गीत प्रादि | | १८८७ | २०-४१ | जगदम्बा प्रादि के ग्रन्थ हैं |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि जातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------|------------------|----------|-------------|------------------------------|
| १३६ | ४६०४ (३) | गीतामाहात्म्य | जगमाल मालावत | १८५६ | ६५वाँ | |
| १४० | ५४५८ (४) | गौंदोलीकी वारता | ऋषि दीप | १८२१ | १-२७ | |
| १४१ | ४०२२ | गुणकरंडगुणावली चौपाई | " | १६वाँ | २२ | |
| १४२ | ४०५३ | गुणकरंडगुणावली चौपाई | दीप (?) | १८७४ | २७ | लि. क. आर्यो नाथी |
| १४३ | ४८२० | गुणकरंडगुणावली रास | | १८३६ | २० | रचनाकाल सं. १७५७ |
| १४४ | ६०२७ | गुणकरंडगुणावली | दीप ऋषि | १८३३ | १५ | " |
| १४५ | ६५४२ | गुणकरंडगुणावली चौपाई | | १८३३ | ३६ | लि. क. पं. नवनिधिविजय, |
| १४६ | ४०१३ | गुणहरिरस | गजकुशल | १७६६ | ७ | सथाणा नगरे |
| १४७ | ५०६४ | गुणावली रास | | १६वाँ | २६ | राबडियास ग्रामे लिखितम् |
| १४८ | ४०५५ | गुणावलीचरित्र चौपाई | ज्ञान्तिहर्ष | १८७४ | २१ | पत्र २ से ६ और अन्य अप्राप्त |
| १४९ | ५१०३ | गुरुचेलारी कथा | ज्ञानविमल | १७वाँ | २ | रचनाकाल सं. १७१४ |
| १५० | ७१८० | गुरुपरंपरा ढाळ | | १६वाँ | १२ | रचनाकाल सं. १५१३ आश्विन |
| १५१ | ५४५८ (३) | गोतमरासा | | १८३८ | ४ | कु. ३, बडलू ग्रामे लिखितम् |
| १५२ | ७५६७ | गोतमपृच्छा चौपाई | जिनसूरि | १७५६ | १३ | त्रुटित |
| १५३ | ६१२८ | गोतमपृच्छा बालावबोध | समयमुंदर | १८८३ | ६८ | लि. क. मुनि गङ्गजी |
| १५४ | ५४३६ (७) | गोतमलघुस्तवन | उदयवन्त | १८०६ | ३८-४० | |
| १५५ | ५०६६ (२) | गोतमस्वामीरास | | | ३-८ | |
| १५६ | ५४३६ (३) | गोतमस्वामीरास | | | १७-२६ | |

| क्रमांक | समांक | संघ नाम | संघों प्रादि काव्य | निधि समस | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|-----------------------------|--------------------|----------|-------------|-----------------------------------|
| १४७ | ४४४२ (४) | गोरखपुर | गोरखजी | १८वीं | १० वीं | १४ इतिहास का संग्रह |
| १४८ | ४४४१ | गोरखारण्यका प्रादि गुरुका | हेमरत्न | " | ६० | साहसिक रचित |
| १४९ | ७७२२ (६) | गोरखारण्य चौधरी | अटमस | १७८७ | ५७-६५ | लि.क. जयसोभाग |
| १५० | ४६२४ (२) | गोरखारण्यरी बाग | | | ६-१५ | तिरिचारी माय |
| १५१ | ७४४४ (११) | गोत्रमराठा | | १८८५ | २०५-२१२ | उत्पन्न के सचित्र में प्रकृत-विषय |
| १५२ | ४४४२ (७६) | पुण्ड्रक | | १८वीं | १२३ वीं | संगत में 'नागरकान राजसिंघो- |
| १५३ | ४६२४ (१०) | गोर्खा का कान | | १७६३ | ११-१२ | तरी छंद' है |
| १५४ | ४४४२ (६३) | गोर्खा का कान/व | | १८वीं | १३० वीं | |
| १५५ | ४७२६ | पट्टीमान | | १८वीं | १ | |
| १५६ | ४१२३ (२) | सफेदबनो | | १८वीं | २-११ | |
| १५७ | ६६१२ | सर्वात्मामान | | १८८८ | २३६ | र.का. सं. १७८१ |
| १५८ | ७१५४ | सुतुमुकुटकत्रिजगरी कथा | | १८७७ | ३१ | जीर्ण प्रति |
| १५९ | ५३१६ (२१) | सुविगातिमानकमुषो | | | २४३-२४८ | |
| १६० | ४६१५ (१०) | सदरकररी बाग | | १८८७ | ३४८-३६० | रचनाकाल सं. १७४० |
| १६१ | ५३४१ (२) | संदरकररी बाग तथा स्फुट कवित | | १८वीं | ५८-६७ | |
| १६२ | ७७५३ (११) | संदरकररी बाग | कलस काँव | १८३७ | ५७-६० | विम सं. १ |
| १६३ | ५४५८ (१) | संदरकररी बाग | सकलकौति | १८३८ | ५ | लि.क. पं. भगवत्संगर |
| १६४ | ४६१६ (३) | संदरकररी बाग | हंस कवि | १८७५ | ४७-५४ | लि.क. पं. टिकमजीभाय |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-----------------------------|------------------------|----------|-------------|--------------------------------------------------------------|
| १७५ | ४१४८ | चंदकुंदरकी वात | कवि राय | १८१६ | १८ | ॥ |
| १७६ | ४६११ (३) | चंदकुंदरकी वारता | | १८३० से | १-६ | |
| १७७ | ७३७६ | चंदनबालाभगवती गीत | भक्तिलाभ | १८३२ | १ | |
| १७८ | ४०५८ | चंदनमलयागिरिकी चौपई | भद्रसेन मुनि शिष्य (?) | १८वीं | १० | लि. क. ऋषि उमदेचंद, स्थान-ओरंगाबाद, लसकर मुगजादे मध्ये |
| १७९ | ४४२१ | चंदनमलयागिरि चौपई | यशोवर्द्धन | १८६५ | ११ | रचनाकाल सं. १७४७ आ.कृ. ६ |
| १८० | ४४५२ (४८) | चंदनमलयागिरिरी वारता | भद्रसेन | १८८६ | १०१-१०२ | |
| १८१ | ६३३६ | चंदनमलयागिरि चौपई | भद्रसेन | १८३४ | ८ | |
| १८२ | ७०७६ | चंदनमलयागिरि चौपई | | १८वीं | ५ | |
| १८३ | ५०८४ (२) | चंदनमलयागिरिरी वात (सचित्र) | | १८३६ | २६-३५ | ३४वां पत्र अप्राप्त, बीकानेर- कलमके चित्र |
| १८४ | ५४१८ (२४) | चन्द्रगुप्तस्वप्न | | १८वीं | १५०-१५२ | |
| १८५ | ४६१४ (३५) | चन्द्रप्रभविवाहलानी ढाल | | १८७७ | २५६-२५७ | प्रथम तीन पत्र अप्राप्त |
| १८६ | ४६१८ (१) | चंद्रराजाकुमरकी कथा | | १७६६ | ४-२० | अपूर्ण, प्रथम व अन्तिम पत्र |
| १८७ | ७०७२ | चंद्रराजाचरित्र | मोहनद्विजय | १८वीं | १८५ | अप्राप्त |
| १८८ | ६८५० | चंद्रराजाचौपई | विद्यारुचि | १८०६ | ४१ | रचनाकाल सं. १७७७, सिरौही नगरे |
| १८९ | ४०५६ | चंद्रराजा रास | मोहनद्विजय | १८१० | ८२ | रचनास्थान-राजनगर |

| क्रमांकः | क्रमांकः | ग्रन्थः नाम | कथां सादि मातृपुत्र | निर्दिष्ट समयः | गण संख्या | विशेषः प्रामेयनीयः |
|----------|------------|---------------|---------------------|----------------|-----------|-----------------------|
| १६० | १३४६ (२) | बंशराजानो राम | मोहमन्त्रिणः | १६०६ | ७०-३५४ | लि.क. हरकण्ठः पण्डितः |
| १६१ | ७२४६ | बंशराजानो राम | " | १६०७ | ६८ | रत्ननाथः मं. १७८३ |
| १६२ | ७४२० | बंशराजानो राम | " | १६४६ | १२३ | लि.क. पृथ्वीराजः |
| १६३ | ७४०७ | बंशराजानो राम | मतिभुक्तः | १७७८ | १८ | रत्ननाथः मं. १७८८ |
| १६४ | ४०६० | बंशराजानो राम | " | १८०५ | १६ | रत्ननाथः मं. १७८८ |
| १६५ | ४७६५ | बंशराजानो राम | " | १८०५ | २६ | रत्ननाथः मं. १७८८ |
| १६६ | ४७८८ | बंशराजानो राम | " | १८०५ | २४ | रत्ननाथः मं. १७८८ |
| १६७ | ४०६६ | बंशराजानो राम | " | १८०५ | २ | रत्ननाथः मं. १७८८ |
| १६८ | ४३७५ (१८) | बंशराजानो राम | श्रुति कर्मन्त्रः | १८०५ | २११-२१३ | रत्ननाथः मं. १७८८ |
| १६९ | ४७४६ | बंशराजानो राम | मन्त्रमन्त्रिणः | १८०५ | ११ | रत्ननाथः मं. १७८८ |
| २०० | ४६१४ (५७) | बंशराजानो राम | मन्त्रमन्त्रिणः | १८०७ | ३१२-३१३ | रत्ननाथः मं. १७८८ |
| २०१ | ४३६३ | बंशराजानो राम | मन्त्रमन्त्रिणः | १८११ | २४ | रत्ननाथः मं. १७८८ |
| २०२ | ४१०५ | बंशराजानो राम | मन्त्रमन्त्रिणः | १८११ | ३ | रत्ननाथः मं. १७८८ |
| २०३ | ७२३१ | बंशराजानो राम | मन्त्रमन्त्रिणः | १८११ | ११ | रत्ननाथः मं. १७८८ |
| २०४ | ६२६२ | बंशराजानो राम | मन्त्रमन्त्रिणः | १८११ | २७ | रत्ननाथः मं. १७८८ |
| २०५ | ४४५३ (३) | बंशराजानो राम | मन्त्रमन्त्रिणः | १८११ | ६ | रत्ननाथः मं. १७८८ |
| २०६ | ४८०६ | बंशराजानो राम | मन्त्रमन्त्रिणः | १८११ | २ | रत्ननाथः मं. १७८८ |
| २०७ | ४८२२ | बंशराजानो राम | मन्त्रमन्त्रिणः | १८११ | ५ | रत्ननाथः मं. १७८८ |
| २०८ | ४४५३ (१००) | बंशराजानो राम | मन्त्रमन्त्रिणः | १८११ | ३५ | रत्ननाथः मं. १७८८ |
| २०९ | ४७६७ | बंशराजानो राम | मन्त्रमन्त्रिणः | १८११ | ३५ | रत्ननाथः मं. १७८८ |
| २१० | ४२८७ (१४) | बंशराजानो राम | मन्त्रमन्त्रिणः | १८११ | ३५ | रत्ननाथः मं. १७८८ |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|----------------------------|----------------------|----------|-------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| २११ | ७८१० (३) | चेतनदासकी वाणी | चेतनदास | १८वीं | २३०-२६८ | |
| २१२ | ४४५२ (६१) | चौबीलीराणीरी कथा | जिनहर्ष | " | ११८वाँ | |
| २१३ | ७४४४ (१३) | चौडालियो (दानशील तप संवाद) | समयसुंदर | १८८५ | २४५-२५३ | |
| २१४ | ४०६१ | चौधमाताजीरी कथा | अमृत कवि | १८वीं | ३ | बीलाड़ामें लिखित |
| २१५ | ६०६७ | चौबीसचौक | | १८५३ | ७ | लि.क. भानुकीर्ति, जयनगरे |
| २१६ | ६६१८ | चौबीस तीर्थकरोंकी पूजाविधि | | १६वीं | ६६ | |
| २१७ | ७४२५ | चौसठमार्गणाविचार | | " | १३ | |
| २१८ | ५०६१ | छत्तीस अध्यनगान | सागरचंद | १६४२ | १५ | लि.क. पं. हर्ष, मुलतानमध्ये |
| २१९ | ४४५२ (७८) | छोँकचक्र | | १८वीं | १२३वाँ | छोँकके संबंधमें शुभाशुभ फलका परिचय |
| २२० | ४३०८ (३) | छोतरदासजीका सवैया | छोतरदासजी | " | ४४७-४५५ | ३५ छंद |
| २२१ | ४८४७ | ज्योतिषवृत्तारो | | १८४३ | ३० | लि.क. ऋषि भाणजी |
| २२२ | ५५२८ | ज्योतिषसार | कवि झुपाराम | १६०७ | ४७ | लि.क. रामकुंवार |
| २२३ | ४४५२ (६४) | जगदेवपमाररा कवित्त | कंकाळी भाटण (?) | १८वीं | ११६वाँ | |
| २२४ | ७१७२ (२) | जगदेवपरमाररी वात | | १६३६ | १-३५ | |
| २२५ | ७७५२३ (१४) | जगदेवपुंवाररी वात | | १८३७ | ७१-८८ | अपूर्ण |
| २२६ | ४६१६ (१) | जगदेवरी वात | | १८७५ | ४४ | अन्त में ५ अन्य वाताएँ हैं। |
| २२७ | ४४५२ (७१) | जड़ भरथरा कह्या श्लोक आदि | | १८वीं | १२१ वाँ | सवाई कूरम नरेश (जयपुर) की पराजय और सारवाड़के बखत-सिंहकी विजयका वर्णन, सुर्वासिंह हाडाका वर्णन भी है। |
| २२८ | ४८४८ | जन्मपत्रीगणित | | १६वीं | २६ | |

| क्रमांक | प्रमाण | ग्रन्थ नाम | कर्ता यादि ज्ञातः | निधि भाग | पृष्ठ संख्या | विषय उल्लेखनीय |
|---------|-----------|--------------------------|-------------------|----------|--------------|----------------------------------|
| २२६ | ४५२४ | अम्बरबोमिलकम् (बहुतुल्य) | | १६वीं | २५ | |
| २३० | ६४३४ | अम्बरबोमिकार | | १७५६ | ६ | प्रथम पत्र सप्तम |
| २३१ | ७४२७ | अम्बरबोमिक | | १८८० | ५८ | |
| २३२ | ६२६८ | अम्बरबोमिकरतनाल | | २०वीं | ३६ | प्रथम पत्र सप्तम |
| २३३ | ४२७३ | अम्बरबोमिकरतनाल | | १६वीं | ५३ | वि.क. परताबाई, स्वात-समोरे |
| २३४ | ४१५७ | अम्बरबोमिकरतनाल | आनंद जेटुमल | " | ३३ | |
| २३५ | ७०४६ | अम्बरबोमिकरतनाल | परमेश्वर मुनि | १८७२ | ५५ | |
| २३६ | ७५३३ | अम्बरबोमिकरतनाल | | १७६६ | ६० | |
| २३७ | ७६०३ | अम्बरबोमिकरतनाल | | १८६१ | ११३ | |
| २३८ | ५३७६ (३) | अम्बरबोमिकरतनाल | | | ४२-८० | विहारी विप्रेषण लिखित |
| २३९ | ६७३५ | अम्बरबोमिकरतनाल | | १८५६ | | लि.क. श्रुति भाष्यक |
| २४० | ६७८१ | अम्बरबोमिकरतनाल | | १६वीं | ४ | |
| २४१ | ४०६३ | अम्बरबोमिकरतनाल | परमेश्वर | १८५६ | ३३ | लि.क. जीवनराम श्रुति, स्वात-मगोर |
| २४२ | ७३५२ | अम्बरबोमिकरतनाल | | १८६६ | २० | चुल्ल भण्ड लिखित |
| २४३ | ६८८४ | अम्बरबोमिकरतनाल | | १७३३ | ८ | लि.क. मतिविमल |
| २४४ | ५४१८ (३३) | अम्बरबोमिकरतनाल | | १६वीं | ११४-११६ | |
| २४५ | ४४५२ (३२) | अम्बरबोमिकरतनाल | | १८०७ | ३५ से ४० | लि.क. पं. प्रीतसीभाय गणि |
| २४६ | ४०६२ | अम्बरबोमिकरतनाल | | १८६० | २० | लि.क. श्रुति टंकचंद्र सरियारीया |
| २४७ | ७७६६ (५) | अम्बरबोमिकरतनाल | | १८५६ | २-४२ | |
| २४८ | ५८६५ | अम्बरबोमिकरतनाल | | १८वीं | ३२ | चित्र सं. १२ |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|--------------------|---------------------|----------|-------------|----------------------------|
| २४६ | ४०६४ | जामवतीचौपई | सूरसागर | १८४७ | ७ | वीकानेरमें लिखित |
| २५० | ४८१७ | जिणरस | वेणीराम | १८४१ | १७ | |
| २५१ | ७१०७ | जिनेश्वरपूजापद्धति | सोमसुन्दर सुरिनिष्य | १८वीं | १६८ | र.का. सं. १६५१ |
| २५२ | ५०७३ | जीवदयासंज्ञाय | | " | १ | |
| २५३ | ७४४४ (३) | जीवविचार | प्रभुचंद्र | १८८५ | १२१-१२६ | " सं. १८५८ |
| २५४ | ४६१४ (२६) | जीवसिखामण रास | | १८७७ | २४२-२४४ | अर्थ सहित पहेलियाँ भी हैं। |
| २५५ | ४६०५ (७-६) | जुवानीरा हूहा आदि | | | ३१-३६ | |
| २५६ | ५४५६ | जैनबोलसंग्रह | जिनदास | १६वीं | ५३ | * |
| २५७ | ४६१४ (५४) | जोगीरास | | १८७७ | ३००-३०२ | |
| २५८ | ५४१८ (२०) | जोगीरासा | " | १६वीं | १४३-१४५ | |
| २५९ | ५४१८ (२५) | जोगीरासा | भगोतीदास | " | १५२-१५४ | |
| २६० | ४२८७ (४) | जोगीरासो | जिणदास | १७२६ | १४-१८ | लि.क. रामचन्द्र |
| २६१ | ५४१८ (३१) | टण्डाणा गीत | | १६वीं | १७०-१७१ | * |
| २६२ | ६८४१ | ढाल, पट्ट आदि | चौथमल | " | ६६ | |
| २६३ | ४०६७ | ढालसार | | " | १६ | रचनाकाल सं. १८५६ |
| २६४ | ६७३७ | ढालसागर | केशराज | १८६७ | ११६ | लि.क. ऋषि खुशालचंद |
| २६५ | ६१२२ | " | गुणसागर | १८वीं | १०१ | देशी रागोंमें पद |
| २६६ | ७२२४ | " | | " | ७७ | रचनाकाल सं. १६७६ हरिवंश- |
| | | | | | | गाथा |
| २६७ | ७३७५ | " | " | १७६८ | ७६ | ढाल १५१ |
| २६८ | ४०३३ | ढालसागरप्रबन्ध | " | १७४० | १०४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-------------------------|--------------------|----------|-------------|---------------------------------------|
| २८३ | ७२६५ | थावच्चाचौपई सविवरण | सययसुन्दर | १८वीं | १८ | रचनाकाल १६६१ |
| २८४ | ४६०४ (२) | थावरदेवतारी वात | उदयरत्न | १८६१ | ३५-६५ | लि.क. कल्याणसौभाग्य |
| २८५ | ४०६८ | थूलभद्रनवरसो | " | १८४६ | ५ | रचनाकाल सं. १७५६ |
| २८६ | ४८३२ | थूलभद्रनवरसो | " | १८५२ | ८ | लि.क. राजविजय |
| २८७ | ६२५५ | थूलभद्रनवरसो | " | १८वीं | २ | |
| २८८ | ७४४४ (१४) | थूलभद्रनवरसो | | १८८५ | २५३-२६० | |
| २८९ | ७४२१ | दण्डक सस्तवक | कनककीर्ति | १९वीं | ६ | |
| २९० | ६५३१ | द्रौपदीरास | " | १८वीं | ४१ | जैसलमेर में रचित |
| २९१ | ६३५६ | द्रौपदीरास चौपई | " | १८१५ | ४० | जयपुर में लिखित |
| २९२ | ६४१६ | द्वादशभावफल | | १९वीं | ४ | |
| २९३ | ७४४४ (५) | दण्डकप्रकरण सटबार्थ | दत्तलाल | १८८५ | १३६-१४३ | लि.क. नेमविजय |
| २९४ | ६४४६ (५) | दत्तलाल को कवको | | १९वीं | ५-११ | |
| २९५ | ४६१४ (४६) | दर्शन बत्तीसी | दीप ऋषि | १८७७ | २७७-२७८ | सं. १८५४ से रचित |
| २९६ | ६५४४ | दर्शनभद्र चौढालियो | | १९वीं | ३ | लि. स्थान-अहिपुर |
| २९७ | ६३६६ | दर्शावली | दादूजी | " | ६ | लि.क. उपाध्याय पद्मउदय गणि |
| २९८ | ६६४८ | दादूजीका शब्द | दादूजी | १८०० | ७८ | आद्यन्त पत्र शोभन |
| २९९ | ६६२६ | दादूजीकी वाणी आदि गुटका | दादूजी आदि | १७८७ | २६८ | गुटके में विविध कृतियों का संग्रह है |
| ३०० | ६६४६ | दादूजीकी साखी | " | १८वीं | ६६ | लि.क. लक्ष्मणदास |
| ३०१ | ६६५० | दादूजीकी साखी | " | १८६६ | ६७ | विभिन्न सन्तों के ४४४० पदों का संग्रह |
| ३०२ | ४३०८ | दादूवाणी आदि | " | १८वीं | ४१० | |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|--------------------------------|--------------------|-----------|-------------|---------------------------------------------|
| ३०३ | ६६३७(१) | दाहूवाणी आदि | दाहूजी आदि | १८११-१८१६ | १०६ | लि.क. रामदास, निराणा ग्रामे |
| ३०४ | ६६५४(१) | दाहूशब्द | " | १९वीं | ६५ | दाहू, कबीर, सूर, मीरा आदि के पदों का संग्रह |
| ३०५ | ४१४६ | दाढाळारी वात | दशार्ण भद्रराज | १८१७ | २३ | |
| ३०६ | ५४३६(६) | दानशील तपभावना | ऋषिकुशलशिष्य | १९वीं | ४४वाँ | |
| ३०७ | ५४३६(११) | दानशील तपभावना | समयसुन्दर वाचक (?) | १९वीं | ४६-५६ | |
| ३०८ | ६८४५ | दानशील तपभावनासंवाद | समयसुन्दर | १९वीं | ४५ | |
| ३०९ | ५६६७ | दानादिकसंवाद | समयसुन्दर | १९वीं | ५ | सांगानगर मंझादि |
| ३१० | ५४१८(१७) | दानाधिकार | जिनसुन्दर | १९वीं | १२४-१३४ | |
| ३११ | ७७२०(२४) | दिल्लीपातसाहीरो विवरो | कवि ज्ञान | १९वीं | १२-१८ | |
| ३१२ | ४०१७ | दिवालीकल्प बालावबोध | जिनसुन्दर | १९वीं | २६ | |
| ३१३ | ४४५२(२८) | दूहा | कवि ज्ञान | " | २६वाँ | पुरुष-शृंगार और स्त्री-शृंगार के १६-१६ दूहा |
| ३१४ | ७७२१(१३) | दूहो श्रीमहाराज जसवन्तसिंहजीरो | म. जसवन्तसिंहजी | १९३१ | २००वाँ | हदिरस की प्रशंसा में रचित |
| ३१५ | ६०१५ | देवकीरी चौपाई | | १९वीं | ६ | |
| ३१६ | ४४५२(७६) | देवीचक्र | | १९वीं | १२३वाँ | |
| ३१७ | ७३७३ | देशना शतक | | १९वीं | १६ | |
| ३१८ | ४८५५ | दोषकेवली | | १९वीं | १ | लि.क. मानसिंह |
| ३१९ | ४६१४(५) | दोहाशतक | | १९वीं | १६२-१६५ | |
| ३२० | ४६१५(१३) | धमाळ | रूपचंद | १८७१ | ३८४-३८६ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|------------------------------|--------------------|----------|-------------|----------------------------|
| ३२१ | ४४५२(५१) | धमाळ वसन्त | लालचंद | १८वीं | १०७ वां | लि.स्थ. जैसलमेर |
| ३२२ | ७३६६ | धर्मबुद्धि चौपाई | | १७६० | १६ | |
| ३२३ | ५४१८(१५) | धर्मवत्सीसी | | १६वीं | ११६-१२१ | |
| ३२४ | ७७५३(१२) | धर्मबावनी | | १८३७ | ६०-६६ | अपूर्ण |
| ३२५ | ४०६६ | धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपाई | लालचंद | १८२५ | २५ | र.का. सं० १७४२ |
| ३२६ | ५२२३ | धर्मोपदेश | | १६वीं | १३ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ३२७ | ४८०८ | धामनो वर्णन | | " | ६ | |
| ३२८ | ५४३६(१२) | नरक रो चौडाळियो | गुणसागर | १८८८ | ३ | |
| ३२९ | ६६५४(२) | नरसीमाहेरो | वसन्त | १८८५ | ६५-६६ | ६८वां पत्र अप्राप्त |
| ३३० | ५२०२(२) | नरसीजीको माहेरो | समयसुन्दर | १८३६ | ८७-६१ | रचनाकाल सं. १६७३ |
| ३३१ | ४०७० | नलदमयन्तीचौपाई | | १६वीं | २५ | |
| ३३२ | ६६१३ | नयकारमंत्रदर्शन | | " | १३५ | |
| ३३३ | ७६६७ | नवकारवालीनी सञ्ज्ञाय | लब्धिविजय | १८८५ | १ | |
| ३३४ | ६४१२ | नवपदपूजा | | १६वीं | १४ | स्फुट |
| ३३५ | ५४६१ | नसीहतनामा और देवीदासके कविते | | १८वीं | १३८ | |
| ३३६ | ४४५२(४) | नागदमण | | १८वीं | ७ से ६ | |
| ३३७ | ७०७३ | नागदमणचौपाई | साईदास | १८२४ | ६ | |
| ३३८ | ६३६० | नागदमण छंद | | १८वीं | ४ | |
| ३३९ | ४६२४(३) | नागदमणकथा | | १७८७ | १५-१८ | |
| ३४० | ४४५२(२२) | नागमंत्र | | १८वीं | २३ वां | सर्प-विष उतारनेके २० मंत्र |
| ३४१ | ५०६६ | नागिला भवदेव रास | समयसुन्दर | १७४१ | ५ | लि.क. पं. ईश्वर, अहमदाबादे |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|------------------------|--------------------|-----------|-------------|-----------------------------------|
| ३४२ | ४३१२ | नाथियाका सोरठा | नाथिया (?) | १६वीं | ११ | १४० सोरठे |
| ३४३ | ६६३७ (३) | नामदेवजीका सबद | नामदेव | १८११-१८१६ | १८७-२०१ | लि.क. रामदास, निरोणा भामे |
| ३४४ | ४८३१ | नामप्रताप | रामचरण | १६वीं | १२ | लि.क. कायस्थ भावसिंह |
| ३४५ | ७८१६ (३) | नारायणलीला | माधवदास | १८३१ | १०७वाँ | |
| ३४६ | ४४५२ (५०) | नासिकाविचार | वातिक नन्ददास | १८वीं | ८८ | |
| ३४७ | ६७४६ (१) | नासिकेतपुराणकथा | नन्ददास | १६वीं | ५१ | |
| ३४८ | ६११० | नासिकेतपुराण भाषा | स्वामी नन्ददास | " | ४४ | लि.स्था. लालुवास प्रतापसिंहराज्ये |
| ३४९ | ४२६३ | नासिकेतसहस्रपुराण भाषा | सूरज | १८३७ | १७३-१७५ | |
| ३५० | ५४१८ (३३) | निर्वाणकांड | यशोदेवसूरिद्विष्य | १६वीं | २४वाँ | |
| ३५१ | ४४५२ (२५) | निसाणी | सूरज | १८वीं | १ ला | |
| ३५२ | ५०७७ (२) | नेमराजीमती सज्जाय | कवियण (?) | १८०२ | २५५-२५६ | र.का. सं. १६७० सूरतबंदर |
| ३५३ | ४६१४ (३४) | नेमिनाथनी साखी | समयसुन्दर | १६वीं | २५ | |
| ३५४ | ५३३० | नेमराजुलका सर्वया | " | " | १ | लिखितं जैपुरमध्ये |
| ३५५ | ७३०३ | नेमराजुल बाराभास | कमलबंधु | १८६७ | २४ | लि.क. परमानन्द शिष्य जैतसी |
| ३५६ | ६३०४ | प्रत्येकबुद्धचौपाई | " | १८२५ | २८ | र.का. सं. १७२२ |
| ३५७ | ६५२६ | प्रत्येकबुद्धचौपाई | कमलबंधु | १८१३ | २८ | चूड़ामणिने लिखवाया |
| ३५८ | ५२७० | प्रद्युम्नप्रबन्ध | समयसुन्दर | १७३६ | २० | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ३५९ | ५२७४ | प्रद्युम्नप्रबन्ध | समयसुन्दर | १७३६ | २० | पाटणमध्ये लिखित |
| ३६० | ५०६८ | प्रदेशीरायचौपाई | | १८६० | २६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रथाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|-----------|------------------------------|-----------------------|----------|-------------|-----------------------------|
| ३६१ | ६०३३ | प्रबोधचिन्तामणिचौपई | धर्ममंदिर गरिण | १८५८ | ७७ | लिखितं बीकानेरमध्ये |
| ३६२ | ५१३७ | प्रश्नोत्तरसार्द्धशतकनो बीजक | मंगनीराम | १९वीं | ५७ | र.का. सं. १८८६ |
| ३६३ | ४६१५ (१४) | प्रश्नोत्तररीरत्नमाला | जिनहर्ष | १९वीं | ३८६-३९५ | आद्य २ पत्र मसीप्लुत |
| ३६४ | ५१०१ | प्रहली | | " | ५ | |
| ३६५ | ५३२६ | प्रश्नशकुनावली | क्षमाकल्याण | १९०६ | १२ | लि.क. हरकचंद पांडे |
| ३६६ | ६३४६ (१) | प्रश्नोत्तरसार्द्धशतकनो बीजक | मोहनविजय | १८६८ | ७० | लि.क. वस्तावर, बीकानेरमध्ये |
| ३६७ | ६८५४ | प्राकृतप्रबन्धसंग्रह | जसराज आदि | १८वीं | ११६ | |
| ३६८ | ४७६२ | प्रास्ताविक दूहा | वृन्द आदि | " | ३ | |
| ३६९ | ५३६५ | प्रास्ताविक दूहा | " | १९वीं | ६ | |
| ३७० | ४८०६ | प्रास्ताविक दोहरा | | १८३६ | ३ | लिखितं राजपुरमध्ये |
| ३७१ | ४८१५ | प्रास्ताविक दोहरा | उदैराज आदि | १९वीं | ३ | पत्नी का पति के प्रति आदि |
| ३७२ | ५३४५ | प्रास्ताविक पत्र | समयसुन्दर | १८वीं | ८ | |
| ३७३ | ४४५२ (६६) | प्रास्ताविक इलोकदूहा आदि | " | " | १३२-१३४ | ऋषि भोकमजीपठनार्थ |
| ३७४ | ४७६३ | प्रियमेलकचौपई | " | १७वीं | ७ | |
| ३७५ | ४८२१ | प्रियमेलकचौपई | " | १९वीं | ६ | लि.क. लब्धिकीति गणि |
| ३७६ | ६८७५ | प्रियमेलकचौपई | मुनि हर्षकीति | " | ८ | राणपुरमध्ये |
| ३७७ | ५४१८ (२८) | पंचगतिकी वेली | मेघराज लब्धिविजयनिष्ठ | " | १६५-१६७ | र.का. सं. १६२३ |
| ३७८ | ४८५० | पंचांगानयनविधि भाषा | ठाकुरसी | " | २ | र.का. १७२३ |
| ३७९ | ४६१४ (५८) | पंचेन्द्रियकी वेली | | १८७७ | ३१३-३५ | र. सं. १५८५ |
| ३८० | ५२६५ | पंचेन्द्रियचौपई | | १८७२ | ५ | उज्जैनमध्ये लिखितं |
| ३८१ | ५३४१ (१) | पञ्चावीरमदे वात | | १९वीं | २ से ५७ | लि.क. बीरा बीरानन्द |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------------|--------------------|----------|-------------|---------------------------------------|
| ३८२ | ४६१५ (४) | पन्नावीरमदेरा वात | शेरासिंह | १८८७ | ७६-१३४ | ७८वां पत्र खंडित |
| ३८३ | ७१६६ (१) | पन्नावीरमदेकी वात | हेमरतन | १८७७ | ५१ | भुटका |
| ३८४ | ४८०७ | पद्मिनीचौपई | हेमरतन | १८२७ | ३१ | |
| ३८५ | ४६१० | पद्मिनीचौपई | सकलकीर्ति | १८वीं | २०७वां | |
| ३८६ | ४६१४ (१०) | पद | | १८७१ | | |
| ३८७ | ४६१४ (३१) | पद | | १८७७ | २४८-२४९ | स्फुट |
| ३८८ | ४०७२ | पदमसीपदमावतीचौपई | मुनि माल | १८वीं | २२ | |
| ३८९ | ७७२१ (५) | पनरबादशाशकुनावली | | १८२५ | ११८-११९ | |
| ३९० | ४६१६ (६) | पनरसी विद्या | | १८८१ | ८४-८६ | |
| ३९१ | ४४५२ (४६) | पनरसी विद्या स्त्री-चरित्र | | १८०५ | १०३से१०७ | लि.क. प. प्रीतसीभाय गणि |
| ३९२ | ४०७६ | परदेसीप्रबन्ध | ज्ञानचंद | १८४८ | ३१ | |
| ३९३ | ७४१२ | परदेसीप्रबोधचौपई | " | १७५५ | २२ | |
| ३९४ | ४८२७ | परदेशीराजारी चौपई | | १८८५ | २९ | लि.स्था: बड़ली |
| ३९५ | ५४१८ (२६) | परमादि (प्रसाद) | गोपालदास | १८वीं | १६७-१६८ | |
| ३९६ | ४०७३ | पलकदरियावरी वात | | " | ३६ | लि.क. श्रावुजी |
| ३९७ | ४०७४ | पांडवचरित्रचौपई | लाभवर्द्धन | १७८५ | ५६ | र.का. १७६७ |
| ३९८ | ७७२३ | पांडवविजय | मलूकदास | १८२९ | ३७७ | लि.क. जिताराम, फतेहपुर मध्ये |
| ३९९ | ४६१४ (५५) | पांडवनाथआदित्यवारकथा | | १८७७ | ३०२-३११ | सं. १६७० की प्रति से प्रति- |
| ४०० | ६४३३ | पाशाकेवली | गर्ग ऋषि | १८६९ | | लिपि की गई |
| ४०१ | ७६७० | पाशाकेवली | | १८वीं | ५ | लि.क. रूपां साधवी जोधपुर में लिखित |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पृथ संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|------------------------------|--------------------|----------|------------|--------------------------------------------|
| ४०२ | ५१२३ (३) | पाशाकेवली श्रवजदी | चन्द (?) | १८वीं | १२-१६ | चित्र सं. ७ ग्रं. सं. ५४५७ के सा संयुक्त । |
| ४०३ | ६२८२ | पाशाकेवली श्रवजद | | १६वीं | १६ | यानलानगरे, मालवदेसे लिखित |
| ४०४ | ७८२३ | पिङ्गलरो समीयो | | १८वीं | ८ | |
| ४०५ | ४४५५ | पिङ्गलशास्त्र टीका | मुनि हर्ष | १८७१ | २३ | |
| ४०६ | ७१४३ | पुण्डरीककुंडरीकनी ढाढ | हर्षचन्द्र गणि | १६वीं | ५ | |
| ४०७ | ५११६ | पुण्यसारचरित्र | | १८७५ | ३ | र.का. सं. १६६२ |
| ४०८ | ७५३० | पुण्यसारचौपाई | पुण्यकीर्ति | १८वीं | ५ | संगानेर में रचित |
| ४०९ | ६४३७ (१) | पुण्यरकुंवरकथा | मालदेव | " | ४८ | जीर्ण श्रीर वृद्धित प्रति |
| ४१० | ४८२६ | पुण्यरकुंवरचौपाई | रतनविमल | १६वीं | २१ | |
| ४११ | ४६७६ | पुण्यमाविचार | | " | ४ | |
| ४१२ | ५३३२ | पुण्येशचंत्प्रवाड़ी | | " | ३ | जीर्ण श्रीर वृद्धित प्रति |
| ४१३ | ४६०३ | पुण्यीराजरासो | चन्द कवि | " | १२६ | |
| ४१४ | ७१२८ | पुण्यीराजरासो | " | १७४७ से | ६६ | " |
| ४१५ | ७१५० | पुण्यीराजरासो | " | १७५३ | १६२ | जीर्ण गुटका |
| ४१६ | ७१६४ | पुण्यीराजरासो (गयावतीको समो) | " | १८वीं | ७६ | लि.फ. चिरड्जी मुफसलाल |
| ४१७ | ७१६८ | पुण्यीराजरासो आदि | " | १८४१ | ११८ | केफडी निवासी |
| ४१८ | ७१६९ | पुण्यीराजरासो आदि | " | २०वीं | " | कई रचनाओं का संग्रह |
| ४१९ | ७१६६ (२) | पुण्यीराजरासो (महोवाको समो) | | " | " | |
| ४२० | ४६१४ (१६) | योस्तीनोरास | ज्ञानगोपण | १६७७ | " | |
| | | | | १८७१ | २१८-२२२ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------------|--------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------|
| ४२१ | ४०७५ | पोस्तीरा रासो | बखतो | १८८२ | ४ | बधिरता, बायागांठ आदि रोगों की औषध |
| ४२२ | ७७२२ (१२) | फुटकर औषध | | १८८० | ११६-१२५ | |
| ४२३ | ४६२४ (१८) | फुटकर कवित्तदि | | १८८० | २७-२६ | |
| ४२४ | ४६२४ (७) | फुटकर ज्योतिष | | १८८३ | १४-१५ | पन्द्रह तिथियों के दोहे आदि |
| ४२५ | ५२७२ | फूलकुंवर फूलकुंवरी वात | | १८८२ | १४ | र.का. सं. १८५२ |
| ४२६ | ५०८१ | फूलकुंवर फूलकुंवरी वात | | १८८० | ७२ | चित्र सं. ४५; र.का. सं. १८३० |
| ४२७ | ५५०० | फूलजी फूलमतीरी वात | | १८४६ | २६ | अन्त में चौहालिया आदि |
| ४२८ | ४६१४ (३७) | ब्रह्मजिणदासनी वीनती | ब्रह्म जिणदास | १८७७ | २५८-२५६ | |
| ४२९ | ७७४३ (३) | ब्रह्मनिरूपण | राजसिंघ | १८८४ | ४६-५३ | लि.क. बाई तिरैकवरी |
| ४३० | ५८६७ | बगसीराम प्रोहित हीराकी वात | कवि तेण | १८८० | ६५ | * |
| ४३१ | ७७५३ (७) | बामणवाड़रो स्तवन | कमलकलश निधय (?) | १८३७ | ३६-४१ | |
| ४३२ | ४६१४ (६२) | बाई जतन न लीलवणनी विगत | | १८७१ | ३२१ वां | |
| ४३३ | ७१३६ | बाईस परीक्षाकी चौपाई | ऋषि रायचन्द्र | १८२२ | ४ | र.का. सं. १८२२ |
| ४३४ | ४३२० | बातसंग्रह | | २०वीं | ५२२ | राजस्थानी भाषा की चौबीस प्रकीर्ण वातियों का संग्रह, |
| ४३५ | ७८१७ | बादशाही हाल | चन्द्रकीर्ति | १८८० | ५ | लि.क. सुमतिसागर |
| ४३६ | ४६१४ (२७) | बारह अनुप्रेक्षा | | १८७७ | ८-५० | |
| ४३७ | ४७२१ | बारह पुनमरो विचार | | १८८० | २४४-२४६ | |
| ४३८ | ४७३७ | बारह भवतफळ | | १८८० | १ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-------------------|------------------|--------------------|----------|-------------|----------------------------------------------------------|
| ४३६ | ७४४४(१५) | वारहभारना | जयसोम शिष्य | १८८५ | २६०-२७० | जैसलमेर में रचित |
| ४४० | ७७५४ (१, २, ३) | वारहमासीसंग्रह | | १६२२ | १५ | भरतराजाका वारह मासा र.का. सं. १८६० |
| ४४१ | ४२८७(१५) | वारहमासो | रामचंद्र | १८वीं | ११६-१२७ | |
| ४४२ | ७६२१ | वालचन्द्रवत्सीसी | वालचन्द्र | २०वीं | ७ | |
| ४४३ | ४१४२ | दुद्धिसेणचौपाई | तिलक सूरि | १६वीं | ६६ | |
| ४४४ | ७५४२ | दोलविवरण | आचार्य केशवजी (?) | १७वीं | ६२ | |
| ४४५ | ७७५३(१०) | भंमरागीत | महमद | १८३७ | ४५-४६ | |
| ४४६ | ५८८५ | भवतसार | वालिग्राम | १६वीं | २२ | |
| ४४७ | ७७२१(१) | भङ्गीपुराण | हरदास | १८२५ | १-२५ | र.का. सं. १८५५ शिवस्तुति, कई स्थानों पर चित्र भी हैं। |
| ४४८ | ७७४४(४) | भजनसंग्रह | चैना | १७५८ | १८-२२ | |
| ४४९ | ५१२३(७) | भडुली | भडु कवि | १८वीं | २६-४१ | लि.क. चैनकुंवरी |
| ४५० | ४४५२(१७) | भडलीगृहापचीसी | " | " | १६ वाँ | |
| ४५१ | ६७२८ | भडलीपुराण | " | १८८१ | १२ | |
| ४५२ | ५१२२ | भडलीरा दूहा | भडु कवि | १८८८ | ३ | |
| ४५३ | ४४५२(६८) | भडलीवाक्य | " | १८वीं | १३२ वाँ | |
| ४५४ | ५८०० | भडलीवाक्य | " | १६१३ | १४ | १५ दूहा |
| ४५५ | ७६३० | भरताधिकार | " | १७६३ | ५३ | लि.क. ब्रजवासी, अलवर |
| ४५६ | ४८३० | भवालीछन्द | | १६वीं | २ | लि.क. त्रीकमजी, वडवाणमध्ये |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|-----------------------------|--------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------|
| ४५७ | ४७६६६ (२) | भाषा लीलावती (पद्यानुवाद) | लालचंद | १७७५ | १ से १५ | म. रायसिंह, बीकानेर के ग्रामाय कोठारी नेणसी पुत्र जंतसी की प्रार्थना से उनके गुरु द्वारा रचित |
| ४५८ | ७४१० | भुवनद्वारविचार | | १६वीं | २० | |
| ४५९ | ७७२२ (१०) | भैरव आदि की बोलीविचार | | १८वीं | १०७-११४ | |
| ४६० | ६७०२ | भोगलपुराण (उभयमहेश्वरसंवाद) | | १७७२ | ३० | लि.क. टीकूदास |
| ४६१ | ४८२५ | मच्छोदरचौपई | शान्तिहर्ष | १८४८ | २३ | लि.क. क्षमा सौभाग्य |
| ४६२ | ४७९८ | मदनवार्ता | खुशालचंद जालंधरी | १८वीं | १० | |
| ४६३ | ४४५२ (१) | मदनशत (अपूर्ण) | | " | २ | |
| ४६४ | ४३१५ | मधुमालतीकथा | चतुर्भुजदास कायस्थ | १८८८ | ८१ | लि.क. तुलसीराम कनौजिया, सवाई जैनगर |
| ४६५ | ४९११ (१) | मधुमालतीकथा | " | १८३२ | १ से ४१ | |
| ४६६ | ५४५७ | मधुमालतीकथा (सचित्र) | " | १६वीं | २-८७ | चित्र सं. ८७ |
| ४६७ | ५०७८ | मधुमालतीकथा (सचित्र) | " | १८८१ | २१६ | चित्र सं. २२३ |
| ४६८ | ५०७९ | मधुमालतीकी वात | चतुर्भुजदास | १८वीं | ८८ | लि.स्था. पालनपुर |
| ४६९ | ४०८४ | मधुमालतीचौपई | " | १६वीं | ६० | चित्र सं. ६० |
| ४७० | ५०८० | मधुमालतीरी कथा | " | १८वीं | १२५ | लि.क. सेसमल्ल, कापरड़ा नगर |
| ४७१ | ४९१५ (८) | मधुमालतीरी वात | " | १८८७ | १४१-१६६ | हाड़ोती कलम के २७० चित्र |
| ४७२ | ५४१८ (१२) | मत्तभंवर गीत | कवि माल | १६वीं | ११३-११४ | लि.क. हररूप, जालोर |
| ४७३ | ४९१४ (२६) | मनोरथमाला | | १८७७ | २४८ वां | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-----------------------------------|------------------------------------------------------------------|----------|-------------|----------------------------------------------|
| ४७४ | ७७२२(४) | मयण भट्ट दूहा | गोपालदास गाङ्गुला गङ्गादास पर्वतसुत | १६वीं | ४८-५२ | ३० पद्य |
| ४७५ | ४६१४(४४) | मन्देवीनी सुखड़ी | | १८७७ | २७२-२७४ | |
| ४७६ | ५४२७(५) | मलयामुन्दरीचौपई | | १८वीं | ६४-१४८ | र.का. १६६६ |
| ४७७ | ४४५२(१८) | महादेवजीरो छन्द | | १८७७ | १६ वां | |
| ४७८ | ४६१४(५३) | महापुराणनी वीनती | | १८८८-३०० | २८८ | |
| ४७९ | ६८५१ | महावलमलयमुन्दरीरास | गङ्गादास पर्वतसुत | १६वीं | २१ | |
| ४८० | ४७४३ | महाराजा दौलतसिंहजीजन्मो- दाहरण | | १८वीं | ८ | |
| ४८१ | ५४३६(५) | महावीरजीरो पारणो | | १६वीं | ३३-३६ | |
| ४८२ | ७३५६ | महावीर दशोष्ठण जीमणवार विगत | | १७६८ | २ | |
| ४८३ | ७०५८ | महासती सीताचरित्र | पुन्ह कवि | १८७१ | ८८ | लि. स्था. अयोध्यापुरी र. का. १७७३ (?) |
| ४८४ | ४४५२(१०) | माताजीरो चरचा | बीकाजी कवि सारंग चानण लिङ्गिचौ कुशललाभ ” मोहनविजय | १८वीं | १३ वां | |
| ४८५ | ४४५२(१२) | माताजीरो गीत | | १८०८ | १६ वां | लि.क. प्रीतसौभाग्य |
| ४८६ | ४४५२(११) | माताजीरो छन्द | | १८०७ | १४-१६ | लि.क. प्रीतसौभाग्य, बण्डा ग्राम |
| ४८७ | ४४५२(८५) | माताजीरो छन्द | | १८वीं | १२६ वां | |
| ४८८ | ७७२१(११) | माताजीरो छन्द | | १६३१ | १७७-१७९ | लि.क. अमरासिंह लिङ्गिचौ विजयपुरमध्य लिखित |
| ४८९ | ४६११(४) | माधवानल कामकन्दलाचौपई | ” मानतुल्लमानवतीचौपई | १८३० | ६ | |
| ४९० | ४६२४(१६) | ” | | १७६२ | १-२२ | |
| ४९१ | ५११८ | मानतुल्लमानवतीचौपई | | १८वीं | २१ | अणहलपुर पाटण, दुर्गादास राठोड़ राज्य रचित |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विवेचन उल्लेखनीय |
|----------|------------|---------------------------------|--------------------|----------|-------------|-------------------------------------|
| ४६२ | ६१३८ | मानतुङ्गमानवती रास | मोहनविजय | १८०६ | ४४ | र.का. सं० १७१० |
| ४६३ | ६१३९ (१) | मानतुंग मानवती रास (सचित्र) | " | १८७८ | ६५ | चित्र सं० ८८ |
| ४६४ | ६२६७ | मानतुंग मानवती रास | " | १६१४ | ३६ | लि.क. आलमचंद मकसूदाबाद, |
| ४६५ | ६३३५ | " | " | १८२४ | ५० | अजीमगंजमध्ये |
| ४६६ | ६५३४ | " | " | १८७६ | ७६ | र.का. सं. १७२० |
| ४६७ | ७३६६ | " | अभयसोम | १८२८ | ११ | र.स्था. अणहिलपुर पाटण |
| ४६८ | ७५२८ | मानवतीरास | मोहनविजय | १८६२ | ८४ | बोत्तने के फलाफल का विचार |
| ४६९ | ७५५७ | " | " | १७६७ | ३५ | १२३ वां |
| ५०० | ४४५२ (८०) | मासधिक | " | १८वीं | २१ | २१ |
| ५०१ | ६५२६ | मुनिपति चरित्र (गद्य) | " | १६वीं | ३१ | २१ |
| ५०२ | ६३५५ | मुनिपति चरित्र बालावबोध | " | १७६६ | ३१ | २१ |
| ५०३ | ५४३६ (४) | मुनिमालिका | " | १७६६ | ३१ | २१ |
| ५०४ | ६२७२ | " | कल्याण | २०वीं | २० | र.का. सं. १६३६ |
| ५०५ | ५८६१ | मृगलोखौपाई (सचित्र) | मुनि सागरचन्द्र | १८३८ | ५३ | चित्र सं. ४८ |
| ५०६ | ६७४५ | मृगाङ्कलोखौपाई (सचित्र, अपूर्ण) | " | १६वीं | ३६ | चित्र सं. ४२ |
| ५०७ | ७०५७ | मृगावतीचरित्र | समयसुन्दर | १८वीं | ३८ | र.का. सं. १६२८, प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ५०८ | ४०८६ | मृगावतीचरित्र चोपई | " | १८वीं | २४ | र.का. सं. १६६१ (?) |
| ५०९ | ६५३३ | " | " | " | २३ | " |
| ५१० | ६२५० | मृगावतीचोपाई | " | " | १३ | " |
| ५११ | ६८३८ | मेघकुमार चौढालियो आदि | " | १७३८-४६ | ५३ | जीर्ण प्रति, १२ कृतियोंका संग्रह |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-------------------------------------|--------------------------------------|----------|-------------|----------------------------------------------------------|
| ५१२ | ४२८२ | मेघमाला | श्रीसार | १६वीं | ५ | लि.क. भगवानदास |
| ५१३ | ४६१४ (१६) | मेरुजयमाला | | १८७१ | २०६वीं | |
| ५१४ | ४४५२ (६०) | मेघसंक्रांति आदि | | १८वीं | ११७वीं | |
| ५१५ | ६६२२ | मेघरेहा चौपई | | १६४६ | ७ | लि.क. मुनि केजरीचंद |
| ५१६ | ५१०२ | मोती कपासिया वाद | | १८वीं | ५ | लि.क. मुनि निरयसागर |
| ५१७ | ७०७७ | मौनएकादशीकथा (गौतममहावीर- संवाद) | | १८२४ | ५ | खेड़ामध्ये |
| ५१८ | ६७६२ | मोहमरदराजाकी कथा (पद्य) | धर्मसमिंदर नयविजय योगचन्द मुनि | १६५३ | १३ | लि.क. गरीबदास |
| ५१९ | ५६०१ | मोहविवेक चौपाई | | १७६६ | ६६ | लि.क. भीमविजय |
| ५२० | ६४०० | योगदृष्टिस्वाध्याय | | १६वीं | ५ | दीमक से कटे जीर्ण पत्र |
| ५२१ | ५४१८ (१८) | योगसारके दोहे | | " | १३४-१४० | १०७ दोहा |
| ५२२ | ५४५० | योगासनमाला (सचित्र) | | १८४६ | ११० | लि.क. स्वामी जोभाराम खातीपुरामध्ये |
| ५२३ | ६०३८ | रत्नकुमाररास | सहजसुन्दर | १८वीं | ११ | |
| ५२४ | ४०८७ | रत्नचूड़ चौपाई | कनकनिधान | १८१४ | १२ | र.का. सं. १७३८ |
| ५२५ | ४८१६ | रत्नपालरास | मोहनविजय, तुधरूपविजयशिल्य | १८६७ | ५४ | लि.क. हितसौभाग्य क्षमा- सौभाग्यशिल्य |
| ५२६ | ६०५७ | " | सूरविजय | १६०० | ७६ | |
| ५२७ | ४६१४ (३०) | रत्नत्रय | | १८७७ | २४८वीं | |
| ५२८ | ६५३२ | रत्नपालरास | सेवक सूर | १८२७ | ३२ | र.का. सं. १७३२, छोटी खादू- मध्ये, प्रथम पत्र अप्राप्त |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------------------|-------------------------------|----------|-------------|--------------------------------|
| ५२६ | ४८३३ | रतन महेशदासोत्तरी वचनिका | खडियो जगो | १७४१ | ७ | लि.क. प्रमोद मूनि, रोहितासपुरे |
| ५३० | ४६१५ (३) | रतनाहमीररी वात (पद्यबद्ध) | कवियण (?) | १८८७ | ४२-७५ | २०० पद्य, लि.क. प्रभुदान |
| ५३१ | ५४१८ (२६) | रविकथा | तिहुरा गिरिनिवासी गर्गगोत्रीय | १६वीं | १५४-१६३ | लि.क. रामसागर |
| ५३२ | ५४१८ (२७) | " | म लूकपुत्र (?) | " | १६४-१६५ | |
| ५३३ | ७४४४ (१६) | रागपदबहोत्तरी | भानुकीर्ति | १८८५ | २७०-२६४ | लि.क. नेमविजय |
| ५३४ | ४२८७ (६) | रागपदसंग्रह | आनन्दघन | १८वीं | १७-२८ | |
| ५३५ | ५१०० | " | | १६वीं | ३ | |
| ५३६ | ५४१८ (३४) | रागरासाष्टक | | १७५-१७६ | ३ | |
| ५३७ | ७७२० (२३) | रागानामोपरि विरहसुभाषित | | " | १७५-१७६ | |
| ५३८ | ४६०६ (२) | राजसभारंजन | रसिक (?) | १७६५ | ६-११ | |
| ५३९ | ४६१५ (१७) | राजाचंचरी बातरा दूहा | | १७६८ | १-२५ | * र.का. सं. १७५६, ३७० दोहा |
| ५४० | ४६१६ (२) | राजाभोज, माघपंडित नै डोकरीरी वात | | १८८७ | ४०६-४१० | |
| ५४१ | ७७२१ (६) | राजा रतनरी वचनिका | खडियो जगो | १८८५ | ४५-४६ | लि.क. सौभाग्य गीण |
| ५४२ | ७७२० (२१) | राजावली | | १८८५ | ४५-४६ | |
| ५४३ | ४७६६ | राणांरी वंशावली | | १८८५ | ११६-१४१ | सं. १२६७ से १७७० तक के |
| ५४४ | ४६१४ (८) | राजुलपचीसी वारहमासी | | १८८५ | ७ वीं | सीसोदिया राणाओंका वंशपरिचय |
| ५४५ | ५४१८ (३५) | राजुलपचीसी | राजुल | १८वीं | १ | नागधरानरेश से अमरसिंहपुत्र |
| | | | आनन्दचंद | १८७१ | १६७-१६८ | संभारसिंह तक |
| | | | | १८०६ | १-६ | लि.क. दयानिधि |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|------------------------------------|--------------------|----------|-------------|---------------------------------------|
| ५४६ | ७१४४ | राजलपचीसी | लालचंद | १८५८ | ४ | लि.क. सरूपा, आगरामध्ये |
| ५४७ | ७२४३ | राजलपचीसी | " | १९वीं | २ | |
| ५४८ | ५१०४ | राठोड़ रतनमहेसदासोतर वचनिका | लिङ्गियो जगो | १८०२ | ३७ | लि.क. धर्मसुन्दर, प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ५४९ | ४४५२ (६१) | राठोड़ारी वंशावली | | १८वीं | १२६ वाँ | १११ राजाओं के नाम |
| ५५० | ४८३४ | राठोड़ नाहरखानरो छन्द | गाडण माधोदास | १९वीं | १ | * |
| ५५१ | ६४४६ (७) | राधाजीकी वारहखड़ी | | " | १४-१६ | |
| ५५२ | ७७४४ (३) | राधाविलास | | १७५८ | ८-१७ | |
| ५५३ | ४४५२ (१६) | रामकिशनजीरो छन्द | | १८वीं | १६ वाँ | |
| ५५४ | ५६०३ | रामकृष्णचौपाई | लावण्यकीर्ति | १७११ | ३० | र.का. सं. १६७७ |
| ५५५ | ६४६७ | श्रीरामचन्द सचारी (गद्य) | रामनाथ | १९वीं | ६ | |
| ५५६ | ७८१० (२) | रामचरणदासजीका कृतिसंग्रह | रामचरणदास | १८वीं | २६-२३० | ७ कृतियों का संग्रह |
| ५५७ | ६८५३ | रामजसरसायन | | १८६४ | ११४ | र.का. सं. १६८७ |
| ५५८ | ७७४४ (१) | राममञ्जरी | गोविन्ददास | १७५८ | १-२ | |
| ५५९ | ६३५७ | रामयशोरसायन | केशराज | १७६४ | ८६ | |
| ५६० | ६७४६ (२) | रामरक्षाभाषा | रामानन्द | १९वीं | ८८-९२ | |
| ५६१ | ७६०६ | रामरक्षामंज | " | " | ३ | लि.क. केशवदास |
| ५६२ | ४६२४ (५) | रामगुणरासो | माधोदास दधवाड़िया | १७८८ | १-३२ | लि.क. जयसौभाग्य गणि |
| ५६३ | ७७२१ (२) | रामरासो | " | १८२५ | २५-६६ | |
| ५६४ | ७७३५ | रामरासो | " | १८वीं | ८१ | गुटका, अपूर्ण |
| ५६५ | ७१४० | रायप्रदनश्रेणीमध्ये ईग्यारह प्रश्न | | २०वीं | ७ | |
| ५६६ | ७७२२ (८) | राव सन्नसालरो गीत | | १८वीं | १०५ वाँ | |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-------------|-----------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------|---------------|-------------|--------------------------------------------------------------------------|
| ५६७ | ४४५२ (७५) | रासभचक्र | धर्मसमुद्र | १८वीं | १२३ वीं | गद्य के विषय में शकुन-विचार लि.क. भक्तिविशाल |
| ५६८ | ४४५७ | रात्रिभोजन चऊपई | | १७२३ | ७ | |
| ५६९ | ४६१४ (४३) | रात्रिभोजन रास | | १८७७ | २९८-२७२ | |
| ५७० | ४६१४ (४१) | रात्रिभोजन सज्जाय | | १८७७ | २६६ वीं | |
| ५७१ | ४६१४ (४२) | रात्रिभोजन सज्जाय | | १८७७ | २६७-२६८ | |
| ५७२ | ४६०५ (१, २) | रोसालुकुवररी बात स्फुटदोहा | कवियण नर्बो चारण | १८७५ | १-२५ | लि.क. अनूपविजय अपूर्ण |
| ५७३ | ७१२२ | रुक्मिणीमंगल (कृष्णको व्याहलो) | | १६वीं | १२-४२ | |
| ५७४ | ६६७५ | रुक्मिणीव्याहलो | | १८६७ | १३२ | |
| ५७५ | ४०७६ | रुक्मिणीवेली (सवालावोध) | सू. पृथ्वीराज, टी. कुशलधीर गणि स पृथ्वीराज, टी. लब्धिविज्ञान शिवनिधान | १८२६ | ४३ | गुटका, सं. ४८ से ६४ तक के पत्र अप्राप्त लि.क. जीवणदास, रेवां ग्राम |
| ५७६ | ४०७७ | रुक्मिणीवेली (सस्तवक) | | १७८६ | २८ | |
| ५७७ | ७१६५ | रुक्मिणीवेली, नागदमण आदि | पृथ्वीराज | २०वीं | गुटका | जीर्ण |
| ५७८ | ४०७८ | रुक्मिणीवेली (राजस्थानी अर्थसहित) | | १८वीं | २७ | |
| ५७९ | ५२२१ | रुक्मिणीहरण रास | रूपासेनकुमार रास (सचित्र) | १६वीं | १५ | पत्र १, १२ अप्राप्त |
| ५८० | ५८६४ | रूपासेनकुमार रास (सचित्र) | | १८वीं | १३ | |
| ५८१ | ६६३७ (४) | रैदासके पद | रैदास | १८११- १८१६ | २०१-२०६ | लि.क. साध्वी मेरुश्री, चित्र सं. १६ लि.क. रामदास, निराणाग्राम |
| ५८२ | ४०२७ | रोहिणीतपस्तवन आदि | श्रीसार, राज आदि लामबद्धन " लालचन्द | १८वीं | २२ | पत्र १ से ३ अप्राप्त |
| ५८३ | ६११६ | लीलावती चौपाई | | १७४२ | १४ | |
| ५८४ | ६३७८ | लीलावती चौपाई | | १६वीं | ३६ | |
| ५८५ | ६०५६ | लीलावती भाषा | | १७८३ | २० | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|---------------------------------|--------------------|----------|-------------|------------------------------------------------------------------------------------------|
| ५८६ | ४८३६ | लीलावती रास | उदयरत्न | १८०७ | १६ | लि.क. मुनि जेठा |
| ५८७ | ५२८६ | लीलावती रास | " | १९वीं | १२ | र.का. सं. १७६७ |
| ५८८ | ४६१४ (२५) | लूकामतनिराकरण प्रतिमास्थापन रास | सुमतिकीर्ति | १८७७ | २३४ से २४२ | |
| ५८९ | ४०८८ | वच्छराजहंस चौपाई | जितोदय | १८६१ | ३३ | लि.क. रूपविजयजी, बातानगर |
| ५९० | ४७८१ | त्रंघ्याकल्प | | १८१४ | ४ | |
| ५९१ | ७७२६ | वंशभास्कर | सूर्यमल्ल | १९४३ | १८४ | लि.क. बारहठ बालाबदसजी, ग्राम हणूत्या, काशी ना. प्र. सभा में ग्रन्थमाला के संस्थापक |
| ५९२ | ७७२७ | वंशभास्कर | " | १९४० | १८४ | |
| ५९३ | ७७२१ (३) | वमेकवारतारी नीसाणी | | १८२५ | ६६-११० | लि.क. श्वेताश्वर पञ्चायण |
| ५९४ | ७१५१ | वयःश्रुतुका कवित्त आदि | | १८७६ | ७५ | लि.क. भैरुदास, जोधपुरमध्ये |
| ५९५ | ४७१६ | वर्षोत्पत्ति | | १९वीं | २ | |
| ५९६ | ५३७६ (२०) | वारसेनमुनिकथा | | | २२६-२४२ | |
| ५९७ | ६७३८ | विक्रमखपरा चौपाई | अभयसोम | १९वीं | १६ | खण्डित |
| ५९८ | ६४१४ | विक्रमचरित्र (वैतालपचीसी) | हेमानन्द | " | २७ | |
| ५९९ | ६६१५ | विक्रमचरित्र (चौबोलीसतीचौपाई) | उभयसोम | १८६५ | ११ | र.का. सं. १७२४ |
| ६०० | ७०१४ | विक्रमादित्यभूपालपञ्चदण्डचरित्र | लक्ष्मीवल्लभ गणि | १७६२ | ५५ | र.का. सं. १७२८ |
| ६०१ | ६४१५ | विक्रमादित्य लावणी | धर्मदेव (?) | १९७७ | ६ | लि.स्था. देवगढ़ |
| ६०२ | ७६२० | विजयसेठ विजयसेठानीलावणी | तालचंद | २०वीं | ३ | र.का. सं. १८६१ |
| ६०३ | ६१११ | विद्याविलास चौपाई | जिनहर्ष | १८२६ | १८ | |
| ६०४ | ४०६६ | विनयभट्ट श्रौण्डिपुत्रकथा | ऋषभसागर | १९वीं | ७० | र.का. सं. १८१० |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि जातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|--------------------------------|------------------|------------------------|-------------|-----------------------------------------------|
| ६०५ | ४६२४(६) | वभेक (विभेक) वाररी नीसाणी | केशवदास | १७६३ | १-१४ | लि.क. जयसौभाग्य, आठपहरा द्रुहा आदि-भो है । |
| ६०६ | ४४५२(४१) | विमलशाहजीरो सिलोको | शांतिविमल | १८वीं | ४५-४८ | |
| ६०७ | ४१४५ | विमलसाहाको सिलोको | पंडित विमल | १९वीं | १४ | |
| ६०८ | ४४५२(५३) | विषहरा विचार | | १८वीं | १०६वीं | |
| ६०९ | ४६१४(४) | विषाणहार स्तोत्र | | १८वीं | १६०-१६१ | |
| ६१० | ६३३४ | विषाणहार स्तोत्र | अचलकीर्ति | २०वीं | १३ | |
| ६११ | ७७२२(१४) | वीरम देईडरिया आदिके कवित | | १८वीं | १५२-१५६ | * लि.क. आणंदराम |
| ६१२ | ७७६६(१) | वीरमदे पत्नीरी वार्ता (सचित्र) | | १८वीं | १-३७ | चित्र सं० १८ |
| ६१३ | ४१३६ | वीरसेन राजकथा आदि | | १९२४ | ८ | लि.क. पं० जीवो |
| ६१४ | ४४५२(६२) | बृद्धबुवानको भण्डो | राजसिंघ | १८वीं | ११८वीं | लि.क. पं० प्रीतसोभाग्य |
| ६१५ | ७७४३ | वेदस्तुति भाषा | | १७८४ | ३३-४६ | * लि.क.वाई सिरैकंवरी, साथरगढमध्य |
| ६१६ | ५३६८ | वैतालपच्चीसी | | १९वीं | ४० | लि. स्या. -जोधपुर |
| ६१७ | ६४४३ | वैतालपच्चीसी | म. अमरपसिंह | १८६१ | ४४ | लि.क. पुरुषोत्तम व्यास |
| ६१८ | ७०४४ | वैतालपच्चीसी | शिवराम | १७२६ | ५२ | ६१ कवित |
| ६१९ | ७७२२(२) | वैतालपच्चीसीरा कवित | | १९वीं | ३७-४५ | |
| ६२० | ७४४४(८) | आवक अतिचार | | १८८५ | १८०-१९० | |
| ६२१ | ७१२२ | आवक कथाकोश भाषा (अपूर्ण) | | १९वीं | २१ | |
| ६२२ | ७७५३(८) | आवकरी सज्जाय | जिनहर्ष | १८३७ | ४२-४४ | |
| ६२३ | ७८१६(१) | ओधरलीला | | १८३७ | ४८ | |
| ६२४ | ६०२४ | ओपालकथा | रत्नशेखर | १८३१से १८३३ १७२७ | २६ | लि.क. शांतिलाभ, जेतारणमध्य |

| क्रमाङ्क | ग्रथाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|-----------|-------------------------------|--------------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------|
| ६२५ | ६२०५ | श्रीपालचरित्र चौपाई | परमत्ल | १८५८ | १०० | लि.क.ब्राह्मणगुलाव, भगवतगढम |
| ६२६ | ४००२ | श्रीपाल चौपाई | जिनहर्ष | १८२३ | २५ | |
| ६२७ | ६६१६ | श्रीपालचरित्र | सुजसविजय | १६२८ | ७८ | लि.क. मंगूमल, प्रथमपत्र अप्राप्त |
| ६२८ | ६३५१ | श्रीपालचरित्र भाषा | | १६१७ | १०२ | |
| ६२९ | ६५२७ | श्रीपाल चौपाई | ग्यानसागर | १७६१ | ३४ | र.का. सं० १७२६ |
| ६३० | ४१३८ | " | जिनहर्ष | १८६४ | ३५ | |
| ६३१ | ७२४८ | श्रीपाल नरेन्द्रकथा | | १६वीं | ३१ | |
| ६३२ | ७०८६ | " | हेमचन्द्र, रत्नकोखरशिष्य | १८२३ | १३७ | लि.क. गोडीचन्द्र |
| ६३३ | ४४६३ | श्रीपाल रास | ज्ञानसागर | १७३२ | १३ | र.का. सं० १७२६ |
| ६३४ | ६५२८ | " | विनयविजय | १८५७ | ५५ | र.का. १७३८ |
| ६३५ | ६७४६ | " | | १८७७ | गुटका | र.का. १७३८ |
| ६३६ | ५३७३ (५) | श्रीपाल रास (अपूर्ण) | | १८०६ | १०६-११८ | |
| ६३७ | ४४५२ (७७) | श्वानचक्र | | १८वीं | १२३ वाँ | कुत्तेके कान फड़फड़ानेके विषय में फलाफल-विचार |
| ६३८ | ६८६३ | शकुनदीपिका चौपाई | | १६वीं | ८ | |
| ६३९ | ४४५२ (६२) | शकुनरा कवित्त तथा जैसिह सवाई- | | १८वीं | १२० वाँ | |
| ६४० | ४४५२ (३०) | वखतेसयुद्ध | | १८वीं | ३१-३२ | |
| ६४१ | ४४५२ (७) | शकुनरी चौपाई (अपूर्ण) | | " | ११ वाँ | |
| ६४२ | ४१६० | शकुनविचार | | १७वीं | २ | ४ यंत्रों का फल |
| ६४३ | ५१२३ (४) | शकुनावली | | १८वीं | १६-२७ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|--------------------------|--------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ६४४ | ४६८६ | शतसंवत्सरी | हेम कवि | १६वीं | ६ | लि. क. प्रीतिसौभाग्य लि. क. गोपाल-मिश्र, पीरागपुरा वाला |
| ६४५ | ४७२५ | " | | १६वीं | ४६ | |
| ६४६ | ४४५२ (६५) | शनीसररो गुणछन्द | | १८वीं | ११६ वां | |
| ६४७ | ४१६६ | शनिचरकथा (स्नेहलीला) आदि | | १८४० | २१ | |
| ६४८ | ४७८८ | शनिचर कथा | भानुमेरु | १६वीं | ६ | आसोपनगरे लिखितम् * र. का. सं० १६३८ |
| ६४९ | ४८२४ | " | | १८३६ | २ | |
| ६५० | ६३०७ | शनिचर छन्द | | १६वीं | २ | |
| ६५१ | ६३८६ | शत्रुञ्जयउद्धार | | १६६७ | ६ | |
| ६५२ | ५४३६ (२) | शत्रुञ्जय रास | नयसुन्दर | " | ५-१७ | लि. क. दानविजय, भाविका लाडमरेपठनार्थम् १०४, १०५ पत्र अप्राप्त |
| ६५३ | ६५३८ | शत्रुञ्जयोद्धाररास | | १८वीं | ६ | |
| ६५४ | ५८६० | शान्तिनाथ रास | मत्तिसार | १८५४ | २२० | र. का. सं० १६७८ लिखितं सवाईजयपुरमध्ये लिखितं खालियरमध्ये लि. क. शिवदत्तसागर लि. क. खुश्यालचंद |
| ६५५ | ७७२० (७) | शारवाष्टक | | १८वीं | ४५ वां | |
| ६५६ | ४०२४ | शालिभद्र चरित्र | | १८वीं | १२ | |
| ६५७ | ४८०४ | शालिभद्र चौपई | | १८वीं | १२ | |
| ६५८ | ५०६५ | शालिभद्र चौपाई | " | १८४३ | १८ | लिखितं सवाईजयपुरमध्ये लिखितं खालियरमध्ये लि. क. शिवदत्तसागर लि. क. खुश्यालचंद |
| ६५९ | ६१३१ | " | | १७७५ | २५ | |
| ६६० | ६१४० | " | | १८१८ | ४८ | |
| ६६१ | ६५४३ | " | | १८५१ | २३ | |
| ६६२ | ६८४६ | " | " | १८२८ | १७ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|--------------------------|----------------------------|----------|-------------|---------------------------------------------|
| ६६३ | ७५६३ | शालिभद्र चौपाई | मत्तिसार | १७७२ | १३ | लि.क. ऋषि चांपो |
| ६६४ | ७५६४ | " | " | १८०६ | २६ | लि.क. खुशाल, वेगमपुरमध्ये |
| ६६५ | ५४५८(५) | शालिभद्र श्लोक | | १८५६ | १-१० | |
| ६६६ | ४७७७ | शालिहोत्र | | २०वीं | ६० | |
| ६६७ | ६८२६ | " | | १८१५ | १०५ | पत्र १ से ३ अप्राप्त |
| ६६८ | ७७३० | शालिहोत्र ग्रंथ (गुटका) | | १८४३ | ३४ | लि.क. राव जयसिंहद्वनोर, फतहगुर्जमध्ये |
| ६६९ | ७७६७ | शालिहोत्र (सचित्र गुटका) | महाराज नकुल पंडित | १८वीं | १३९ | चित्र सं० ११८ |
| ६७० | ७८३७ | शालिहोत्र (सचित्र) | | " | ६-७२ | चित्र सं० ४८ |
| ६७१ | ७७२२(१३) | शिवरात्रि कथा | | १७२७ | १२५-१५२ | लि.क. कासटोहा |
| ६७२ | ५२८६ | शीयलबावनी | | १८वीं | २ | ५८ दोहे |
| ६७३ | ४०७१ | शीलरास (नेमिताथ रास) | | १७९२ | ७ | लि.क. लडिधसागर |
| ६७४ | ५४१८(२३) | शीलरासा | विजयदेव सूरि | १८वीं | १४९-१५० | |
| ६७५ | ४०१० | शकवहोत्तरी | कवि जैत | १८९९ | ४७ | लि.क. विजयसमुद्र, जैसलमेर |
| ६७६ | ४४१९ | " | देवीदान | १७९० | ५० | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ६७७ | ७०१८ | पटपञ्चाशिका भाषा | देवदत्त | १७६९ | १५ | |
| ६७८ | ५३७६(६) | षोडश कारण कथा | मूल-पृथुसा, टी. उत्पल भट्ट | " | ९०-९४ | |
| ६७९ | ५३७६(१७) | " | शुद्धकीर्ति | " | २०६-२११ | |
| ६८० | ५३७६(१६) | षोडश कारण रासा | सकलकीर्ति | " | २०३-२०६ | |
| ६८१ | ६९३७(६) | सर्गांगी | दाहूजी | " | २६३-४३० | |
| ६८२ | ६५३९ | साम्बप्रद्युम्न चौपाई | समयसुन्दर | १८१६ | १९ | लि.क. मुनि सुन्दरसौभाग्य कृष्णदुर्गमध्ये |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|--------------------------------------------|----------------------|----------|-------------|------------------------------------|
| ६८३ | ७४०१ | साम्बप्रद्युम्न चौपाई | समयसुन्दर | १६७३ | ३१ | लिखितं आर्या मरूपठनाथंम् |
| ६८४ | ४६१८(२) | सावर्लिगा सदैवच्छकी वात | | १७६६ | २१-५२ | लि.क. प्रोहित जोधा, मनोहरपुर का |
| ६८५ | ७१७३ | सावर्लिगारी वात | | १६७६ | २७ | लि.क. मथुरालाल |
| ६८६ | ७७२२(५) | सावर्लिगासूरेरी वात | | १६८० | ५३-५६ | ६८ पद्योंमें रचित |
| ६८७ | ५४५८(२) | सदैवच्छसावर्लिगारी वात (सचित्र) | | १८३८ | १-५४ | चित्र सं० ७ |
| ६८८ | ४६२४(१) | सदैवच्छ सावर्लिगारी वात | | १७८७ | १-८ | जीर्ण प्रति |
| ६८९ | ४६१६(४) | " | | १८७५ | ५४-७२ | लि.क. सौभाग्य गणि |
| ६९० | ४१४७ | " | | १८१६ | ३६ | |
| ६९१ | ६६८६ | " | | १८५६ | १६-१०८ | लि.क. राधाकृष्ण ब्राह्मण |
| ६९२ | ७७२०(२०) | सदैवच्छ सावर्लिगारी वात (सचित्र- गुटका) | | १८८० | १-७ १६-२५ | चित्र सं० ७७ |
| ६९३ | ७७६८ | " | | १८५४ | ७५ | चित्र सं० ७७ |
| ६९४ | ७८४५ | " | | १८४८ | ७-८४ | चित्र सं० १४ |
| ६९५ | ५२०२(७) | सदैवच्छ सावर्लिगारी वात (अपूर्ण) | | १८८५ | १२३-१४१ | |
| ६९६ | ४६१५(११) | साहजादा कुतुबुदीनरी वात | | १८८७ | ३६१-३७६ | ७३ शिक्षाके वाक्य |
| ६९७ | ४४५२(६६) | सिखामण | सिद्धिविजय | १८८० | १३१ वीं | |
| ६९८ | ७२४७ | स्थूलभद्र स्वाध्याय | " | १८८० | १ | |
| ६९९ | ४६२४(१४) | स्थूलभद्र सञ्ज्ञाय | देवचन्द्र | १८८० | ३५-३६ | |
| ७०० | ७४४४(१२) | स्नात्रविधि | | १८८५ | २१२-२४५ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|--------------------------|--------------------------|----------|-------------|--------------------------------|
| ७०१ | ४४५२ (७४) | स्यालचक्र | | १८८५ | १२३वाँ | सियार के बोलने का शु |
| ७०२ | ५१२३ (८) | स्फुटज्योतिषचक्रादि | | १८८५ | ४१-४६ | शुभ विचार |
| ७०३ | ७७५३ (१५) | स्फुटपद्य | | १८३७ | ८६-१०६ | गोरराचक्र, धातुचक्र आदि |
| ७०४ | ४४५२ (८२) | संक्रान्तिफलचक्र | | १८८० | १२४वाँ | सोरठ, राजुल आदिके दूहा, पद आदि |
| ७०५ | ४६७५ | संक्रान्तिविचारआदि | | १८८० | ५ | |
| ७०६ | ४६८५ | " | | १८८० | ५ | |
| ७०७ | ७३३२ | संस्तरकप्रकीर्णकसवालाबोध | | १७८० | १६ | |
| ७०८ | ४६१५ (१२) | सज्जनप्रेमदूहा | | १८८७ | ३३७-३८४ | ११० दूहा है |
| ७०९ | ७४४४ (१) | सज्जकायसंग्रह | | १८८६ | ३२७-३७३ | |
| ७१० | ७५३८ | " | | १८८० | ४ | लि.क. ऋषि रामाजी |
| ७११ | ६२८६ | सत्तरभेदीपूजा | सायुकीति | १८५३ | १४ | |
| ७१२ | ७४८० | सत्तरीशयठाणप्रकरण | गजकुशल | १८८३ | ४० | |
| ७१३ | ४०५४ | सतीगुणावलीचौपई | सन्तदास | १८८३ | १२ | र.का. सं० १७१४ |
| ७१४ | ७८१० (१) | सन्तदासकीवाणीआदि | | " | ४-२६ | ग्राह्य ३ पत्र अप्राप्त |
| ७१५ | ६७४७ | सन्तवाणीगुटका | | १८६४ | ६६७ | जीर्ण प्रति |
| ७१६ | ७०६० | सन्ध्याप्रतिक्रमणविधि | | १८८० | १४ | |
| ७१७ | ४४५२ (६) | सन्यासीरावशानाम | | १८८० | १०वाँ | |
| ७१८ | ५११६ | सनत्कुमारप्रबन्धचौपई | | १८४० | २० | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ७१९ | ४६१४ (५१) | सम्बोधसन्तानूदूहा | वीरचन्द लक्ष्मीचन्दसिख्य | १८७७ | २७६-२८३ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------|-------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ७२० | ४७२४ | समयरे राजारो फल (वर्षपतिफल) | श्याम, काशीराम आदि वनारसीदास राजसी राज कवि प्रताप, ब्रह्मगुलाल आदि साधुकीर्ति | १६वीं | १ | स्वयं वनारसीदास के श्रक्षरों में लिखित ५ पद्य लि.क. केवलसौभाग्य लि.क. प्रीतिसौभाग्य र.का. १६१८, लालमण डोलीर पोशाळमध्ये प्रश्नावली और मुहरम के चांद आदि का फल लि.क. जयसौभाग्य गण |
| ७२१ | ५३७६(१५) | समाधि रास | | १७६१ | २०२-२०३ | |
| ७२२ | ४६१४(३) | सम्मेद शिखर निर्वाणकांड | | १८७१ | १५८-१६० | |
| ७२३ | ४८०२ | सरस्वती छन्द | | १६वीं | ३ | |
| ७२४ | ४२८७(१६) | सवाई जैसिधजीकीजोधपुर चढ़ाई | | १८वीं | १२७-१३० | |
| ७२५ | ४४५२(८३) | सवैयासंग्रह | | ” | १२४ वां | |
| ७२६ | ७७५३(१३) | सवैया | | १८३७ | ७० वां | |
| ७२७ | ४२८७(३) | सवैया इकतीसा | | १७२६ | १२-१३ | |
| ७२८ | ४०८१ | सवैयाबावनी | | १६वीं | ५ | |
| ७२९ | ४६०६(४) | ” | | १७६८ | २५-३४ | |
| ७३० | ४४५२(१४) | सवैयासंग्रह | साठी संवच्छरी आदि सात वारांरा विघड़िया सात सखीरो संवाद सात सखीरो संवाद (प्रहली) सिद्धान्तबोल | १८वीं | १७ वां | र.का. १६१८, लालमण डोलीर पोशाळमध्ये प्रश्नावली और मुहरम के चांद आदि का फल लि.क. जयसौभाग्य गण |
| ७३१ | ४४५२(२०) | सवैया, सपखरो आदि | | ” | २० वां | |
| ७३२ | ५५२४ | सत्रह भेद पूजा | | १८६४ | ६ | |
| ७३३ | ५४१० | साठी संवच्छरी आदि | | १८वीं | ८३ | |
| ७३४ | ४६२४(१२) | सात वारांरा विघड़िया | | १७६० | १३-१४ | |
| ७३५ | ४६२४(११) | सात सखीरो संवाद | | १७६३ | १२-१३ | |
| ७३६ | ४४५२(६४) | सात सखीरो संवाद (प्रहली) | | १८वीं | १३० वां | |
| ७३७ | ७३०५ | सिद्धान्तबोल | | १६१० | ४७ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि जातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------|------------------|----------|-------------|------------------------------------|
| ७३८ | ७५४६ | सिद्धांतसारोद्धार | लावण्यसमय | १७७६ | ५६ | अन्तिम तीन पत्र त्रुटित |
| ७३९ | ६३८३ | सिरी संतणी भास | समयसुन्दर | १८वीं | २ | सा. चन्द्रावलि पठनार्थ |
| ७४० | ४००६ | निहलसुत चौपाई | " | १७९४ | ६ | लि.क. कुशलहर्ष |
| ७४१ | ४८२८ | सिहलसुत चौपाई | " | १७वीं | ६ | |
| ७४२ | ६५३६ | सीताराम चौपाई | जिन हर्ष | १८वीं | ६२ | |
| ७४३ | ७७५३ (२) | सीतासज्जाम | नन्द (?) | १८३७ | ३०-३१ | र.का. सं० १६६३ |
| ७४४ | ५३७६ (१) | सुदर्शनसेठकी कथा | वीयो कवि | १७६१ | १-३१ | लि.क. ऋषि इन्द्रभाण |
| ७४५ | ४००७ | सुदर्शनसेठरा कवित्त | " | १८८० | २१ | लि.क. बाई चंपा |
| ७४६ | ४०८६ | सुदर्शनसेठरा कवित्त | " | १८८४ | २० | |
| ७४७ | ६२७४ | सुबाहुचरित्र आदि | जिनमाणिक्य सूरि | १६वीं | ८ | |
| ७४८ | ६३८८ | सुबाहुचरित्र | मानसागर | १८वीं | ६ | र.का.सं. १६००, जैसलमेरमध्ये |
| ७४९ | ४००८ | सुभद्रासतीरो चौढालियो | | १८७६ | ५ | लि.क. स्थाविरजी श्रीचैतन- रामजी |
| ७५० | ४६१२ | सुभाषित | वनवारीदास | १६वीं | ४ | ६५ पद्य हैं |
| ७५१ | ५४१८ (३) | सुरतपंचमी कथा | धर्मवर्धनदास | १६वीं | १-८७ | |
| ७५२ | ५६३० | सुरसुन्दरी चौपाई | " | १८४२ | २८ | |
| ७५३ | ५६७५ | सुरसुन्दरी चौपाई | शुभशील | १७८२ | २५ | पत्र सं० २० से २३ अप्राप्त |
| ७५४ | ४००९ | " | धर्मवर्धन | १६वीं | १७ | लि.क. नेमचन्द |
| ७५५ | ७२४४ | " | नयसुन्दर | १८४८ | २१ | |
| ७५६ | ४८०१ | सुरसुन्दरी रास | केदारविमल गणि | १६८८ | २६ | लि.क. राघवकेशव, राजकोटमध्ये |
| ७५७ | ७३७४ | सूक्तिमुक्तावली | | १६वीं | २५ | लि.क. इष्टहंस |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|--------------------------------|--------------------|-----------|-------------|----------------------------------|
| ७५८ | ६४१८ | सूरजजीरो सत्तोको सूरजप्रकाश | करणीदानजी | " १८४१ | २ ३०० | र.का.सं. १७८७ लिपिस्थान-बदनोर |
| ७६० | ६७५२ | सेऊसमनकी परजी | मोखिंदराम (?) | १६२६ | ३ | लि.क. जीवणाराम ४३ दूहा |
| ७६१ | ४०११ | सोमवती प्रमावसरो वार्ता | | १८४३ | ३ | |
| ७६२ | ७७२२ (३) | सोरठरा दूहा | | १८वीं | ४६-४८ | |
| ७६३ | ५४१८ (२२) | सोलह कारण का रासा | | १६वीं | १४७-१४६ | |
| ७६४ | ४६१४ (४५) | सोलह स्वप्न बीनती | | १८७७ | २७४ वां | |
| ७६५ | ६३५८ | सीभाग्यपंचमी चौपई | जिनरंग | १८वीं | २५ | |
| ७६६ | ५८६२ | हंसराज वच्छराज चौपई (सचित्र) | जिनोदय सूरि | १८३५ | ४४ | र.का. सं. १६८०, चित्र सं. १०३ |
| ७६७ | ५४३१ (२) | हंसराज वच्छराज चौपई (अपूर्ण) | जिनोदय सूरि | १६१० | ६४ से ६६ | |
| ७६८ | ७४०२ | हंसराज वच्छराज चौपई | | १८६६ | ३४ | |
| ७६९ | ६५३५ | " | " | १६वीं | ४२ | |
| ७७० | ७२२७ | हंसराज वरसराम रास | " | १८८३ | ४६ | र.का. सं. १६८० चित्र सं. ६५ |
| ७७१ | ५२०६ | हंसवरस चौपई (सचित्र) | | १८वीं | ६२ | |
| ७७२ | ५४३१ (१) | हंसावली (अपूर्ण) | | १६१० | १५-६४ | |
| ७७३ | ४४५२ (७०) | हणमंतरो छन्द | नरहरदास | " | १२० वां | |
| ७७४ | ७७२१ (१४) | हनुमान छन्द | कवि महेश | १६३१ | २०१-२०२ | लि.क. पांडे नाथूराम गौड़ |
| ७७५ | ४६०२ | हम्मीर रासो | | १७८७ | ५६ | लि.क. मनसाराम ब्राह्मण |
| ७७६ | ५३८४ (१) | " | " | १६४४ | १-७० | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|-----------------------|-----------------------|----------------------------------|----------|-------------|------------------------------------------|
| ७७७ | ७१६७ | हमीरहठ वार्ता | जितहर्ष कनकसुन्दर रतनूहमीर | १८६७ | ६६ | गुटका |
| ७७८ | ६४४६(४) | हरजस | | १६वीं | १-४ | लि.क. पं. क्षेमाद्वि |
| ७७९ | ४०१२ | हरिचंद रास | | १८८२ | २५ | र.का. सं. १६६७ |
| ७८० | ४८२९ | " | | १८८५ | १७ | |
| ७८१ | ७७२१(९) | हरिजस नाममाळा | ईसरदास | १८८५ | १४४-१६५ | |
| ७८२ | ४९०५ | हरियालीरा दूहा आदि | | १८८५ | ३६-३८ | |
| ७८३ | (१०,११,१२) ४९२४(८) | हरिरस | | १६वीं | | |
| ७८४ | ७७२१(१२) | " | | १७६३ | १-१० | अंतिम पत्र पर सोलह श्रुंगारों की सूची |
| ७८५ | ७७५०(१) | " | " | १६३१ | १८०-१९९ | लि.क. फूलगिरि |
| ७८६ | ५३४३ | " आदि | " | १८६० | १-२१ | लि.स्था. वीरघोर |
| ७८७ | ४९१४(२) | हरिवंशपुराणनो रास | ब्रह्मजिणदास | १८वीं | ५ | |
| ७८८ | ४४५२(६२) | हाथियांरा वखाण | नाहरखान राजसिंहोत | १८७१ | ७-५७ | लि.क. चंद्रकीर्ति, एहमदाबाद-नगरे |
| ७८९ | ४९२४(९) | हाथीरा वणाव | | १३० वां | १७१-२०१ | रोमकंद छन्दों में वर्णन |
| ७९० | ४४५२(२४) | हिगुलाष्टक | | १८वीं | ११वां | |
| ७९१ | ७४१७ | हिडोलण आदि | | १७६३ | २४ वां | |
| ७९२ | ४१६८ | हीर राक्ष्या को तमासो | रामसरण (?) | १८वीं | १ | लि.क. पं. खेतसी |
| ७९३ | ४८३६ | क्षेत्रसमास | रत्नशेखर सूरि | १६५४ | ३२ | लि.क. नाथूनारायण शर्मा |
| ७९४ | ७३६७ | " | | १७८२ | ७१ | पत्र सं. १,२ अप्राप्त, जैसलमेरनगरे लिखित |
| | | | | १७वीं | १५ | |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—दस्तावेजित ग्रंथ सूची, भाग-२; २०-राजस्थानी ग्रन्थ]

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|-------------------|-----------------------------|----------|-------------|-----------------------------------|
| ७६५ | ७४०३ | क्षेत्रसमाप्त | मत्तिसागर रत्नशेखराचार्य | १८५१ | ६ | र.का. सं. १५३६ |
| ७६६ | ७४२३ | " गणित | | १८३६ | १२ | तालिका ग्रामे लिखित |
| ७६७ | ४४२४ | " चौपाई | | १६८२ | १४ | र.का. सं. १५६४ |
| ७६८ | ४०२ | " प्रकरण सवालवबोध | | १८२१ | २० | र.का. सं. १६८६ (?) उदयपुर नगरे |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २१-हिन्दी ग्रन्थ]

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-------------------------------------|--------------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------|
| १ | ४४५२(१०२) | अकडमचक्र | हीर | १८वीं | १३६वीं | अंगद रावण संवाद का वर्णन है |
| २ | ४०३८ | अंगद वसीठी सवैया | कवि भान | १९वीं | ३ | |
| ३ | ७७२०(६) | अध्यात्मछत्तीसी | वनारसीदास | १८वीं | ४३-४५ | |
| ४ | ४६१४(६) | अध्यात्मवत्तीसी | " | १८७१ | १६६-१६७ | |
| ५ | ७७२०(५) | " | " | १८वीं | ४२-४३ | |
| ६ | ५३६२ | अध्यात्मरामायण भाषा (बालकांड) | भगवान् अर्जुन नामा शिष्य | १८वीं | ३२ | रचनाकाल सं० १७४१ |
| ७ | ५३६३ | अध्यात्मरामायण भाषा (अयोध्याकांड) | (निरंजनी) | " | ४८ | |
| ८ | ५३६४ | अध्यात्मरामायण भाषा (वनकांड) | " | " | ३७ | |
| ९ | ५३६५ | अध्यात्मरामायण भाषा (किष्किवाकाण्ड) | " | " | ३१ | |
| १० | ५३६६ | अध्यात्मरामायण भाषा (सुन्दरकांड) | " | " | २१ | |
| ११ | ५३६७ | अध्यात्मरामायण भाषा (युद्धकाण्ड) | " | " | ६५ | |
| १२ | ५३६८ | अध्यात्मरामायण भाषा (उत्तरकाण्ड) | " | १७८३ | ३६ | * रचनाकाल सं० १७२८ लि.क. मेघा, नामपुरमध्ये |
| १३ | ४२१६(३) | अनेकार्थी | मन्ददास | १८५६ | १६२-१६६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि कातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------|------------------------------|----------|-------------|------------------------------|
| १४ | ६७५३ | अमृतधारा | भगवानदास निरंजनी | १८२२ | ५६ | अपूर्ण |
| १५ | ४८०३ | " | " | १६वीं | ५२ | |
| १६ | ७४६१ | अलङ्कारदीपक | शंभूनाथ मिश्र (सुखदेव शिष्य) | " | २८ | |
| १७ | ४०३७ | अलङ्कारमाला | सूरत मिश्र | १८वीं | ५ | र.का. सं० १७६६ आगरा में रचित |
| १८ | ४२७० | अलङ्काररत्नाकर | दलपतिराय | १६वीं | ६० | वंशीधर कवि की व्याख्या सहित |
| १९ | ६६५३ | अष्टावक्र प्रकरण भाषा | | १८६४ | १४ | लि.क. दुधराम दाहूपंथी |
| २० | ४२८७(१) | अक्षरवत्तीर्नी | | १७२६ | १-४ | लि.क. रामचन्द्र |
| २१ | ४२८७(१२) | अक्षरव्यावर्ती | सुन्दरदास | १७२८ | ६३-६८ | " |
| २२ | ५६८० | आत्मप्रकाश | आत्माराम (दीनलालमजी शिष्य) | १६वीं | ३६२ | लि.क. ताराचंद दाह्लण |
| २३ | ६२४० | आत्मानुशासन भाषा | गुणभद्र | १८८८ | १३८ | डांगरवाड़ा का, नगर महुवा में |
| २४ | ७७२०(१७) | आत्माराम गीत | | १८वीं | ५१ वां | |
| २५ | ५४१८(६) | आदीश्वर के रेखते | | १६वीं | १०५-१०६ | |
| २६ | ४६१७ | आनन्द विलास | महाराजा यशवन्तसिंह | १७४३ | ११ | |
| २७ | ६७२१ | इतिहाससमुच्चय भाषा | लालदास | १८१२ | ८६ | कवि जयपुर के महाराजा सव |
| २८ | ४२६३(३) | इशक दरियाव | रसरजि | १८८२ | ६-१६ | प्रतापसिंह का आश्रित था |
| २९ | ४२६३(४) | इस्कफंद | " | " | १७-१६ | |
| ३० | ४६२४(१७) | उपदेशखत्तीसी | जितहर्ष | १८वीं | २२-२७ | लि.क. जयसोभाग्य गरिण |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------|----------------------|----------|-------------|-------------------------------------------|
| ३१ | ६३२३ | उपदेश बावनी | कृष्णदास | १६वीं | १० | र.का. सं० १७७२ |
| ३२ | ५१६६ | उपाख्यान सहित दश लीला | | १६२१ | ३-२६ | लि.क. ब्राह्मण बालमुकुन्द, मथुरा मध्ये |
| ३३ | ४३१३ | ऐन पचीसी | लाला सुन्दरलाल | १८६७ | ८ | जयपुर में रचित |
| ३४ | ५४०१ | कर्मविपाक | | १६०७ | २५ | लि.क. हरिदास |
| ३५ | ७७४४(५) | करुणाभरण नाटक | कृष्णजीवन लच्छीराम | १७५८ | २३-५१ | लि.क. चैनकुंवरी |
| ३६ | ७७५६(२) | कालको अंग | सुन्दरदास | १६वीं | २२-३१ | |
| ३७ | ४४५२(२७) | कवित्त कुण्डलिया | केशव, गङ्गा | १८वीं | २६वाँ | |
| ३८ | ४४५२(२१) | कवित्त बावनी | खेमचंद आदि | १८वीं | २१-२२ | |
| ३९ | ५३७४ | कवित्त संग्रह | आनंदधन | " | ५६ | ५३२ कवित्त है |
| ४० | ५३८२ | " | जगदीश कवि | १८४६ | १६३ | * १००० कवित्तों का संग्रह |
| ४१ | ४२१७(२) | कविप्रिया | केशवदास | १८वीं | ११२ | पत्र सं० ७६ से ८४ अप्राप्त |
| ४२ | ५३८०(१) | " | " | १८४६ | ६६ | |
| ४३ | ७०६४ | " | " | २०वीं | १६६ | |
| ४४ | ६६७६(२) | काव्य सिद्धांत | सूरति मिश्र | १८६० | ७४-८८ | |
| ४५ | ४१४० | " | " | १६०१ | ३१ | लि.क. ऋषि देवराज |
| ४६ | ४२६४ | किशोर कल्पद्रुम | शिव कवि | १८वीं | १६६ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ४७ | ५२०१ | किस्सा गुलबकावली | | १६वीं | ३-७६ | |
| ४८ | ७७४४(७) | कृष्णजीकी रसोई | | १७५८ | ५७-६२ | |
| ४९ | ६८२८ | कृष्णसागर | | १६वीं | २०० | १८४६ पद्य । र.का. सं० १८३६ |
| ५० | ५४१७ | कृष्णायन कथा चौपई | | " | १७५ | स्थान-आगरा |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि मय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|-------------------------------------|--------------------|---------|-------------|-----------------------------------|
| ५१ | ५३७१ (५) | केनोपनिषद् भाषा | श्रीकृष्ण भट्ट | १८वीं | १-२४ | लि.क. इन्द्र मिश्र |
| ५२ | ५४२० (७) | कोकमंजरी | | १६१२ | १०७-१११ | लि.क. विजय गणि |
| ५३ | ७७५२ | " | कवि आनन्द | १८१३ | ४१ | लि. स्या. रतलाम |
| ५४ | ४१५८ | कोकसार | आनन्द कवि | १६०६ | ११ | लि.क. प्रीतिसोभाग्य गणि |
| ५५ | ४४५२ (२६) | " | " | १८०४ | २७-३१ | |
| ५६ | ४६२२ | खिल प्रकरण (योगवासिष्ठान्तर्गत) | | १८५३ | ४८ | |
| ५७ | ५११० | खालिकवारी | | २०वीं | ३ | |
| ५८ | ५३७० | गङ्गा आगमन कथा | रस आनन्द | १८६३ | ६ | स्वयं कवि द्वारा भरतपुर में लिखित |
| ५९ | ६३४३ (२) | गङ्गालहरी | पद्माकर | १८८६ | १२-२७ | |
| ६० | ५४०२ | गणितसार | हेमराज | १७६४ | ७ | कोटा में लिखित, नृदित |
| ६१ | ५८७४ | गणेशपुराण भाषा | मोतीलाल | १६वीं | १६ | |
| ६२ | ५४०६ | गीतगोविन्द टीका | चिन्तामणि | " | ४० | चन्द्रकुलसंभूत पहाड़सिंहप्रोतये |
| ६३ | ४२८८ (४) | गीता भाषा (पद्यानुवाद) | हरिवल्लभ | १८८६ | ११३ | |
| ६४ | ७१७१ | गीतामृत सार | मकरन्द | २०वीं | १७३ | आद्य २ पत्र अप्राप्त |
| ६५ | ४६०५ | गुरुदेव को अंग | सुलसागर | १६वीं | २५-३१ | |
| ६६ | ६४४६ (३) | गुरुस्तुति | | " | ४१-४२ | |
| ६७ | ५८६६ (३) | गुलजार इस्क अनवर इकबाल का किस्सा | | " | १२-८२ | |
| ६८ | ५२०४ | गुसाईजी की वन-यात्रा | चन्द आदि | " | ४१ | |
| ६९ | ४६०६ (५) | गुडायें दोहरा | तुलसीदास | १७६८ | ३४-४५ | |
| ७० | ७७४४ (८) | गोपाल लीला | | १७५८ | ६२-६६ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|------------------------------------|----------------------|----------|-------------|------------------------------------------------------|
| ७१ | ६६८८ | गोपीजनवल्लभोत्सव प्रकाशिका | | १६वीं | ४२ | जयपुर के गोपीजनवल्लभ मंदिर की निम्बाकीय पूजा प्रणाली |
| ७२ | ७७२० (१६) | गोरखवचनिका | | १८वीं | ५१वाँ | बदनोरमध्ये लिखित |
| ७३ | ७७३४ | गोवर्द्धननाथजी की प्राकट्य वार्ता | | १६२३ | ४८ | र.का. सं० १८६३, कवि गोपाल |
| ७४ | ५३६७ | गोविन्दविलास | कृष्ण कवि | १८६७ | ११६ | सुत, ग्वालियर वासी |
| ७५ | ५३८१ | गोविन्दानन्दघन | गोविन्द नाटाणी | १६वीं | ३० | कवि जयपुर वासी |
| ७६ | ५३८३ | चकता पातशाही की परंपरा | | " | १४१ | र.का. सं० १८५८ |
| ७७ | ५३४७ (१) | चन्द्र मुकुट चन्द्रकिरण रानीकी जात | | १८३७ | १-३० | लि.क. लाला तुलसीराम सेनवंश |
| ७८ | ६३४६ | चरनाई की पाटी आदि | | १८८७ | ८५ | |
| ७९ | ५४३८ (५) | चित्तामणि माला | नन्ददास | १८६० | ६२-६६ | |
| ८० | ४६१३ | चित्तावणी संग्रह | रामेश्वरदास आदि | १६वीं | | र.का. सं० १८०८ |
| ८१ | ७७२० (१८) | चेतन सुमति गीत | बनारसीदास | १८वीं | ५१-५२ | |
| ८२ | ७११५ | चौरासी वैष्णवों की वार्ता | | १८वीं | २७० | रूपनगर में उम्मेदकुंवर |
| ८३ | ५३८२ (२) | छक पचीसी | जगदीश कवि | १८६३ | | बांकावती ने लिखवाई |
| ८४ | ५३७७ | छद्मखोडशी | बृन्दावनहित | १८६० | १८६-१६३ | लि.क. भट्ट श्यामसुन्दर |
| ८५ | ६७६३ | छन्दरत्नावली | हरिराम | १८६० | ७१ | राधाकृष्ण लीला वर्णन, बृन्दावनमें लिखित |
| ८६ | ५८१६ | छन्दलता | चित्तामणि | १६२० | १० | र.का. सं० १८२५, पुरनगर में लिखित |
| | | | | १६०६ | ३१ | लि.क. ब्रजवासी, बृन्दावन मध्ये |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|---------------------|------------------------------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------------|
| ८७ | ४२१३ | छन्द विचार | सुखदेव मिश्र | १८७६ | २५ | लि.क. संगम कबीर |
| ८८ | ५३७६(२२) | ज्येष्ठजिनवर कथा | | १८वीं | २४८-२५३ | |
| ८९ | ६३०३ | जिनवत्चरित्र चौपई | विश्वभूषण | १७६६ | ७१ | |
| ९० | ७७४६(१) | जोग लीला | उदय (?) | २०वीं | १-७ | |
| ९१ | ४२८७(७) | तर्क चिन्तावनी | सुन्दरदास | १७२८ | २६-३३ | लि.क. आनंदराम |
| ९२ | ५३७१(२) | तंतिरीयोपनिषत् भाषा | श्रीकृष्ण भट्ट | | ३४ | |
| ९३ | ७७२०(१०) | दसदान | | १८वीं | ४६ वाँ | |
| ९४ | ५४०७ | दक्षनविलास | दक्षन कवि (अहमदउल्लाह, वहिरियावाद के) | १८६४ | ३७ | र.का. सं० १७२२, राधाकृष्ण के श्रृंगार का वर्णन |
| ९५ | ४३१६ | दानलीला | कृष्णदास | १६२८ | १४३-१५२ | |
| ९६ | ५४३८(४) | " | परमानंददास | १८६० | ५६-६२ | |
| ९७ | ४२६३(१५) | दुखहरण वेलि | म प्रतापसिंहजी | १८वीं | ३४, ३५ | |
| ९८ | ४३०६(१०) | " | " | १६वीं | १६, २० | |
| ९९ | ७४४१(११) | " | " | १६१४ | ५६, ६० | |
| १०० | ५३६१ | दोहासार | | १८८४ | १०३ | संग्रह समय-१७२०, भरतपुर में लिखित, प्रथम पत्र अप्राप्त |
| १०१ | ५४५५(१) | ध्यानमञ्जरी | अग्रदास | १६वीं | १६ | |
| १०२ | ६०८८ | " | " | " | ५ | |
| १०३ | ६३६४ | " | " | " | ६ | |
| १०४ | ४२८८(२) | ध्रुवचरित्र | गोपाल | १८८६ | १७-४५ | |
| १०५ | ५४१२(२) | " | शशिताय माथुर (सोमनाथ) | १८५७ | १-२० | र.का. सं० १८१२, कवि भरतपुर वासी |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि जातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------|------------------|----------|-------------|---------------------------------|
| १०६ | ७१५८ | द्रुवचरित्रादि | मनोहरदास सोनी | १८०५ | ८८ | आद्य पत्र अप्राप्त |
| १०७ | ६३१६ | धर्मपरीक्षा | पं० शिरोमणिदास | १८६० | ८७ | र.का. सं० १८११ |
| १०८ | ६३१६ | धर्मसार चौपाई | विलास | १९वीं | ३४ | र.का. सं० १७३२ |
| १०९ | ६१४५ | नयचक्र भाषा | | १९०७ | ४७ | र.का. सं० १८६७ करौलीमध्ये लिखित |
| ११० | ७३५१ | नयतत्त्वविचार सार्थ | नयनसुख केशवपुत्र | १९वीं | ११ | चित्र सं० २ |
| १११ | ७७६६(२) | नयनसुख (बंध्यमनोत्सव) | " | १८५६ | १-४४ | |
| ११२ | ७००६ | नयनसुख | | १८८४ | २६ | |
| ११३ | ६८३५(१०) | नवकारमंत्र | | १८६६ | ३ | |
| ११४ | ७४४२(१) | नवतत्त्वभेद | | १७६४ | १-४६ | |
| ११५ | ७७२०(८) | नवदुर्गाविधान | | १८वीं | ४५ वाँ | |
| ११६ | ७७२१(७) | नवरत्नकवित्त | वनारसीदास | १८२५ | १४१-१४२ | |
| ११७ | ६८३५(५) | नागोरीगच्छपट्टावली | | १८६६ | १ | |
| ११८ | ७७२०(६) | नामनिर्णयनिधान | | १८वीं | ४५-४६ | |
| ११९ | ६३४३(४) | नाममंजरी (मानमंजरी) | नन्ददास | १८८६ | ४२-६६ | |
| १२० | ७७६७ | " | " | १८१३ | १८ | लि. क. उदयराम ब्राह्मण |
| १२१ | ६८३३(१) | नायिकाभेद | | १८४८ | २-५ | अपूर्ण, प्रथम पत्र अप्राप्त |
| १२२ | ५४१६ | नास्तिकतथा भाषा | नन्ददास | १८८५ | ४७ | लिखितं जिगनीमध्ये |
| १२३ | ४५५७(१) | नीतिमंजरी | म. प्रतापसिंह | १९वीं | १-१३ | लि. क. महात्मा ज्ञानीराम |
| १२४ | ७४४१(१) | नीतिमञ्जरी | " | १९१४ | १-२ | लि. स्था. उदयपुर, |
| १२५ | ७७४६(१) | " | " | २०वीं | १-१३ | सेठ गंभीरमल पठनार्थ |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|---------------------------------|---------------------|----------|-------------|-------------------------------------|
| १२६ | ५३७२ | नेहनिदान | रस आनन्द | १८६६ | १२ | स्वयं कवि द्वारा भरतपुर में लिखित |
| १२७ | ४४५२ (४०) | नैगवत्तीसी | वृन्द कवि | १८वीं | ४४-४५ | र.का. सं० १७४३ |
| १२८ | ७७२१ (८) | प्रकीर्ण कवित्त | वनारसीविलासान्तर्गत | १८२५ | १४३-१४४ | |
| १२९ | ७७२० (१९) | प्रकीर्ण पद | वृन्द कवि | १८वीं | ५२ वीं | |
| १२० | ५४०८ | प्रतापविलास | वृन्द कवि | १९वीं | १९ | काव्यप्रकाश पर आधारित रस-ग्रन्थ |
| १३१ | ६२६२ | प्रबोधपंचाशिका | पद्माकर भट्ट | १८६३ | २० | |
| १३२ | ४८०५ | प्रबोधपचीसी | सुन्दर कवि | १९वीं | २ | कवि खरतरगच्छीपक्षांतिदास-का विषय है |
| १३३ | ४२८८ (३) | प्रह्लादचरित्र | गोपाल | १८८९ | ४२-८८ | |
| १३४ | ५३७१ (३) | प्रश्नोपनिषत् भाषा | श्रीकृष्ण भट्ट | १८वीं | ३५-६४ | |
| १३५ | ७७२० (१२) | प्रास्ताविक सवैया | | १८वीं | ४७-४८ | |
| १३६ | ५२२४ | प्रास्ताविक सवैया (प्रश्नोत्तर) | | १९वीं | ६ | ५१ सवैया है |
| १३७ | ४३०९ (१२) | प्रोत्तिपचीसी | म. प्रतापसिंहजी | " | २३-२७ | |
| १३८ | ७४४१ (१६) | " | " | १९१४ | ७५-८० | |
| १३९ | ७७४९ (६) | " | रसरशि | २०वीं | १-५ | |
| १४० | ४२६३ (११) | प्रोत्तिलता | म. प्रतापसिंहजी | १८वीं | १०-१६ | |
| १४१ | ४३०९ (६) | " | " | १९वीं | १०-१३ | |
| १४२ | ७४४१ (८) | " | " | १९१४ | ४६-५२ | |
| १४३ | ४२६३ (८) | प्रेमतरङ्गिणी | मुरलीधर भट्ट | १८वीं | १-२३ | कवि म. प्रतापसिंहका आश्रित ४ |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|------------------------|--------------------|----------|-------------|----------------------------------|
| १४४ | ४२६३ (१२) | प्रेमप्रकाश | म. प्रतापसिंह | १८वीं | १७-२० | र.का. सं० १७४२, म. कु. रतन |
| १४५ | ४३०६ (४) | " | " | १९वीं | ६-८ | पाल, करौली प्रशस्ति परक |
| १४६ | ७४४१ (१३) | " | " | १९१४ | ६३-६६ | |
| १४७ | ५३४७ (२) | प्रेमरत्नाकर | देवीदास | १८३७ | ३०-४० | |
| १४८ | ४७६४ | पंचाध्यायी | नन्ददास | १८वीं | १७ | |
| १४९ | ५२०२ (६) | पंचाध्यायी (भाषानुवाद) | वंशीअली | १८८५ | ११४-१२३ | |
| १५० | ४२६५ (१) | पंचाध्यायी | नन्ददास | १८४३ | १०-२६ | |
| १५१ | ७७५६ (१) | पञ्चेन्द्रियोपदेश | सुन्दरदास | १९वीं | ३१ | प्रथम ३ पत्र अप्राप्त |
| १५२ | ४२६२ | पदमुक्तावली | श्रीनागरीदासजी | " | ६२ | त्रुटित |
| १५३ | ५३७८ | पदसंग्रह | किशोरीअली गोस्वामी | " | २१२ | जलविहार अमर गीत, सांझी |
| १५४ | ५४४० | " | " | " | ६६ | आदि से सम्बन्धित पद |
| १५५ | ६८४२ | " | " | " | ११० | निम्बार्क संप्रदाय सम्बन्धी |
| १५६ | ७८१५ | " | " | " | १२८ | पद हैं |
| १५७ | ७८३६ | " | " | " | ५६ | जैन धर्म सम्बन्धी पद |
| १५८ | ५१७७ | " | रसनायक | १८८६ | ५६ | वल्लभ संप्रदाय के पद |
| १५९ | ७७३८ | पाण्डवयशोन्मुचन्द्रिका | नन्ददास आदि | १९वीं | ५५ | ३०८ पद |
| १६० | ७७४२ | " | स्वरूपदास | १८वीं | ५५ | लि.क. पठान उमेदखाना, बदनोर राज्य |
| | | " | " | १९२३ | १३६ | लि.क. वंणव हरिदास |
| | | " | " | १९१४ | ११२ | |

राजस्थान पुरातत्वाध्येषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; २१-हिन्दी ग्रन्थ]

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------|--------------------|----------|-------------|--------------------------------|
| १६१ | ७७३६ | पाण्डवयोन्मुचन्द्रिका | स्वरूपदास | १६४१ | ३६६ | लि.क्र. वैष्णव सीतारामदास |
| १६२ | ६३३१ | पातसाहनामोपरि रमल | भूधर | १६१२ | ३ | र.का. सं० १७८६, |
| १६३ | ६१७७ | पार्श्वनाथपुराण भाषा | | १८०१ | ६५ | आगरा में रचित |
| १६४ | ६६२१ | " | भूधर बुध | १६वीं | ६४ | पत्र सं० ४०, १५ अप्राप्त |
| १६५ | ७१०८ | " | | १७२५ | ८६ | र.का. सं० १७८२ |
| १६६ | ५६६६ | पारासोमल की क्रिया | | १६वीं | ६ | रजत आदि धातुओं की निर्माण-विधि |
| १६७ | ६३४३ (३) | पिंगलसार | मोहन | १८८६ | २७-३८ | |
| १६८ | ५२०५ (१८) | पूजाविधि | श्रीवल्लभाचार्य | १८वीं | ८८-६१ | |
| १६९ | ७७४४ (१०) | पूरणमासी कथा | | १७५८ | ७२-११५ | |
| १७० | ४३०६ (१३) | फागरंग ग्रन्थ | म. प्रतापसिंह | १८६६ | २८-३१ | |
| १७१ | ७४४१ (४) | फाग रंग | " | १६१४ | ३५-४० | |
| १७२ | ५११३ (६) | फालनाम फारसी | अनक कवि | १८वीं | २८-२६ | ४२५ कवित्त है |
| १७३ | ४२६४ | फुटकर कवित्तसंग्रह | म. प्रतापसिंह | " | ११८ | |
| १७४ | ४३०६ (१५) | व्रजसिंगार | | १६वीं | ४५-५० | |
| १७५ | ४२६३ (१०) | व्रजशृंगार | " | १८वीं | १-६ | र.का. सं० १७५५, कर्ता आगरा |
| १७६ | ७४६० | व्रत्स विलास | भगवतीदास | १८४६ | १२४ | निवासी लालजी कदारिया का पुत्र |
| १७७ | ५३७१ (१) | ब्रह्मसूत्र भाषा | श्रीकृष्ण भट्ट | १८वीं | १-२७ | लि.क्र. महात्मा श्योजी (शिवजी) |

| क्रमाङ्क | ग्रंथाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|-----------|---------------------------------|--------------------------|----------|-------------|---------------------------------------|
| १७८ | ४७८५ | बनारसीविलास | बनारसी गग, अग्रवाल | १८वीं | ११५ | र.का. सं० १७७१, पत्र ८६ से ६६ अग्रस्त |
| १७९ | ७४४२ (२) | बनारसीविलास भाषा | " | १७६४ | १-११६ | |
| १८० | ५४२८ | बलभाष्यान | गोपालदास | २०वीं | ५३ | |
| १८१ | ५३८७ | बहतारी | मोहनदास | १७६७ | ८ | |
| १८२ | ५२०२ (५) | बारहखड़ी | दत्तलाल | १८८५ | १०६-११४ | |
| १८३ | ५४२० (४) | " | " | १९वीं | ६७-१०३ | |
| १८४ | ५४२६ (१) | " | विष्णुदास ठण्डीराम शिष्य | " | १-१२ | लि.क. नरसिंह अग्रवाल |
| १८५ | ५४२६ (३) | " | दत्तलाल | " | २६-३५ | भाषा पर पंजाबी प्रभाव है |
| १८६ | ५४२६ (६) | " | भगानी | " | ४६-५३ | |
| १८७ | ५४२६ (११) | " | " | " | १-५ | |
| १८८ | ५४२६ (४) | " प्रह्लादजी की | कुशला | " | ३५-३८ | |
| १८९ | ५४२६ (५) | " परमेश्वरजी की | रामरत्न | " | ३८-४२ | |
| १९० | ५४२० (६) | " रामायण की | " | " | १०३-१०७ | |
| १९१ | ५४२० (५) | " विरह की (बह्मस्नेह बारहखड़ी) | " | " | १०३ | |
| १९२ | ५४०३ | बारहखड़ी सूरत की | सूरत, देवधरशिष्य | " | ८ | |
| १९३ | ५४२६ (६) | बारहमासी | मुरलीदास | " | ४२-४७ | |
| १९४ | ५४२६ (७) | " | भवानी (अवधपुर वासी) | " | ४७-४९ | |
| १९५ | ५४२६ (८) | " | सूरदास | " | ४९ वाँ | |
| १९६ | ४७९० | वावनी सवैया | जसराज | " | ४ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-----------------------------|---------------------------|----------|-------------|------------------------------------------|
| १६७ | ४३०७(१) | विहारीसतसई | विहारी | १७८७ | ६६ | लि.क. यति कुसला मालपुरामध्ये |
| १६८ | ४४१२ | " | " | १८१२ | ५०-६१ | लि.क. प्रीतसोभाग्य गणि, खारिया ग्रामे |
| १६९ | ४६०७(३) | " | " | १८३७ | ३५-१३५ | श्रुत में होराचक्र और स्फुट कवित्त है |
| २०० | ६३४२(४) | " | " | १६वीं | १३२ | |
| २०१ | ४१४४ | विहारीसतसई सटीक | टी. कुल्ल कवि | १८०२ | ७२-१६० | |
| २०२ | ४२१६(२) | विहारीसतसई टीका | | १८५६ | ५६ | अपूर्ण |
| २०३ | ६३१५ | " | | १६वीं | १५ | लि.क. सुनि मनोहर |
| २०४ | ४४१२ | विहारीसतसया | विहारी | १७६६ | २०० | लि.क. भूकणू वासी विरामण रामधन |
| २०५ | ४२६१ | बुद्धिसागर | कवि जान | १८६८ | | |
| २०६ | ५४२६(२) | अमरगीत टीका, प्रेमरसपुञ्जनी | मुकुन्ददास | | १२-२६ | |
| २०७ | ६७२६ | भैरवीगीत | | १६वीं | १७ | प्रथम पत्र खण्डित |
| २०८ | ७७४६(५) | भैरवीगीत | नन्ददास | २०वीं | १-६ | |
| २०९ | ७७४४(६) | " | रसिकराय | १७५८ | ५१-५७ | |
| २१० | ५४०० | भक्तमाल टीका | सू नाभादास, टी. प्रियादास | १६वीं | १६५ | |
| २११ | ५४७६ | भक्तमाल टीका रसबोधिनी | " | १६०० | ३०६ | र.का. सं० १७६५, दून्दी में लिखित |
| २१२ | ५४०६ | भक्तमाल टीका | " | १७६६ | १४१ | लिखायितं माजी जोधपुरीजी |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|---------------------------|--------------------------|--------------|-------------|--------------------------------------------------------------------------------|
| २१३ | ६७५५ | भक्तमाल टीका | लालदास | १८६३ | १०४ | लि.क. हेमदास, कबीरशाह को साधक |
| २१४ | ६६३६ | " | लालदास | १८७० | १६८ | लि.क. गोपालदास अवन्तीमध्य शेषशायीमन्दिरे |
| २१५ | ६५७१ | " | प्रियादास नारायणदासशिष्य | १८६४ | ११६ | र.का. सं० १७६६ |
| २१६ | ६०५४ | भक्तमाल टीका रसबोधिनी | | १८वीं | २०५ | लि.क. रामकृष्ण महाजन |
| २१७ | ६४४८ | भक्तमाल सटीक | | " | २७६ | |
| २१८ | ७७३२ | " | प्रियादास | १६२५ | १६५ | र.का. १७६६ |
| २१९ | ७८३१ | " | लालदास | १८५६ | १३२ | लि. स्था० बदनीर |
| २२० | ६५७६ | भक्तमालमाहात्म्य | | | | लि.क. शिवरामदास, गङ्गापोल, जयपुर |
| २२१ | ५४२४ | भक्तितरङ्गिणी | कृष्णदास | १६वीं | ४ | |
| २२२ | ६८२६ (१) | भक्तितपदाय | चरणदास | १६४१ | ४० | लि.क. इन्द्र मिश्र, स्थान नगर |
| २२३ | ५४१३ | भगवद्गीता भाषा पद्य | | १६०२ | १-१४४ | अतः में भजन हैं |
| २२४ | ७५०८ | भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद | | १६०० | ८६ | लि.क. हरिदास ब्राह्मण, वैराठ |
| २२५ | ६१४८ | भद्रबाहुचरित्र चौपाई | किशनसिंह सांगानेर के | १७७४ | ८८ | लि.क. डालचंद ब्राह्मण, शाहगंज दिल्ली |
| २२६ | ६१५१ | " | किशनसिंह सिधवी | १८२७ | ४७ | र.का. सं० १७७०, कई स्थानों पर प्राचीन पत्रों के स्थान पर नये पत्र लिखे हुए हैं |
| २२७ | ६१५६ | भद्रबाहु चरित्र भाषा | किशनसिंह | १६०६ १६०६ | ३६ ४० | लिखित अलवरसहरमध्ये |

राजस्थान पुरातत्त्वावेवण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; २१-हिन्दवी ग्रन्थ]

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|---------------------------------|---------------------------|----------|-------------|---------------------------------------------|
| २२८ | ५४२० (३) | भर्तृहरिशतकत्रय भाषा पद्यानुवाद | म. प्रतापसिंह | १६वीं | ६५-६७ | १०५ छन्द है |
| २२९ | ४३०८ (४) | भरथचरित्र | जनगोपाल (?) | १८वीं | ४५६-४६७ | |
| २३० | ६०१० | भविष्यदत्त चौपाई | ब्रह्म रायसल | १६वीं | ४७ | |
| २३१ | ६६३७ (५) | भागवत, एकादशस्कन्धानुवाद | चन्द्रदास | १८११ | २१०-२६३ | लि.क. रामदास, निराणा ग्राम |
| २३२ | ४२५६ | भागवतचरित्र नारायण लीला | माधवदास | १८वीं | ३६ | लि.क. जती जीवणसागर |
| २३३ | ७१७० | भागवत दशमस्कन्ध की भाषा | हरिवल्लभ | १६८० | ६१ | गुटकाकार |
| २३४ | ६८३० | भागवत भाषा | कविराय मोतीराम भ्राणंदसुत | १६वीं | १०३ | जीर्ण प्रति |
| २३५ | ६०६८ | ' | हरिवल्लभ | १७८६ | ६५ | लिखितं रूपावास मध्ये, ब्राह्मण केशवरायजी |
| २३६ | ६०६० | भागवतभाषानुवाद (द्वितीय स्कन्ध) | नागरीदास | १६वीं | ३३ | पत्र सं० ५, ६, १७ अप्राप्त |
| २३७ | ४२६५ (२) | भावपञ्चाशिका | वृन्द कवि | १७६३ | ४-१४ | लि.क. डालूराज |
| २३८ | ४८१३ | " | " | १८३६ | ६ | लि. स्या०-लौकड़ी |
| २३९ | ४६०६ | " | " | १७६८ | १३ | र.का. सं० १७४३ |
| २४० | ५४३२ | भाषाभरण | सरस्वती (बैरीसाल) | १६वीं | २५ | लि.क. केवलसीभाष्य |
| २४१ | ५०४८ | भाषाभूषण | म. जसवन्तसिंह | " | २६ | लि.क. गोपाल ब्राह्मण |
| २४२ | ६६७६ (१) | भाषाभूषण टीका | नन्ददास | १८६० | १-७३ | |
| २४३ | ४२६३ (६) | भाषासरोदय | रसराशि | १८८२ | २५-२६ | |
| २४४ | ५३०६ | भास्करवंशप्रदीपिका | तेजसिंह | १८वीं | ५३ | |
| २४५ | ४०८२ | भीषमबावनी | भीषम | " | १० | |
| २४६ | ४१७६ | भोगलपुराण | रूपचंद | १६वीं | २० | |
| २४७ | ५४१८ (५) | सङ्गल गीत | | " | ६१-६६ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-------------------------------|------------------------|----------|-------------|-------------------------|
| २४८ | ४७२२ | मतिचन्द्रिका | मनीराम | १६वीं | ४ | मोहरम और वारों का विचार |
| २४९ | ४३०६ (१) | मनीरामपचीसी | | १६०२ | ५१ | |
| २५० | ६८३५ (७) | महावीरस्तवन | | १६६६ | १ | |
| २५१ | ६८३५ (११) | " | | " | २ | |
| २५२ | ७१५६ | माखन लीला | नन्ददास | १६१४ | ४३ | |
| २५३ | ५३७१ (४) | माण्डूक्योपनिषद् भाषा | श्रीकृष्ण भट्ट | १६१४ | १-२० | |
| २५४ | ७६४८ | मातृकाक्षरबावनी कवित्त-संग्रह | सार कवि | १६वीं | ८ | अन्तिम पत्र त्रुटित |
| २५५ | ४२१६ (६) | मानमञ्जरी नाममाला | नन्दराम | १८५६ | ३६०-३७० | |
| २५६ | ४६१५ (१) | " | " | १८८७ | २-१६ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| २५७ | ४२६३ (२) | मानमञ्जरी नौका | रसरशि | १८८२ | २ | |
| २५८ | ४२६३ (५) | मालिकमुकाम | " | " | २०-२४ | |
| २५९ | ७७२० (११) | मिथ्वात्ववानी | | १८वीं | ४६-४७ | |
| २६० | ४३०६ (५) | सुरलीविहार | म. प्रतापसिंहजी | १८६६ | ८-९ | |
| २६१ | ७४४१ (१०) | " | " | १६१४ | ५७-५८ | |
| २६२ | ४४५२ (१५) | मुहूर्तचक्र | | १८वीं | १८वीं | लि.क. प्रीतसौभाग्य |
| २६३ | ५४१६ | यकुराज विलास | रघुनाथ द्विज | २०वीं | २२५ | र.का. सं० १६३३ |
| २६४ | ७५६४ | यज्ञवल्क्यस्मृति भाषा | गुप्तसाह | " | २१ | लि.क. गोपीनाथ शर्मा |
| २६५ | ४३७१ | योगवाशिष्ठसार भाषा पद्य | कवीन्द्राचार्य सरस्वती | १८वीं | २० | |
| २६६ | ४३०६ (१६) | रंग चौपाई | म. प्रतापसिंहजी | १६वीं | ५०-५६ | |
| २६७ | ७४४१ (१४) | " | " | १६१४ | ६६-६८ | |
| २६८ | ६७७६ | रत्नपरीक्षा | रत्नसागर | १६वीं | २१ | र.का. सं० १७५५ |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|---------------------------------------------|------------------------|----------|-------------|--------------------------------------------------------|
| २६६ | ४३०६ (न) | रमकभक्तक बत्तीसी | म. प्रतापसिंहजी | १६वीं | १५-१६ | |
| २७० | ७४४१ (६) | " | " | १६१४ | ४२-४३ | |
| २७१ | ४६६६ | रमलजानशकुनावली | " | १६वीं | ४ | |
| २७२ | ५४३४ | रसकवित्त संग्रह | शेख आलम | २०वीं | १५४ | र.का. सं. १७६४ |
| २७३ | ५४२२ | रसपीयूषनिधि | सोमनाथ आचार्य | १८५५ | १३३ | |
| २७४ | ४६२३ (२) | रसमंजरी | नन्ददास | १७२८ | १८-२४ | |
| २७५ | ६३३७ | रसरतन काव्य | प्रधान पुहकर | १८५० | २३२ | आद्य पत्र अप्राप्त, सं० १७२३ में रचित |
| २७६ | ४२१६ (६) | रसरज | मतिराम | १८५६ | २६४-३१८ | |
| २७७ | ६३४२ (२) | रसरशिवचचीसी | रसरशि | १६वीं | १०-१६ | |
| २७८ | ७०६२ | रससमुद्र | चैतराम, (भोलानाथपौत्र) | १८६१ | १३६ | र.का. सं. १८६१, मूल प्रति द्वितीय प्रभाव तक, अपूर्ण |
| २७९ | ४४५२ (२) | रसिकप्रिया | केशवदास | १६वीं | ३-५ | र.का. सं. १६४८ |
| २८० | ४०१४ | रसिकप्रिया | " | १७६६ | ६८ | |
| २८१ | ५३८० (२) | रसिकप्रिया | " | १८४६ | १-६६ | |
| २८२ | ७७२० (३) | रसिकप्रिया | " | १७५६ | १-४० | लि.क. लखमीचंद, गढ़ हणोरमध्ये |
| २८३ | ४६२५ (१) | रसिकप्रिया, राजस्थानी भाषा में अर्थ सहित | " | १८२६ | १-१७५ | |
| २८४ | ७०६३ | रसिकप्रिया टीका जोरावरप्रकाश | जोरावरसिंह | १६२१ | १५४ | लि.क. कवि मन्नालाल |
| २८५ | ४२१६ (५) | रसिकप्रिया टीका | " | १८५६ | १६२-२६४ | |
| २८६ | ४२१७ (१) | रसिकप्रिया | केशवदास | १८वीं | ११२ | पृ. ७६ से ८४ तक अप्राप्त |
| २८७ | ४२६३ (१) | रसिकपञ्चसी | रसरशि | १८८२ | १-६ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-------------------------------|--------------------|----------|-------------|-----------------------------------|
| २८८ | ५०६५ | रागमाला | कल्याण मिश्र | १७६६ | २ | लि.क. उदयचन्द्र |
| २८९ | ६६४१ | रागरत्नाकर | राधाकृष्ण | १८६६ | ६ | र.का. सं. १८५३, उणिधारा |
| २९० | ४२७२ | रागरत्नाकर (अपूर्ण) | " | १८७१ | २४ | रावराजा भीमसिंहजी की |
| २९१ | ४२६३ (६) | रागावली | मुरलीधर भट्ट | १८वीं | २३-३१ | आज्ञा से रचित |
| २९२ | ४२१६ (७) | राजनीतिकवित्त | देवीदास | १८५६ | ३२०-३३२ | आदि के ४ पत्र अग्राप्त |
| २९३ | ६७७४ | राजाहरिचन्द्र कथा | | १८४० | २३ | |
| २९४ | ६४४६ (८) | राधामाधवविलास (सचित्र) | | १९वीं | १-८२ | चित्र सं. ७१, पत्र संख्या २ से |
| २९५ | ५४२० (१) | राधिकाप्रतीतिपरीक्षा (अपूर्ण) | बालकृष्ण | " | ४१-४८ | १०, १२ से १४, ४१ से ४७, ५५ |
| २९६ | ७६२६ | रामचन्द्र वारहमासा | यशोदानंदन गुसाई | १८३५ | ७ | से ६०, ६२ से ६५, ६८ और |
| २९७ | ५३३३ | रामचन्द्र वारहमासी | भवानी | १६२४ | २ | ७१ अग्राप्त |
| २९८ | ५३८६ | रामचन्द्रोदय (बालकांड) | श्रीकृष्ण कवि | १८०२ | १२५ | लि.क. लालचन्द्र पांडे, केर ग्रामे |
| २९९ | ५५०७ | रामचरितमानस | तुलसीदास | १८४४-४५ | ६६७ | |
| ३०० | ६६६६ | रामचरितमानस | " | १८६७ (?) | ३४१ | लि.क. तुलसी गोसाईं (?) |
| ३०१ | ७४६७ | रामचरितमानस | " | १७६२ | २८ | |
| ३०२ | ६२१३ | रामचरितमानस (बालकांड) | " | १९वीं | १६४ | |
| ३०३ | ४१८७ | " | " | १८३० | ६७ | लि.क. उदयराम, शिवपुरी |
| | | | | | | जयपुरमध्ये |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्विर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २१-हिन्दी ग्रन्थ]

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि जातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-------------------------|--------------------|----------|-------------|------------------------------|
| ३०४ | ४२२२ | रामचरितमानस (बालकांड) | तुलसीदास | १८४० | १२५ | लि.क. वंछणव भगवानदास |
| ३०५ | ६६२२ | " " | " | १८०३ | ११३ | लि.क. काशीराम, जयपुरमध्ये |
| ३०६ | ७७६६ | " " | " | १९वीं | १३१ | लि.क. ब्राह्मण तुलसीराम, |
| ३०७ | ६२१४ | " (द्वितीय सोपान) | " | १८६५ | १३५ | वरासम्ये |
| ३०८ | ६६२१ | " " | " | १८२८ | १०८ | लि.क. नरेन्द्र सीमाय |
| ३११ | ७८०० | " " | " | १८३८ | ६५ | बुदावत में लिखित |
| ३१२ | ६२१५ | " (तृतीय सोपान) | " | १८०३ | १०३ | लि.क. काशीराम, जयपुरमध्ये |
| ३१३ | ६२३४ | " " | " | १८४४ | ८१ | लि.क. मिश्र मोहनलाल |
| ३१४ | ६२६७ | " " | " | १८६५ | ३६ | |
| ३१५ | ५४६४ (१) | " (श्र.कां. से सु.कां.) | " | १९वीं | २७ | लि.क. सहजराम मिश्र, |
| ३१६ | ६२१६ | " (सु.कां.) | " | १८४६ | ३३ | कुम्हेरमध्ये |
| ३१७ | ६६२३ | " (श्र.कां. और सु.कां.) | " | १८७० | ६३ | लि.क. महात्मा बकसीराम, जयपुर |
| ३१८ | ४२२४ | " (श्र.कां.) | " | १८६५ | २८ | |
| ३१९ | ५१८६ | " " | " | १८०३ | ४७ | लि.क. काशीराम, जयपुर |
| ३२० | ४१५६ | " " | " | १८११ | ३८ | |
| ३२१ | ५२८० | " " | " | १८३८ | २७ | प्रथम पत्र वृद्धित |
| ३२२ | ७८०१ | " " | " | १८८१ | २८ | लि.क. गोविन्ददास, भरतपुर का |
| | | | | १८०० | ५० | विरक्त अलाड़ा |
| ३२३ | ७८०१ | " " | " | १८४४ | २५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------|--------------------|----------|-------------|--------------------------------------|
| ३२३ | ४१२७ | रामचरितमानस (कि कां) | तुलसीदास | १८६६ | ४६ | लि.क. परमानन्द कायस्थ |
| ३२४ | ५१६० | " " | " | १८३८ | १८ | लि.क. नरेन्द्र सौभाग्य |
| ३२५ | ४२२५ | " (सु.कां) | " | १८३२ | २४ | |
| ३२६ | ६२०० | " " | " | १८१० | १७ | |
| ३२७ | ६७३१ | " " | " | १८वीं | ४३ | लि.क. हरदयाल |
| ३२८ | ७८०२ | " " | " | १८५५ | २४ | मिश्र मोहनलाल |
| ३२९ | ६०७२ | " (लं.कां.) | " | १८वीं | ६२ | दो प्रकार की लिखावट है |
| ३३० | ६३२१ | " " | " | १७८० | ६८ | लि.क. सरदारसिंह विद्यार्थी |
| ३३१ | ६६२४ | " " | " | १८०३ | ३६ | लि.क. काशीराम व्यास, भीखा की पोथी सू |
| ३३२ | ७८०३ | " " | " | १८४४ | ७२ | लि.क. मिश्र मोहनलाल |
| ३३५ | ६२१८ | " (य.कां.) | " | १८६५ | ६३ | |
| ३३६ | ६२४५ | " (उ.कां.) | " | १८२१ | ७८ | लि.क. कृपाराम पुरोहित |
| ३३७ | ४२२७ | " " | " | १८६५ | २८ | जयन्तगरे |
| ३३८ | ४२२८ | " (उ.कां.) चातकसोलसी | " | १८११ | ४८ | |
| ३३९ | ६६२५ | " (उ.कां) | " | १८२७ | ७६ | लि.क. वैष्णव भगवानदास |
| ३४० | ६६६६ | " " | " | १८वीं | ६५ | |
| ३४१ | ७६२३ | " " | " | १८०३ | ३८ | लि.क. काशीराम अतिमपत्रत्रुटित |
| | | | | १८८३ | ६६ | लि.क. बलदेव |
| | | | | १८७६ | १२५ | |

३१८
 लेखने मति शत तुलसी रास ह ॥ पायो परम वि आस राम समान धनुना ही कह ॥ दोहरा ॥
 आसम दीन न धन हि तनुम समान रघुवीर ॥ त्वय विचारि रघुव सम निरह विषम
 भवु मीरा ॥ पति मिहि न निरवि यारि रजि मिले ॥ मिहि यि यो नो मरु म ॥ तिमि रघुनाथ
 निरतरि विचल मी सुहिरा ॥ १२ ॥ इति श्री राम चरित्र मानसे सकल बोलि कले
 कलि अस्तिने अवि रल भक्ति सेवा इतो नाम समस मो सा पा ने ॥ १॥ अमम सु ॥
 इति श्री उन्नर काराड समस ॥ यह सयुस्त के इस्सात ह सलि पित म अ ॥ यो ह ॥
 अमर अ इवा सम दो अ न रायेने ॥ अय अम सच त्परा ॥ १॥ सम दो मार्ग शिर मा
 से ॥ सम पने य च अथा ॥ सोम वा सर ह सा न ॥ उ य ॥ यो वलि भ ॥ इ स्वयं विचार पाथ ॥
 ३१८

रामचरितमानस (उत्तरकाण्ड)
 (संवत् १७३७ में लिखित)

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|---------------------------------|----------------------------|----------|-------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ३४२ | ७८०४ | रामचरितमानस (उ.कां.) | तुलसीदास | १८४८ | ४० | लि.क. मिश्र मोहनलाल, यह प्रति ग्रन्थाङ्क ७७६८ की, बलभद्र उपाध्याय द्वारा लिखित, सं० १७३७ की प्रतिलिपि है * लि.क. बलभद्र उपाध्याय लि.क. मिश्र आनन्दनारायण |
| ३४३ | ७७६८ | " | " | १७३७ | ३७ | |
| ३४४ | ७५७१ | " वेरायसंदापन नाम द्वितीयसर्ग | " | १८८६ | ५ | |
| ३४५ | ४२५७ | राम चरित्र | सुन्दरदास | १८वीं | ८ | |
| ३४६ | ४२३५ | रामनखिलवर्णन | माधोदास | " | ३ | |
| ३४७ | ६०७१ | रामनीरनसार संग्रह | रामचरण | १६वीं | ३१ | सम्बन्धित ग्रन्थों से संग्रहीत |
| ३४८ | ४८४५ | रामविनोद | रामचंद्र मुनि | १७६३ | ७८ | र.का. सं. १७५०, आद्य पत्र ११ खण्डित |
| ३४९ | ६१३६ | रामविनोद वैद्यक | कालिदास | १८३२ | ८६ | कृति के अंत में 'हनुमान छंद' है |
| ३५० | ४२७१ | रामविलास काव्य | रामप्रसाद सोतापतिशरण | १६व | १० | र.का. सं. १६०१ |
| ३५१ | ५४११ | रामस्तवराज भा.टी. | तुलसीदास गोस्वामी | २० | ६६ | |
| ३५२ | ४२४३ | रामस्तुति गीत | " | १८वीं | ४ | |
| ३५३ | ४२४२ | रामस्तुति पद | मनोहर, कविकलानिधि | " | २ | लि.क. युगलकर्ण मिश्र |
| ३५४ | ५३६२ | रामायण (यु.कां.) | " | १८२० | २६३ | * प्रतापसिंहाजया निर्मित |
| ३५५ | ५३८६ | रामायण (यु.कां.) | " | १८३७ | ३४१ | लि.क. रामसेवक, पत्र १-७६, २१०-२३१ अत्र प्राप्त |
| ३५६ | ७११३ | रामायण (यु.कां.) सीताराम रामायण | कश्चित्, शंभसिंह निर्देशित | १६वीं | १३८ | ५० पत्र रिपुपुरदाह और ८८ पत्र युद्धकांड सम्बन्धी हैं |

| क्रमांक | ग्रंथाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|---------------------|--------------------|----------|-------------|-------------------------------------------------------------------|
| ३५७ | ६३७३ | रामाज्ञा | तुलसीदास | १८वीं | ३६ | |
| ३५८ | ७७४६ (७) | " | " | २०वीं | १-२१ | |
| ३५९ | ६८२८ (२) | राव हमीरकी वारता | " | १९वीं | ७ | |
| ३६० | ४२६३ (१७) | रासको रेखता | म. प्रतापसिंहजी | १८वीं | ४०-४२ | |
| ३६१ | ४३०६ (६) | " | " | १८९६ | १७-१८ | |
| ३६२ | ७४४१ (१२) | " | " | १९१४ | ६१-६३ | |
| ३६३ | ५२०२ (६) | रासपञ्चाध्यायी | वंशीअस्त्री | १८८५ | ११४-१२३ | |
| ३६४ | ५३६६ | " | नन्ददास | १९४३ | १२ | |
| ३६५ | ४६२३ (१) | रूपमञ्जरी | " | १७२८ | १-१८ | * लि.क. मुरलीधर मिश्र ३०० पद्य हैं भाषा पञ्जाबी प्रभावित है |
| ३६६ | ५२०२ (४) | रेखता | | १८८५ | १०८-१०९ | |
| ३६७ | ५४२६ (१०) | रेखता लैलामजनूका | | | ५३-५६ | |
| ३६८ | ६८३५ (२) | लघुवाणव्य | | १८६६ | २ | |
| ३६९ | ७७२८ | लीलासलितविनोद | डेडराज (जनराज) | १९०४ | २७७ | लि.क. ऊकारनाथ व्यास, रामद्वारा उदपुरमध्ये * |
| ३७० | ५८६६ (२) | लैलामजनूका क्रिस्ता | कवि खेतसी | १९वीं | १-११ | |
| ३७१ | ७७४४ (६) | व्रजनागरी | व्रजवासीदास | १७५८ | ६६-७२ | |
| ३७२ | ६६७८ | व्रजविलास (सचित्र) | म. प्रतापसिंहजी | १९१४ | १६३ | चित्र सं. १७ |
| ३७३ | ७४४१ (१५) | व्रजशृङ्गार | श्रुतसागर | १९२३ | ६८-७५ | * भाषाकार सुन्दर के पुत्र खुशालचंद्र, लक्ष्मीदासका शिष्य है |
| ३७४ | ६०१६ | व्रतकथाकोश भाषा | | १९२३ | ६२ | लि.क. मनसुख कदोई, बीकानेर |
| ३७५ | ४१४३ | वृन्दसतसइया | वृन्द | १८८१ | ४६ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-------------------------------------|-----------------------------|----------|-------------|-------------------------------------------------------------------------------|
| ३७६ | ४२१६(४) | वृन्दसत्सई | वृन्द | १८५६ | १६७-१६१ | |
| ३७७ | ४६१६ | वनपर्वकी कथा | | १८६६ | १३ | |
| ३७८ | ६२३२ | वरंगनपूतिचरित्र भाषा | नथमल, शोभाचंद का पुत्र | १८२७ | ७४ | |
| ३७९ | ५२०५(१) | बलभाचार्यविवर्ति और स्तोत्र नामावली | | १८वीं | २-३२ | |
| ३८० | ६०७८ | विक्रमविलास | गंगेश मिश्र | १८६६ | १०२ | # र.का. सं. १७३६ |
| ३८१ | ५४१५ | विक्रमादित्यचरित्र (पंचदंडकथा) | वैद्यनाथ, कवि सोमनाथका वंशज | २०वीं | ५-३३ | र.का. सं. १८८४ आद्य ४ पत्र अप्राम्त |
| ३८२ | ६६५२ | विचारमाला | | १८६३ | ५ | र.का. सं. १७२६ |
| ३८३ | ६१५७ | विजयमकुतावली (महाभारतअनुवाद) | छत्रसिंह श्रीवास्तव | १८६५ | २३१ | अट्टरपुर (भदावर) के राजा कल्याणसिंह के राजमें सं. १७५७ में रचित |
| ३८४ | ५३७५ | विजयसुधानिधि | कविवर रामलाल | १६०३ | १४१ | कर्णपर्व से आगे पद्यानुवाद है व्रजेन्द्र बलवन्तसिंह के लिए रचित |
| ३८५ | ६३४१ | विदुरप्रजागर | कृष्ण कवि | १८६५ | ६४ | सं. १७६८ में राजा आदामल्ल की आज्ञा से रचित, म.भा. उद्योग पर्व का अनुवाद |
| ३८६ | ७७४०(१) | विदुरप्रजागर भाषा | गणपति मिश्र | १६३७ | १-४६ | |
| ३८७ | ७५६२ | विनयपत्रिका | गो. तुलसीदास | १६१४ | ८२ | लि.क. हरिदास कबीरपन्थी, बदनोरमध्ये |
| ३८८ | ६०८६ | " | " | १६वीं | ८१ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-------------------------------------|---------------------------|----------|-------------|---------------------------------------------------------|
| ३८६ | ६२१६ | विनयपत्रिका | गो. तुलसीदास | १८६० | ५८ | लि.क. वैष्णव गोविन्ददास |
| ३८७ | ६२३३ | " | " | १८६४ | १०६ | लस्करी, स्थान विरक्त अखाड़ी, भरतपुर |
| ३८८ | ५२०३ | विरहगुलजार इदक अल्लवर कथा अपूर्ण | " | १६वीं | ४२ | |
| ३८९ | ७४४१ (१७) | विरहपदकी टीका | म. प्रतापसिंहजी | १६१४ | ८०-६६ | |
| ३९० | ४२६३ | विरहसलिला | " | १८वीं | ३६-६३ | |
| ३९१ | ४३०६ (११) | " | " | १६वीं | २१, २२ | |
| ३९२ | ६६७३ | विविधसंग्रह | " | " | ८८ | रामचरित चौपाई, गुरुमहिमा, मुदामाबारहखड़ी, नारद गीता आदि |
| ३९३ | ४२८७ (८) | विवेकचिन्तावनी | मुन्दरदास | १७२८ | ३३-३८ | लि.क. आनन्दराम |
| ३९४ | ४६२५ (२) | वृन्दविनोद (वृन्दसतसई) | वृन्द (बरदराज) | १८२६ | १७५-२०७ | ६६४ दोहे हैं |
| ३९५ | ७४४१ (१८) | वृन्दसतसई | " | १६१४ | ६७-१३४ | |
| ३९६ | ४२८८ (१) | वृन्दावनशत | " | १८८६ | १७ | |
| ४०० | ५२०२ (३) | " | माधो (भगवन्त हरिदासशिष्य) | १८८५ | ६१-१०८ | र.का. सं. १७०७ |
| ४०१ | ५२०६ | वैद्यकसार | " | १८वीं | ६१-१५१ | |
| ४०२ | ५४२३ | वैद्यमनोत्सव | नयनमुख, केशव मिश्रमुत | १६वीं | ६८ | |
| ४०३ | ६६३७ | " | " | " | ४० | |
| ४०४ | ६०२२ | वैद्यरत्न | जनार्दन गोस्वामी | १८८४ | ३६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------------|-----------------------|----------|-------------|------------------------------------------------------|
| ४०५ | ४३६६ | वैद्यविनोद, (शाङ्गधर भाषा) | रामचन्द्र | १८११ | ६६ | र.का. सं. १७३६ |
| ४०६ | ७७२० (१३) | वेदनिर्णयपञ्चाशिका | बनारसीदास | १८वीं | ४८-५० | र. स्था०-मरोटकोट |
| ४०७ | ६६४३ | वेदातत्परिभाषा | मनोहरदास निरञ्जनी | " | २० | र.का. सं. १७१७ |
| ४०८ | ६७७० | वेदातमहावाक्य भाषा | " | १८५२ | २० | र.का. सं. १७१७ |
| ४०९ | ४५५७ (३) | वैराग्यमञ्जरी | म. प्रतापसिंहजी | १९वीं | २४-३८ | |
| ४१० | ७४४१ (३) | " | " | १९१४ | २२-३५ | |
| ४११ | ७७४६ (३) | " | " | २०वीं | १३ | |
| ४१२ | ९१०७ | वैराग्यशतक भाषानुवाद | हरदयाल | १९५४ | ६० | लि.क. प्रोहित दीनानाथ |
| ४१३ | ६७२५ | शतकत्रयभाषानुवाद | म. प्रतापसिंहजी | १८६५ | १२० | लि.क. मङ्गाविष्णु |
| ४१४ | ७८३८ | शतकत्रयमञ्जरी (सचित्र) | " | १९वीं | ६५ | चित्र सं. १ |
| ४१५ | ६७६८ | शतप्रश्नोत्तरी भाषा | मनोहरदास निरञ्जनी (?) | १८५२ | २४ | पद्यबद्ध कथा है |
| ४१६ | ४१६४ (२) | शक्तिका | मुंता रामदान | १९२६ | १०-१३ | सन्त-शब्द-वाणियों का संग्रह |
| ४१७ | ५४२५ | शब्दावली (अपूर्ण) | रसानन्द | १८७१ | ६-४५ | * र.का. सं. १८६३, स्वयं कवि के हस्ताक्षरों में लिखित |
| ४१८ | ५३६६ | शिलालखणन | | १८६३ | २४ | |
| ४१९ | ४५४७ (२) | शृङ्गारमञ्जरी | म. प्रतापसिंहजी | १९वीं | १३-२४ | |
| ४२० | ७४४१ (२) | " | " | १९१४ | १२-२२ | |
| ४२१ | ७७४६ (२) | " | " | १९वीं | १३-२४ | |
| ४२२ | ६४६१ | षट्प्रश्ननिर्णय | मनोहरदास निरञ्जनी | १८२६ | ३३ | लि.क. सेसराम, कुम्हरमध्ये |
| ४२३ | ६७६६ | " | " | १८५२ | ७५ | लि.क. महात्मा जयदेव जोबनेर-वासी |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-------------------------|--------------------|----------|-------------|-------------------------|
| ४२४ | ५४३६ | सिखनखवर्णन | बलभद्र | २०वीं | २४ | * लि. क. वट्टीनाथ व्यास |
| ४२५ | ५४२१(१) | सिद्धान्तके पद | वृन्दावनदास | १६वीं | १-२५ | |
| ४२६ | ७४४१(७) | स्नेहबहार | म. प्रतापसिंहजी | १६१४ | ४३-४६ | |
| ४२७ | ४४५२(३१) | स्नेहलीला | " | १८वीं | ३३, ३४ | |
| ४२८ | ५२३४(१) | " | कवि गिरिधरराय | १६११ | १-१० | |
| ४ ६ | ५४३८(३) | " | विष्णुदास | १८६० | ४०-५६ | |
| ४३० | ६७४६(३) | " | " | १६वीं | ६२-१०५ | |
| ४३१ | ७४४१(६) | स्नेहसंग्राम | म. प्रतापसिंहजी | १६१४ | ५२-५७ | |
| ४३२ | ४६२३(३) | स्फुट कवित्त आदि | सूर आदि | १६वीं | १-१४ | |
| ४३३ | ४२२६ | स्फुट कवित्त, रेखता आदि | | " | ३३ | |
| ४३४ | ६३४२(१) | स्फुट कवित्त | | १८ | १० | |
| ४३५ | ६३४३(१) | स्फुटोक्ति | | १८ | १२ | |
| ४३६ | ६६६२ | स्फुट पदसंग्रह | | १७४२- | ६८ | |
| ४३७ | ६८३३(६) | स्फुट राग पद | म. प्रतापसिंहजी | १७४४ | ३५-३७ | |
| ४३८ | ७७५३(६) | स्फुट सवैया | | १८५२ | ३८-३९ | |
| ४३९ | ४२६३(१३) | स्नेहसंग्राम | | १८३७ | २७-३० | |
| ४४० | ४३०६(२) | " | | १८वीं | १-३ | |
| ४४१ | ४२६३(१४) | स्नेहबहार | | १८वीं | ३१-३३ | |
| ४४२ | ४३०६(३) | " | | १६वीं | ४, ५ | |
| ४४३ | ६३२८ | स्मरणदर्पण | रामचन्द्रदास | " | ८ | |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|--------------------------------|----------------------|---------------|-------------|--------------------------------------------------------|
| ४४४ | ७१३३ | स्वरोदय | गोरक्षोक्त | १६४६ | ११ | लि.क. प्रभु पुरोहित नागोर का |
| ४४५ | ५७१७ | स्वरोदय भाषा | लालचंद्र | १८वीं | १४ | |
| ४४६ | ५६५७ | स्वरोदय टीका | सोमनाथ, नीलकण्ठात्मज | १६वीं | ६ | र.का. सं. १७८६, ग्रन्थात्त में कविकुल-वर्णन है |
| ४४७ | ५७८५ | संग्रामदर्पण | कुलपति मिश्र | १६१५ | ३४ | म. रामसिंह की आज्ञा से निर्मित लि.क. कृष्णचंद्र, बूंदी |
| ४४८ | ७७३६ | संग्रामसार, द्रोणपर्वका अनुवाद | | १६५७ | १६५ | आद्य २ पत्र अप्राप्त |
| ४४९ | ७७३७ | " " | " | १६वीं | १५२ | |
| ४५० | ७८१६ | संगीतदर्पण भाषा | हरिवल्लभ | १८३१ | ३-७६ | |
| ४५१ | ४००५ | संयोगद्वार्त्रिशिका | मानकवि | १८४८ | ४ | |
| ४५२ | ६४१७ | संयोगवत्तीसी | " | १६वीं | २ | |
| ४५३ | ७७२१ (४) | " | " | १८२५ | १११-११८ | |
| ४५४ | ५३४६ | सत्यनारायणव्रत कथा | हरिदास | १८२५ | २४ | र.का. सं० १६२२, लि.क. प्रताप मिश्र, |
| ४५५ | ५२४२ | सत्यनारायणकथाका अर्थ | | १६वीं | १४ | |
| ४५६ | ७८१६ (२) | सर्वमन्त्रादि | | १८३१ | ६ | |
| ४५७ | ६६८६ | सदाशिव भट्ट प्रशस्तिपरक पद्य | | १८४१ से पूर्व | ७ | फतहचंद्र, गणपति, भोलानाथ आदि द्वारा रचित पद्य |
| ४५८ | ५३८४ (२) | सनेहलीला | मनोहरदास | १६०४ | ७०-८२ | |
| ४५९ | ७६०७ | सनकादिबीजमंत्र | | १६वीं | १ | लि.क. कैशवदास |
| ४६० | ४६०८ | सभासार आदि | रघुराम कवि | १८५२ | ११४ | लि.क. मगनीराम आह्वान, मांडवगढ़मध्य |
| ४६१ | ४००३ | सभासार नाटक | रघुराम कवि | १८४५ | २० | र.का. सं. १७५७ स्था. सारंगपुर, अहमदाबाद |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------------|-----------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------------|
| ४६२ | ४०२८ | सभासार नाटक | रघुराम कवि | १८४२ | १६ | * लि.क. ऋषि किशोर, सोभार प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ४६३ | ५४२१ (२) | समयप्रबन्ध | वृन्दावनदास | १९वीं | १-३११ | |
| ४६४ | ४४५२ | समयसार नाटक | वनारसीदास | १८१२ | ६२-८४ | लि.क. प्रीत सोभाग्य |
| ४६५ | ४७९१ | " | वनारसीदास | १८वीं | ६९ | र.का.सं. १६९३ |
| ४६६ | ४८१६ | " | वनारसीदास | १८०२ | १३६ | |
| ४६७ | ४८१२ | " | " | १८६० | १२५ | |
| ४६८ | ६४४२ | " | " | १८२४ | ६० | लि.क. मोहन, रचना स्था० आगरा । |
| ४६९ | ७७२० (२) | " | वनारसीदास, आगरानिवासी | १७२५ | १-५४ | लि.क. मतिवर्द्धन, हमीरगढ़मध्ये दोस श्री थावा पठनार्थम् |
| ४७० | ६३५३ | समयसार नाटक भाषा | " | १९ | ८६ | |
| ४७१ | ६८४४ | समयसार भाषा नाटक | वनारसीदास | १७५३ | ११७ | र.का. सं० १६९३ |
| ४७२ | ५३७३ (२) | समयसार नाटक, सिद्धान्त भाषा | " | | ४-७३ | |
| ४७३ | ५३७६ (१२) | " | " | | ११२-१९७ | |
| ४७४ | ७४४२ (३) | समयसार भाषा | वनारसीदास | १७६४ | १-७१ | |
| ४७५ | ७४४३ | समयसार नाटक भाषा | " | १९१३ | १३२ | लि.क. दवे अमरचंद |
| ४७६ | ५३८० (२) | समरविजय | राय शिवदास | १८४६ | १९ | प्रल्हाददास वैष्णव पठनार्थ |
| ४७७ | ६७६६ | सरसरस | " | १९वीं | १५ | |
| ४७८ | ६८३५ (३) | सवा सी सीख | बालपुरी | ८६९ | ४ | |
| ४७९ | ४४५२ (२३) | सवैया | " | १८वीं | २३ वाँ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-------------------------------|----------------------|----------|-------------|-----------------------------|
| ४४० | ४४५२ (३३) | सर्वया | चंद कवि आदि | १६वीं | ४० वां | लि.क. प्रीत सौभाग्य |
| ४४१ | ४४५२ (६३) | " | तुलसीदास | " | ११८ वां | |
| ४४२ | ६२२७ | सियरघवीरविवाह | | " | ६ | |
| ४४३ | ५०३५ | सिंहासनबत्तीसी (प्रपूर्ण) | कृष्णदास | १८६६ | ६३ | लि.क. काशीराम पंचोली * |
| ४४४ | ५८६५ | " | चन्द कवि | १६वीं | १०२ | जीर्ण प्रति |
| ४४५ | ६०११ | सीताचरित्र चौपाई | कवि बालक (चन्द ?) | १७४७ | १२३ | र.का.सं. १७१३ |
| ४४६ | ६१४६ | सीताचरित्र चौपाई | अग्रदास | १८६८ | १०० | |
| ४४७ | ७७५६ (१) | सीताराम ध्यानमञ्जरी | | १८६४ | १-२३ | गोगावत कुलावतंस, शंभूसिंहा- |
| ४४८ | ६६३१ | सीताराम रामायण | | १६वीं | १५६ | ज्ञया प्रणीत |
| ४४९ | ६६३२ | (अयो. कांड, वनवास कांड) | | " | ५६ | |
| ४५० | ६६३३ | सीताराम रामायण | | " | ५६ | |
| ४५१ | ६६३४ | (कि. कां. कविमित्र कां.) | | " | ६२ | |
| ४५२ | ७१५५ | सीताराम रामायण | | " | | |
| ४५३ | ६४४६ (६) | (सु. कां. रिपुपुरदाह कां.) | मुरतीदास | " | ४७ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ४५४ | ५४१२ (१) | सुखदेव लीला | | " | १२-१४ | |
| ४५५ | ५८७७ | सुवासिनी बारहखड़ी | नरोत्तमदास | १८६३ | १-१३ | |
| ४५६ | ६६४६ | सुवासिनीचरित्र (कवका प्रणाली) | खुशाल शांडिल्य विप्र | १८वीं | १२ | |
| | | सुन्दरदासकी साखी | सुन्दरदास | १८८६ | ५६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|--------------------------------------|--------------------|----------|-------------|------------------------------|
| ४६७ | ६६४७ | सुन्दरदासजीके शब्द | सुन्दरदास | १८८६ | ४५ | लि.स्था. फतेहपुर |
| ४६८ | ४३१३ (२) | सुन्दर भक्तविलास | ताला सुन्दरलाल | १८६७ | ६-७१ | लि.स्था. जयपुर |
| ४६९ | ४२१६ (८) | सुन्दरभृंगार | सुन्दरदास | १८५६ | ३३३-३५६ | |
| ५०० | ४३०७ (२) | " | " | १८३७ | ८७ | लि.क. वेणीराम |
| ५०१ | ४८१४ | " | सुन्दरदास | १८१३ | २३ | लि.क. श्रीकमजीशिव डह्याजी |
| ५०२ | ४८३५ | " | " | १७८६ | २१ | लि.क. मुनीलाल सूरत बन्दरे |
| ५०३ | ४०२६ | " | " | १७४२ | २२ | र.का.सं. १६८८ |
| ५०४ | ६३१७ | " | सुन्दर कवि | १६वीं | ४० | र.का.सं. १६८० |
| ५०५ | ६६४४ | सुन्दरसवैयासंग्रह | सुन्दरदास | १८८६ | ७६ | लि.स्था. फतेहपुर |
| ५०६ | ६६४५ | " | " | १८०४ | ४४ | लि.क. प्रेमदासशिव भिलारी-दास |
| ५०७ | ७७२० (१६) | सुमतिकुमलसिंवाव (कहरामामाकी चाली) | म. प्रतापसिंहजी | १८वीं | ५०वाँ | |
| ५०८ | ४३०६ (७) | सुहागरेन | " | १६वीं | १४, १५ | |
| ५०९ | ७४४१ (५) | " | " | १६१४ | ४०-४२ | |
| ५१० | ५४३५ | सूरजपुराण | " | १८६२ | २२ | पद्मपुराणोक्त |
| ५११ | ६३४२ (३) | सूरसागर पद | सूरदास | १६वीं | १६-२४ | लि.क. मनसाराम कायस्थ |
| ५१२ | ७७२२ (१) | सूरसारङ्ग (अपूर्ण) | " | १८वीं | १-३६ | १७२ पद है |
| ५१३ | ५८६६ (१) | सौदागर वच्चेका किरसा | " | १६वीं | १-१० | |
| ५१४ | ६२०२ | हनुमानबाहुक | तुलसीदास | १६१७ | १४ | |
| ५१५ | ७७३१ | हयगुणप्रकाश प्रश्नोत्तर | लक्ष्मणदान वारैठ | २०वीं | ५२ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|----------------------------|--------------------|----------|-------------|------------------------------------|
| ५१६ | ७८११ (५) | हरबोलचिन्तावणी | सुन्दरदास | १८वीं | १८-१६ | लि.क. आनंदराम |
| ५१७ | ४२६३ (७) | हरिकीर्तनमाला | रसराशि | १८८२ | ३०-४४ | आदि के १५३ पद्य त्रुटित |
| ५१८ | ४४६५ | हरिनाममाला | | १६वीं | १ | लि. स्या. श्रंवावती, पत्र १ से ७ |
| ५१९ | ४२८७ (६) | हरिबोलचिन्तावनी | सुन्दरदास | १७२८ | २३-२५ | अप्राप्त |
| ५२० | ६३४० | हरिवंश भाषा | लालचंद | १६वीं | १५४ | पत्र ४ से ६, ७, १६, १७, ३०, ३४ |
| ५२१ | ५३६० | हरिवंशपुराण भाषा | | १७१६ | | ४२ से ४६ नहीं हैं |
| ५२२ | ६१५८ | " | सालवाहण | १७८४ | ५८ | लि.क. स्वयं रचयिता, वृन्दावन मध्ये |
| ५२३ | ६१७५ | " | खुशालचंद | १८४२ | १६७ | ब्रजेन्द्र बलवन्त सिहाज्ञा |
| ५२४ | ७१३४ | हितहरिवंश जन्मोत्सव | व्यास हरिलाल | १८३७ | ७ | रचित |
| ५२५ | ५३७६ | हितामृतलतिका | राम कवि | १६वीं | १३३ | लि.क. ऋषि टेकचंद्र |
| ५२६ | ४२१६ (१) | हितोपदेश टीका | विष्णु शर्मा | १८५६ | ३७० | लि.क. मुंशी पलालाल, जोधपुर |
| ५२७ | ४०१५ | हितोपदेश पंचाख्यान | " | १८५६ | ७२ | * चित्र संख्या ४७, कोटा कलम |
| ५२८ | ४३१६ (१) | हितोपदेश भाषानुवाद | " | १८६४ | १५८ | दुन्देलखंड के महाराजा पृथ्वी- |
| ५२९ | ४६१५ (६) | हितोपदेश भाषा | | १८८७ | २००-३४७ | सिंह की आज्ञा से रचित |
| ५३० | ५०८२ | हितोपदेश (सचित्र) | | १८८७ | १७६ | लि.क. डालराम |
| ५३१ | ६३४४ | हितोपदेश (पद्यानुवाद) | कोविद मिश्र | १८८८ | ७८ | |
| ५३२ | ४२६५ (३) | हितोपदेश (चतुर्थ तंत्र तक) | विष्णु शर्मा | १८०१ | १५-१६७ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|--------------------------|----------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------------------------------------|
| ५३३ | ७७४० (२) | हितोपदेश भाषा पद्यानुवाद | श्रीपति भट्ट | १६३७ | ४६-१२५ | लि.स्था. लोचनपुर (बूंदी) |
| ५३४ | ६२५६ | हिम्मतिप्रकाश | | १६०८ | ४५ | र.का.सं. १७३०, प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ५३५ | ४३०६ (१६) | होरीविहार पद टीका | सवाई प्रतापसिंह | १६वीं | ३२-४४ | गोपालदासजी पठनार्थम् |
| ५३६ | ६३४५ | हृदयाभरण कवित्त | ब्रजजीवन | १८६१-६२ | १८२ | |
| ५३७ | ६६५१ (२) | ज्ञानचरणवाचिका | कृष्णदास | १८६१ | २० | |
| ५३८ | ६२०६ | ज्ञानप्रकाश | | १८८० | ४ | |
| ५३९ | ४६१४ (७) | ज्ञानपचीसी | बनारसीदास | १८७१ | १६७-१६८ | |
| ५४० | ७७२० (४) | " | " | १८वीं | ४१-४२ | लि. क. दूल्हेराम मिश्र, हस्तेड़ा मध्ये |
| ५४१ | ६६५१ (१) | ज्ञानमञ्जरी | मनोहरदास निरञ्जनी | १८६१ | २० | |
| ५४२ | ६७६७ | ज्ञानमञ्जरी भाषा | " | १६वीं | २६ | र.का.सं. १७१६ |
| ५४३ | ४०६५ | ज्ञानवचनचूर्णिका | " | १८५५ | १८ | लि.क. सहजराम दाहपंथी |
| ५४४ | ६७७१ | " | " | १८५२ | २२ | र.का.सं. १७२२ मुलतानमध्ये लि.क. बलदेव ब्राह्मण ६०० छन्द है र.का.सं. १७१० |
| ५४५ | ४०५७ | ज्ञानशृङ्गार | सुमति रंग | १८५२ | २२ | |
| ५४६ | ६६०८ | ज्ञानस्वरोदय | चरणदास | १६०७ | ३१ | |
| ५४७ | ४३०८ (२) | ज्ञानसमुद्र | सुन्दरदास | १८वीं | ४१०-४४६ | |
| ५४८ | ६८३७ | " | " | " | ६१ | |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २२-जैन स्तोत्र]

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------------------------------|-----------------------|----------|-------------|-------------------------------------------------------------------|
| १ | ४६०६ | अंतरिक्षपाश्वर्ना छन्द | भाव विजय | १८४५ | ३ | लि.क. हर्षविजय |
| २ | ५०७० | " | " | १८११ | २ | |
| ३ | ४१४६ | " स्तव | " | १६वीं | ७ | |
| ४ | ४३४६ | अजितशक्तिस्तव सबालावबोध | | १७वीं | ४ | |
| ५ | ४६१४ (३६) | आराधना | सकलकीर्ति | १८७७ | २६२-२६४ | |
| ६ | ५६६० | " चौपई | | १५६२ | १८ | |
| ७ | ७७५३ (६) | इलापुत्रस्तवन | लब्धिविजय | १८३७ | ४४-४५ | |
| ८ | ४३६२ | एकादशगणधर स्तवन | | १७वीं | ५ | |
| ९ | ४४५२ (६८) | ऋषभजिनस्तवन | भावकवि | १८वीं | १२० वीं | |
| १० | ४६१४ (२३) | ऋषभनाथजीनो छन्द | | १८७१ | २३०से२३१ | |
| ११ | ४६१४ (६०) | " | मूला मयाराममुत धर्मसी | १८७७ | ३१७से३२० | |
| १२ | ७३७२ | ऋषभदेवजीरो छन्द | | १६वीं | १ | |
| १३ | ४६१४ (१७) | ऋषिमंडलस्तोत्र | | १८७१ | २१०से२१२ | |
| १४ | ७५५० | कल्याणमन्दिरस्तोत्र (राजस्थानीटिबार्थसहित) | | १७५७ | १२ | लि.क. धनजी |
| १५ | ५३७३ (१) | " मूल | | १८वीं | १-३ | |
| १६ | ५६८२ | " (सटीक, त्रिपाठ) | कुमुदचंद्र | १७वीं | १२ | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| १७ | ६२५६ | " | हर्षकीर्ति | १८४८ | २५ | लि.क. हेतराम यत्ता अमीचंद की मोथी सू राजराजा रणजीतस्यंघजी ने लिखी |
| १८ | ७३६८ | " (राजस्थानीभाषार्थसहित) | | १८वीं | ८ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|--------------------------------------|----------------------|----------|-------------|-------------------------------------------------------------------------------|
| १६ | ६६१४ | कल्याण मंदिर स्तोत्र | साधुकीर्तिगणि | १७८२ | १८ | |
| २० | ४०३० | राजस्थानी भाषार्थ सह | | | ३ | लि.क. समग्रकीर्तिमुनि |
| २१ | ५०६६(७) | कायस्थिति स्तोत्र (सवालावबोध) | साधुकीर्तिगणि | १७वीं | १३ वीं | |
| २२ | ५०६६(१) | गौडीयपादर्वस्तुति | लावण्यविजय | १६०६ | १६३ | |
| २३ | ५०६६(४) | गौडीयपादर्वन्ताथ चौढ़ालियुं | कुशललाभ | १६०६ | १० से १२ | |
| २४ | ५०७७(१) | गौडीपादर्व स्तवन | कीर्तिविलास | १६०२ | १ला | पत्र का कोण कटा हुआ है |
| २५ | ४३६३ | गौतमदीपाली का स्तवन | सकलचंद्रसूरि | १६८५ | ६ | |
| २६ | ४३६६ | चतुर्विंशतिर्जिनस्तोत्रसंक्षेपवृत्ति | सोमप्रभाचार्य | १५२४ | ५ | लि.क. धीरमूर्ति गणि शिष्य लि. स्था. श्री भृगुपुर महानगर लि. स्था. मसूदा |
| २७ | ६३२६ | स्तुति | वप्पभट्टिसूरि | १७८२ | ६ | |
| २८ | ७२७५ | (सावचूरि, पंचपाठ) | | १६वीं | ४ | |
| २९ | ४२८७(५) | चतुर्विंशतिस्वयंभूस्तोत्र | | १७२६ | १६-२२ | |
| ३० | ४६१४(३२) | चैत्यवंदन चौपाई | नीरचंद्रमुनि | १८७७ | २४६ से २५१ | |
| ३१ | ४६२४(४) | " | लावण्यसमयमुनि | १७८७ | १ | |
| ३२ | ५४३६(१) | " | | १८५३ | १ से ३ | लि.क. दौलतराम मुनि लि. स्था. मारोट |
| ३३ | ५४४१ | चैत्यवंदनादि जिनस्तवनसंग्रह | | २०वीं | २४२ | |
| ३४ | ७४४८ | " | | १६१५ | १२६ | लि.क. अमरचंद ? स्तवविष- यक ३१ कृतियों का संग्रह |
| ३५ | ५०७२ | चौबीस जिनस्तवन | गुणविजय | १८वीं | ५ | |
| ३६ | ७५६६ | भाषा | महानन्द मुनि | १६वीं | ६ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-----------------------------------------|--------------------------------------------------------|----------|-------------|--------------------------------------|
| ३७ | ७४४४(१) | चौबीसी | आनन्दधन | १८८५ | १-५३ | इस गुटके में १६ कृतियों का संग्रह है |
| ३८ | ४६१४(३८) | चौरासी लाख जीवयोनिवीनती | ज्ञानभूषण | १८७७ | २५६से२६२ | |
| ३९ | ४६१४(५६) | " | हर्षकीर्ति | १८७७ | ३१५से३१७ | |
| ४० | ७३६६ | जयतिहुयण (सावजूरि) | अभयदेव | १८८२ | ५ | लि. स्या. जैसलमेर |
| ४१ | ७४०६ | " (सबालावबोध) | " | १६६५ | ६ | लि. क. भुवनसुन्दर |
| ४२ | ५४३६(१८) | जिणकुशलसूरिवृद्धिस्तवन | | १६वीं | ३ | दी स्तवन है |
| ४३ | ५४३६(१९) | जिणकुशलसूरिलघुस्तवन | | " | १ | |
| ४४ | ६३८५ | जिननमस्कार | जिनकीर्तिसूरि | १८वीं | ४ | |
| ४५ | ४२८७(११) | जिनाष्टोत्तरसहस्रनामस्तोत्र | जिनसेनाचार्य | " | ७८से६२ | |
| ४६ | ४६१४(४०) | जीवदया छन्द | भूधर | १८७७ | २६५-२६६ | |
| ४७ | ६१८० | जैनचैत्यस्तव (सरस्वतीस्तोत्र) | भूधरदास | १६वीं | ५ | रचना सं० १७८१ |
| ४८ | ५३७३(४) | जैनशतक | ब्रह्मगुलाल | १८वीं | ६७से१०६ | |
| ४९ | ५४१८(८) | तिरेपन क्रिया | | १६वीं | १०१से१०५ | |
| ५० | ५४१८(१४) | " | प्रभाचंद्र | " | ११६से११६ | |
| ५१ | ४६१४(५६) | तिरेपन क्रिया वीनती | | १८७७ | ३११-३१२ | |
| ५२ | ५४३६(६) | तीर्थविलीस्तवन | | १६वीं | ३६-३८ | |
| ५३ | ७०८४ | दण्डकाविचारषट्त्रिंशिकासूत्र सटिप्पण | गजसारसाधु धवलचंद्र महोपा- ध्यायशिल्प, डि. क. यशःसोम | १८वीं | १० | |
| ५४ | ५४३६(१७) | दादेजीरा स्तवन | | १६वीं | ११ | |
| ५५ | ५४३६(८) | नवकारमंत्रमहिमालघुस्तवन | | | ४०-४३ | |
| ५६ | ७२६० | नवकारमहामंत्रस्तवन | जयवल्लभसूरि | १७वीं | ५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-------------------------|-----------------------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------------------|
| ५७ | ५४३६ (१४) | नवकारमहिमास्तवन | उदयरतन सकलकीर्ति गोविन्दगणि | १६वीं | ३ | लि.क. फतेचंद लाधड़ामध्ये |
| ५८ | ५४२७ (१) | नवस्मरणस्तवन | | १८७१ | १-३१ | |
| ५९ | ४६१४ (२१) | नीगोदनी वीनती | | १८७१ | २२६-२३० | |
| ६० | ४८३७ | नेमनाथसिलोको | | १८७१ | ४ | |
| ६१ | ४६१४ (१२) | प्रभती | | १८७१ | २०८ वीं | |
| ६२ | ७२५७ | प्राचीनकर्मस्तवटीका | रूपचंद समयराज मुनि | १७वीं | १७ | श्रीपाश्वर्ननाथसमसंस्कृतस्तव भी साथ में हैं, लि.क. नयनकमलगणि |
| ६३ | ५४३६ (१३) | पंचकल्याणस्तवन | | १८७१ | २ | |
| ६४ | ४६१४ (१) | पंचकल्याणीक | | १६३५ | १-७ | |
| ६५ | ४२६८ | पंचपरमेष्ठिनमस्कारार्थ | | १६३५ | ४ | |
| ६६ | ६२६६ | पंचमंगलस्तवन | | २०वीं | ८ | |
| ६७ | ४६१४ (१५) | पंचमोह-अष्टक | रूपचंद सुदर्शनविजय | १८७१ | २०८-२०९ | लि.क. नेमविजय मानविजयशिष्य गोर्धूदा नगर में लिखित |
| ६८ | ५४३६ (१५) | पंचसंवरस्तव | | १८७१ | २ | |
| ६९ | ५०६६ (५) | पद्मावतीछन्द | | १६०६ | १२-१३ | |
| ७० | ४६१४ (४६) | पद्मावतीवीनती (१) | | १८७७ | २७५ वीं | |
| ७१ | ४६१४ (४७) | " (२) | | " | २७५-२७६ | |
| ७२ | ४६१४ (४८) | पद्मावतीस्तोत्र (अष्टक) | " जिनसागर देवेंद्रकीर्तिशिष्य | " | २७६-२७७ | |
| ७३ | ५१३१ | पद्मावतीस्तोत्र | | १६वीं | २ | |
| ७४ | ७४४४ (१७) | पनरे तिथिरी थुई | | १८८५ | २६४-३०२ | |
| ७५ | ७४४४ (६) | पाँच तिथिरी थुई | | " | १६०-१६४ | |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|---------------------------------|-------------------------------------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ७६ | ७२६४ | पार्श्व जिन यमकमयस्तुति | भुवनकीर्ति अभयसोम प्रेमधिमल कीर्तिप्रभ | १७वीं | १ | सि.क. प्रीतिसौभार्य, लि. स्था. नौबिड़ा र.का. वि० १५३५ |
| ७७ | ५४३६ (१०) | पार्श्वनाथजिनलघुस्तवन | | १८७७ | ४४-४६ | |
| ७८ | ४६१४ (५२) | पार्श्वनाथजीनो छन्द | | १८०५ | २८३से२८८ | |
| ७९ | ४४५२ (६६) | पार्श्वनाथजी पाढगत छन्द | | १८०५ | ११६ वां | |
| ८० | ७४०४ | पार्श्वनाथ तथा साधारण जिनस्तवन | हरिदास मानतुंग (हेमराज) | १९वीं | १ | कमलमपुरमध्ये रचित ४६ पद्य इस गुटके में श्रावस्तवन, स्थल- भद्र सज्जाय, साधुवन्दना मंग- लाष्टक, चतुर्विंशतितीर्थकर स्तव सरस्वती श्राष्टक आदि विविध रचनाओं का संग्रह है र. का. सं० १७४७ |
| ८१ | ६६८४ | पार्श्वनाथस्तवन | | १८वीं | ७ | |
| ८२ | ७७५३ (५) | पार्श्वनाथस्तवन | | १८३७ | ३७-३८ | |
| ८३ | ७५६५ | पुद्गलपरावर्त्त स्तवन सवालावबोध | | १७वीं | १ | |
| ८४ | ५४३६ (१६) | वीसवर्हिमनस्तवन | हरिदास मानतुंग (हेमराज) | १९वीं | १ | कमलमपुरमध्ये रचित ४६ पद्य इस गुटके में श्रावस्तवन, स्थल- भद्र सज्जाय, साधुवन्दना मंग- लाष्टक, चतुर्विंशतितीर्थकर स्तव सरस्वती श्राष्टक आदि विविध रचनाओं का संग्रह है र. का. सं० १७४७ |
| ८५ | ७१३८ | बोससंस्थानकस्तुति | | २०वीं | १८ | |
| ८६ | ५२६८ | भक्तामर बालबोध टीका | | १८वीं | १८ | |
| ८७ | ५४१८ (२) | भक्तामर भाषा | | १८वीं | ८ | |
| ८८ | ७१०६ | भक्तामर भाषा कालभैरवाष्टकादि | धिनोदीलाल मानतुंग सूरि " | १८वीं | ८ | प्रथम पत्र अप्राप्त । लि.क. शिव- दास वसन्ताणी, स्था. देशलहरान, श्रीफतेपुरमध्ये |
| ८९ | ६३४७ | भक्तामर महाचरित्र भाषा | | १८२८ | २६३ | |
| ९० | ५४२७ (२) | भक्तामरस्तोत्र | | १९वीं | ३१से४५ | |
| ९१ | ४०२५ | " प्राकृत वार्तिक सहित | | १६८६ | २२ | |
| ९२ | ४३६० | " सवालावबोध | " | १७वीं | ५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|--------------------------------------------------|--------------------------------|----------|-------------|-------------------------------------------------|
| ६३ | ७२७१ | भक्तामरस्तोत्र | मानतुंग सूरि, बाला. मेरुसुंदर | १७०० | १४ | |
| ६४ | ७४०८ | " | मू. मानतुंग | १८२६ | १६ | लि.क. रूपचंद |
| ६५ | ५६०५ | भक्तामर टीका | गुणाकर | १६वीं | ३२ | |
| ६६ | ४२८७ (२) | भक्तामरस्तोत्र | मानतुंग | १७२६ | ५-११ | लि.क. रामचंद्र |
| ६७ | ६००० | भक्तामरस्तोत्र पंचपाठ | अमरप्रभ सूरि | १७वीं | ७ | लिपि सुन्दर है |
| ६८ | ६०३६ | " | भा. विनयसुन्दर | १८वीं | १६ | |
| ६९ | ६२७१ | " | मू. मानतुंग, भा. अखेरज श्रीमाल | १७८४ | २४ | लि. स्था. तुंगा |
| १०० | ६२७७ | " | हेमराज | १६४१ | १६ | लि. स्था. अमदा नगर |
| १०१ | ७४५० | भक्तामर भाषा आदि विविध कृतियां | | २०वीं | २३२ | * कृतियों के नाम परिशिष्ट में देखिये |
| १०२ | ६२८६ | भक्तामरस्तोत्र सटीक | मानतुंगाचार्य | १८वीं | ६ | |
| १०३ | ६३६१ | भक्तामर सटीक त्रिपाठ | टी. कनककुशल | १६२८ | २४ | लि. स्था. विराट नगर |
| १०४ | ७१८४ | " (सुखबोधिका) | टी. अमरप्रभ | १७वीं | ५ | |
| १०५ | ७३८१ | " वृत्ति (सुबोधिका) | वृ.का. समयसुन्दर | १८२१ | ७० | रचनाकाल—सप्तवसु शृंगावसंति १३८७ (?) पत्तने नगरे |
| १०६ | ७७६४ | भवारिवारणस्तोत्र सटीक पंचपाठ | जितवल्लभ सूरि | १७वीं | ५ | |
| १०७ | ४६१४ (११) | मंदिरस्वामीनी वीनती | सकलकीर्ति | १८७१ | २०७-२०८ | |
| १०८ | ५४३६ (२०) | मरोटकोटसंडण, दादेजी श्रीजिन-कुशल सूरिजीरी नीशाणी | | १८५३ | ८ | |
| १०९ | ५०७१ | राणपुर मंडन वीरजिनस्तवन | | १८वीं | २ | लि.क. दौलतराम मुनि |
| ११० | ७८२७ | लघुशान्तिस्तव सटीक | मानदेव आचार्य | " | १६ | र.का. १६११ |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|---------------------------------------------|---------------------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------|
| १११ | ७४३७ | ललितविस्तरा पञ्जिका (चैत्यवन्दना वृत्ति) | मुनिचंद्रसूरि | १५वीं | ४० | |
| ११२ | ७३५५ | वर्धमानस्तुति | कनककुशलगणि विजयसेन सूरिशिष्य | १६५७ | १ | लि.क. साहु हरण (ख), ग्राम-हालीवाड़ा |
| ११३ | ५०७६ | वासुपुज्यस्तवन | प्रेमविजय | १६वीं | ७ | |
| ११४ | ४३४४ | वीतरागस्तोत्र | हेमचन्द्रसूरि | १७वीं | ८ | |
| ११५ | ५६३५ | वीतरागस्तोत्र तावचूरि पंचपाठ | हेमचंद्र सूरि | १६वीं | ६ | सहजानिशयनामक द्वितीयस्तव आशीस्तवे विंशतिप्रकाशः |
| ११६ | ५६३६ | " | " | " | १० | |
| ११७ | ५४१८ (११) | वीरजिणन्द | वीरविजय शुभविजयशिष्य | १६वीं | ११२-११३ | |
| ११८ | ५०७४ | वीरस्तवन सस्तबक | | १८५८ | १० | |
| ११९ | ६४४६ (२) | वीरस्तुति | | | ४०-४१ | |
| १२० | ७३७६ | वीस विहरमान गीत, पुरोहितपुत्र स्वाध्याय | जिनसागर सहजसागर | १८वीं | ६ | लि.क. लेमधर्म, लि. स्था. पोपाड़- नगरे |
| १२१ | ५०६६ (३) | वद्धचैत्यवन्दन | मूला वाचक | १६०६ | ८-१० | |
| १२२ | ४३४५ | श्रीऋषिमंडलस्तवन | धर्मघोष सूरि | १७वीं | ११ | |
| १२३ | ४१५६ | श्रीदेवीछंद शनैश्चरस्तुति | | १६वीं | ३ | |
| १२४ | ५०७५ | शंखेश्वरपाशर्वछंद | हर्षरुचि | " | ३ | |
| १२५ | ७७५३ (४) | शान्तिनाथस्तवन | गुणसार | १८३७ | ३४-३६ | |
| १२६ | ७७२० (१५) | शान्तिनाथ त्रिभङ्गी छंद | बनारसीदास | १८वीं | ५०-५१ | |
| १२७ | ५३८५ (७) | शीतलनाथस्तोत्र | सिंहनन्दि | १६वीं | १८६वाँ | |
| १२८ | ४५११ | शोभनस्तुति | | १७वीं | ६ | |
| १२९ | ७४७२ | " पंचपाठ | धनपाल पंडितबान्धव | १६३४ | १० | लि.क. पुरणमल माथुर कायस्थ लि. स्था. गढ़ रणथम्भोर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि नातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|----------------------|----------------------------------------------|---------------------------------|----------|------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| १३० | ७२७८ | शोभनस्तुति सटीक | शोभन | १६वीं | ११ | |
| १३१ | ४८४० | स्तंभनपादर्वनाथस्तवन जम्बूकुमार स्वाध्याय | कुशललाभ कवियण हरिविजय- शिष्य | १८२८ | ३ | |
| १३२ | ६८३६ | स्तंभन पादर्वनाथस्तुति आदि | | १६वीं | ७२ | * लि. स्था. सांगानेर, इस गुटके की अन्य कृतियों का विवरण परिशिष्ट में देखें |
| १३३ | ४६१४ (१३) | स्तवन (मुंजरा) | सकलकीर्ति | १८७१ | २०८ वां | |
| १३४ | ६१६० | स्तवन (स्वयंभूस्तोत्र) | संमतभद्र स्वामी | १८वीं | १६ | इस प्रति में २४ स्तोत्र हैं |
| १३५ | ७५६८ | स्तवन (शान्तिजिन) | | " | ३ | |
| १३६ | ७४४७ | स्तवनसज्जाय पदसंग्रह | | १६१६ | १७० | लि.क. अमरचंद्र, सेठ गंभीरमल- पठनार्थम् |
| १३७ | ७४४६ | " आदि | | १६११ | २०० | * |
| १३८ | ७४४४ (१०) | स्तुतिस्तवन | | १८८५ | १६४-२०५ | इसमें पञ्चसूत्री थुई, सेत्रंजाजीरी थुई, पांचमरी तवन, आठमरी तवन, इग्यारसरी तवन हैं * इसमें ५ स्तोत्र हैं, नाम परि- शिष्ट में देखिये |
| १३९ | ६८२५ | स्तोत्रसंग्रह | | १६वीं | ४ | |
| १४० | ७४४४ (६) ५४२७ (३) | सप्तस्मरण " | नानू ऋषि ब्रह्महंस | १८८५ | १४४-१६८ ४५-४६ | |
| १४२ | ४६१४ (३६) | सात वसणनी चीनती | जयानन्द, श्रव. वानर ऋषि | १८८७ | २५७-२५८ | |
| १४३ | ७३६४ | साधारणजिनस्तोत्र (सावचूरि) | | १७५८ | ५ | |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २२-जैन स्तोत्र]

| क्रमांक | ग्रन्थान्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-------------------------------|-----------------------|----------|-------------|--------------------------------------------------------|
| १४४ | ५०७७ (३) | साधारण स्तवन | मोहनविजय रूपविजयशिष्य | १८०२ | १ ला | फुटकर ढाल, भक्तामर, तथा घटाकर्ण स्तुति आदि कृतियाँ हैं |
| १४५ | ५४१८ (२१) | साधुवन्दना | बनारसीदास | १९वीं | १४५-१४७ | |
| १४६ | ५११४ | सीमंघरवीनती | | १८वीं | २१ | |
| १४७ | ४६१४ (२२) | सीमंघरस्तवन | | १८७१ | २३० वाँ | |
| १४८ | ७७५३ (३) | " | भक्तिनाभ | १८३७ | ३२-३४ | |
| १४९ | ६८४० | " आदि (विशतिविहार स्तवनदि) | | १९वीं | २२६ | |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २३-जैनगम

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------------------------------------|---------------------------|----------|-------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| १ | ७२५८ | अन्तर्दृशाविवरण तथा अनुत्तरो- पपातिकविवरण | | १७वीं | ११ | संस्कृत-प्राकृत |
| २ | ७६४० | अन्तर्दृशाङ्गसूत्र | | " | १२ | प्राकृत |
| ३ | ७५३४ | अन्तर्दृशाङ्गसूत्र (प्रा० राजस्थानी- भाषासहित) | | १७६६ | ६२ | प्रा. रा. लि.क. ऋषि त्रीक्रम, राण्डपुरे |
| ४ | ७२५४ | अन्तर्दृशा (राजस्थानीभाषासहित) | | १६३६ | ३८ | अ. प्रा., लि. कर्त्रो-जियां |
| ५ | ७४६४ | अनुत्तरोपपातिकसूत्र | | १८वीं | १० | अमरांजीशिल्पा |
| ६ | ७६३८ | अनुत्तरोपपातिकसूत्र (राजस्थानी- भाषासहित) | | १७७३ | १६ | प्राकृत, लि.क. ऋषि हरजी प्रा. रा., लि.क. ऋषि धनजी |
| ७ | ७२१२ | अनुत्तरोपपातिकसूत्र | | १६वीं | ४ | प्रा. अ. |
| ८ | ७२०२ | अनुयोगद्वारवृत्ति | श्रीहेमचन्द्रसूरि मलधारी | १६६६ | १०४ | संस्कृत, लि.क. गुणनन्दन मुनि विशालकीर्ति, लि. स्था. पुष्क- रिणीनगरी (पोहकरण) |
| ९ | ७४११ | आचाराङ्ग (प्रथमश्रुतस्कन्ध, राज- स्थानीभाषासहित) | | १७वीं | १०१ | प्रा. रा. |
| १० | ७४१५ | " | | १६वीं | ६६ | " |
| ११ | ७५५१ | " | | १७२७ | ५६ | " |
| १२ | ५६३२ | आचाराङ्ग (प्रथमश्रुतस्कन्ध वाला- वबोध) | वा. पासचन्द साधुरत्नशिष्य | १५८६ | १४२ | लि.क. मुनि मनोहर लि. स्था. वीरसगम प्रा. रा., लि.क. रतनभट्ट गुजर- गौड़ लि. स्था. सोमलपुर, आद्य पत्र अप्राप्त प्रा. |
| १३ | ५६३१ | आचाराङ्ग (द्वितीयश्रुतस्कन्ध बालावबोध) | " | १७६६ | ८१ | |

| क्रमाङ्क | ग्रंथाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|-----------|-----------------------------------------------------|--------------------------|----------|-------------|--------------------------------------------------------------|
| १४ | ७३५८ | आचाराङ्ग (द्वितीयश्रुतस्कन्ध राज-स्थानीभाषार्थसहित) | श्रीजिनहंसूरि नीलाङ्क | १६२३ | ६५ | प्रा. रा., लि.क. गोडा अमरदत्त |
| १५ | ७५४० | आचाराङ्गनिर्युक्ति | | १७वीं | १४ | प्राकृत |
| १६ | ७२४० | आचाराङ्गप्रदीपिका | | १६६५ | २१६ | स. प्रा. |
| १७ | ७२२२ | आचाराङ्गवृत्ति | | १६वीं | २८१ | " |
| १८ | ७२७४ | आचाराङ्गसूत्र | | १७वीं | ११५ | प्राकृत |
| १९ | ७४२६ | आवश्यकनिर्युक्ति | | १६वीं | ६१ | " प्रथम पत्र अप्राप्त |
| २० | ७४३६ | " " | | " | ४७ | प्राकृत |
| २१ | ७४४० | " " | | १६२२ | ८१ | " लि.क. ऋषि वाथा |
| २२ | ७७६६ | " " | | १६वीं | ११६ | प्राकृत |
| २३ | ५६४६ | आवश्यकनिर्युक्तिसूत्रम् | | १५४६ | १२७ | " लि. स्था. अणहिल्लपुर-पत्तन |
| २४ | ७२०४ | आवश्यकवृहद्भूति | श्रीहरिभद्रसूरि (?) | १६३१ | ४०५ | संस्कृत, लि.क. लक्ष्मणमुनि लि. स्था. जैसलमेर |
| २५ | ७४०० | " " | | १७वीं | ५४६ | संस्कृत, प्रति में ५४७, ४८, ४९: पत्र खण्डित है |
| २६ | ७३३४ | आवश्यकसूत्र (सटीक, बृहद्भूति) | हरिभद्रसूरि | " | २०१ | संस्कृत |
| २७ | ४३५८ | आवश्यकसूत्र (सवालावबोध) | | " | १६ | * प्रा. रा. |
| २८ | ७५५४ | आवश्यकसूत्र | | " | ४ | प्राकृत, लि.क. पं० धर्मकीर्तिर्मा |
| २९ | ७१८८ | आवश्यकसूत्रनिर्युक्ति (सचित्र) | | १५०१ | ६८ | प्रा., चित्र संख्या २, लि.क. जि दास, लि. स्था. माण्डली नग |
| ३० | ७७१६ | उत्तराध्ययनसूत्र | | १५४८ | ३५ | प्राकृत, अद्येह श्रीघोषावेला कुले माणिक्येन लिखितम् |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|------------------|-------------------------------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------------------------------------------|
| ३१ | ७३१४ | उत्तराध्ययनसूत्र | उत्तराध्ययनसूत्र (राजस्थानी-भाषार्थ सहित) | १६४७ | ६५ | प्राकृत, लि.क. पं. उदयतिलक |
| ३२ | ७३६१ | " | | १६वीं | १७६ | प्राकृत |
| ३३ | ७४८७ | " | | १७वीं | १३६ | " |
| ३४ | ७७६५ | " | | " | ७५ | संस्कृत |
| ३५ | ७९८० | उत्तराध्ययनसूत्र | | १८८८ | १६८ | प्रा.रा., लि.क. लोकवल्लभ |
| | | | | | | वाचक, उदयमसर (वीकानेर) मध्ये |
| ३६ | ७३१३ | " | उत्तराध्ययनसूत्र (सबालावबोध) | १८३२ | १६१ | प्रा.रा., लि.क. हस्तिनागर एवं विमलसागर, प्रति का अर्द्ध-भाग संवत् १८३२ से भी प्राचीन है |
| ३७ | ७३४१ | " | | १८३५ | २३१ | प्रा.रा., लि.क. दौलतसौभाग्य, श्रीबीलाडा नगरे |
| ३८ | ७३६२ | " | | १८५२ | २६० | प्रा.रा., लि.क. कुसवगतसागर, तांतोटी नगरे, ठाकुर गुलाब-सिंहजी कैवर सवाईसिहराज्ये |
| ३९ | ७४२८ | " | | १७२७ | १६२ | प्रा.रा. |
| ४० | ७५७० | " | | १८वीं | ११६ | प्रा.रा. |
| ४१ | ७६५५ | " | उत्तराध्ययनसूत्र (सबालावबोध) | १६वीं | १५७ | प्रा.रा., अपूर्ण |
| ४२ | ४४१८ | उत्तराध्ययनसूत्र | | १६३७ | ३८३ | * प्रा.रा.सं., १६५, १६८, १६९ तथा २१७ वें पत्र अप्राप्त |
| ४३ | ६६१६ | उत्तराध्ययनसूत्र | | १७वीं | २२८ | प्रा.रा., प्रति जीर्ण-शीर्ण तथा नूतन है |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|---------------------------------------|-------------------------------|--------------|-------------|--------------------------------------------------------------------------------------------|
| ४४ | ७७६२ | उत्तराध्ययनसूत्र (सस्तक) | डॉ. कमलसंयम, जिनभद्रसूरिनिष्य | १७६२ | २४३ | प्रा.रा., प्रति के आद्यन्त पत्र शोभन हैं, लि.क. धनजी, राजपुरग्रामे |
| ४५ | ७३१२ | उत्तराध्ययनसूत्र (सबालावबोध, पञ्चपाठ) | | १७वीं | ३१७ | प्राकृत-अपभ्रंश |
| ४६ | ५६०६ | उत्तराध्ययनसूत्र (सबालावबोध, त्रिपाठ) | | १६वीं | १४६ | प्रा. सं., प्रति अति सुन्दर लिखित है, इसके स्वामी का नाम ऋषि तेजपाल, गोवर्धन, आशकरण है |
| ४७ | ७२८२ | उत्तराध्ययनसूत्र (सटीक) | | १६५६ | ३०२ | प्रा. सं., लि.क. पं. तेजपाल, देवराजपुर |
| ४८ | ६८४६ | उत्तराध्ययनसूत्र-परीसहोध्ययन-कथा | | १८वीं | ५६ | प्राचीन राजस्थानी, आद्य तीन पत्र चिपके हुए हैं तथा प्रति जोर्ण-शीर्ष है |
| ४९ | ७३४० | उत्तराध्ययनसूत्रसुबोधावृत्ति | | १६६७से पूर्व | २६३ | प्रा. संस्कृत |
| ५० | ४३५७ | उत्तराध्ययनानवचूरि | | १४६७ | ४७ | * संस्कृत, लि.स्था. चित्रकूट |
| ५१ | ७३६३ | " " | | १६१२ | ६४ | संस्कृत-प्राकृत, र.का. १४८५ (रत्नगजमदमितेज्जदे) लि.क. गोपी, आचार्यवेणसुत, सारङ्गपुर, मध्ये |
| ५२ | ७४३४ | उपासकदशाङ्ग (सटीक) | | १७वीं | ४१ | प्रा. सं. |
| ५३ | ७४३८ | " " | | १६१२ | ३० | प्राकृत |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|-----------------------------------------------|-----------------------------------|----------|-------------|----------------------------------------------------------------------------------------------|
| ५४ | ७२८६ | उपासकदशाङ्गविवरण | शिवचन्द (कल्याणसूत्रिशिष्य) | १६४७ | २० | संस्कृत, लि.क. मुनि लखमन, जिनचन्द्रसूरिविजयराज्ये |
| ५५ | ५२२६ | उपासकदशाङ्गसंग्रह | | १७१३ | ४७ | रा.प्रा., लि.क. छीतर (शिव- चन्दशिष्य वैराठदुर्ग, आसन्दी ग्रामे, पाँचवां पत्र अप्राप्त. |
| ५६ | ७२१८ | उपासकदशाङ्गसूत्र (राजस्थानी- भाषार्थ सहित) | | १७५२ | ५३ | प्रा.रा., लि.क. लालसागर |
| ५७ | ७६३४ | " " | | १६८० | ६६ | प्रा.रा. |
| ५८ | ७२२८ | उवाइसूत्र (राजस्थानी भाषार्थ- सहित) | | १८६६ | ८६ | प्रा.रा., लि.क. ऋषि हुकमचंद, राणावासनयरमध्ये |
| ५९ | ७४१६ | उवाइसूत्र | | १६८४ | ६५ | प्राकृत, प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ६० | ७४८५ | ओघनियुक्ति | | १६वीं | २३ | प्राकृत |
| ६१ | ७५५३ | ओपपात्तिकोपाङ्गसूत्र (सस्तबक) | | १७वीं | ११५ | प्रा.रा. |
| ६२ | ६८५२ | कल्पवार्ता | स्त. पादर्वचन्द्र (सीधुरत्नशिष्य) | १६वीं | १५२ | रा., अपूर्ण, पत्र १०, ३८, ३९ तथा ११४ से ११८ तक अप्राप्त |
| ६३ | ४३१८ | कल्पसूत्र (सचित्र) | | १६वीं | १३१ | प्राकृत, चित्र सं. ३४ |
| ६४ | ५३५६ | " " | | १५वीं | ८५ | सं.प्रा., राजस्थानी कलम के चित्र ६ |
| ६५ | ५३५७ | " " | | १५वीं | ७२ | प्रा., चित्र सं. १६ |
| ६६ | ५३५८ | " " | | " " | ५३ | प्रा., चि. सं. १४ |
| ६७ | ५३५९ | " " | | १५०२ | ६१ | प्रा., चि. सं. ४० |
| ६८ | ७८४१ | " " | | १४वीं | १३३ | प्रा., चि. सं. ३६ |



| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|------------------------------------|--------------------|------------------------|-------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ६६ | ७८४२ | कल्पसूत्र (सचित्र) | | १४वीं | १०३ | प्रा., चि. सं. ८ |
| ७० | ७८४६ | " " | | १५५० से पूर्व | ५० | प्रा., चि. सं. २८ |
| ७१ | ७८४७ | " " | | १५३१ | १० | प्रा., स्फुट पत्र, चित्र सं. १० |
| ७२ | ७८४८ | " " | | १४८५ | ६ | प्रा., त्रुटित, चि. सं. ३, सुप्रसिद्ध तपोगच्छाचार्य सोमसुन्दरसूरिके आदेश से आलेखित |
| ७३ | ७८५० | " " | | १४६०-१४६० के मध्यवर्ती | ३६ | प्रा., त्रुटित, चि. सं. ७ |
| ७४ | ७८५१ | " " | | १५५० के लगभग | ४ | प्रा., प्रति में पत्र ८, १७, २३ व ८२वें हो प्राप्त हैं |
| ७५ | ७३८६ | कल्पसूत्र | | १८६५ | ५४ | प्रा., लि.क. सन्तोषचन्द्र मुनि, नागौरमध्ये |
| ७६ | ७३६० | कल्पसूत्र (राजस्थानी भाषायां सहित) | | १८३३ | १७२ | प्रा.रा. १ से १० पत्र अप्राप्त, लि.क. ऋषभविजय, बृहत्सत्तच्छदी (बड़ी सादड़ी, मेढपाट-देसो ?) नगरे |
| ७७ | ७४१३ | " " | भा. गुणविजय | १८वीं | १३१ | प्रा.रा., प्रति के अन्त में जिन-धर्मप्रवक्तक विद्वानों की जन्म-तिथि, विभिन्नगच्छों की स्थापना, नामकरण का समय एवं विविध आचार्यों की कृतियों का परिचय लिखित है, अन्तिम पत्र अप्राप्त प्रा.रा., प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ७८ | ७४२६ | " " | | १८४५ | १७५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि जातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------------------|------------------|--------------|-------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ७६ | ७३६१ | कल्पसूत्र (राजस्थानीभाषार्थसहित) | | १८३६ | १३६ | प्रा.रा., लि.स्था. फलौधी |
| ८० | ७५५५ | " | | १७२६ | ८८ | प्रा.रा., लि.क. मुनि मनोहर, बलूदा ग्रामे |
| ८१ | ४४१३ | कल्पसूत्र (सस्तवक) | स्त. सोमविमल | १६७२ | १०६ | * प्रा.रा. |
| ८२ | ७५२६ | " | | १७२६ | ६१ | प्रा.रा., लि.क. मनोहरऋषि, अहमदपुरमध्ये |
| ८३ | ७०७५ | " (सदिप्पण) | | १८वीं | ६६ | प्रा.अ., अपूर्ण प्रति किन्तु प्रदर्शनीय |
| ८४ | ५३५४ | " (सावचूरि, सचित्र) | | १५६३ | १३६ | प्रा.सं., चि. सं. ३६, भिन्नमाल में लिखित |
| ८५ | ७८४० | " | | १५२३से पूर्व | १०५ | प्रा., चि. सं. २४, धनेश्वरसूरि द्वारा लिखापित, इस प्रति को सं. १५२३ में आचार्य को भेंट करने का उल्लेख है |
| ८६ | ७४८६ | " (सावचूरि) | | १४१६ | १११ | प्राकृत-संस्कृत |
| ८७ | ७८४४ | " | | १६२१ | ६५ | " |
| ८८ | ५३५५ | " (सटीक, सचित्र) | टी. सुमतिहंससूरि | १७३४ | ११५ | प्रा.सं., चि. सं. ८६, सोजत में लिखित |
| ८९ | ७२४१ | कल्पसूत्रकिरणवलीटीका | टी. धर्मसागराणी | १६७६ | ३२२ | सं.प्रा., प्रथम पत्र अप्राप्त लि.क. कमलसी, महंतवर्मासुत, ईदलपुरा (अहमदाबाद) स्थाने संस्कृत |
| ९० | ७२२६ | कल्पसूत्रटीका | | १६वीं | ११८ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि जातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------------------------|----------------------------------------|-----------|-------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ६१ | ७५५६ | कल्पसूत्रटीका | लक्ष्मीवल्लभ (लक्ष्मीनिधि) शिवनिधान | १६वीं | १११ | सं. प्रा. रा. |
| ६२ | ६०३२ | कल्पसूत्रबालावबोध | | १७६४ | १२८ | राजस्थानी, लि.क. पं. हरराज, श्रीश्रीमन्नगरे |
| ६३ | ७५५८ | " " (सप्तमवाचना) | | १७१२ | २२ | प्रा.रा., लि.क. मानविजय, मालपुरामध्ये |
| ६४ | ६६१७ | कल्पसूत्रभाषा | | १६३३ | १२७ | राजस्थानी, लि.क. ऋषि केश- रीचन्द्र, विक्रमपुरमध्ये |
| ६५ | ६८४८ | कल्पसूत्रसिद्धान्तवाचना | | १६५७ | १६६ | राजस्थानी, १-२ पत्र कीट- विद्ध, लि.क. ऋषि लक्ष्मीचन्द सरूपचन्द, रेवासी (पालणपुर, गुजरात) मध्ये |
| ६६ | ७३१० | कल्यान्तर्वाच्य | वृ. श्रीमलयगिरि | १६६२ | ५४ | प्रा.सं., लि.क. सौभाग्यविमल, श्रीसिरोहीनगरे, रचनाकाल १५७० (?) |
| ६७ | ७२६० | कल्यान्तरवाच्यटीका | | १७वीं | ५० | प्रा.सं. |
| ६८ | ७४६६ | चन्द्रप्रज्ञितिसूत्र | | " | ३६ | प्राकृत |
| ६९ | ४३०४ | चित्तसंभूति (ऋषीश्वराध्ययना- न्तरम्) | | १५वीं (?) | ७ | प्रा.रा. |
| १०० | ७२०१ | जीवाभिगमवृत्ति | | १६वीं | २६२ | प्रा.सं. |
| १०१ | ७२१४ | ठाणाङ्गसूत्र | | " | ७७ | प्राकृत |
| १०२ | ७२२६ | ठाणाङ्ग (स्थानाङ्ग) सूत्रवृत्ति | | १६०८ | १८२ | प्रा.रा. |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------------------------------|---------------------------|----------|-------------|----------------------------------------------------------------------------------------------|
| १०३ | ७२३२ | दशवैकालिकसूत्र | | १७वीं | २७ | प्राकृत |
| १०४ | ७४२४ | " | | १८७८ | २० | " लि.क. अलु |
| १०५ | ७४८८ | " | | १६६६ | २६ | " लि.क. हरजी (ललित प्रभशिल्प) |
| १०६ | ७६३६ | " | | १७७७ | २५ | प्राकृत, लि.क. ऋषि धनजी, कालावडनगरे |
| १०७ | ७३१७ | दशवैकालिकसूत्र (राजस्थानी भाषार्थ सहित) | टी. सुमतिस्वर (बोधकशिल्प) | १७वीं | ५८ | प्रा.रा. |
| १०८ | ७५५२ | दशवैकालिकसूत्र (सावचूरि) | | १६२३ | ३७ | प्रा.सं. |
| १०९ | ४४५६ | " (सटवार्थ) | | १८वीं | ५४ | प्रा.रा., ३६वां पत्रा अप्राप्त |
| ११० | ७३२३ | दशवैकालिकसूत्रटीका | | १७वीं | ५४ | संस्कृत, टीकाकार ने अपनी पुष्पिका में हरिभद्राचार्य की एक टीका का भी उल्लेख किया है |
| १११ | ७४७४ | दशवैकालिकसूत्रटीका (शिल्प बोधिनीनाम्नी) | हरिभद्रस्वर | १६१७ | १२४ | संस्कृत, लि.क. जिनचन्द्रसूरि मुनिराज, अणहिलपुरपत्तने |
| ११२ | ७२८७ | दशवैकालिकसूत्रावचूरि | | १५वीं | १६ | संस्कृत |
| ११३ | ७६५४ | दशाश्रुतस्कन्ध | | १६७० | २६ | प्रा., लि.क. मुनि महावजी, खीरपुरनगरे |
| ११४ | ७४८४ | नन्दीसूत्र | | १७वीं | १६ | प्राकृत |
| ११५ | ७२५६ | निरयावलि (राजस्थानी भाषार्थ सहित) | | १८६७ | ६२ | प्रा.रा., लि.क. मूल० सुमतिहंस, भाषा उमदहंस, कोसाणामध्ये |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------------------------------------------|---------------------|----------|-------------|---------------------------------------------------------------------------|
| ११६ | ७३०७ | निरयावलिकासूत्र | सहजकीर्ति | १६६५ | २६ | प्रा., लि.क. वच्छा |
| ११७ | ७३६५ | निशीयसूत्र (लघु) (राजस्थानी भाषार्थ सहित) | | १८३२ | ७७ | प्रा.रा., लि.क. कपूरविजय, हरचन्द, पोपाड़नगरे |
| ११८ | ७४८१ | निशीयसूत्र | | १७वीं | १६ | प्राकृत |
| ११९ | ७५४१ | " | | " | २३ | " प्रथम पत्र अप्राप्त |
| १२० | ७०८५ | प्रतिक्रमणसूत्र | | १९वीं | २३ | प्रा., अपूर्ण, १६वां पत्र अप्राप्त |
| १२१ | ७४४४ (७) | " | | १८८५ | १६८-१८० | प्राकृत |
| १२२ | ७४४५ | " आदि | | १८८७ | ४६१ | * विविध भाषा, जरी के कपड़े के जिल्दबन्ध गुटके में आठ कृतियों का संग्रह है |
| १२३ | ७४४६ | " " | | १९२२ | ६६ | * वि.भा., सुन्दर जिल्दबन्ध गुटके में १० कृतियों का संग्रह है |
| १२४ | ५६७३ | प्रतिक्रमणसूत्रबालावबोध | | १८८६ | ६१ | प्राचीन राजस्थानी |
| १२५ | ६८५६ | प्रश्नव्याकरण | | १५६८ | ४३ | प्रा., द्वितीय पत्र अप्राप्त |
| १२६ | ७२५६ | " | अभयदेवसूरि | १७वीं | २६ | प्राकृत |
| १२७ | ७२११ | प्रश्नव्याकरणाङ्गटीका | " | १६०२ | ८३ | संस्कृत |
| १२८ | ७३४५ | " " | " | १५वीं | ४८ | * संस्कृत |
| १२९ | ७५४७ | प्रश्नव्याकरणाङ्गसूत्र (सबालावबोध) | (सबालावबोध, पंचपाठ) | १७वीं | ६५ | प्रा.रा. |
| १३० | ७३१५ | प्रश्नव्याकरणोपाङ्गसूत्र | | १६५४ | ११२ | प्रा अपभ्रंश |
| १३१ | ७३४६ | प्रश्नव्याकरणोपाङ्गसूत्र (प्राचीन राजस्थानी भाषार्थ सहित) | | १७५६ | ७३ | प्रा.रा., लि.क. ललितहंस तत्त्व-हंस शिष्य, सप्तसदी नगर मध्ये |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------------------------------------|------------------------------------------|----------|-------------|------------------------------------------------------------------------------------------|
| १३२ | ७१८१ | प्रज्ञापनासूत्र | मू. श्रीश्यामाचार्य ? टी. श्रीमलयगिरि | १७वीं | ३२० | प्राकृत |
| १३३ | ७५४५ | " | | १६५६ | २२७ | " १-२ पत्र अप्राप्त |
| १३४ | ७१६७ | प्रज्ञापनोपाङ्ग (सटीक, पञ्चपाठ) | | १७वीं | ४२६ | प्रा. संस्कृत |
| १३५ | ७२८३ | प्रज्ञापनोपाङ्गसूत्र | | " | १७१ | प्राकृत, १-२ पत्र अप्राप्त |
| १३६ | ७६६८ | पाक्षिकसूत्र | | १६वीं | १४ | प्राकृत |
| १३७ | ७४८३ | पिण्डनियुक्ति | अभयदेवसूरि | १७वीं | ३२ | " |
| १३८ | ७२३३ | भगवतीसूत्र | | १६२५ | ४५७ | प्राकृत, संवत् १६ आषाढादि २५ वर्षे फाल्गुन वदि द्वादशायां- तिथौ भगवतीसूत्र लिखितम् |
| १३९ | ७२८६ | भगवतीसूत्र | | १६०२ | ३०४ | प्राकृत, लि.स्था. अणहलपुर |
| १४० | ७२०३ | " टीका | | १७३० | ३४२ | संस्कृत, लि. स्था. जैसलमेर |
| १४१ | ७२२० | " वृत्ति | | १६वीं | ४१० | राउल श्रीअमरसिंहजीराज्ये |
| १४२ | ७५६६ | राजप्रश्नीयसूत्र | " | १६७० | ८३ | संस्कृत. लि. क. ब्राह्मण जीवा |
| १४३ | ७६३५ | " (राजस्थानीभाषार्थसहित) | भा० मेघराजवाचक | १७वीं | २०६ | प्राकृत, लि. क. मोढजातीय |
| १४४ | ७३०० | राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (सटीक, पञ्चपाठ) | | १४१५ | ८१ | जोशी कुलसी |
| १४५ | ७२८४ | राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (सवालाव- बोध, पञ्चपाठ) | | १७०२ | ७७ | प्रा. रा., लि. क. मुनि मानसिंह |
| १४६ | ७५२६ | राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (राजस्थानी- भाषार्थसहित) | | १७वीं | १३६ | प्रा. रा. |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|---------------------------------------------------|----------------------|----------|-------------|--------------------------------------------|
| १४७ | ७६३१ | राजप्रवर्त्तीयोपाङ्गसूत्र (राजस्थानी भावार्थसहित) | | १७५६ | ६२ | लि.क. मुनि मनोहर, बोटाद- ग्रामे |
| १४८ | ७२२५ | " | भा० मेघराज वाचक | १६१२ | ११८ | प्रा. रा., ऋषि रूपचन्द, पोहीमध्ये |
| १४९ | ७३१६ | राजप्रवर्त्तीयोपाङ्गसूत्रवृत्ति | वृ. मलयगिरि | १७वीं | ७७ | संस्कृत |
| १५० | ७१८५ | व्यवहारसूत्र | | १७वीं | १६ | प्राकृत |
| १५१ | ७४६६ | " | | १७वीं | १४ | " |
| १५२ | ७१८७ | विपाकसूत्र (सट्पिण) | | १५१३ | २४ | " लि. क. वाद्यक |
| १५३ | ७७६३ | विपाकाङ्गसूत्रटीका | टी. अभयदेवाचार्य | १५६१ | १६ | प्रा. सं. |
| १५४ | ७३८४ | श्रमणसूत्र (सबालावबोध) | | १८वीं | ८ | प्रा. अ., लि. क. मुनि मिरकू भोमणजीशिल्प |
| १५५ | ७२३८ | आहुप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति | श्रीरत्नशेखरगणि | १६५५ | १८५ | प्रा. सं., संशोधनकर्त्ता श्रीलक्ष्मीभद्र |
| १५६ | ६१३५ | षडावश्यकबालावबोध | वा. हेमहंस | १८वीं | १२१ | अ. सं. |
| १५७ | ७४२३ | षडावश्यकसूत्र | | १६८८ | १३ | प्राकृत |
| १५८ | ७२६६ | स्थानाङ्गसूत्र | | १६७२ | ७७ | " लि. स्था. शुजाउलपुर |
| १५९ | ५६७८ | स्थानाङ्गसूत्र (सबालावबोध, त्रिपाठ) | | १७८७ | २०६ | प्रा. रा. लि. स्था. बीकानेर |
| १६० | ७२२३ | समवायाङ्गवृत्ति | अभयदेवसूरि | १६१८ | ८४ | * सं. प्रा., रचनाकाल ११२० वि. |
| १६१ | ७१८३ | समवायाङ्गसूत्र | | १६५८ | ५० | प्रा. पातशाहअकबरराज्ये लिपीकृतम् |
| १६२ | ७२१५ | " | | १६६७ | ३३ | प्राकृत |
| १६३ | ७४६५ | " | | १६वीं | ५० | " |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २३-जैनगम]

[२५८]

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|----------------------------------------------------------|---------------------------------------|---------------|-------------|----------------------------------------------------------------------|
| १६४ | ७४६७ | समवायाङ्गसूत्र | | १६६२ | ६८ | प्राकृत |
| १६५ | ७५६१ | " " | | १८१४ | १६५ | प्रा. रा., लि.क. हीराचन्द्र भाचवारी, लोबड़ोमध्ये |
| १६६ | ६४४५ | सूत्रकृताङ्ग (सटीक) | | १८वीं | ७३ | प्रा. सं., अपूर्ण |
| १६७ | ७१७८ | सूत्रकृताङ्गसूत्र | | १६वीं | ५७ | प्रा., लि.क. माणिक्यचन्द्र, नगोन्द्रगच्छे |
| १६८ | ७२०७ | " " (द्वितीय स्कन्ध, सरतवक, पञ्चपाठ) | स्त. पाशचन्द्र (श्रीसाधुस्तनशिष्य) | १६५० | ४८ | प्रा. रा., लि.क. लूणिया- पोमसी पुत्रेसासूत्राण, जैसलमेर- मध्ये |
| १६९ | ७२०९ | सूत्रकृदङ्गसटीका | श्रीलाचार्य (वाहरिगणसहायेन) | १६वीं | २४५ | प्रा. सं. |
| १७० | ७४३९ | सूत्रकृदङ्गप्रथमश्रुतस्कन्ध | | १७वीं | ३५ | प्राकृत |
| १७१ | ५९९६ | सूत्रकृदङ्गप्रथमश्रुतस्कन्ध (सबालावबोध) | | १६०१ (?) | ५१ | प्रा. रा. |
| १७२ | ७४३३ | " " (पञ्चपाठ) | | १७वीं | ३४ | " " |
| १७३ | ७५३१ | सूत्रकृदङ्गप्रथमश्रुतस्कन्ध (राज- स्थानी भाषार्थसहित) | | १६५३- १६६७ | ७३ | " " मू. १६५३, भाषा- १६६७, लि.क. ऋषिभाण |
| १७४ | ७५३२ | " " | | १६६८ | ८४ | प्रा. रा. |
| १७५ | ७३०१ | ज्ञाताधर्मकथाङ्ग | | १६७५ | १८९ | प्रा., लि.क. ऋषिभाणायग पुंजा, केसीयामध्ये |
| १७६ | ७३५६ | " " (राजस्थानीभाषार्थ- सहित) | भा. प्रेमजीगणि | १८४८ | २२७ | प्रा. रा., लि.क. जीवनराम, नागोरमध्ये |
| १७७ | ७३९८ | " " | | १८६९ | २९८ | प्रा. रा. |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; २३-जैनागम]

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|--------------------------|----------------------|----------|-------------|-------------------------------|
| १७८ | ७४३५ | ज्ञातार्धर्मकथाङ्गवृत्ति | वृ. अभयदेवसूरि | १६३८ | ७० | प्रा. सं., प्रथमपत्र अप्राप्त |
| १७९ | ७१९२ | ज्ञातार्धर्मकथाङ्गसूत्र | | १६वीं | १३६ | प्राकृत |
| १८० | ७२३४ | " " | | १७वीं | १५० | " |
| १८१ | ७४७८ | " " | | १४८३ | ६४ | " |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २४-जैनप्रकरण]

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|--------------------------------------------------|--------------------------------------|----------|-------------|----------------------------------------------------------------------------------|
| १ | ६१२५ | अङ्गचूलिया | माणिक्यसुन्दरसूरि | १८वीं | २१ | अपभ्रंश |
| २ | ७५६१ | अन्तसमाधि | | १६०६ | ७ | राजस्थानी |
| ३ | ७२६७ | अष्टप्रकारप्रकारपूजाकथा (स्नात्र-पंचाशिकावृत्ति) | | १६४८ | ४० | संस्कृत, रचनाकाल १४८४, लि.स्था. अणहल्लपुरपत्तन |
| ४ | ७५२५ | अष्टान्हिकव्याख्यान (पर्यषणादि) | आगमसारोद्धारगत देवचन्द्र (खतरगच्छीय) | १८८८ | १० | संस्कृत |
| ५ | ७५३७ | आगमवाणी आदि | | १८वीं | १४ | राजस्थानी |
| ६ | ६१६२ | आगमसार | | १६वीं | ५६ | हिन्दी-रा., र.का. १७८३ |
| ७ | ७०१६ | आगमसारोद्धारभाषा | देवचन्द्र | १८६० | ७६ | लि.क. मुनि दुर्गदास, जालोरमध्ये, पत्र ५६-७६ तक भिन्नलिपि है |
| ८ | ७३३१ | आगमसारोद्धाररास | " मुनि | १८३२ | २८ | * हि.रा., र.का. १७७६ |
| ९ | ७२७३ (३) | आदिनाथदेशनोद्धार | | १७वीं | १२-१६ | लि.क. मथेन जसकरण, कुण्णगढ़नगरमध्ये |
| १० | ४७६६ | आदिपुराण | सकलकीर्तिभट्टारक | १८वीं | २०४ | हि.रा., लि.स्था. पुष्पावतीनगरे प्राकृत |
| ११ | ७११० | आराधनासूत्र (सार्थ) | | १७३६ | ६ | संस्कृत, अन्तिम पत्र अप्राप्त प्रा.रा., प्रथम पत्र अप्राप्त, अन्त्य पत्र शोभन |
| १२ | ५६३४ | उपदेशबालावबोध | सोमसुन्दर | १७वीं | ७६ | सं. प्रा. |
| १३ | ७३०८ | उपदेशमाला (सावचूर्णि) | श्रीरत्नशेखर | " | २३ | प्राकृत-संस्कृत |
| १४ | ४०१८ | उपदेशमालाप्रकरणकथा (सबा-लावबोध) | धर्मदासगणि (वृद्धविजय ?) | १८५६ | २१८ | प्रा.सं.रा., लि.क. विजयचन्द्र |
| १५ | ५६६० | उपदेशमालासूत्र (सट्पण) | | १६६३ | ३६ | स्थविर, पाल्लीदुर्गे प्राकृत, लि.क. मुनि कल्याण-सुन्दर, लिपि सुन्दर व प्रदर्शनीय |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग २; २४-जैन प्रकरण]

| क्रमाङ्क | ग्रंथाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|-----------|--------------------------------------------------------|--------------------------------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------------|
| १६ | ४३०२ | ऋषभपंचाशिका | शुभवर्द्धनगणी, (श्रीसाधुविजय- गणेशिष्य) | १७वीं | ७ | * प्राकृत |
| १७ | ७४६३ | ऋषिमण्डलप्रकरण | | " | १२ | प्राकृत |
| १८ | ७२६८ | " " (सावजूणि पञ्चपाठ) | | " | १६ | प्रा. सं. |
| १९ | ७२४२ | ऋषिमण्डलवृत्ति | देवेन्द्रसूरि (?), मलयगिरि | १८वीं | ३५३ | " लि. स्या. रामगढ़ |
| २० | ७३०६ | कर्मग्रन्थपञ्चकावसूरि | | १६वीं | ४३ | सं. प्रा. |
| २१ | ७२८८ | कर्मग्रन्थषट्क (स्वोपज्ञटीकोपेत) | | १७वीं | २६२ | " १ से ५ तक स्वोपज्ञटीका तथा ६ठे की मलयगिरिकृत टीका है |
| २२ | ७२३६ | कर्मग्रन्थषट्कसूत्रवृत्ति (स्वोपज्ञ, लटीक, त्रिपाठ) | देवेन्द्रसूरि, मलयगिरि | १६४६ | २२५ | " " |
| २३ | ७२६७ | कर्मप्रकृति | नेमिचन्द्र सैद्धांतिक | १६०२ | १२ | प्रा., लि. क. लक्ष्मीरत्न |
| २४ | ५४१८ (१०) | कर्मपचीसी | | १६वीं | १०६-११२ | हिन्दी |
| २५ | ५०६० | कर्मविपाक (सट्पण, सप्ततिका पर्यन्त) | | १८वीं | ४७ | अप्रभंश |
| २६ | ६८८० | कर्मविपाकग्रन्थव्याख्या | मत्तिचन्द्र (गुणचन्द्रशिष्य) | १६वीं | ५६ | सं. प्रा. रा. |
| २७ | ७८५५ | कालकसूरिकहणयं (सचित्र) | | १६वीं | ६ | प्राकृत, चि. सं. ६ |
| २८ | ५३६१ | कालकाचार्यकथा (सचित्र) | | १५वीं | १२ | " " ५ |
| २९ | ७८४८ | " " " | | १५३१ | ६ | " " ३, त्रुटित, अपूर्ण |
| ३० | ५३६० | कालकाचार्यकथानक (सचित्र) | | १५वीं | २५ | " " १२, पत्रा ७६-१०३ तक |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-------------------------------------------|----------------------------|----------|-------------|---------------------------------------------------------------------------|
| ३१ | ४४२२ | कालिकाचार्यकथा | रत्नशेखरसूरि | १७वीं | १६ | प्रा. रा. |
| ३२ | ७२५१ | गुणस्थानकवृत्ति | " | १६८८ | १४ | संस्कृत |
| ३३ | ७३६४ | गुणस्थानविचार | " | १६वीं | ३ | " |
| ३४ | ५४२७ (६) | गुणसंख्या (१०८ गुणोंकी संख्या) | क्षमाकल्याणमुनि | १६वीं | १४८-१४९ | प्राकृत |
| ३५ | ६०२८ | गुणविली | " | १८७२ | २८ | संस्कृत, रचनाकाल १८३० |
| ३६ | ६३३८ | गुरुवारगूढाष्टपंचाशिका आदि | " | १८वीं | ६२ | हिन्दी, गुटका |
| ३७ | ७७४१ (४) | गौतमपृच्छा | मतिवर्द्धन | १७वीं | ३८-४१ | प्राकृत |
| ३८ | ७२४६ | गौतमपृच्छावृत्ति | " | १७५७ | ३१ | प्रा. संस्कृत, र.का. सिद्धीरामे मुनीचन्द्र (१७३८) लि.क. ऋषि रत्ना |
| ३९ | ७५२७ | " " | " (पाठक) | १८वीं | ४३ | प्रा. सं. |
| ४० | ७३०४ | चउसरण (सबालावबोध) | " | १७वीं | १० | प्रा. अ. |
| ४१ | ७३८५ | चउसरणप्रकीर्णक | " | " | ६ | प्रा., मोड़जातीय जोशी माहव (माधव) लिखितम् |
| ४२ | ७१२६ | चतुर्दशस्थानकविचार | " | १७७५ | १९ | अ., लि.क. निहालचन्द, पाडली- |
| ४३ | ५०९२ | चतुर्विंशतिदण्डसूत्रम् (सबालाव- बोधम्) | गजसागरगणी (धवलचन्द्रशिष्य) | १६९८ | ५ | पुरे, पत्रा १५-१८ तक अप्राप्त प्रा.अ., लि.क. सौभाग्यगणि |
| ४४ | ७५९० | चातुर्मासिकव्याख्यानपद्धति | " | १६०४ | ७ | शिष्य, भट्टनेरकोटमध्ये सं.प्रा., लि.क. हमीरविजय, |
| ४५ | ७४६८ | उद्योतिष्करण्डकसूत्र | " | १७वीं | ११ | कृष्णगढमध्ये प्राकृत |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|---------------------------------------|-------------------------------|----------|-------------|---------------------------------------------------------------------------------------------|
| ४६ | ६१०४ | जम्बूअध्ययन (जम्बूचरित्र) | तिलकाचार्य | १६८७ | १६ | अपभ्रंश, प्रथम पत्रा अप्राप्त |
| ४७ | ५३२७ | जिनदर्शन (जिनरक्षितजिनपालको चौढालियो) | | १६३६ | २ | संस्कृत |
| ४८ | ५१३६ | जिनप्रतिमापूजापद्धति | | १७वीं | २६ | सं. प्रा., अपूर्ण |
| ४९ | ७१८६ | जीतकरपवृत्ति | | १६वीं | ४० | संस्कृत |
| ५० | ७१८६ | जीवविचार (सस्तबक) | | १७५८ | १० | प्रा. अ., लि. क. मोहनविमल |
| ५१ | ७२३० | जीवविचार (सटीक) | जैनपूजाविधि, स्तुति आदि | १५८१ | २ | प्रा सं., लि. स्था. शमीश्राम, |
| ५२ | ६८४३ | | | १६वीं | २३७ | सौभाग्यनन्दिसूरिविजयराल्ये |
| | | | | | | विविध भाषाके इस गुटकेमें तीर्थङ्करोंकी पूजाविधि, आरती, स्तुति, क्षेत्रपालपूजादि संगृहीत हैं |
| ५३ | ५३३४ | तत्त्वार्थधिगमसूत्र | उमास्वामि | १६०१ | २५ | सं., लि. क. देवचन्द्र |
| ५४ | ६३०२ | " " (सटिप्पण) | | १८वीं | ७ | " " विमलदास |
| ५५ | ४६१४ (६) | " " (सार्थ) | | १८७१ | २०१-२०७ | सं. रा. |
| ५६ | ७७६१ | तत्त्वार्थधिगमसूत्रटीका | सिद्धसेन | १६३१ (?) | ४४४ | संस्कृत |
| ५७ | ७७६० | तत्त्वार्थधिगमसूत्रभाष्य | उमास्वामि (मि) | १६३१ | ६६ | " लि. क. पं. नाइया, श्री अचलगच्छेश्वर श्रीधरमूर्ति |
| ५८ | ६२६६ | तत्त्वार्थधिगमसूत्रभाषाटीका | मू. नेमिचन्द्र, वृ. ब्रह्मदेव | १८वीं | १०४ | सूरीश्वर विशदोपदेशात् सं. रा., ऊपरके पत्र पर |
| ५९ | ६०३५ | द्रव्यसङ्ग्रहवृत्ति | | १६३१ | ६१ | 'सुत्राजीकी टीका' लिखा है |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|------------------------------------------|-----------------------------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ६० | ६२७६ | दीपमालिकाकल्प | जिनप्रभसूरि | १८२३ | २२ | सं., प्रतिका शोधनकर्त्ता ऋषि सुखदेव है |
| ६१ | ७६३२ | दीपमालिकाकल्प, दीपमालिकाकल्प बालावबोध | | १८११ | २० | सं.रा., र.का. 'शरयुग शिखि- शशिखर्य' (१६४५) लि.क. कृष्णाजी धांडूधड़ाभयं |
| ६२ | ७३६२ | दीपालीकल्प (दीपमालिकाकल्प) | जिनमुन्दरसूरि (सोममुन्दरसूरि- शिष्य) | १८वीं | १५ | सं., लि.क. हेमविजय 'संवत्सरे- ऽग्निद्विपविश्वसंमिती' |
| ६३ | ६०३६ | दीपोत्सवकल्प | | " | ६ | अपभ्रंश |
| ६४ | ५४२७(४) | देवसहिमादि | | १६वीं | ४६-६४ | सं.रा.अ., प्रतिमापूजन एवं स्तवन भी लिखित है |
| ६५ | ५६४६ | धर्मप्रश्नोत्तरमहाग्रन्थ | सकलकीर्तिभट्टारक | १६१३ | ७४ | सं. इसमें १११६ प्रश्न हैं तथा ७२वें पत्र की लिपि नूतन है। |
| ६६ | ४५६२ | धर्मोपदेशश्लोक (सार्थ) | महावीरभगवदुक्त अ. भीमविजय | १८४६ | ८० | प्रा.र., पादलिप्तनगरे शत्रुञ्जय- तीर्थेलिपिकृतम् |
| ६७ | ४५६६ | धर्मोपदेशश्लोकाः | जैनपुराणोक्त | १६वीं | ६ | * संस्कृत |
| ६८ | ५३७६(१६) | नृवणकथा (स्तनकथा) | | १७६१ | २१८-२२६ | संस्कृत |
| ६९ | ४०१६ | नवकारबालावबोध | | १८२१ | ४ | प्रा.रा., लि. स्था. जैसलमेर |
| ७० | ६३२० | नवकारग्रन्थ आदि | | १६वीं | ६१ | हि., इस गुटके में जिनदर्शन, श्रीपालदर्शन, पार्श्वनाथस्तोत्र, वारह्मभावना 'जैनशतक' भक्ता- मखालावबोध (हेमराजकृत) भी लिखित है। |
| ७१ | ७४४४(४) | नवतत्त्व (सट्कार्य) | | १८८५ | १२६-१३६ | प्रा.रा., लि.क. नैमविजय |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-----------------------------------------------|-------------------------------------------|----------|-------------|----------------------------------------------------------------|
| ७२ | ४०१९ | नवतत्त्व (सबालावबोध) | पद्मचन्द्रशिष्यः कश्चित् (खरतर-गच्छीयः) | १८०३ | ५२ | सं प्रा.रा., र.का. १७६६, लि.क. ऋग्वेदेवचन्द्रादि, लि.स्था आगरा |
| ७३ | ४०९१ | " | मेष्टुङ्गसूरि (श्रीगच्छेश)-शिष्यः कश्चित् | १६५२ | ७१ | प्रा.रा., लि.क. केशराज, श्रीरामपुर |
| ७४ | ४४६२ | " | बा. पार्श्वचन्द्र | १७वीं | १० | प्रा.रा., लि.क. हंसविजयगणि |
| ७५ | ७६५६ | " | | " | ८ | प्रा.रा. |
| ७६ | ७५२१ | नवतत्त्वटीका | | १८७७ | ९ | सं.प्रा., लि.क. नेमचन्द्र, फलौधीग्राममध्ये |
| ७७ | ७५३६ | नवतत्त्वप्रकरण (सबालावबोध) | | १८०७ | १३ | प्रा.सं., लि.क. विजयगणि, रामसेननगरे |
| ७८ | ४४२३ | नवतत्त्वविचार (सबालावबोध) | | १६वीं | ६ | प्रा.रा. |
| ७९ | ६२३० | नेमिपुराण | सोमसुन्दरसूरि | १८८६ | २१२ | सं., लि.क. हेतराम |
| ८० | ७४७९ | प्रत्याख्यानभाष्यत्रयावचूरि | मू. देवेन्द्रसूरि, अ. सोमसुन्दरसूरि | १६वीं | २३ | प्रा.सं. |
| ८१ | ७४७६ | प्रत्याख्यानसूत्रभाष्यत्रय (सावचूरि, त्रिपाठ) | | १६५७ | १९ | प्रा.सं. |
| ८२ | ७५४४ | प्रत्येकबुद्धचरित्र | | १७वीं | १० | " लि.क. धर्मकीर्ति |
| ८३ | ७८२४ | प्रतिष्ठाकल्प | | १८वीं | १५ | सं.प्रा. |
| ८४ | ७२०० | प्रबोधचिन्तामणि | जयशेखरसूरि | १५३३ | ७२ | *संस्कृत, र.का.-१४६२ |
| ८५ | ७३२१ | प्रवचनसारोद्धार | | १७वीं | ४४ | प्राकृत |
| ८६ | ७३४७ | " (सटीक) | सिद्धसेन | १६५० | ३७९ | *प्रा.स. |
| ८७ | ७२७६ | पञ्चनिर्ग्रन्थप्रकरण (सावचूरि, पञ्चपाठ) | | १७वीं | ५ | " |
| ८८ | ७३०९ | पञ्चनिर्ग्रन्थसूत्र (सावचूरि) | मू. अभयदेवसूरि | १७८० | ७ | " लि.क. पं. कल्याणचन्द्र |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; २४ जैनप्रकरण]

[२६६]

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|----------------------------------|-------------------------------|----------|-------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ८२ | ७१६३ | पञ्चपरमेष्ठिपूजनप्रकार | सोमसूरि | १६वीं | ३६ | संस्कृत, अपूर्ण |
| ८० | ६२८७ | पञ्चेन्द्रिय चौपाई | | १८५३ | ६ | हि. र.का. १७६१ |
| ८१ | ५१३० | पद्मावतीकल्प | | १७वीं | २ | संस्कृत, त्रुटित एवं आद्य पत्र अप्राप्त |
| ८२ | ६४०१ | पर्यन्तराधनासूत्र | | १७४० | ७ | प्रा.सं., लि.क. ऋषि छीतर, विराटनगरे, पातसाहिश्रीरंग-विजयराज्ये प्राकृत |
| ८३ | ७७४१ (३) | परमात्मप्रकाश | म. जिनवल्लभ, च. श्रीचंद्रसूरि | १७वीं | १२-३८ | सं.हि. रा., अभियेकनामक कृति अभयनन्दि द्वारा रचित, र.का. १५६७, इस गुटकेमें तत्त्वार्थ-धिगमसूत्र, भवतामरस्तोत्रादि अनेक कृतियां भी लिखित हैं। प्रा.सं. |
| ८४ | ७१५६ | पार्श्वनाथपूजाद्यभियेकान्त आदि | | १६वीं | १२१ | प्रा. प्रति के कोण भग्न हैं। विविधभाषा के इस गुटकेमें चौबीस एवं बीस तीर्थङ्करोंकी पूजाविधि तथा वशवैकालिक, तत्त्वार्थधिगमसूत्र एवं विविध स्तोत्रादि संगृहीत हैं। प्राकृत, लि.क. कवीन्द्रसागर |
| ८५ | ७१८२ | पिण्डविशुद्धि (साधचूरि, पञ्चपाठ) | | १६वीं | ४ | संस्कृत, इसमें लघुशान्तिटीका, दण्डकवृत्ति, नवग्रहस्तोत्रवृत्ति एवं विद्याविलासकथा लिखित हैं। प्रा. रा., लि.स्था. श्रीनारायणरी, लि.क. गलवा |
| ८६ | ७२०६ | पिण्डविशुद्धि | | १६वीं | ११३ | |
| ८७ | ६६०६ | पूजाविधि (जैनतीर्थङ्करपूजाविधि) | | १६वीं | | |
| ८८ | ७४१८ | पोषधादिविधि | बृहन्न्यान्तिटीका आदि | १८७५ | ६ | |
| ८९ | ७५२२ | बृहन्न्यान्तिटीका आदि | | १६०१ | २७ | |
| १०० | ४३०१ | बृहन्न्यान्तिटीका | | १५६० | १३ | |

राजस्थान पुरातत्त्ववैषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२: २४-जैनप्रकरण]

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|---------------------------|----------------------------------------------------|----------|---------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| १०१ | ५२८७ | भक्तमरपूजापद्धति | श्रीहेमचंद्रसूरि हेमचन्द्रसूरि मलधारी ” ” | १६वीं | १८ | संस्कृत |
| १०२ | ७३३६ | भगवत्पञ्चबीजक | | १७वीं | ६ | प्राकृत |
| १०३ | ६०५० | भद्रबाहुसंहिता | | १६वीं | ६६ | संस्कृत |
| १०४ | ७१६६ | भवभावना (मूल) | | १५६८ | १८ | प्राकृत |
| १०५ | ७१६६ | ” | | १७वीं | २६ | ” |
| १०६ | ७२८५ | भवभावना (मूल) | | ” | ६ | प्राकृत |
| १०७ | ७३२० | भवभावनामूलप्रकरण | | १८६७ | २५ | ” अस्ति पत्र अपेक्षाकृत नवीन है, उसी पर उक्त संवत् लिखा है, किन्तु मूल प्रति इससे पूर्वकी प्रतीत होती है |
| १०८ | ७२५२ | भवभावनासूत्रप्रकरण | रूपचन्द्र लक्ष्मीहर्ष | १७वीं | ३७ | प्राकृत |
| १०९ | ७२७३ (२) | भववैराग्यशतक | | ” | ६-१२ | ” |
| ११० | ५४१८ (६) | भवसिन्धुचतुर्दशी | | १६वीं | ६६-६७ | हिन्दी |
| १११ | ४०८५ | मङ्गलकलशचोपाई | | १८१६ | २७ | ॥ अ. प्रा., लि. स्या. खोंविसर- ग्राम, रचनाकाल १७१६, स्था.-काकदीनगर |
| ११२ | ५१२० | मङ्गलकलश तथा द्वितीयवाचना | मं. कनकसोम | १७वीं | १० | प्रा. द्वितीयवाचना पत्र १-५ तक में लिखित है, मङ्गलकलशका र.का. १६४६ है, उक्त दोनों ही प्रतियां अपूर्ण हैं संस्कृत, अपूर्ण |
| ११३ | ५३०१ | महापुराणसंग्रह | गुणभद्राचार्य | १६वीं | १३८-१८१, १८४-२५८ | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|------------------------------------------|-------------------------------------|----------|-------------|-------------------------------------------------------------|
| ११४ | ७१०५ | मौनएकावली | | १८वीं | ३ | सं. प्रा. |
| ११५ | ७२६३ | मौनएकावलीकथा | | १७वीं | २ | संस्कृत, लि.क. पं० सोमनन्दन |
| ११६ | १०८७ | लोकनालाख्यवालावबोध | नयविलास (जिनचन्द्रसूरिशिष्य) | १८वीं | ५ | " |
| ११७ | ७२६४ | वन्दारवृत्ति | | १५५६ | ७८ | " अन्तिम पत्र के अक्षर उड़ गये हैं |
| ११८ | ७३४३ | वनस्पतिसिन्धुप्रवचूरि | प्रज्ञापनापाङ्गसूत्रगत | १६वीं | ३६ | प्राकृत |
| ११९ | ६०३४ | वर्द्धमानदेशना (गद्यबन्ध) | कीर्तिगणि | १८६० | १०६ | संस्कृत |
| १२० | ६२२० | वर्द्धमानपुराण | सकलकीर्ति | १७६८ | १४६ | " लि.क. गुणविलाय |
| १२१ | ४२६६ | विशतिस्थानकविचारामृतसंग्रह | जिनहर्षगणि (श्रीजयचन्द्रसूरि-शिष्य) | १७वीं | ६६ | * प्रा.सं., प्रथम पत्र अप्राप्त, र.स्या. वीरसाम, र.का. १५०२ |
| १२२ | ७४७७ | विचारामृतसंग्रह | कुलमण्डनसूरि | १५वीं | ३१ | * सं.प्रा., र.कत. १४४३ |
| १२३ | ७१७६ | विवेकविलास | जिनदत्तसूरि | " | २१ | संस्कृत |
| १२४ | ७०७६ | विशेषणवती | जिनभद्राचार्यगणेश क्षमाश्रमण | १८वीं | ६ | प्राकृत |
| १२५ | ६१८३ | आवकातिचार | देवेन्द्रसूरि | १५५८ | १० | अपभ्रंश |
| १२६ | ५६७० | शतकर्मग्रन्थवालावबोध | | १८वीं | १८ | " लि. क. ऋषि विश्राम परगणायपुरे |
| १२७ | ४०२६ | शीलोपदेशमालावालावबोध | मू. जयकीर्ति, वा. मेरुसुन्दर | " | १५० | * प्रा. रा., लि.क. गुणविलास |
| १२८ | ४०३३ | " | " | १६११ | १६५ | सागर |
| १२९ | ७३३० | पञ्चनीतिकशतकर्मग्रन्थ (स्वोपज्ञ-टीकोपेत) | देवेन्द्रसूरि | १६५४ | ११० | प्राकृत |
| १३० | ७४१६ | पण्डितपत्रक | | १६वीं | ४ | संस्कृत |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २४-जैनप्रकरण]

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|--------------------------|-----------------------------------|----------|-------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| १३१ | ५६८६ | षष्टिशतकबालावबोध | देवदत्त दीक्षित (हर्षसागरात्मज) | १६वीं | १६ | प्राकृत |
| १३२ | ७३५३ | स्यविरावली | देवभद्रसूरि | १६वीं | ४१ | प्रा. सं. |
| १३३ | ६३२७ | स्वर्णचिलमाहात्म्य | श्रीचन्द्रमुनि (हर्षपुरीय) | १८४७ | ६७ | सं., लि.स्था. भरथपुर |
| १३४ | ७२२१ | सङ्ग्रहणवचूरि | | १४६६ | २० | संस्कृत |
| १३५ | ७३२५ | " | | १६वीं | २३ | " |
| १३६ | ६१३३ | सङ्ग्रहणी | | १६२४ | १७ | प्रा., लि.स्था. अलवर, प्रथम |
| १३७ | ७४०५ | " (मूल) | | १८६६ | ४० | ३ पत्र अप्राप्त |
| १३८ | ७५४६ | " | | १७२२ | ८ | प्राकृत, लि.क. ऋषि वृद्धिचन्द्र, चूरुनगरमध्ये |
| १३९ | ७४७५ | " (सटीक, त्रिपाठ) | श्रीचन्द्रसूरि, श्रीदेवचन्द्रसूरि | १६६० | ५१ | प्रा., इसमें दण्डक भी लिखित हैं। लि.क. यशसागरमुनि, सावड़ीमध्ये |
| १४० | ७५६२ | सङ्ग्रहणीप्रकरण (सस्तबक) | स्त. वच्छराज | १७१० | ३१ | प्रा.सं., लि.क. नयनगणि जीव- |
| १४१ | ७६३३ | सङ्ग्रहणीप्रकरण | उत्तमऋषि | १८वीं | ३५ | कलशगणेशिष्य |
| १४२ | ४३५६ | सङ्ग्रहणीबालावबोध | शिवनिधानगणि | १८३७ | ८५ | प्रा. रा. |
| १४३ | ५६७२ | " | " | १८३६ | ६२ | " रचनाकाल अष्टचतुर- शीतिके आगराख्ये महानगरे * प्रा. रा., लि.क. ऋषि आनन्दचन्द्र, श्री बेनातटपुर प्रा. रा., लि.क. शिवराज, श्रीबलभा (भी) पुर |
| १४४ | ७३२६ | सङ्ग्रहणीवृत्ति | देवभद्रसूरि (श्रीचन्द्रसूरिशिष्य) | १८७७ | १०१ | संस्कृत, ३४ वां पत्र अप्राप्त |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्ता प्रादि जातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|-----------|-------------------------------------------|--------------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------------------------|
| १४५ | ४००४ | सङ्ग्रहणीसूत्र (संघेनो रासछन्द) | मतिसार | १८४५ | २५ | * राजस्थानी, प्रथम पत्र अप्राप्त लि.क. प्रमोदतिलक, राजनगरे |
| १४६ | ४०३१ | सङ्ग्रहणीसूत्र (सरतत्रक) | लेख(ग)सूरि | १६६२ | २७ | * प्रा.अ., लि. कर्त्री-आर्याश्री ५ सज्जनजीरो शिष्यता आर्यतु- |
| १४७ | ५३५३ | " (मचित्र) | | १८वीं | ६७ | वट, बीलाडुआम प्रा.रा., चि. सं. ३२ |
| १४८ | ६१४१ | " " | | १८३० | ४७ | हि.रा.अ., लि.स्या. डोडवाना |
| १४९ | ७१७५ | " " | | १८२१ | ६४ | प्रा. अ., चि. सं. ३५ |
| १५० | ७८४३ | " " | | १६७५ | २४ | प्रा., चि. सं. ५ |
| १५१ | ७२७७ | सङ्ग्रहणीसूत्र | | १७वीं | २० | प्राकृत |
| १५२ | ७३२४ | " | | १८६० | २२ | " लि.क. सुन्दरहंग, राणा- वासमध्ये |
| १५३ | ७३२७ | " (सबालावबोध, पञ्च- पाठ) | देवभद्रसूरि | १६७८ | ३१ | प्रा. अ. |
| १५४ | ७४४४ (२) | " (सट्बाय) | | १८८५ | ५४-१२० | " लि.क. नमविजय, गोधु- न्दापाममें लिपित, टिप्पणीका नाम रूपाली है |
| १५५ | ४१४३ | सप्ततिसारबालावबोधविवृति | मतचन्द्रमुनि | १७वीं | ६२-१८३ | सं., अ.रा., प्रति सुन्दर किन्तु अपूर्ण है |
| १५६ | ६२०७ | सप्तव्यसनकथासमुच्चय | भारामलसंधी (परत्तरामसुत) | १८७८ | ६२ | हिन्दी, लिपितं मराठम श्रीमालबासी पाण्डुराहा पटवारी |
| १५७ | ७५४३ | सप्तस्मरणसूत्र (राजम्यानीभाषाये- सहित) | | १८४३ | ३६ | प्रा. रा., लि.क. मणनीम |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|-------------------------------------|--------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------------------------------------------|
| १५८ | ७०१५ | सन्तमव्याख्यान | | १८वीं | १७ | सं.श्र., इसमें ऋषभदेव, आदि-नाथ आदिके चरित्रका व्याख्यान है, प्रतिके पन्ने चिपके हुए हैं |
| १५९ | ७६६६ | सम्बोधसत्तरीप्रकरण | देवदत्त दीक्षित | १९वीं | ७ | प्राकृत |
| १६० | ६२०३ | सन्मवेशिलरमाहात्म्य | | " | ८१ | * संस्कृत |
| १६१ | ७११८ | समवस्तुतिपूजा | | " | ४० | " अर्पण |
| १६२ | ७२१७ | समाधिशतकटीका | प्रभाचन्द्र | १९६५ | २५ | * " लि. क.पं. केशव |
| १६३ | ७१६३ | साधुसमाचारी | | १८वीं | ६ | प्रा.श्र., लि.क. कमलविजय साध्वी |
| १६४ | ७२१८ | सार्द्धशतकवृत्ति | धनेश्वरसूरि | १६वीं | ७० | श्रीसोभागश्रीपठनकृत, प्रति सुन्दर व चित्रित है |
| १६५ | ५१३४ | सारोद्धार (पंचखाणा, सटिप्पण) | | १७वीं | ४० | सं.श्र., आद्य ४ पत्र अश्रुत, प्रतिके कोण खण्डित |
| १६६ | ७३८२ | सिद्धान्तसार | | १७६३ | ६५ | प्रा.श्र. |
| १६७ | ६१४७ | सिद्धान्तसारप्रदीपक | सकलकीर्ति | १८११ | १२६ | प्रा.स.रा., लि.क. लालसागरजी |
| १६८ | ७२६६ | सिद्धिदण्डिका | | १६वीं | ४ | सं., लि.क. पं. मयारवि, जयसिंहपुरामध्ये (माधवसिंहराज्य) |
| १६९ | ७५३६ | सूर्यप्रज्ञप्ति | | १७वीं | ६२ | प्रा. |
| १७० | ६१०६ | संस्तारकप्रकरण (सबालावबोध, पञ्चपाठ) | | " | १० | " अपभ्रंश |
| १७१ | ५६११ | हरिवंशपुराण | जिनसेनसूरि | १६वीं | २६६ | * संस्कृत |

राजस्थान पुरातत्वाधेक्षण मन्दिर — हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २५-प्रकीर्णग्रन्थ]

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | निर्माण उल्लेखनीय |
|---------|-----------|----------------------------------------------------|--------------------|----------|---------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| १ | ७७४१ (१) | अपभ्रंशस्कृत्पद्य | | १७वीं | १०-१२ | |
| २ | ७७४१ (५) | " | | " | ४२-४३ | |
| ३ | ६०२५ | इरयारसितपुस्तकथा | | १८वीं | ४ | अपभ्रंशमें |
| ४ | ५२०७ | श्रीदुम्बरवंशपरिचय | | १६०८ | १ | यह एक प्रकारका पञ्चनामा है जिसमें जयपुरके महापण्डितों एवं राजगुरुओंकी मृत सम्मतियां अंकित हैं। |
| ५ | ६८२७ | श्रीपद्मसंग्रह आवि | | १६वीं | १६३ | इस गुटकेमें श्रीपद्मके नुस्खे, यंयमंत्र, शकुन आदिका संग्रह है इसमें प्रवृत्तचणकी श्रीपद्मि प्रवृत्त है |
| ६ | ७७२२ (६) | " | | १८वीं | १०६ | प्राचीनसंस्कृतमिश्रित हिन्दी |
| ७ | ५१२३ (१) | गंगास्तोत्र | | " | १ | |
| ८ | ४४५२ (४२) | चण्डिकादेवीचित्र | | " | ४६ वीं | |
| ९ | ४४५२ (४३) | " | | " | ५० वीं | |
| १० | ४४५४ | चन्द्रायणा, कवित्त | | " | १ | २३ दोहे, २ कवित्त राजस्थानी एवं वज्रभाषा |
| ११ | ७२७७ | रामायन (सचित्र नीलक) | | " | | नवग्रहोंके सुन्दर चित्र अंकित हैं |
| १२ | ६६६० | जयपुरराज्य एवं सदाशिवभट्टसे सम्बन्धित लिपिनामा आदि | | " | | कामवासी विधिमें इतिहास |
| १३ | ७०६० | महिषोपना पटचित्र | | " | प्रकीर्ण पत्र | |
| १४ | ७०५८ | " | | " | | |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २५ प्रकीर्ण ग्रन्थ]

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|---------|------------|--------------------------------------------------|----------------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------|
| १५ | ७८०६ | तांत्रिकयन्त्र (भूगोलपटचित्र) | | १६वीं | १ | श्रीकृष्ण विषयक व्रजभाषागद्यमें |
| १६ | ४८१० | तारतम्य (गद्य) | | " | ६ | संस्कृत, राजस्थानी इसमें वसन्त |
| १७ | १५०६ | द्वित्रिंशदपराधाः, दशमहपराधाः, माघमासोत्सवादि | | " | ४ | पञ्चमी के दिन भगवत्प्रतिमा के शृङ्गार की विधिद्रष्टव्य है |
| १८ | ५३७६ (५) | दशलाक्षणिककथा | शुद्धकीर्ति | १८वीं | ८७-६० | प्राकृत |
| १९ | ७७४१ (७) | प्रकीर्णपद्यानि | म. शालिवाहन टः गङ्गाधरभट्ट | १७वीं | ८० | संस्कृत अपभ्रंश |
| २० | ७००० | प्राकृतगाथाकोशटीका | सोमसितकसूरि | १६वीं | १६ | प्राकृत संस्कृत श्रृणू |
| २१ | ७३३८ | पुष्पमालाप्रकरण | | १५वीं | १४ | प्राकृत |
| २२ | ४४८१ | वृहत्क्षेत्रसमास | | १७८५ | १६ | विषय ज्योतिष, लि. क. दोलत- सागरगणि |
| २३ | ६३६८ | बलिदानपद्धतिः | | १६ | ६ | तन्त्रोक्त |
| २४ | ६८५५ | भागवत (मराठी अनुवाद) | | १६वीं | | प्रकीर्ण पत्र एकादशस्कंध पर्यन्त |
| २५ | ४०८३ | मजलस | | १८५२ | ३ | प्राचीन हिन्दीगद्य, जिनमुखसूरि प्रशस्ति, लि. क. पं. गोविन्दस स्थान पालीग्राम |
| २६ | १४५४८ (१) | मोक्षवेड़ा | वनारसीदास | १६वीं | १-३ | पंजाबी में |
| २७ | ५४८४ | रामविजयमहाकाव्य | श्रीधर | १८५२ | ५६४ | र.का. शक सं. १७१७, मराठी भाषा में, लि. क. बालाजी भोलाजी, रेवातटे राजराजेश्वर सन्निधौ |
| २८ | ५५५० | " | " | १८वीं | ६८ | आरंभसे लेकर दशम अध्याय तक |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपि समय | पत्र संख्या | विशेष उल्लेखनीय |
|----------|------------|--------------------|--------------------------|----------|-------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| २९ | ७११६ | " | | १८६१ | ३६७ | र.का. १६२५ शार्के (१७६० वि.) अध्याय ११ से ४० तक सं. ५५५० और ७११६ की प्रतियोंको मिलाकर ग्रंथ पूर्ण हो जाता है |
| ३० | ५३७६ (११) | रोसहकीजयमाला | | १७६२ | १११-११२ | लि.क. डालचन्द नथमलसुत लि.स्था. दरियाबाद |
| ३१ | ६०६२ | विष्णुमहोत्सवमाला | केसरीकवि बालकृष्णभट्टमुत | १८६५ | २४ | प्रा. रा. गु., लि. क. मनोहर |
| ३१ | ५२३७ | चैराम्यशतक | | १७४५ | १५ | इन्द्रजीत विषय |
| ३३ | ६६७७ | पट्चक्रनिरूपणखरड़ा | | १६०० | १ | |
| ३४ | ५२३६ | त्रैलोक्यसाधना | | १६७६ | १२ | लि.क. धर्मकीर्ति उपाध्याय |
| ३५ | ७१७६ | ज्ञानवाजीकापटचित्र | | १६वीं | १ | मांगलोर मध्ये |

परिशिष्ट १

[कतिपय ग्रन्थों का विशेष परिचय]

१-स्तुतिस्तोत्रादि

८. ४२३४^१

अहल्यास्तोत्र

आदि- ॐ ततो दृष्ट्वा रघुश्रेष्ठं पीतकौशेयवाससम्,
धनुर्बाणधरं रामं लक्ष्मणेन समन्वितम् ।

अन्त - ब्रह्मघ्नो गुरुतल्पगोऽपि पुरुषः स्तेयी सुरापोऽपि च
आता रा [ग्रा] मविहिसकोऽपि सततं भोगैकवीधा (वद्धा) तुरः
नित्यं स्तोत्रमिदं जपन् द्युपतितं भक्त्या हृदिस्थं स्मरन्,
ध्यायेन्मुक्तिमुपैति किं पुनरसौ त्वाचारयुक्तो नरः ॥ २८

इति श्रीअध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे बालकाण्डे अहल्यास्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।

९. ४२५४

अज्ञानविमोचनस्तोत्र

आदि- ॐकारे आदिरूपे सुकृतबहुविधे श्वेतपीते च कृष्णे
नीले रक्ते कपीते तदुपरि रहिते सर्ववर्णे विवर्णे ।
प्राणापाने समाने विपरितकरणे व्यान उद्यानपीठे
एको व्यापी शिवोऽयं इति वदति हरिर्नास्ति देवो द्वितीयः ।

अन्त- ध्याता ध्याने विज्ञाने जयविजयकरे भावभावे विभावे
रामारामेति रामे अमृतविषमये लुब्धचन्द्रे अलुब्धे
स्वर्गे नर्के अनर्के अखिलखिलमये चेतिचेते अचेते
एको व्यापी शिवोऽयं इति वदति हरिर्नास्ति देवो द्वितीयः ॥ १०

इति श्रीनन्दीपुराणे नारायणकृत अज्ञानविमोचनस्तोत्र संपूर्णम् ।

४८. ७१४८

गुरुस्मरणाष्टक (स्तोत्रसंग्रह)

पत्र- १, १४, १६, १८, १९ वां अप्राप्त

(१) प्रोतस्तव (२) गोपालमंत्रध्यान (३) राधिकाशतनाम (४) कृष्णशरणागति-
स्तोत्र (५) दशश्लोकी (६) राधाष्टक (७) चतुःश्लोकी (८) आदित्यस्तोत्र (९) निवे-
दनाष्टक (१०) नारदशरणाचतुष्टक (११) निम्बार्कशरणागतिचतुष्टक (१२) आचार्य
पंचकस्तोत्र (१३) पंचश्लोकी (१४) राधास्तव (१५) आदित्यप्रस्तव (१६) निवादित्य-
लघुस्तव (१७) युग्मपौडशनामस्तव (१८) यमुनाष्टक (१९) गोपालस्तवराज (२०)
हरिव्यासाचार्याष्टक (२१) गुरुस्मरणाष्टक (हिन्दी) ।

१ प्रथम संख्या क्रमाङ्क और द्वितीय संख्या ग्रन्थाङ्क - सूचक है ।

१३६. ६७०१

यमुनाष्टकादिस्तोत्र, ४८ कृतियां ।

श्री वल्लभाचार्य रचित—१ यमुनाष्टक. २ बालबोध. ३ सिद्धांतमुक्तावली. ४ सिद्धांत-
न्तरहस्य. ५ नवरत्नस्तोत्र. ६ अन्तःकरणप्रबोध. ७ विवेकधीर्याश्रय. ८ कृष्णाश्रय ९
चतुःश्लोकी. १० पुष्टिप्रवाहमर्यादा. ११ भक्तिवर्द्धिनी. १२ जलभेद १३ स्वतन्त्रपद्यानि.
१४ सन्यासनिर्णय. १५ निरोधलक्षण. १६ सेवाफल. १७ पंचश्लोकी । (विट्टलेशरचित).
१८. यमुनाष्टपदी १९ गोपीजनवल्लभाष्टक. २० गोकुलाष्टक २१ मधुराष्टक. (वल्लभा-
चार्य) २२. भागवत्सारसमुच्चयेनामसहस्रम् २३. नामावलीत्रिविधलीला २४. सेवा-
फलविचार. २५ पूतनामोक्ष. २६ गोपालाष्टक. २७ नवनीतप्रियाष्टक. २८ शरणाष्टक
२९. दैन्याष्टक. ३० बलदेवाष्टक ३१ गिरिधार्यष्टक. ३२ गोकुलेशाष्टक. ३३ जन्मवैकल्य-
निरूपणाष्टक ३४ वल्लभभावाष्टक. ३५ स्वामियुगलाष्टक. ३६ पंचाक्षरगर्भितस्तोत्र.
३७ वल्लभशरणाष्टक. ३८ सप्तश्लोकी भागवत. ३९ स्वामिन्यष्टक. ४० स्वस्वामिनी-
स्तोत्र ४१. आर्या (वल्लभ) ४२ आर्या (विट्टलेश) ४३. आर्या (रघुनाथ) ४४. शिक्षा-
श्लोकी ४५. दैन्याष्टक ४६. भुजंगप्रयाताष्टक ४७. अष्टाक्षरमन्त्रार्थ. ४८ स्फुट पद्य ।

३-कर्मकाण्ड

२६. ५७३६

कुण्डकल्पद्रुम

आदि- ॐ मित्यक्षरमद्वितीयमनघं तत्सद्ब्रह्मन्तःस्थितं,
नत्वा सौति विभति विश्वमखिलं यस्मिन् पुनर्लीयते ।
शास्त्रं वीक्ष्य समुद्रराम्यथ सतां श्रीमाधवोऽहं सुधी-
निर्मथ्याङ्कसमुद्रमिष्टफलदं श्रीकुण्डकल्पद्रुमम् ॥ १

अन्त - आसीत् काश्यपवंशजः क्षितितले श्रीमानुदीच्याग्रंणी-
गोविन्दःश्रुतिवित्तदात्मज इहाभूत्.....नारायणः ।
तत्सूनुर्निगमक्रियासु निपुणः कूकाभिघस्तत्सुतः
शुक्लो माधवसंज्ञको रचितवान् श्रीकुण्डकल्पद्रुमम् ॥
भ्रान्ता भद्रा ये गणिताटवीषु फलाशयादौ विकलाश्च तेषाम् ।
कृते सुखेनेष्टफलः शिवाग्रे 'तापीपुरे'ऽरोपि सुकल्पवृक्षः ॥
संवर्द्धितो यः कृपया शिवेन फलप्रदोऽसाविति बालकानाम् ।
शिवः प्रसन्नो भवतीह येषां तेषां फलाप्तिर्नहि संशयोऽत्र ॥
पद्यं सबाधं यदि मत्कृतो चेद् ग्राह्यं च तत् साधुजनैर्विशोध्य ।
स्वर्वाहिनीसङ्गमतः कुवीथ्याः कुनिम्नगायाश्च यथैव तोयम् ॥
रविघनमितवर्षे विक्रमार्के प्रयाते (१७१२)
नगनगतिथितुल्ये (१५७७) शाककाले प्रवृत्ते ।
शरदि मनुजमाने मन्मथे चैषशुक्ले ॥
परिणतिथियुतचन्द्रे कुण्डकल्पद्रुमोऽभूत् ।

२७. ४६६०

कुण्डतत्त्वप्रदीप

आदि- नत्वाऽच्युतब्रह्ममहेशमूर्तीरिष्टेषु पूर्तेषु यदङ्गमाद्यम् ।
 सागं समं कुण्डमनेकभेदं ब्रूतेऽखिलं तद्वलभद्रसूरिः ॥ १

अन्त- कल्पे श्वेतवराहनाम्नि विदिते वैवस्वते सप्तमे
 सन्मन्वन्तरकेऽष्टविंशतितमे प्राप्ते कली सम्प्रति ।
 अन्हि स्वे प्रथमेऽखिलक्षितिपतिश्रीविक्रमार्कप्रभो-
 र्वर्षाशीतिसहैव षोडशशतातीते च काले त्विह ॥
 श्रीमदभूपतिशालिवाहनशकात् पञ्चाब्धित्थ्यन्विते
 श्रीसूर्ये गतसौम्यदिश्यथ वसन्तर्तौ च चैत्रे शुभे ।
 शुक्ले (गच्छति) पूर्णमासि हिमगौ सावित्र्यधिष्ये धृता
 कन्यास्थे हिमगावथावनियुते भेषे वुधे मीनगे ॥
 सिंहे देवगुरी सिते मकरगे कर्के शनी संस्थिते
 कन्यायां तमसि प्रकेतुषु भूपं संस्थे च पुण्येऽहनि ।
 सुव्यष्ट्यां करणे च सन्मिथुनके लग्नेऽभिजित्के मुह-
 र्तसत्कुण्डविचारणार्थमुदितो दीपः प्रकाशं प्रयात् ॥
 श्रीमत्स्तम्भसुपत्तने (स्थित) महेन्द्राम्भोधियोगे वसन् ।
 नानाशास्त्रविचारणे पटुमतिः श्रीगौड़रत्नाकरात् ॥
 जातो वत्सकुलाब्धिगीतकिरणः सत्कुण्डतत्त्वं स्फुटं
 शुक्लस्थावरसूनुरत्नवलभद्राख्यः प्रवक्ति स्वयम् ॥
 यः पूर्वं सुहिरण्यगर्भमतुलं रूपं दधन् वाग्निदाम्
 मध्ये भट्टसमाख्ययाऽभवदसौ वेदान्वितत्त्वं स्वराट् ।
 भूयः श्रीजयदेवदीक्षितमणिः सम्राट् सुविस्तारितुं
 साङ्गं कर्मपथं चरन् विजयते श्रीमन्मृसिहात्मभूः ॥
 येन श्रीभगवान् मखैर्वहुविधैः सन्तर्पितः शाश्वतो
 येन द्वादशसौत्यकाग्निचयनैः सद्वाजपेयादिभिः ।
 इष्टं तेन सुशास्त्रवेदविदुषां तत्त्वोपदेशाय चा-
 ज्ञप्तेनायमगाधसागरजलात् पूर्णेन्दुवत्काशितः ॥

२८. ४६७८

कुण्डप्रकरण (श्लोकप्रकाशिका)

रचना- 'रसगगनतिथिप्रमाणवर्षे गतवति विक्रमभूमिका [पा] लात्'
 लि.क. सदाशंकर, अम्बिकेश्वरसुत महाशंकरपीठ, जागेश्वरपठनार्थम् ।
 टोडा निवासी ।

३३. ४१२८

कुण्डार्क (मरीचिमालाटीकोपेत)

आदि- कृष्णाग्निगोत्रोद्भववृवसिन्धोः समुद्गतः विदुलपूर्णचन्द्रः ।
 तस्यात्मजः श्रीरवुवीरविज्ञः करोति कुण्डार्कमरीचिमालाम् ॥ १

अन्त- शाखाः सप्तभिरावेष्ट्य वेदी पञ्चभिरेव च ।
कलशं तु त्रिरावेष्ट्य स्थापायेद्देवताक्रमात् ॥ इति श्री०

४१. ४१८५ ग्रहशान्तिपद्धति

अन्त- त्रिशरगजकुसंख्ये (१८५३) विक्रमातीतकाले
रवितिथिबुधवारे माघवे कृष्णपक्षे ।
रचितमिदमनूपं खेटशान्तिप्रकारं
सुमतिभिरवलोक्य योद्धराजाह्वयेन ॥ १ ॥

इति श्रीग्रहशान्तिप्रकारः समाप्तिमगात् ।

लिपिकर्ता—पं० नाथूरामपुरी वचूणी^१मध्ये ।

१००. ४६४६ मूर्तिप्रतिष्ठाविधि

अन्त- व्योमाचलावसुनिशाकरनाम्नि वर्षे
पक्षे सिते तपसि रमाधवान्हिवारे ।
विधौ जयपुरे च गुरोर्निदेशात्
प्रालेखि पुस्तकमिदं गिरधारिशर्मा ॥ १ ॥

११३. ४६६४ रुद्रपद्धति (रुद्रार्चनमञ्जरी)

अन्त- संवद्विक्रमभूपस्य तर्कचन्द्रशते गते । (१६५७)
पञ्चरागोत्तरे वर्षे कार्तिक्यां च प्रकाशके ॥
औदीच्यज्ञातिविप्रेण श्रीत्यगलाख्यसूनुना ।
मालजिना कृता चेयं महारुद्रस्य पद्धतिः ॥

४-तन्त्रमन्त्रादि

१७. ४३२६ कृष्णचरित

आदि—देव्युवाच—भगवन् सर्व भूतेश सर्वात्मन् सर्वसंभव ।
देवदेव महादेव सर्वज्ञ करुणाकर ॥१॥
त्वयानुकम्पितेवाहं भूयोप्यद्यानुकंपय ।
त्रैलोक्यमोहनीमंत्रस्त्वया मे कथितः प्रभो ॥ २ ॥

अन्त- अथ वक्ष्यामि भर्गस्य मुनेश्वरि तमद्भुतम् ।

भुज्य नाम्नो मुनेः सोऽभूत् पुत्रः कनकसप्रभः ॥

तस्यास्यादचला भक्तिर्हरी गोपालरूपिणि ॥२५२॥

इति संमोहि (ह) नी (न) तंत्रे श्रीकृष्णचरितं समाप्तं ।

२४. ६२४७

गंधोत्तमानिर्णय

अन्त- सन्दिग्धसन्देहविनाशमुद्गरं चक्रे स ग्रंथं गुरुसेवको मुदे ।

एनं सुधीश्रीगुरुकुलधरे नाकश्वरः कौलवतां प्रपद्य हि ॥ १ ॥

सिंहस्थे क्षुमणी गुरौ घटगते मासे नभस्याभिधे ।

मंदे ब्रह्मतिथौ विधौ तिमिगते पक्षे शुभे मेचके ॥

शाके विक्रमभूपते परिमिते द्याभ्राद्रिजैवातृकै-

(१७०२) विप्रप्रार्थनयासमाप्तिमगमद् गन्धोत्तमानिर्णयः ॥

इति श्री कालेत्युपनामकगुरुसेवक कृतं गंधोत्तमा निर्णयः ।

गुर्जरश्रीलालेन कुंभावत्यां लिपीकृतम् ॥

बहुशास्त्रान्वितो ग्रंथो कौलग्रन्थविनिर्णयम् ।

३२. ४८६७

तंत्रलीलावती

आदि- कुंजे मञ्जुलमंजरीपुलकिते भृंगागनासंगते ।

साद्यत्कोकिलकाकलीविलपिते मन्दान (नि) लान्दोलिते ॥

सानन्दव्र [त्र] जसुन्दरीभिरभितो निःशेषमालिगिते ।

वन्दे सान्द्रपयोदसुन्दररुचि शृंगारिणं माधवम् ॥१॥

..... श्रीमत्सूरतनूद्भवो गुणनिधिः सत्कीर्तिचंद्राकरः

ख्यातो विक्रमकेसरी जगति यो दारिद्र्यनागांतकः ।

नानाशास्त्रविचारकेलिचतुरश्रीकर्णभूमि-

पतिर्द्वीरः संतनुते मितेन वचसा श्रीतंत्रलीलावती ॥६॥

आलोच्य तंत्राणि विचार्य सारं निष्कृष्य यत्नादिह साधकानाम्

विनोदहेतुर्गुरुवक्त्रगम्यं सिद्धे निदानं प्रकटीकरोति ॥७॥

अन्त- होमादावप्यशक्तश्चेद्गुह्यं जपमाचरेत् ॥

इदं तु पञ्चाङ्गपुरश्चरणविषयम् ।

अन्यत्र होमादीनामनुक्तत्वात् ।

इति श्रीतंत्रलीलावत्यां तृतीयः पटलः समाप्तः ।

३३. ७७११

तन्त्रस्थहृदय

आदि- श्रुतीनां तंत्राणां बहुलकथनात्पन्नगपुरे

समायाते मोहे द्विजवरगणानां च विदुषाम् ।

अतस्तैः सम्पृष्टे हरिहरविरिच्यादि चरणे

स्तुवन् काशीनाथो रचयति हि तन्त्रस्थहृदयम् ॥ ४ ॥

अन्त - सुखजनकं साधूनां बालमुकुन्ददीक्षितः स्वार्थम् ।
 व्यलिखत् परार्थमेतत् हृदयं यत् सर्वतंत्राणाम् ॥ १
 शिष्यकल्पतरुकल्पितकल्पं वेदबोधितविधिप्रभुमल्पम् ।
 शुद्धमार्गपरमं व्यलिखित् श्रीकृष्णदीक्षितमुतःस्वपरार्थम् ॥ २

४४. ७७०८

परशुरामकल्पसूत्र

अन्त- इति श्रीदुष्टक्षत्रियकुलकालान्तकरेणुकागर्भसम्भूतमहादेवप्रधानशिष्यश्रीमन्नारा-
 यणावतारमहामहोपाध्यायश्रीपरशुरामविरचितं कल्पसूत्रं समाप्तम् ।

७३. ४२६६

महाविद्यादशश्लोकीविवरण

आदि- अपक्षसाध्यवद्वृत्ति विपक्षान्वयि यत्र तु ॥
 साध्यवद्वृत्तितायुक्तं साद्ग्यते साद्ग्यवर्जिते ॥ १ ॥

अन्त- तदर्थमाकाशान्येति । तथापि द्रव्यत्वेन व्याघातस्तदवस्थ एव तदर्थमनित्यनित्या-
 वृत्तीति तथापि न विवक्षितसिद्धिरिति ।

७६. ४११८

रामपद्धति

आदि- श्रीगणेशाय नमः । ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १ ॥

अन्त- सर्पं दृष्ट्वा यथा लोके दुर्दुरा भयकंपिताः ।

ऊर्ध्वपुण्ड्रं कृतं तद्वत्कम्पन्ते यमकिंकराः ॥ ५६ ॥

इति श्रीरामानुजकृता श्रीरामपद्धतिर्वेदोक्ता सम्पूर्णा ।

लिपिकर्ता—विप्रजयराम ।

८३. ६७४२

रामपूजापद्धति

रचना काल—‘इन्दुवाणरसोर्वीभिर्वत्सरे याति वैक्रमे ॥ (१६५१)

कार्तिकमासिशुक्लायां द्वादश्यां भोमवासरे ।

काश्यां कृताऽनवद्येयं रामोपाध्यायसूरिणा ॥

राम एवापिता रामपूजापद्धतिरीदृशी ॥ १ ॥

८३. ५२३६

वसुधारा

आदि- संसारद्वयदैत्यस्य प्रतिहंन्निदिवावहे ।

वसुधारे सुधाधारे नमस्तुभ्यं कृपामए [यि] ॥

८४. ५२२५

वसुधारानाम धारणीकल्प

आदि- संसारद्वयदेन [न्य] स्य प्रतिहंन्निदिनवहे ।

वसुधारे सुधाधारे नमः तुभ्यां कृपामए (यि) ॥ १ ॥

अन्त- वसुधारा नामधारणी कल्पमित्यपि धारयं इदमेवोचद्भगवान्नात्तमनाः आयुष्मान्
 नन्दस्ते उभिक्षवस्ते च बोधिसत्त्वा सालसवति परिषत् सदेवमानुपासुरगंधर्वाश्च लोको
 भगवतोभाषितमस्यनदन्निति ॥ इति श्रीवसुधारानामधारणीसमाप्ता ।

११३. ४४६६ शिवपंचाक्षरी न्यासविधि

आदि- ऋषय ऊचुः-कथं पंचाक्षरीं विद्यां प्रभावो वा कथं वद ।

कथं क्रमो महाभाग श्रोतुं कौतूहलं हि तः (नः) ॥

सूत०॥ पुरा देवेन रुद्रेण शिवेन परमेष्ठिना ।

पार्वत्याः कथितं पूर्वं प्रवदामि समासतः

अन्त- गृहे जपं समं विद्याद् गोष्ठे शतगुणं भवेत् ।

नद्यां सहस्रगुणितं अनन्तं शिवसन्निधौ ॥

इति शिवपंचाक्षरन्यासविधिः समाप्तः ।

११६. ४२०५ सिंहसिद्धान्तसिंधु

आदि- यस्यांघ्रिद्वयपूजनेन निखिलाः सिद्धीर्लभन्ते नरा

वृद्धीः प्राप्य वसन्ति वेदमसु परास्तेषां समाः संपदः ॥

भक्तस्वान्तनितांतमोहदलने दक्षं विपक्षं वरं

विघ्नानां प्रणमाम्यनारतमहं तं श्रीगणाधीश्वरम् ॥ १

इति गोस्वामिश्रीजगन्निवासात्मजगोस्वामिश्रीशिवानन्दभट्ट-

विरचिते सिंहसिद्धान्तसिंधौ द्विनवतितमस्तरङ्गः ।

अन्त- चंद्रबन्धितुरगैकसंमिते वत्सरे सहसि शुक्लपक्षतौ ॥

शीतरश्मिसितवासरे शुभे ग्रंथ एष परिपूर्णतामगात् ॥ २

संवत् १८२५ वर्षे राजाधिराजश्रीमज्जयसिंहतनूजश्रीमन्माधवसिंहोपहृरेण स्वा
वलोकनार्थं लिखापितं पुस्तकमिदं श्रीमज्जयसिंहनिर्मिते जयनगराख्ये शुभपत्तने लेखोयं ले
त्रयाणाम् श्रीः श्रीः ॥

५-धर्मशास्त्र

१५. ४११३ आशौचदशक सभाष्य

आदि- मातुर्गर्भविपत्स्वद्यं त्रिदिवसं मासत्रयेतो यथा

मासाहं त्रिषु सूतिकावधिरतः स्नानं पितुः सर्वदा ।

ज्ञातीनां पतनादिजातमरणे पित्रोर्देशाहं सदा

नाम्नः प्राक् तदपैति सूतकवशाद्भ्रातुर्देशाहं परम् ॥ १

भाष्यादी- विज्ञानेश्वरविरचितमुनिजनवाक्यैमिताक्षरामध्यात् ।

आशौचदशकवृत्तिं वदति हरिहरिहरी नत्वा ॥ २

अन्त- “शूद्रो धन्यः कलिर्धन्य इति व्यासवाक्यात् । शूद्रधर्मसंस्काराणामाहतः । धन्यः
शब्दो मंगलवाचक इति । इत्याशौचदशकभाष्यं हरिहरविरचितं सम्पूर्णम् ।”

२४. ४३५१

कालनिर्णयसिद्धान्त सटीक

आदि— प्रणाम्यैकरदं देवं, शारदां गुरुमेव च ।

कालनिर्णयसिद्धान्तं व्याकुर्वे विशदोक्तिः ॥ १

अन्त— एतादृशे समये भुजनगरे द्विवेदिअग्निहोत्रिश्रीजयरामजेन रघुरामेण ग्रन्थस्येव व्याख्या बुद्ध्या मनीषया कृतेति ।

इति द्विवेद्यग्निहोत्रिश्रीजयरामसुतरघुरामविरचितो निर्णयसिद्धान्तः सटीकः समाप्तिमगमत् ।

२५. ६२४६

कृत्यरत्नावलि

रचनाकाल— भूतशून्य ऋषिचन्द्र मिते (१७०५ वि०) माघकृष्ण गहरी रविवारे ।

ग्रन्थपूर्तिमकरोत् किल रामः श्रीरमापतिसमर्पणबुद्ध्या ॥

प्रति पर पुस्तकके स्वामीका पश्चाल्लेख इस प्रकार है—

“श्रीवीसलनगरवास्तव्यनागरज्ञातीयत्रिपाठीकालात्मजग्रहलासूनुहरनाथतदात्मज भा. आ तत्सूनुत्रि० त्रिविक्रम तदात्मज त्रि० मोहनसूनु त्रि० प्राणनाथात्मजबालकृष्णस्येदं पुस्तकम् श्रावण शुक्लैकादश्याम् गुरौ संवत् १७५६ ।”

३२. ४१२६

तिथिनिर्णय

आदि— सा द्विविधा शुक्ला कृष्णा च । तत्र एकैककलावृद्धयवच्छिन्नः कालः शुक्लतिथि तत्क्षयावच्छिन्नः कालः कृष्णतिथिः ।

अन्त— योजनन्तदेवकृतमंथनसन्निबन्ध—

क्षीराब्धिजोथ कमलापतिना धृतो यः ॥

नित्ये निजे हृदि सतां प्रमुदे तु तस्य

तिथ्याख्यदीधितिरीयं स्मृतिकौस्तुभस्य ॥

इति तिथिनिर्णयः समाप्तः ।

४०. ४६८४

दानवाक्यसमुच्चय

आदि— पुराणश्रुतिवाक्यानि परामृश्य बुधैः सह ।

पुरुषोत्तमेन क्रियते दानवाक्यसमुच्चयः ॥

४३. ४६०५

धानतपद्धति

आदि— धानत इति भविष्योक्तेः । जातः कंसव(व)धार्थयित्यस्य परभागोऽत्र न संगृहीतः

अन्त— ऋक्षादिभिर्भाव्यमिति तच्चेष्टादिकमनुकर्तव्यमित्यर्थः ॥ ४३ ॥ इति समाप्तम् ।

४६. ४१८४

प्रायश्चित्तमयूख

आदि— नमामि भास्वत्पदपंकजंतच्छीनीलकंठोऽहमथ प्रकुर्वे ।

स्मृत्योपदेशान् गुरुशंकरस्य विनिर्णयं पापविशुद्धिहेतुम् ॥

अन्त- निशायां वा दिवा वापि यदज्ञानकृतं भवेत्
त्रिकालसंध्याकरणोत्तत्सर्वं प्रविणुश्यति ॥

५४. ४४४६

मदनपारिजात

आदि- प्रबालादिप्रस्थङ्गुतिनिचयपर्याग्रवपुषे
नमो विघ्नश्रेणीविघटनवरिष्ठाय महसे ।
जगत्प्रादुर्भावस्थितिलयनिरायासरचना-
विनोदासक्ताय प्रणतिफलसिद्धिप्रतिभुवे ॥ १
सोऽयं कौशिकवंशभूषणमणिश्रीभट्टविदेव्वरो ।
वेदस्मार्तमते नयेच सय (प) दे वाक्ये कृती वर्द्धते ॥ २

अन्त- “मतिर्येषां शास्त्रे प्रकृतिरमणीया व्यवहृतिः
परा शीलं श्लाघ्यं जगति ऋजवस्ते कतिपये ।
चिरं चित्ते तेषां मुकुरतलभूते स्थितिमिया-
दियं व्यासारण्यप्रवरमुनिशिष्यस्य भक्ति रिति ॥”

इति पण्डितपारिजातकहरिमल्लेत्यादिविरुदराजीविराजमानरय श्रीमदनपालस्य निबन्धे
मदनपारिजाताभिधाने-नवमः स्तवकः समाप्तः ।

५६. ४४४४

महाव्रतभाष्य

आदि- मधुसूदनं गुरुं चन्दे देवमातं त्रयीविदम् ।
कृष्णं विनायकं रामं हरिरामं हलायुधम् ॥ १
सप्त चैतान्गुरुत्वा तेषां वै पादपासवः ।
भाष्यं महाव्रतस्याहं कुर्वे गोविदसंज्ञकः ॥ २

अन्त- चातुर्विधकान् पुच्छ्यानीत्पुच्छसंस्थे चातुर्विधकानीत्यादिद्विरभ्यास्तेध्यायपरि-
समाप्त्यर्थः । इति शांखायनसूत्रभाष्येऽष्टादशोऽध्यायः ॥

६२. ४५१६

मानवधर्मशास्त्रसंहिता

आदि- स्वयम्भुवे नमस्कृत्य ब्रह्मणोऽमिततेजसे ।
मनुप्रणीतान् विविधान् धर्मान् वक्ष्यामि शाश्वतान् ॥ १

अन्त- इत्येतन्मानवं शास्त्रं भृगुप्रोक्तं पठन् द्विजः ।
भवस्याचारवान्नित्यं यथेष्टं प्राप्नुयाद्गतिम् ॥ १२६

इति श्रीमानवे धर्मशास्त्रे भृगुप्रोक्तायां संहितायां द्वादशोऽध्यायः ।

७६. ४३५०

रत्नसंग्रह

आदि- नत्वा रामं धनश्यामं शारदां च महेश्वरम् ।
बालबोधाय गोविदः कुरुते रत्नसंग्रहम् ॥ १

अन्त— धर्माधिकारिरामस्य निर्ममे तनुजः कृती ।

निबन्धान् वीक्ष्य निर्व[रव]ध्नाद् गोविन्दो रत्नसंग्रहम् ॥

इति श्रीधर्माधिकारिपण्डितरामसुतश्रीमद्गोविन्दपण्डितकृतौ ज्योतिषरत्नसंग्रहः समाप्तः ।

८८. ४५३३

शांखशास्त्र

आदि— ऋग्यजुर्वेदे नमस्कृत्य सृष्टिसंहारकारिणे ।

चातुर्वर्ण्यहितार्थाय शंखः शास्त्रमकल्पयत् ॥ १

अन्त— शंखप्रोक्तमिदं शास्त्रं योऽधीते द्विजपुङ्गवः ।

सर्वपापविनिर्मुक्तः स्वर्गलोके महीयते ॥

इति शांखे धर्मशास्त्रेऽष्टादशोऽध्यायः ।

८९. ४४४७

शांखायनसूत्र भाष्य

आदि— ॐ श्रीऋग्वेदमूर्तये नमः । ओम् । पुरुषस्य बुद्धिपूर्वकारिणोऽभ्युदयनिःश्रेयस-
मुपादित्सतं तच्च विशिष्टक्रियासाध्यं, सा च वैदिकी क्रिया नान्या, या काचित् कुत एतत्
इत्यादि ।

अन्त— शांखायनसूत्रस्य समं शिष्यहितेच्छया ।

वरदत्तसुतो भाष्यमानत्तीयोऽकरोन्नवम् ॥

इति शांखायनसूत्रभाष्येऽष्टमोऽध्यायः समाप्तः ।



६-पुराणकथामाहात्म्यादि

७७. ४२३०

भागवत

१. भागवत द्वादशस्कन्ध के १२वें व १३वें अध्याय पृ० १ से ३८ तक ।

२. नारायणकवच पृ० ३९ से ५६ तक

३. सप्तश्लोकी गीता पृ० ५७ से ६० तक

४. चतुश्लोकी गीता पृ० ६१ से ६३ ,,

५. एकश्लोकीरामायण पृ० ६४ से ६५ ,,

६. भारतसावित्री पृ० ६५ से ६७ ,,

७. रामरक्षाकवच पृ० ६८ से ८१ ,,

८. रामाष्टोत्तरनामस्तोत्र पृ० ८२ से ९९ ,,

(पञ्चपुराणांतर्ग)

९. नारदगीता पृ० १०० से १०१ तक, और

१०. इन्द्राक्षीस्तोत्र पृ० १०२ से ११३ तक हैं ।

६७. ६४८५

भागवतक्रमसन्दर्भटीका

अन्त- इति कलियुगपावनस्वभजनविभोजनप्रयोजनावतारश्रीश्रीभगवच्चैतन्यदेवचरणानु-
चरणाचार-विश्ववैष्णवरजसभाजनभजेनरूपसनातनानुशासनभारतीगैर्भे श्रीभागवतसंदर्भ-
क्रमसंदर्भो नाम सप्तमः सन्दर्भः, समाप्तश्चायं भागवतसन्दर्भः ।

१३३. ६४८८

भागवतसन्दर्भे तत्त्वसन्दर्भः प्रथमः

आदि- जयतां मथुराभूमी श्रीलरूपसनातनी ।

यी विलेखयतस्तत्त्वं ज्ञापिकी पुस्तकामिमाम् ॥ ३

कोऽपि तद्वान्धवो भट्टो दक्षिणद्विजवंशजः ।

विविच्याऽप्यलिखद्ग्रन्थं लिखिताद्वृद्धवैष्णवैः ॥ ४

तस्याद्यं ग्रन्थमालेख्यं क्रान्तव्युत्क्रान्तखण्डितम् ।

पर्यालोच्याथपर्यायं कृत्वा लिखति जीवकः ॥ ५

७-वेदान्त

२. ४५६४

अन्तःकरणबोध सविवृतिक

अन्त- पितृपादाब्जपरागधनिना मया श्रीवल्लभेन रचिता त्रि(वि)वृतिः पूर्णतामगात् ।

३. ४२४४

अनुस्मृति

आदि- शतानीक उवाच-

ॐ महातेजो महाप्राज्ञ सर्वशास्त्रविशारद ।

अक्षीणकर्मबंधस्तु पुरुषो द्विजसत्तम ॥ १

अन्त- ननु ध्यायति यो देही कथयामि च तत्सुखम् ।

सर्वबंधविनिर्मुक्तः परंपदमवाप्नुयात् ॥ ७३

इति श्रीमहाभारते विष्णुधर्मोत्तरे अनुस्मृतिः सम्पूर्णा ।

२३. ४१४१

आत्मबोध सटीक

आदि- टीका- शतमखपूजितपादं शतपथमनसाप्यगोचराकारम् ।

विकसज्जलरुहनेत्र (त्रं) उमाच्छायाङ्गमाश्रयं शम्भुम् ॥ १

मूल- तपोभिः[क्षीण[य]माना[णा]नां शान्तानां वीतरागिणाम् ।

मुमुक्षूणामपेक्षोयमात्मबोधो विधीयते ॥ १

अन्त- दिग्देशकालाद्यनपेक्षसर्वगं शीतादिहृन्नित्यसुखं निरञ्जनम् ॥

यः स्वात्मतीर्थं भजते विनिः क्रियः यः सर्ववित् सर्वगतोऽमृतो भवेत् ॥ ६७

टीका— शीतादिद्वन्द्वदुःखानि हरतीति शीतादिहृत् नित्यसुखं मोक्षानन्दप्रापकत्वाद् ।
इतरतीर्थेषु तद्विपरीतं दृ(द्र)ष्टव्यम् तस्मादात्मतीर्थे स्नातस्य न किञ्चिदवशिष्यत इति भावः ।

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यगोविन्दभगवत्पूज्यपादश्रीमच्छंकराचार्य-
विरचितात्मबोधप्रकरणं समाप्तम् ।

५८. ६०६१

नाटकद्वीपाख्याव्याख्या

श्रीगणेशाय नमः ॥

नत्वा श्रीभारतीतीर्थविद्यारण्यमुनीश्वरी ।

अर्थो नाटकद्वीपस्य मया संक्षिप्य वक्ष्यते ॥ १

चिकीर्षितस्य ग्रन्थस्य निःप्रयूहपरिपूर्णायाभिमतदेवतातत्त्वानुस्मरणलक्षणं मङ्गलमाचरन्
मन्दाधिकारिणामनयासेन निःप्रपञ्चब्रह्मात्मतत्त्वप्रतिपत्तयेऽध्यारोपापवादाभ्यां निःप्रपञ्चं
प्रपञ्च्यते शिष्याणां बोधसिद्ध्यर्थं तत्त्वज्ञैककल्पितः क्रमः इति न्यायमनुसृत्यात्मन्यध्यारोपं ताव-
दाह परमात्मेति—

परमात्माद्वयानन्दपूर्णः पूर्ण स्वमायया ।

स्वयमेव जगद्भूत्वा प्राविशज्जीवरूपतः ॥ १

देवाद्युत्तमदेहेषु प्रविष्टो देवताऽभवत् ।

मर्त्याद्यधमदेहेषु स्थितो भजति देवताम् ॥ २

अन्त— न तत्र मानापेक्षास्ति स्वप्रकाशस्वरूपतः ।

तादृग्व्युत्पत्त्यपेक्षाचेच्छ्रुति पठ गुरोर्मुखात् ॥ २५

यदि सर्वग्रहत्यागो शक्यस्तर्हि धियं व्रज ।

शरणं तदधीनोन्तर्बहिर्वेषोनुभूयताम् ॥ २६

इति श्रीनाटकद्वीपाख्या नाम दशमः ॥ १०

यद्यप्युक्तन्यायेन स्वात्मा परिशिष्यते तथापि तदापरोक्ष्या (य) यत्किं
पेक्षितमित्यत आह न तत्रेति तत्र हेतुमाह स्वप्रकाशेति नन्वात्मा प्रकाशतया स्वप्रकाशः नान्य-
नापेक्ष्यत इति व्युत्पत्तिसिद्धये मानमपेक्षितमित्याशङ्क्य श्रुतिरेवात्र प्रमाणमित्याह तादृ-
गिति ॥२५॥ एवमुत्तमाधिकारिणः आत्मानुभवोपायमभिधाय मन्दाधिकारिणस्तं दर्शयति
यदि सर्वेति बुद्धिशरणत्वे किं फलमित्यत आह तदधीन इति बुद्ध्या यद्यत्परिकल्पयते बाह्यम-
भ्यन्तरं वा तस्य तस्य साक्षित्वेन तदाधीनपरमात्मा तथैवानुभूयतामित्यर्थः ॥२६॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीभारतीतीर्थविद्यारण्यमुनिवर्यकिङ्करेण श्रीराम-
कृष्णाख्यविदुषां विरचिता नाटकद्वीपाख्या नाम दशमः ॥१०॥

११-ज्योतिष

५. ४४४२ अद्भुतसागर

इति श्रीपाकसमयाद्भुतावर्तः ॥ इति श्रीमहाराजाधिराजनिश्शंकशंकरश्रीमद्वल्लाल-
सेनदेवविरचित अद्भुतसागरः समाप्तः ।

पुस्तकके अन्तमें इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न मानसिंहादि राजाओंका वंशवर्णन है ।

लिपिकर्ता—पुरोहित सदाराम, ठाकुर भैरूंसिंघजीपठनार्थम् ।

लिपिस्थान—शिवपुरी ग्राम । संवत् १७८७ माघ शुक्ला १ बुधवार ।

६. ४६३० अद्भुतसागरी प्रथम खण्ड

पूर्ण ग्रंथकी पत्र संख्या ऊपर ३६० लिखी है किन्तु यह प्रति अपूर्ण है । प्रतिमें ऊपर
"पुस्तकमिदं सुक्लसदासुखजीकस्य" ऐसा लेख है ।

७. ४३१४ (अयनांशादिकरणविधि)

इस गुटके में उपर्युक्त ग्रन्थके अतिरिक्त शीघ्रबोध करणकुतूहल, अनिचारफल, वंध्या-
'भेद, सन्तानार्थ औषधविधिके दोहे व यन्त्र बीच बीचमें दिये हुए हैं । दोहे उपयोगी हैं ।
२४ पृष्ठ तक अयनांशादिकरणविधि है । फिर १ पृष्ठ से ७५ पृष्ठ तक शीघ्रबोध है ।
इसके बाद प्रकीर्ण है ।

१४. ७०६१ आकाशपुरुषचित्र

यह सुपुष्पाचक्र है, जिसमें पुष्पाकारमें सुपुष्पा नाड़ीमें नक्षत्रमालाकी स्थापना
करके बताया गया है । चित्र अध्येतव्य है ।

५०. ४१०४ ग्रहणपद्धति

आदि— श्रीमद्देवर्द्धनधरं नत्वा सौरमतानुगाम् ।

स्वत्पानत्पार्थयुतां कुर्वे ग्रहणपद्धतिम् ॥ १

अन्त— नखधृतिविक्रमवर्षे काम्यकवनवासिनन्दरामेण ।

रचितोपरागपद्धतिरियमतिहृद्या ग्रहज्ञानाम् ॥ २४

इति श्रीमिश्रनन्दरामविरचिता ग्रहणपद्धतिः समाप्ता ।

रचनाकाल—१८२० संवत् । स्थान—काम्यकवन ।

६१. ४३६२ गणितनाममाला

आदि— गणितस्य नाममालायां वक्ष्ये गुरुप्रसादतः ।

वालानां सुखबोधाय हरिदत्तो द्विजाग्रणीः ॥ १

अन्त— कुण्डलज्ञानविप्रेण हरिदत्तेन धीमता ।

नाममाला कृता श्रेष्ठो देवगुर्वीः प्रसादतः ॥ ३०

श्रीश्रीपतिसुतेनैषा बालानां बुद्धिवृद्धये ।

गणितस्य नाममाला या रचिता शास्त्रसंग्रहे ॥ ३१

इति श्रीज्योतिषनाममालेयं संपूर्णम् ।

६३. ४७७१ (१) गणितलीलावती आदि

लिपिस्थान—१६७० शाके विभवनासंवत्सरे वसन्तर्तौ वैशाखमासे शुक्लपक्षे नवम्या-
मिन्दुवासरे सप्तर्षिक्षेत्रमध्ये लिखितम् ।

ग्रंथके प्रारम्भमें मराठी भाषामें गजेन्द्रमोक्ष आदि स्तोत्र हैं ।

७८. ४६७२ चमत्कारचिन्तामणि

अन्त— दधीचे पुरे लाटहासे पुराणां गणाच्छ्रीहरेः स्थापितः स्थानपालः द्विजोऽचीकरात्सुन्द-
रालं द्विजन्मा नृपाणामपि नाम चिन्तामणीयः ।

लिखितं देराश्री लीलाधर पुरुषोत्तमसुत कंकनपुरमध्ये ।

६६. ४२८६ ज्योतिषरत्नमाला

आदि— प्रभवविरतिमध्यज्ञानवन्द्या नितान्तं
विदितपरमतत्त्वा यत्र ते योगिनोऽपि ।
तमहमिहनिमित्तं विश्वजन्मात्ययाना—
मनुमितमभिवन्दे भग्नहैःकालमीशम् ॥ १
विलोक्यगर्गादिमुनिप्रणीतं
वराहलत्नादिप्रपञ्चशास्त्रम् ।
दैवज्ञकण्ठाभरणार्थमेपा—
विरच्यते ज्योतिषरत्नमाला ॥ २

अन्त— सुवृत्तया श्रीपतिदृग्ध्यानया
कंठस्थितज्योतिषरत्नमालया ।
अलक्षणोप्यर्थपरिच्युतोप्यलं
सभासु भूम्नां गणको विराजते ॥ १३

इति श्रीश्रीपतिविरचितायां ज्योतिषरत्नमालायां प्रतिष्ठाप्रकरणं विशतितमम् ।

६७. ४४०५ ज्योतिषरत्नमाला

अन्त— आमदण्डे चन्द्रा उत्तरउ श्रीदुर्गाजीराज्ये रामपुरानगरे श्रीकाशद्रावा
भट्टारक श्रीगोइंदपत्पट्टे आचार्य श्रीकान्हाउपाध्यायशिवदासलिखितं स्वशिष्यपरंपरावाचनार्थं
तथा स्वकार्यार्थं तथा च परोपकारार्थं उच्छेकेन लिखिता ।

१०८. ४४०७ ज्योतिषसार संग्रह

आदि— लग्नं लग्नपतिर्बलान्वितवपुः केन्द्रत्रिकोणे शिवे
पृच्छाजन्मविवाहयानतिलके कुर्वानृपतिः ध्रुवम् ।

सच्छीलं विभवान्वितं गतरुजं मुक्तातपत्रान्वितम्
जातो निम्नकुले विभूतिपुरुषं शसन्ति गर्गादयः ॥

अन्त- सत्वेन जायते सिद्धि रजसिद्धिगुण फलम् ।
तामसे फलता नास्ति शिवस्य वन्दनं तथा ॥

१०६. ४४१० न्योतिषसारसंग्रह

आदि- यदा भेषे गुरुद्वयं करोति तदा दुर्भिक्षमनावृष्टि

अन्त- देशा मार्गे पुरे ग्रामे मंत्र औषध देवता ।
स्वामिनो भूमिकार्येषु नवस्थाने निरीक्षयेत् ॥

११८. ६३६६ जन्मपत्रीप्रकारः

यह ग्रंथ मारवाड़में रचित है क्योंकि चरखंडे-जोधपुर, जालोर, सोजत आदि स्थानों के दिये गये हैं ।

१२०. ५२१५ जन्मपत्रीपद्धति

यह प्रति राजस्थानमें ही लिखी गई है । कारण यह है कि राजस्थानके प्रायः सभी नगरोंके अक्षांश इसमें विद्यमान है ।

१७४. ६४२० ताजिकसारवृत्ति

वर्षे शैलहयाङ्गभूपरिमिते मासे तथा फाल्गुने
पक्षे शुभतरे तिथी दशमिते श्रीखेरवातत्पुरे
श्रीमति विष्णुदासनृपती वैरीभवृन्दे हरी
वृत्तिः[त्तिः] श्रीगुरुहर्षरत्नकृपया सामन्तनामाऽकरोत् ।

१६१. ५८३० नरपतिजयचर्या

पूर्णामित्रर्क्षभौमे दिनपतिवृषभे माधवे शुक्लपक्षे
नन्दानन्दाष्टचन्द्रे गमयति तदा सोमवंशावतंसः ।
देशेऽलकक्षिमध्ये विदितखरपुटीराममिश्रो लिलेख
पाठार्थं पाठयोग्यं कलयति तदा श्रीजयपालसिंहः ।

१६६. ४८५१ नवरोजप्रकाश

आदि- हैयतजीजमिजस्तिरोमकयवनादिगदितशास्त्राणाम् ।
मतमवलोक्याशेषं वक्ष्ये किञ्चित्फल रम्यम् ॥

अन्त- श्रीगौरोपतिनगरे यवनेशोत्साहमानद सुफलम् ।
शिवलालपाठकेन प्रकाशितं शिष्यजनतुष्ट्यै ॥
अर्द्धोदयेन्दे भूतायां माघशुक्लैनिवामरे ।
सम्पत्तिरामतोषाय मणीरामः समालिखत् ॥

२०१. ७०८८ नष्टोद्दिष्टविधि

अन्त- विसमजसकिरणधवलिय महियल सुरनिवहममिपय
पयजुअत्तं तिहुअरासिरिवर कुलहर मराहर गुणनिलय जिणजयहि ।

२०६. ७०१०

नारचन्द्र (द्वितीयप्रकरण)

लिपिस्थान—सारसामध्ये महोपाध्यायगुरुसुन्दरशिष्यकर्मचन्द्रशिष्य चिरं० दीला-
पठनहेतवे ।

२०७. ४३५२

नारचन्द्रयंत्रकोट्टार सटिप्पण

आदि— अर्हंतं जिनं श्रीनं नत्वा नारचन्द्रेण धीमता ।

सारमुद्धियते किंचित् ज्योतिषक्षीरनीरधेः ॥ १

अन्त— इति नारचन्द्रटिप्पणके श्रीसागरचन्द्रसूरिकृते द्वितीयं प्रकीर्णकं समाप्तम् ।

इति श्रीनारचन्द्रस्योभयप्रकीर्णके शतकसार्द्धशत १५० यंत्रकाणि समाप्तानि ।

२२८. ४१८३

प्रश्नमार्ग

आदि— श्री गुरुभ्यो नमः । मध्याटव्यधिपं दुग्धसिन्धुकन्याधवं धिया ।

ध्यायामि साध्वहं बुद्धेः शुद्धयै वृद्धयै च सिद्धये ॥ १

अन्त— कुम्भपूर्ति तिथिभानुचन्द्रमोवृद्धिरिप्फरिपुचन्द्रमंदहक् ।

धान्यवृद्धिशुभदत्रवृत्तिका शक्रनक्रवणिकायराशयः ॥ ३६

विंदुसंल्लिपिविसर्गवीचिकाश्रृं गवंद्विपदहीनदूषणं ।

हस्तवेगजमवुद्धिपूर्वकं क्षन्तुमर्हति समीक्ष्य सज्जनः ॥

श्रीसांवशिवापणस्तु । इति प्रश्नमार्गस्समाप्तिमगमत् ।

२५५. ४४५२

पञ्चपक्षी प्रश्न

आदि— अभिवंद्य महादेवं सर्वशास्त्रविशारदम् ।

भविष्यदर्शबोधाय पप्रच्छुर्मुनयो मुदा ॥ १

अन्त— भोज्ये च मासे गमने च पक्षे राज्ये दिनानित्ययनंच स्वप्ने

मृत्येषु वर्षं सुखता विचार्या कालप्रमाणं मुनयो वदन्ति ॥

ग्रन्थाद्ध ५५५६ 'पञ्चपक्षी' में यह श्लोक निम्नप्रकार है—

भुवते तु मासं गमने तु पक्षं राज्ये क्षणानीत्ययनंच स्वप्ने

मृतेषु वर्षं शकुनाख्यया च कालप्रमाणं मुनयो वदन्ति ॥

२६८. ४८६३

पद्धतिप्रकाश

आदि— नन्देन्दुवर्षेण मया कृतोऽयं ग्रन्थो रवेः पादयुगप्रभावात् ।

शाके नगाम्भोधिशरेन्दु (१५४७) तुल्ये प्राचां प्रबंधान्यभिभाष्य सम्यक् ॥ १०४

२८२. ४६७८

पैतामही सारिणी

अन्त— आसीत्पार्थपुरे वरे द्विजन (व) रः श्रीगोपिराजाभिधः ।

सिद्धान्ताभिनवोद्यमैककुशलो दैवज्ञचूडामणिः ॥

तज्जः श्रीपतिरग्रणीः कृतिविधौ मिद्धान्तपारंगमः ।

तत्सूनुर्मधुसूदनाख्यगणकः पैतामहीं निर्ममे ॥

२८६. ४२७७

बालावबोध

अन्त- अर्द्ध प्रहरकः त्याज्यः चतुर्थः सप्तमस्तथा
द्वितीयः पंचमो घट्टः षष्ठो रविपूर्वकः ॥

आदि- उदयाचलपर्यन्तामस्ताचलमहोमिमां ।
विख्यातो बालबोधोऽयं मुञ्जादित्यो ॥
पूर्वसागरपर्यन्ता पश्चिमोदधिसंयुता
बालमाक्रमते नित्यं समां तु दिनेश्वरः ॥

इति श्री मुंजादित्यविरचितं ज्योतिषशास्त्रे बालावबोधाव्यम् ।

२६४. ७११२

बालबोध

अन्त- इति श्रीगोविन्दपदारविन्दमकरन्दवेदाङ्गपाठदक्षिणहिसारनगराधिवासश्रीसुन्दर-
शर्महृदयानन्द-श्रीहरिकर्णकृते बालबोधमकरन्दपद्धतिमणी ग्रहाणामुदयाधिकारः पंचमः ।

२६६. ६२१२

बीजवासनाभाष्य

अन्त- इति श्रीमन्मार्तण्डात्मजप्रकटस्थगोकुलग्रामनिवासी श्रीमत्प्रचण्डपाण्डित्य-
मण्डितोदण्डपण्डितमण्डलीमण्डनबलभद्रभट्टात्मजमाधवभट्टसुतव्रजनाथभट्टसूनुना गणकमण्डली-
मण्डनेन ज्योतिर्विनिर्दितांततोषहेतवे विरचितं बीजवासनाभाष्यं सफ(क)लमन्देहापनोदनवसं
श्रीमत्प्रचण्डप्रतापसार्वभौमरामसिंहराज्येऽम्बावत्यां अम्बिकेश्वरपुर्यामंकाभनृप १६०६ मिते
शके चैत्रशुक्लपक्षे गुरौ सप्तम्यां समाप्तिमगमत् । संवत् १७७६ शाके १६४१ प्रथम
आश्विनकृष्णा १२ सोमे लि० इन्द्रमणिना ।

२६८. ४१८६

बृहज्जातक

आदि- मूर्तित्वे परिकल्पितः शशभृतो वर्त्मा पुनर्जन्मना-
मात्मेत्यात्मविदां क्रतुश्च यजना(तां)भर्ता महः ज्योतिषाम् ।
लोकानां प्रलयोद्भवस्थितिविभुश्चानेकधा यः श्रुतौ ।
वाचं नः त्वनेककिरणास्त्रैलोक्यदीपो रविः ॥ १

अन्त- दिनकरमुनिगुरुचरणप्रणिपातकृतप्रसादमतिनेदं ।
शास्त्रमुपसंग्रहां नमोऽस्तु पूर्वप्रणेतृभ्यः ॥ १०

इति वराहमिहिरकृती बृहज्जातके उपसंहाराख्यः षड्विंशोऽध्यायः ।

३३६. ४२८४

मयूरचित्र

आदि- अथ मयूरचित्रं लिख्यते ।
यस्योदयास्तसमये सुरभुक्कुटनिषृष्टचरणकमलोपि ।
कुरुतेऽञ्जलिं त्रिनेत्रः स जयति घाम्नां निधिः सूर्यः ॥

३४६. ४२८३

माससारिणी

आदि- सूर्ये स्पष्टअवधि ५२ ।

प्रतापतापितारिवर्गधर्मावतारश्री ५ माहाराजाधिराजश्रीमदनूपसिंहप्रमोदितश्रीमहीमहेंद्रमौलि-
मुकुटरत्नकिरणनीराजितचरणकमलश्रीसाहिजहां सभामंडंगसंगीतराजजनार्दनभट्टांगजानुष्टुप-
चक्रवर्तिसंगीतराजभावभट्टविरचिते श्रीअनूपसंगीतरत्नाकरे रागाध्यायो द्वितीयः समाप्तः ॥
२ छ॥ छ॥ ॥ छ॥ छ॥]

२. ४१६६

रागमाला

आदि— नत्वा शम्भुपदाम्बुजं तदनु च श्रीशैलकन्यापद-
द्वन्द्वं विघ्ननिवारकं च सततं तं वारणास्यं स्मरन् ।
रागाणां किलभैरवादिसुमनोमोदप्रदानां ब्रुवे
षणां लक्षणरूपगानसमयान् संगीतवित्तुष्टये ॥ १

अन्त— रागाणां भैरवादीनां षणां रूपनिरूपणम् ।
हरिदत्तबुधप्रीत्यै व्रजनाथेन सूचितम् ॥ २

श्री पञ्चनदान्वयसम्भूतगोकुलस्थव्रजनाथदीक्षितविरचिता हरिदत्तभट्टप्रीत्यै रागमाला
समाप्ता । लिपिकर्ता—पुरुषोत्तम आचार्य ।



१४—कामशास्त्र

३. ४४२६

रतिरहस्य

आदि— येनाकारिप्रसभमचिरादृत्तनारीश्वरं वं
दग्धेनापि त्रिपुरजयिनो ज्योतिषा चाक्षु
इन्दोर्मित्रं सजयति मुदां धाम वामप्रच
देवः श्रीमान् भवरसभुजां दैवतं चित्तजन्मा ॥ १

अन्त— सुरतरुतगरवचागरुमृगमदमलयजगन्धरसधूपः ॥
वेश्मनि विहितस्तेषां परस्परं प्रीतिमातनुते ॥७१॥

इति सिद्धपटीय पण्डितश्रीकोककृतौ रतिरहस्ये योगाधिकारो दशमः परिच्छेदः ॥

४७७५

रतिरहस्य

अन्त— शाके वेदनगेषुचन्द्रमितिगे संवत्सरे नन्दने
माघे मास्यथ धर्मदैवततिथौ सौरस्यवारे पुनः ॥
तापीतीरनिवसिना द्विजवरेणालेखि वै पुस्तकं ।
शिष्याणां पठनाय वामलधियां सौख्याय शैवेन यत् ॥

१५-काव्य नाटक चम्पू (१)

२. ४३७६ अर्ध्यात्मरामायण सुन्दरकाण्ड सटीक

आदि- श्रीमहादेव उवाच- शतयोजनविस्तीर्ण समुद्रं मकरालय
लिलङ्घयिषुरानन्दसन्दाहो मारुतात्मजः ॥ १

अन्त- यत्पादपद्मयुगलं तुलसीदलाद्यै-
स्सपूज्य विष्णुपदवीमतुलां प्रयान्ति ॥
तेनैव किं पुनरसौ परिरब्धमूर्ति-
रामेण वायुतनयः कृतपुण्यपुञ्जः ॥ ६४

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे सुन्दरकाण्डे पंचमः सर्गः ॥

३. ४५२० अर्ध्यात्मरामायणसेतु

अन्त- इति श्रीमत्सकलराजविपदुद्धारणसमर्थेत्यादिविरुदावलीविराजमानस्य हिम्मति-
वर्मणः पुत्रस्य श्रीरामवर्मणः कृतावध्यात्मरामायणसेतावुत्तरकाण्डे नवमः सर्गः ॥समाप्तः॥

१०. ४३३१ अनर्घराघव

आदि- ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः ॥
निष्प्रत्यूहमुपास्महे भगवतः कौमोदकीलक्ष्मणः ।
कोकप्रीतिचकोरपारणपटुर्ज्योतिष्मती लोचने ॥
याम्यामर्धविबोधमुग्धमधुरश्रीरर्धनिद्रायतो ।
— नाभीपल्लवपुण्डरीकमुकुलः कंवाः सपत्नीकृतः ॥१

अन्त- दृष्ट्वा तुष्यत्पुलत्यो जगति विजयते जानकीजानिरेकः ।
इति निष्क्रान्ताः सर्वे । इति दशग्रीवनिग्रहो नाम षष्ठाङ्कः समाप्तः ।

१२. ६४०२ अन्यापदेश शतक

लिपिकर्ता-अभयराम दाहूपंथी नागपुर-

लेभेऽयं शुभदो तपोभिरमलैः श्रीपद्मनाभात्सुतं ।
यद्देशो मिथिलाखिलावनितलालंकारचूडामणिः ॥
तेनेदं मधुसूदनेन कविना विद्यावता निर्मितं,
श्लोकानां शतकं मुदे सुकृतिनामन्यापदेशाव्हयम् ॥ १५

१४. ४३२५ अमरुशतक सटिप्पण

अन्त- प्रासादे सा दिशिदिशि च सा पृष्ठतः सा पुरः सा ।
पर्यंके सा पथि पथि च सा तद्वियोगादुरस्य ॥

हंहो चेतः प्रकृतिरपरा नास्ति मे कापि सा सा ।

सा सा सा सा जगति सकले कोऽयमद्वैतवादः ॥ १०२

इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितममरुशतकं समाप्तमगमत् ।

१८. ४३३०

ऋतुसंहार

आदि— प्रचण्डसूर्यः स्पृहणीयचन्द्रमाः ।

सदावगाहक्षतवारिमंचयः ॥

दिनांतरम्योऽग्युपशांतमन्मथो ।

निदाघकालः समुपागतः प्रिये ॥ १

अन्त— आलब्धचन्दनरसाः स्तनशक्तहाराः ।

कंदर्पदर्पशिथिलीकृतगात्रयष्ट्याः ॥

मासे मवौ मधुरकोमलभृंगनादै-

नीर्यो-हरन्ति हृदयं प्रसभं नराणाम् ॥ २४

इति श्रीविशेषकाव्ये श्रीकालिदासकृतौ ऋतुसंहारे वसन्तवर्णनो नाम षष्ठः सर्गः समाप्तः
तत्समाप्तो समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

३०. ४३६५

कुमारविहारशतक

आदि— तेजः पुष्पाणु पार्श्वो दुरितविजयि वः शाश्वतानन्ददीजं ।

संक्रान्तः सप्तरत्न्यां भुजगपतिफणाचक्रपर्यकभाजि ॥

कमाण्यष्टौ समन्तात्रिभुवन भवनोत्संगतानां जनानां ।

यश्चेत्तुं तुल्यकालं वहति निजतनुक्लृप्तसामान्यरूपाम् ॥ १

अन्त— आस्तां तावन्मनुष्यः प्रकृतिमलिनधीः शाश्वतालोकचक्षु-

र्वक्तुं वक्तृश्चतुर्भिविधिरपि किमलं तस्य सौन्दर्यलक्ष्मीम् ।

स्त्रीणां शेषाभिलाषः परमलयमयं स्थानमाप्तोऽपि यस्मि-

न्नास्थां श्रीपार्श्वनाथस्त्रिभुवनकुमुदारामचन्द्रश्चकार ॥ ११६

इति विहारशतकं समाप्तम् ॥छ॥छ॥

४१. ७७६४

कृष्णगणोद्देशदीपिका

अन्त— शाके दृशश्चशक्रे नभसि नभोमणिदिने षष्ठ्याम् ॥

व्रजपतिसद्मनि राधाकृष्णगणोद्देशदीपिकाऽदीपि ॥

६५. ५६०२

धर्मशर्मभ्युदयम्

आदि— श्रीनाभिसूनोश्चिरमघ्नियुग-

नखेन्दवः कौमुदमेधयन्तु ॥

यत्रानमन्नाकिनरेन्द्रचक्र-

चूडाश्मगर्भप्रतिविम्बमेणः ॥ १

अन्त- अभजदथ विचित्रैर्वाक्यसूत्रोपचारैः
प्रभुरिहहरिचन्द्राराधितो मोक्षलक्ष्मीम् ॥
तदनु तदनुयायी प्राप पर्यन्तपूजो-
ऽपचितसुकृतराशिः स्वंपदं नाकिलोकः ॥ १८५

इति महाकविश्रीहरिचन्द्रविरचिते श्रीधर्मशर्माम्बुदये महाकाव्ये श्रीधर्मनाथनिर्वाणगमनो
नाम एकविंशतितमः सर्गः पूर्णः । कविवंशवर्णनं तत्रैव-

मुक्ताफलस्थितिरलंकृतिषुप्रसिद्ध-
स्तत्राद्रदेव इति निर्मलमूर्तिरासीत् ॥
कायस्थ एव निरवद्यगुणग्रहस्त-
न्नैकोऽपियः कुलमशेषमलं चकार ॥ २
लावण्याम्बुनिधिः कलाकुलगृहं सौभाग्यसद्भाग्ययोः ।
क्रीडावेशमविलासवासवलभीभूषास्पदं सम्पदाम् ॥
शौचाचारविवेकविस्मयमहीप्राणप्रिया शूलिनः—
शर्वाणीव पतिव्रता प्रणयिनी रथ्येति तस्याभवत् ॥ ३
अर्हत्पदाम्भोरुहचंचरीक-
स्तयोः सुतः श्रीहरिचंद्र आसीत् ॥
गुरुप्रसादादमला दभूवुः
सारस्वते स्रोतसि यस्य वाचः ॥ ४
स कर्णपीयूषरसप्रवाहः
रसध्वनैरध्वनि सार्थवाहः ॥
श्रीधर्मशर्माभ्युदयाभिधानं
महाकविः काव्यमिदं व्यधत् ॥ ७

६६. ४०६२ नलोदय टीका

आदि- नत्वा हरिकमलशंखगदासिपाणि ।
लक्ष्मीनखांकविलसद्दहृदयं दयाव्धिम् ॥
वागीश्वरीमथ गुरुंश्च परापरेषां ।
टीकां मनोरथकविः स्वधिया विधत्ते ॥ १
नलोदयपदाबोधोधाद्वुधाः खेदं विमुञ्चत ।
मनोरथकृतां टीकां शुद्धां सम्प्रति पश्यत ॥ २

अन्त- नलोदयमहाकाव्यटीका विबुधचंद्रिका ।
आचन्द्रतारकं यावद्भूयादानन्दवर्द्धिनी ॥ ३
एकेन यमकालापो निस्तरितुं सुदुःशकः ।
तस्मात्सन्तो दयावन्तः स्निह्यन्तु मयि निर्भराः ॥ ३

इति श्रीमन्मनोरथविरचितायां विबुधचन्द्रिकायां नलोदयमहाकाव्यटीकायां च
आश्वासः ॥ ४ ॥ समाप्तः ॥

७४. ४३८८

नृसिंहचम्पू

आदि— कनकरुचिदुकूलः कुण्डलोत्लासिगल्लः
 शमितभुवनभारः कोऽपि लीलावतारः ॥
 त्रिभुवनसुखकारी शेषधारी नृसिंहः
 परिकलितरमांगो मंगलं नस्तनोतु ॥ १

अन्त— इति श्रीमन्महाराजधिराजस्पृहणीयशीर्योदार्याद्यनेकानवद्यपद्यगुणगणविराजमान-
 श्रीमद्रुमापतिराज्योद्योतितभट्टकेशवविरचिते नृसिंहचम्पूकाव्ये पञ्चमः स्तवकः ॥ ५ ॥

८६. ६२४४

महाभारत सभापर्व

लिपिकर्तुर्गोवर्धनस्य ग्रन्थान्ते वंशवर्णनं यथा—

गोविन्दात्मजजीवनाथनिपुणः शास्त्रप्रवाहागमे ।
 तेषामात्मजरुद्रभक्तिनिपुणः ख्यातो हि शैवागमे ॥
 सोऽयं लेखितग्रन्थमेव सुधियो गोवर्धनख्यातिवान् ।
 पाठे चात्मपरार्थमेव सकलं तस्माच्छिवप्रीतये ॥ २
 अस्मत्पितामःतुलपुण्यमूर्ते-
 विख्यातनाम्ना हरजीति संज्ञे ॥
 गोवर्धनोऽहं इदमाललेख
 प्रसाद तेषां गुरुमातुलस्य ॥ ३
 वर्षातीते वेदगोभूषचेति ।
 मासेऽपाङ्गे पूर्णिमाभूमिजेति ॥
 ग्रन्थेऽलेखी विप्रगोवर्धनेति ।
 तीर्थेषुण्ये क्षेत्र भूतेश्वरेति ॥ ४

सं० १६६४ वर्षे आपाङ्गमासे शुक्लपक्षे पौर्णमास्यां भीमवासरे च ठाकुरगोविन्दसुतठाकुर-
 जीवनाथात्मजगोवर्धनेन लिखितं इदं पुस्तकं मथुरामध्ये श्रीमहान्हरजीपितामातुलप्रसादेन ।

१०८. ६४७१

महाभारत कर्णपर्व

अन्त— हुताशनान्गाद्रिकुभिर्मिते शके ।
 श्रीविक्रमार्कस्य च कार्तिके सिते ॥
 त्रयोदशी भीमदिने समाप्त-
 मिदं तु शास्त्रं हरिलालमिश्रात् ॥
 लिखनत इति शेषः । दाँता मध्ये ।

११८. ६१६६

महाभारत मोक्षपर्व

अन्त— मनरामेणालेखि नभोत्यशरारे धृत्यब्दशके भारत्यां सेश जगति शमस्तु ।

१२५. ४३६१

मुद्राराक्षस सटीक

आदि— सिद्धारुणगण्डमण्डलमदामोदभ्रमद्भृंगिका ।
 भंकारेण कलेन कर्णमुरजध्वानेन मंत्रेण च ॥

तत्तौर्यत्रिकरीतिमेति शिरसश्शश्वन्मदान्दोलनं ।

यस्य श्रीगणनायकः स दिशतु श्रेयांसि भूयांसि वः ॥ १

अन्त- वाराणान्यर्तुमहीसंख्यामितेव्दे जयनामके ।

हुंदिना व्याकृतं जीयान्मुद्राराक्षसनाटकम् ॥

रचनाकाल—शाके १६३५ फाल्गुने । रूपजित्तनयहरदत्तस्येदं पुस्तकम् ।

१३५. ४३६०

मेघदूत सटीक

अन्त- आसीन्निर्मलवंश्यतरणिस्वाचारचितामणिः-

सद्विद्यासरणिर्भवावितरणिः श्रीसोमनाथो द्विजः ॥

सूनुस्तस्य धनेश्वरो व्यरचयद्वीकां शिशूब्दोधिनीं ।

काव्येऽस्मिन् सरसप्रबंधविषमे श्रीमेघदूतामिधे ॥ १

१३६. ५१५६

मेघदूत सटीक

अन्त- श्रीवैकुण्ठाभिधगुरुवचोलब्धतत्त्वावबोधो ।

वाराणस्यां विबुधनिकरालंकृतायां यतीन्द्रः ॥

पूर्णानन्दश्चतुररचनां मेघदूतस्य टीकां ।

काव्यच्छन्दोनिगमनिपुणो बालबुद्धयै व्यतानीत् ॥ १

१५६. ७३०२

रघुवंशटीका

अन्त- चन्द्रवसुसम्बतसमं बन्धुवाण परमानये ।

आसोज सुदि एकादशी भृगुवार इह जानिये ॥

लि.क. खुशालसागरगणि मेदपाटदेशे वैराटमंडले संग्रामगढ़नगरे तथा टुकरवाडग्रामे ।

१६३. ७०८३

राधाकृष्णप्रेमसम्पुटकाव्य

अन्त- षट्शून्यत्वंवनिभिर्गुणिते तपस्ये ।

श्रीरूपवाङ्मधुरिमापृतपानपुष्टः ॥

राधागिरीन्द्रधरयोः सरसोस्तटान्ते ।

तत्प्रेमसम्पुटमविन्दत कोऽपि काव्यम् ॥

१७१. ४४००

रामहनुमन्नाटक

आदि- श्रीरामे दशरथेन कैकेयी वाक्पात्रा वनं प्रति प्रेष्यमाणे लक्ष्मणस्य भावः ।

निर्यातिमाकर्ण्य वनाय रामं ।

सौमित्रिरुत्तंभितकोपकम्पः ॥

विश्वान्तदृष्टिः किल चापयष्टी ।

दध्यौ स वै लक्ष्यमिदं हृदन्तः ॥ १

अन्त- रकारादीनि नामानि शृण्वतो मम पार्वति ।

मनः प्रसन्नतामेति रामनामाभिर्शंकया ॥

इति रामहनुमतं नाटकम् ।

२०२. ६०२०

रामायण उत्तरकाण्ड

अन्त- वाल्मीकिना विरचितं श्रीरामायणपुस्तकम् ।

लिखितं लक्ष्मणाख्येन समाप्तं भक्ततुष्टिदम् ॥

२१६. ७०८७

शिशुपाल व(व)ध

अन्त- इति श्रीमाघवरिणिविरचिते महाकाव्ये श्रचंके शिशुपालवधो नामविंशति (त)
मः सर्गः ॥ सम्पूर्ण माघकाव्यम् ॥ सं० १५५२ वर्षे चैत्रसुदिद्वादशीदिने सोमवासरे
ब्रह्मश्री (षि) रतन पठनार्थे श्री माघकाव्ये लिखितं ज्योतिररामल शुभं भवतु ।

२२१. ६१७६

शृङ्गारमाला

अन्त- श्री गुरुदेवः ।

संसारसर्पमुखमर्दनताक्ष्यरूपाः

विज्ञानभाषटलपाटितमोहकूपाः ॥

येषां कटाक्षकलिताः फलिताः लसन्ति

गङ्गेशमिश्रगुरवः सततं जयन्ति ॥ १

कविर्वंशवर्णनम् ।

पानीयप्रस्थात् परतस्तु मार्गो

षट्कोशमध्ये हि घटोत्कचस्य ॥

ग्रामो 'घरोडे'ति प्रसिद्धनामा

पूर्वेस्थितास्तत्र पुरा मदीयाः ॥ १०

श्रीविष्णुदत्तस्त्वकुलाब्जभानु-

नारायणस्तत्तनुजो बभूव ॥

कौशल्यगोत्रो यजुषामधीता

माध्यन्दिनीयो द्विजगीडजोसी ॥ ११

तस्यात्मजो स्यादगमत्तु काश्यां ।

षड्दर्शिनीवैरमपुत्रमन्त्री ॥

दामोदरो वैद्यकग्रन्थकर्ता

श्रीरामकृष्णस्तदपत्यमासीत् ॥ १२

तुलसीमाधवगंगारामाख्यास्तत्तनूद्भवाश्चासन् ।

माधवरामसुपुत्रो हृदयराम इति सुगीयते मनुजैः ॥ १३

साहित्ये रसग्रन्थकृद्बुधवरस्तस्याङ्गजातः कवि-

र्वावूराय इति प्रसिद्धिमगमद्वासीपुरे चार्गले ॥

तत्पुत्रेण कृता मया रसमयी माला रसोपासकाऽऽ-

ज(ज्ञ)प्ता प्रापयितुं गुणैरपि युता कल्परसब्रह्मणि ॥ १४

सुखलालेन सुकविना रचिता शृंगारमणिमयीमाला ।

सा रसिकानां सगुणसुवर्णा विलासमातनुताम् ॥ १५

सुधांशुव्योमवस्विन्दौ वर्षे ज्येष्ठसिते रसे ।

शुभा शृंगारमालेयं रविपुण्ये सुगुम्फिता ॥ १६

इति श्रीमत्साहित्यशास्त्रानुभावरसिकगौडविप्रवरवाबूरायमिश्रसूनुसुखलालमिश्रेण
विरचितायां शृंगारमालायां संकीर्णवर्णनं नाम तृतीयं विरचनम् ॥ श्रीरस्तु ॥

प्रथम विरचनम्—नायिकाभेदविवरणम् ।

द्वितीय ,, —शिखनखवर्णनम् ।

तृतीय ,, —षड्भक्तुवर्णनम् (संकीर्ण-विरचनम्) ।

२२३. ५३०३

संवित्प्रकाश

अन्त— श्रीगोविन्दकवीशमीशभजनप्राप्तं कवीशाग्रणीः ।

श्रीमत्कान्हकविः सुतं प्रसुषुवे श्रीकर्मदेवी च यं ॥

वेदान्ताम्बुजभास्वतार्थबहुलं संवित्प्रकाशाभिधं ।

काव्यं तेन कृतं समाप्तिमगमद्विद्वज्जनानन्दनम् ॥

२२४. ४१२६

सप्तशती आर्यावृत्तवद्धा

आदि— पाणिग्रहे पुलकितं वपुरैशं भूतिभूषितं जयति ।

अंकुरित इव मनोभूर्यद्भस्मावशेषेऽपि ॥ १

अन्त— हरिचरणलीलाकविवरवचनवामनशीला वामन इव कविपदं निष्ठ्यः ।

अकृताचार्यः सप्तशतीमेकां गोवर्धनाचार्यः ॥ ७५०

इति गोवर्धनाचार्यकृता सप्तशतीयं समाप्तम् ।

संवत् १८०७ मिती माघ शुक्ल २ गुरुवासरे सम्पूर्णम् । लिखितं जोसी परसरामेण ।
पर्वणीकरोपनामरघुनाथस्येदम् पुस्तकम् । लेखकपाठकयोः शुभमस्तु ॥

॥ शुभं भवतु कल्याणम् भव ॥

२२५. ६०६३

सुन्दरमणिसन्दर्भ

अन्त— मधुराचार्यनाम्नैप गालवाश्रमवासिना ।

सुन्दराभिधसन्दर्भो भावशोघाय निमित्तः ॥

१६—रसालङ्कार

२. ४३६६

अलंकारचन्द्रिका (कुवलयानन्दटीका)

आदि— अनुचित्य महालक्ष्मी हरिलोचनचन्द्रिकाम् ।

कुर्वे कुवलयानन्दसदलङ्कारचन्द्रिकाम् ॥

अन्त— असी कुवलयानन्दश्चन्द्रालोकोत्थितोऽपि सन् ।

प्रतिष्ठां लभते नैव दिनाऽलङ्कारचन्द्रिकाम् ॥

इति श्रीमत्पदवाक्यप्रमाणज्ञतत्सद्रामभट्टात्मजवैद्यनाथकृतालङ्कारचन्द्रिकाख्या कुवलया-
नन्दटीका ।

४. ५६८३ काव्यकल्पलतावृत्ति (कविशिक्षा)

आदि— विमृश्य वाङ्मयं ज्योतिरमरेण यतीन्दुना ।

काव्यकल्पलताख्येयं कविशिक्षा प्रतन्यते ॥

अन्त— इति श्रीजिनदत्तसूरिशिष्यमहाकविचक्रचूडामणिश्रीमदमरसिंहविरचितायां काव्यकल्पलताकविशिक्षा(क्षा)वृत्तौ अर्थसिद्धिप्रदाने तुर्ये(तुरीये) समस्यास्तवकः सप्तमः समाप्तः ।

१३. ६०७३ चन्द्रालोक सटीक त्रिपाठ (चन्द्रालोकप्रकाश)

अन्त— इति श्रीरामचन्द्रदेवात्मजयुवराजश्रीवीरभद्रदेवादिष्टमिश्रवलभद्रात्मजसकलशास्त्रा-
रविन्दप्रद्योत्तमभट्टाचार्यविरचिते चन्द्रालोकप्रकाशे शरदागमे दशमो मयूखः समाप्तः ।

२४. ६४६८ रसमञ्जरीटीका व्यङ्ग्यार्थकौमुदी

वर्षाभ्रांकसुधांशुभिश्च मिलिते संवत्सरे भाद्रके ।

पक्षे मेचकसंज्ञके कुजदिने व्यङ्ग्यार्थविद्योतिकाम् ॥

व्यालेखीद्रसमञ्जरीतिलकिकां गोविन्दशर्मा द्विजो ।

राज्ये भारतपत्तने च बलवत्सिंहस्यपुण्यात्मनः ॥

प्रति के आदि २१ पत्रों में काशिराज श्रीचंद्रभानु के वंश का विस्तार से वर्णन है । (सं०)

३४. ४३०६ वाग्भटालंकारवृत्ति

आदि— श्रियं दिशतु वो देवः श्रीनाभेयजिनः सदा ।

मोक्षमार्गं सदा ब्रूते यदागमपदावली ॥ १

व्याख्या—श्रीनाभेयजिनो वो युष्मभ्यं श्रियं दिशतु ददातु किंविशिष्टः श्रीनाभेयजिनः देवः दीव्यति क्रीडते परमानन्दपदे इति देवः यस्य भगवतः आगमपदावली सिद्धान्तपदपरम्परा सतां सत्पुरुषाणां मोक्षमार्गं ब्रूते सिद्धेः पंथानं वदति । अन्यापि पदावली मार्गं ब्रूते ॥ १

अन्त— अनुमानमाह—

प्रत्यक्षाल्लिगतो यत्र कालत्रितयवर्तिनः ।

लिगिनो भवति ज्ञानमनुमानं तदुच्यते ॥ ३८

व्याख्या—लिगतोहेतोर्तीतानागतवर्तमानकालत्रितयवर्तिनः सलक्षणस्य लिगिनो ज्ञानं भवति तदनुमानम् ॥ ३८ ॥ इत्यादि ।

४२. ५६०३ श्रवणभूषण (विदग्धमुखमण्डनटीका)

आदि— अहं ॥ ॐ ॥ नमो वीतराग ।

हेरम्ब क्व किमम्ब किं त(व)करे तातस्य चांद्रीकला

कृत्यं किं शरजन्मनोत्तमनया दन्तान्तरं स्यादिति ।

तातः कुप्यति गृह्यतामिति विहायाहर्तुमन्यां कला-

माकाशं जयति प्रसारितकरस्तम्बेरमग्रामणीः ॥

यः साहित्यसुधेन्दुर्नरहरिरल्लालनन्दनः ।

कुरुते स श्रवणभूषणाख्यां विदग्धमुखमण्डनव्याख्याम् ॥

अन्त- इति श्रीनरहरिभट्टविरचितायां श्रवणभूषणे चतुर्थः परिच्छेदः ।
मंगलं जैन्यधर्मो उदेवसंवेगमंगलं । मंगलं गच्छसंघेन लेखके मंगलं भव ॥ श्रीश्रमणसंघाय ॥
श्रीविदग्धमुखमण्डनवृत्ति ॥

१७-सुभाषितादि

२. ७२७२

एकषष्टियुतप्रश्नशत

अन्त- अचलावेदवार्द्धान्दुवत्सरे श्रीरिणीपुरे ।
विद्याविलासगणिना लेखीदं कृति हार्दकृत् ॥

३. ४३४७

कर्पूरप्रकर सावचूरि

आदि- कर्पूरप्रकरः शमामृतरसे ववर्धेदुचंद्रातपः
शुक्लध्यानतरुप्रसूननिचयः पुण्यान्विफेनोदयः ।
मुक्तिश्रीकरपीडनेच्छसि च यो वाक्कामधेनोः पयो
व्याख्या लक्ष्यजिनेशपेशलरदज्योतिश्चयः पातु वः ॥ १

अन्त- श्रीवज्रसेनस्य गुरोस्त्रिपष्टि-
सारप्रबंधस्फुटसद्गुणस्य ।
शिष्येण चक्रे हरिणेयमिष्टा-
सूक्तावली नेमिचरित्रकर्त्रा ॥ ७८

इति श्रीजिनवर्धनसूरिपट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिपट्टालंकारभाग्यसीभाग्यसारश्रीजिनसागरसूरि-
वरेणकर्पूरप्रकराभिधसुभाषितकोशस्यावचूर्णिः समासतः कृता ॥ १४००

१०. ४४५२ (३४)

नीतिशतक

आदि- यां चितयामि० इति ॥ १
अन्त- भर्तृहरिभूपतिना रचितमिदं नीतिरीतिविज्ञेन ।
ज्ञाते यत्र न मुह्यति धीरोऽधीरः प्रमाणं स्यात् ॥
इति श्रीभर्तृहरिकृतं नीतिशतकं सम्पूर्णम् ॥

१४. ४४१५

प्रश्नोत्तरषष्टिशतक

आदि- द्विरसि यस्य चकासति दीपिका
इव फणामणिसप्तकदीप्तयः ॥
निखिलभीतितमःशमनाय किं
सपदि पार्श्वजिनं विनवीमितम् ॥ १
अन्त- किमपि यदिद्वाश्लिष्टं क्लिष्टं तथा चिरसत्कवि-
प्रकटितपथानिष्टं शिष्टं मया मतिदोषतः ॥

रिणीपुर को तारानगर कहते है जो कि बीकानेर डिवीजन के चूरु जिले (राजस्था-
में है । (सं०)

तदमलधिया बोध्यं शोध्यं सुबुद्धिधनैर्मनः-

प्रणयविशदं कृत्वा धृत्वा प्रसादलवं मयि ॥ ६१

इति अलङ्कारविदग्धप्रश्नोत्तरपट्टिशतककाव्यं समाप्तम् ।

१७. ४४८२

रत्नकोश

आदि- वैशंपायन उवाच-

रत्नकोशं प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया ।

पृथिव्यां यानि रत्नानि तेषामुद्धरणं प्रभो ॥ १

कथयिष्ये महाराज शृणु त्वं पांडुनन्दन ।

सर्वशास्त्रमयं दिव्यं सर्वज्ञानप्रकाशकम् ॥ २

अल्पग्रन्थं सुबोधार्थं रत्नकोशं समभ्यसेत् ॥ ३

अन्त- पंचविधा गतिः नरकगतिः । तिर्यक् । मनुष्य । देव । मोक्षगतिः ।

इति श्रीरत्नकोशरत्नाकरं सम्पूर्णम् ।

लिपिकर्ता—कान्होराम ।

२५. ६१२७

शतकत्रय

अन्त- पुष्पिका- इति श्रीबोधमते गीतमरिपीशिष्यअमरसिंहतच्छिष्यरूपचंदविरचिते मानुष्यबोधे त्यज्जबोधमतसम्पूर्णं । संमत १४३४ वर्षे आपादशुक्ल १५ काशीनगरमध्ये लिषतं त्रीवाड़ीगुजरातीवंशे हरीशमभिद्वत्तपुत्रविष्णुभट्टशर्मा लिपीचक्रो लिषायतं महाराष्ट्रभट-
रांमकिसनजीवाचनार्थं सर्वसमुच्चयटीका सूत्रग्रंथ ५१७५ सर्वः ।

४१. ४४५६

सिद्धरप्रकरसटीक

आदि- श्रीमत्पाश्र्वजिनं नत्वा स्वोवशीयसकारकम् ।

सद्यः संस्मृतिमात्रेण प्रत्यूहव्यूहकारकम् ॥ १

श्रीचंद्रकीर्तिसूरीणां सद्गुरूणां प्रसादतः ।

सिद्धरप्रकरव्याख्या क्रियते हर्षकीर्तिना ॥ २

अन्त-सिद्धरप्रकरस्यव्याख्यायां हर्षकीर्तिभिः सूरिभिः विहितायांतु सामान्यप्रक्रमोज्जनि ॥ १
तपागणे नागपुरीयपूर्वे । श्रीचंद्रकीर्त्याह्वयसूरिराजा । तेषां विनयहर्षकीर्तिसूरिश्चरो वृत्तिमिमा-
मकार्षीत् ॥ इति श्रीसिद्धरप्रकरस्यटीका समाप्ता ।

५७. ४३४८

सुभाषितसूक्तावली

आदि- दानं सुपात्रे विशुद्धं च शीलं ।

तपो विचित्रं शुभभावना च ॥

भवार्णवो त्यर्णवयानयात्रा ।

धर्मं चतुर्धा मुनयो वदन्ति ॥

५८. ५६८४

सुभाषितार्णव

आदि- चंद्रनाथं जिनं नत्वा जिनयातिचतुष्टयम् ।

सुभाषितार्णवं वक्ष्ये ज्ञानविज्ञानकारणम् ॥ १

६१. ४४१४ सूक्ताली

आदि- वीरं विश्वगुरुं नत्वा कृत्वा यत्नेन संग्रहम् ।
सदोपकारसूक्ताली स्वान्यपाठाय लिख्यते ॥ १

अन्त- आराधयेद्धर्ममनन्यकर्म प्रायः प्रसादावधिरेव सर्वः ।
आराद्धुमेनं तत्कृतप्रसादं कस्यापि विस्फूर्तिं नियतिं चेतः । १८३४

लि.क. शुभसुन्दरगणि । लिपिस्थान—वृद्धग्राम ।

५. ४३४६ सुभावितसंग्रह

पत्र २३वें में पुष्पिका इस प्रकार दी हुई है—

इति श्रीमदाचार्यजी श्री ६ केशवजीकृतानि काव्यानि समाप्तानि । लिपिकृतं पूज्यऋषि-
श्री ५ सामजी तच्छिष्य पू०ऋषि श्री ५ महिराजी तत्शिष्य पू० ऋषिश्री ५ टोडरजी-
तत्शिष्य पू० पवित्रात्माश्री ५ भीमजी तच्छिष्येण मुनीदामाख्येणालेखि शुभं श्रेयः संवत्सुगगन-
समुद्रचंद्रवर्षे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे त्रयोदशीगुरुवासरे राणपुरे लिपिकृता प्रतिरियं शुभं श्रेयः ।



१८-कथा-चरित्र-आख्यानानादि

४३३२ अंबडचरित्र

आदि- ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।

धर्मात्सम्पद्यते लक्ष्मीर्धर्मद्रूपमनिन्दितम् ।

धर्मात्सौभाग्यदीर्घायू धर्मात्सर्वसमीहितम् ॥ १

अन्त- इत्थं गोरखयोगिनो वचनतः सिद्धोम्बडः क्षत्रियः

सन्तादेशवराः सकौतुकभरा भूता न चाभाविनः ।

द्वात्रिंशन्मितपुत्रिकादिचरितं यद्गद्यपद्येन त-

च्चक्रे श्रीमुनिरत्नसूरिविजयी तद्वाच्यमानं बुधैः ॥

इति श्रीमुनिरत्नसूरिविरचिते गोरखयोगिना दत्तरुत्तादेशकरअंबडकथानकं सम्पूर्णमिह ।

लिपिकर्ता—ज्ञानसुन्दर । स्थान—सवाला । *

७. ४३३५ उत्तराध्ययनकथा

आदि- प्रणम्य श्रीमहावीरं नम्राखण्डलमण्डलम् ।

आरभ्यन्ते कथाः कर्तुमुत्तराध्ययनस्थिताः ॥

अन्त- गङ्गामुत्तीर्य साधुसमीपे प्रव्रजितः अग्रगः सम्बन्धः सूत्र एव प्रोक्ताः । इति पंचविंश
ध्ययनकथाः समाप्ताः ।

कथाः कृताः पण्डितपद्मसागरैः
स्वशिष्यवाक्यप्रणयेन संस्कृताः ॥
पिपाडिपुर्या जिनपार्श्वनायक-
प्रसादतः सत्कुशलाय सन्त्वित्वा ॥
रचनाकाल—१६५७ । पीपाडग्राम ।

१६. ४३८७

चित्रसेनपद्मावतीकथा

आदि— कल्याणकमलागेहं निःसन्देहं सहोदयम् ।
कल्याणविलसद्देहं वन्देऽहं वृषभप्रभुम् ॥
अन्त— नभरसरसचन्द्राब्दे श्रावणसितपंचमीतिथौ सोमे ।
श्रीचित्रसेनपद्मावतीकथा जयतु बुद्धिविजयकृता ॥ ५६४
श्रीचित्रसेनपद्मावतीकथा सम्पूर्णा ।

१६. ४३६८

चित्रसेनपद्मावतीचरित्र

आदि— नत्वा जिनं प्रतीमाद्यं पुण्डरीकं गङ्गाधिपम् ।
शीलालंकारसंयुक्तां साश्चर्या तत्कथां ब्रुवे ॥ १
अन्त— निष्यस्तदीयो महिमानिधानः
चरित्रपात्रैः स्वशूरैः प्रधानम् ॥
पद्मावतीशीलगुणस्य कीर्तने
कथाऽकरोत् पाठकराजवल्लभः ॥ १२१
श्रीनयोविजयशिष्यै भक्तिनास्ति वृत्तार्थ ए ।
चरित्रं चित्रसेनस्य पुण्यार्थं चाह निर्मितम् ॥ १२१५
इति श्रीशीलविषये चित्रसेनपद्मावतीमहासतीचरित्रं सम्पूर्णम् ।

लिपिकर्ता—रामविजयगणि । लिपिस्थान—राधनपुरनगर

२. ४४३५

देवकुमारकथा

आदि— ॐ नमः सिद्धम् ।
पुरा अभूत्कुसुमपुरे सूरनामा नरेश्वरः ।
विरोधिध्वंसकरप्रसरसुन्दरः ॥ १
अन्त— चिरमंत्रिपदं भुक्त्वा प्राप्यान्ते व्रतमुत्तमम् ।
प्रपाल्य स्वयंयौ मोक्षं गन्ता च कतिभिर्भयैः ॥ ३६२
पुत्रात्सुखं न भवति जनस्य जनकस्य च ।
रात्माश्चर्यमयौ चौर्यव्रतपोषकरीकथा ॥ ३६३
इति श्रीदेवकुमारकथातृतीयव्रतमाहात्म्यम् ।

लिपिकर्ता—श्रीजिनसुन्दरसुगुरोऽशिष्याणुविजयसुन्दरो विनयी ।

देवकुमारकथानकमलिखच्च परोपकाराय ॥ १

२५. ४४३४ धर्मबुद्धिमंत्रिकथा

आदि— उद्धाहे प्रथमो वरः किल कलाश(शि)ल्पादिके यो गुरु-
भूपश्च प्रथमो यतिः प्रथमकस्तीर्थेश्वरश्चादिमः ।
दाताद्यःवरपात्रमाद्यमपरः सिद्धो पदं वादिमः
सच्चक्री प्रथमश्च यस्य तनयः सोऽस्त्वादिनायः श्रिये ॥ १
धर्मतः सकल भंगलावली धर्मतः सकलसौख्यसम्पदः ॥
धर्मतः स्फुरति निर्मलं यशो धर्म एव तदहो विधीयताम् ॥ २
अन्त— आरोग्यं सौभाग्यं धनाढ्यता नायकत्वमानन्दः ॥
कृतपुण्यस्य स्यादिह सदा जयो वाञ्छितावाप्तिः ॥ १
धनदो धनमिच्छूनां कामदः काममिच्छताम् ।
धर्म एवापवर्गस्य पारंपर्येण साधकः ॥ २
इति पापबुद्धिन्पधर्मबुद्धिमंत्रिकथानकं सम्पूर्णम् ।

१. ४३३३ युवराजऋषि-चरित

आदि— विशालास्तिपुरीर्जतप्रासादरतिसुन्दरा ।
जयन्ति(न्ती)स्वः पुरीमात्मवनधान्यसमृद्धिभिः ॥ १
अन्त— एवं निश्चय्य युवराजऋषेश्चरित्वं ।
कर्पूरदीप्तिभिरचौरगुणैः पवित्रम् ॥
संसारवारिधितरीतुलिते प्रयत्नं ।
स्वाध्यायकर्मणि गुणिन् कुरु निःस्वपन्नम् ॥ १३
इति श्रीयुवराजकथासमाप्तमिति । लि. स्था. —हर्षपुर ।

३६. ४४०२ रूपसेनकथा

आदि— देवाः स्युर्वशगा नवापि निधयश्चाष्टौ महासिद्धयः
गेहस्थाः सुरधेनुशाखिमणयो यस्य प्रभावान्मृणाम् ।
शृष्टाभीष्टफलप्रदाननिपुणः श्रीवीतरागादितो
लोभव्याभवपारदप्रतिदिनं धर्मः समाराध्यताम् ॥
अन्त— यशो धर्मो गुणाः सौख्यं लक्ष्मीरायुः सुमंगलम् ।
सफलान्येतानि दत्ते च धर्मकल्पद्रुमोह्ययम् ॥ १०१४

श्रीवीरदेशनायां धर्मकल्पद्रुमे शिखरोपमरूपसेननृपाख्यानवर्णनोनाम नवमः यत्नः
समाप्तः ॥ इति श्रीरूपसेनकथा सम्पूर्णा ।

४२. ४४५८ वरदत्तगुणमंजरीकथा

आदि— श्रीमत्पाश्र्वजिनाधीशं फलवर्द्धिपुरसंस्थितम् ।
एगम्य परया भक्त्या सर्वाभीष्टार्थसाधकम् ॥ १

अन्त- श्रीमत्तपगणगगनांगणदिनमणिविजयसेनसूरीणाम् ।
 शिष्याणुना कथेयं विनिर्मिता कनककुशलेन ॥ ५०
 बुधपञ्चविजयगणिभिःप्रवरै भीमादिविजयगणिभिश्च
 संशोधिता कथेयं भूतेपुरसेन्दुमिते वर्षे ॥ ५१
 गणिविजयसुन्दराणामभ्यर्थनया कृता कथा मयका ।
 प्रथमादर्शो लिखिता तैरेव च मेड़तानगरे ॥ ५३

इति कार्तिके सौभाग्यपंचमीमाहात्म्यविषये वरदत्तगुरुमंजरीकथानकं सम्पूर्णम् ।

४५. ४३३४

शांतिनाथचरित्र

आदि- श्रेयो रत्नाकरोद्भूतामर्हलक्ष्मीमुपास्महे ।
 स्पृह्यन्ति न के याम्ये शेष श्रीविरताशयाः ॥ १
 अन्त- यस्योपसर्गः स्मरणे प्रयांति
 विध्वे यदीयाश्च गुणा न मांति ॥
 यस्यांगलक्ष्मीः कनकस्य कांतिः
 संघस्य शांतिं स करोतु शांतिः । ६२६

इत्याचार्यश्रीमज्जितप्रभसूरिविरचिते श्रीशांतिनाथचरिते द्वादशभाववर्णनो नाम षष्ठः
 प्रस्तावः । इति श्रीशांतिनाथचरित्रं सम्पूर्णम् । श्रीजीवविजयगणिनी परत ।

५१. ४३३६

शालिभद्रचरित्र

आदि- श्रीदानधर्मकल्पद्रुजीयात्सौभाग्यभाग्यभूः ।
 पूर्वापश्चिमतीर्थेशलक्ष्मीभोगमहाफलः ॥ १
 अन्त- श्रीशालिचरिते धर्मकुमारसुधिया कृते ।
 श्रीप्रद्युम्नधिया शुद्धे सप्तमः प्रक्रमोऽभवत् ॥ ५६

श्रीशालिभद्रचरिते सर्वार्थसिद्धिप्राप्तिवर्णनो नाम सप्तमः प्रस्तावः समाप्तः ।
 जिनातिशयपक्षाख्यवत्सरे विहिता कथा । ग्रन्थेन द्वादशशती चतुर्विंशतिसंयुता ॥



२०-राजस्थानी

१. ७७५३ (१-१७)

अंकपाटी आदि गुटका

आरंभिक दो पत्रोंमें लघु चारणव्यनीतिके दूसरे अध्यायका अंतिम श्लोक तथा तृतीय अध्याय लिखित हैं । आगे १७ पत्रोंमें अंकपाटीका लेखन हुआ है, पत्रमें ऊपर अंक-संख्या और नीचे सुभाषित (नीतिपरक) दोहे, श्लोक आदि हैं । उदाहरणार्थ—

‘दानं दया दमोद्विग्नं दर्शनं देवपूजितं ।

दकारा पंचवर्तते दूर्गतं नैव गच्छति ॥ १

(पत्र १)

दूहा ॥ सरतर अक्षर सीप पीव, जो रपे अप्यांण ।

सर वैरीतर सायरो, अक्षर राज दुवांण ॥ १

(पत्र २)

अन्तके १६-१७वें पत्रमें—

दूहा ॥ काली तू कोयल भली, जस मनपरो विवेक ।

अंव विहूणी अवरसुं, बोल न बोलै एक ॥ १

(पत्र १६वां)

गांम गोरमें होत है, जोय दूर मत जाय ।

बनी वणाइ पारसी, अरथ कह्यो इण मांय ॥ १

(पत्र १७वां)

॥ लीपतं । पीडत श्री ५ श्रीबालचंदजी लीपी छै । सं० १८३५ मीगसर सुद ५ वार
मंगलवार अपसुरै जै सरूप गोठीरा छै ।

६

६५२५

अंजनाचोपाई

आदि— ॥दं०॥ श्रीगणेशायनमः ॥

दूहा ॥ श्रीगणधर गीतम प्रमुष, एकादस अभिराम ।

मन वंछित सुष संपर्ज, नित समरंता नाम ॥ १

प्रथम उद्यम मै माडियो, मति दीसै अति मंद ।

तिण कारण पहिला नमुं, श्रीगणधर सुपकंद ॥ २

सेवकनं सानिध करै, देड्यो अविरल वाणि ।

जिम वेगो सिद्धै चढै, कांडम रापिस कांणि ॥ ४

अन्त— तिणि गछ पीपल थापीयो, आठ साषा विस्तार ।

संवत रुद्रबावीसमै, बीसमै हूई सुपकार ॥ १२

ते गछ दीसै दीपतो, साचौर नगर मभारि ।

बीर जिणोसर दीपतौ, जिहां तीरथ प्रगट उदार ॥ १३

तास पाटै अनुक्रमै हूवा, श्रीलीपमीसागरसूरि ।

विनय करी कर्मसागर, वाचक देय सनूर ॥ १४

तास सीस पुण्यसागर, वाचक पभणै एम ।

अंजनासुंदरी चौपई, पूरण कीधी ते प्रेम ॥ १५

संवत सोलसत्यासीई, श्रावण मास रसाल ।

सुदि तिथि पंचमी निरमल, रिद्धि वृद्धि मंगल माल ॥ १६

सर्व गाथा ॥ इति श्रीअंजनासुंदरीचौपई संपूर्णः । संवत १८६८ मीगसर कृष्ण
तिथि १ भीमवासरे द्वितीय प्रहरे लिपतं ऋषी नोलचंद पीही ग्रामे उदावत राज्ये वाच
चौरं नद्यः श्रीरस्तुः ॥ श्रीः ॥

३० ७७४३

अध्यात्मरामायण भाषा

आदि— श्री गुरोसाये नीम ॥ सुरसती नीमो ॥ श्री सीतारामजी सत छै जी ॥
श्री रामायें नमा ॥ कथेतं अधातम रामायने भाषा लीपतं रामहृदय ॥ राज श्रीराजैसंघजी
सभाषीत ।

चौपई— जबै भुव भार भयों दुष्टनतै । तब ही देव गये जाचन प्रभुर्ष ॥
चिदानंद सुंती ब्रदस बानी । परजापते असतुते ही ठानी ॥ २
तीन सुप्त सन भेये भगवाना । चौदानंद यनकी सब जाना ॥
मेघ गिरा बानी जु बुचारी । सुनीक ब्रमा सते वीचारी ॥ २

अन्त— दुहा ॥ राम हीरदैको राजैदानीते प्रीते करतै बुचारै ।
सीय्याराम हीरदै बसैय्या समे नाहे वीचारै ॥ ६५
राम हीरद भाषा अरथै कीनी मते बुनमानै ।
सुनी कह रीजै न घारी है करीये मते अपमानै ॥ ६६

ईती श्री अधातैम रामायें रामै हीरदये भाषा अरथ सपुरन ॥ कथेते महाराजे श्रीराज-
सीधजी ॥ सुभ समुरथै ।

८५. ५२११ कछवाहोंकी वंशावली

आदि— ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ कछवावांकी वंशावली लिख्यते ॥

श्रीआदिनारायणतै कवलमै ब्रह्माजी ॥१॥ मारीच ॥२॥ कस्यप ॥३॥ सूर्य ॥४॥
बवस्वान ॥५॥ मनु ॥६॥ इष्वाक ॥७॥ विकुषि ॥८॥ पुरंजय ॥९॥

अन्त— महाराजाधिराज जन्म नांव मोहोनसिंघ नरवलका राजाकौ बेटो सो राज
पायो । जदि मानसिंघजी नाव पड़्यो । मीती पोस वदि ६ सं० १८७५ का । राज कीयो
महीना ४ दिन ६॥ माहाराजाधिराज श्रीसवाई जयसिंघजी संवत १८७० कै साल श्रीजमवायजी
पधारद्या जाति देवा । सब माज्यां साथ पधारी मीती असाढ सुदि ८ संवत १८८४ कै साल ।

८७. ७७२० (२२) कपडकुतूहल

आद्य अंश खण्डित है । उपलब्ध रचनाका प्रारंभ इस प्रकार है—

.....दि पिलंग पर सुंदर ढोलियै बाय ॥ १३
मसी जर सु मो मन भयो, प्रीउ ढोलिए बोलाय ।
माल मुहूंगीधे लांजिये, सो माहरइ आवी दाय ॥ १४
तन सपुकी साडी चणी, कंचु वण्यो सुचंग ।
रतन जडीत नीरषीः, सोनी सुंदर अंग ॥ १५

अन्त— कचीयो पेम पछेवडो, कीधो सेज तीग्रार ।

तिणि बेलं मंदिर गई, प्रीउ माणइ तिणि वार ॥ ३१

प्रीआंग गंगदास सूत, नगर उदैपुर बास ।

कपडकुतूहल कीधा, वणी देहि दुवास ॥ ३२

इति कपडकुतूहल संपूर्णः ॥

६६. ४०२०

कविकल्पलता

आदि- ॥ दं० ॥ अथ श्रीसारकृत वावन्नी लिप्यतै
 ॐकार अपार पार तसू कोइ न लभ्यै ।
 सवर कर सिरताज मंत्र धुरि कवियणभ्यै ॥
 अरधचंद आकार उवरे मीडो जसु सोहै ।
 जै ध्यावे चित लाय तिकै तिहुयण मन मोहै ॥
 साधक सिध जोगी जती जासु ध्यांन अहनिम क
 कवि सार कहै ॐकार जप कांइ सैण भुलो फिरै ॥ १

अन्त- धिते मंडल क्षिति तिलक सहर पाली पुर सोहै ।
 गढ मरु मंदिर महिल वाग वाडी सनमोहै ॥
 राज करै जगनाथ सुर सामंते र मवायो ।
 मोनगरे सुसमथ सुजम वसुधा वर तायो ॥
 संमत सोलैनिव्यासियै आसु सुदी दसमी दिनै ।
 श्रीसार कवित वावन कह्या सांभलिज्यो साचै मनै ॥ ५५

इति श्रीकविकल्पलता श्रीसारकृते संपूर्ण । सुभं भूयात् ॥ श्री संवत् १८७८ र
 मती फागुण सुदी १० स श्री श्रीगुरांजी श्रीवेनरामजी । लीपतां कु. इन्द्रभाण वाचनारथ
 अणदपुरमध्ये ।

१०५. ४४१५ (१६)

कागदरी नकल

इस गुटकेमें पत्र सं० ३६८से पत्र सं० ४०६ तक चार कागजों प्रेम(पत्रों)की नकलें दी
 हुई हैं, जो इस प्रकार हैं—

पहली नकल । आदि— कागदरी नकल ।

छंद नराच— मते हत सांभर नगरं सुघरं । प्यारी निज हाथ दियो पतरं ।
 सूभ वांन कथानक सुंदरियं । छिव गात अनंत चित हरियं ॥ १
 सलिता सर निसर नीर वहै । नलनि सूभ वास घरै र लहै ।
 बहु वास निवास न कुप वनै । वनिता गनि तीर सूनीर धनै ॥ २

अन्त— दिन जात वृथा तुम संग विना । कबहु सुप होत न आप विना ।
 कहता ज रजौ समचार सवै । सु मिथ्या तन मांनहु भांम कवै ॥ १७
 न लिषे तुम पत्र सनेह घनी । पय जावनकी तुम रीत गनी ।
 जुग रांम वसु ससि संवत यं । सुभ मास तथी सरस चरयं ॥ १८ इति ॥

री नकल—

[संवत् १८३४

आदि— कागदरी नकल लीपते । स्वस्त श्रीअमुकानगर सुथाने सुकल सुभ ओप
 केलास वयारी, प्रेमरसप्यारी, चंदवदनी, मृगलोचनी, लगनरी लडी, जीवरी ज
 होयारी हार, सेजरी सिणगार, प्रीतमरी पीलार, चितरी ऊदार, हसतमुषी, स

अन्त- सब सरषी नारी नहीं, सब सरषी नहीं बांण ।
 सब गुण एकणमें नहीं, दापुं चतुर सुजांण ॥ ६२
 इती ओपमा लिपणारी, जथाजोग मत जांण ।
 कहत दुलैमल चुप सु, रुप चुप परवांण ॥ ६३ ॥ संपुर्ण ।

तीसरी नकल-

आदि- सिध श्री प्यारी दिसे, जैपुर नगर जठेह ।
 प्रीतम लिषत वणायकै, नित २ नवलै नेह ॥ १
 चंदवदनि मृगलोचनी, चिता लंक सुचंग ।
 गजगमणि रस जोग है, अतहि जांण सुचंग ॥ २
 अन्त- बाहू उत्तर देजो सदा, कागद अधिक उजास ।
 हित कर लिपजो हेतसुं, दसकत अपणा पास ॥ २० संपुरण ॥

चौथी नकल-

आदि- मिध श्री सरवओपमा विराजमान अनेक ओपमालायक गुणनिधान वहोतर
 कलासुजांण, चवदै विध्यानिधानं, सूरज जेहा तेज, चकवा चकवि जिहा हेज, चंद्रमा जेहा
 सितल, रूपा जेहा ऊजला..... ।

अन्त- मत किराहिसु लागजो, नैणाहंदो नेह ।
 धुकै न धुवो नीसरै, जलै सुरंगी देह ॥ १८
 सजन फलजो फूलजो, बड जुं विसतरजो ।
 नालेरां जु लूवजो, आंवां जु फलजो ॥ १९
 इति श्रीपत्री संपुर्ण ।

२५७ ४६१४ (५४) जोगी रासा

आदि- अथ जोगी रास लीपीते ॥ ॐ नमः सीध्येभ्यो नमः ॥
 आदिपुरिष जो आदिजगोत्तमु, आदिनाथो ।
 आदिजगोत्तमो जोग पयसो, जय जय जय जगनाथो ॥ १
 तास परंपर मुनिवर हुआ, दीगांवर सहिनाणी ।
 कुदकुदाचरज^१ गुरु मेरै, पाहुजी कहिय कहाणी ॥
 अन्त- जोगीह रासो सीषहु श्रावक, दुष न कवहु लहिसौ ।
 जो जिणदासह त्रिविधि हि, सिधहु समरण कीजहू ॥ ४२
 इती जोगीरासो संपुरणमस्तु ।

२६१. ५४१८ (५४) टंडाणा गीत

आदि- टंडाणा टंडाणा वे, जियई टंडाणा टंडाणा ॥
 इत संसारै दुश भंडारै, क्या गुण देषि लुभाणा छे ॥
 जिन ठग ठगिया नादइ कार्ल, फिर तस जोग पत्याणा छे ॥

अन्त- करि उदिम आपन बल मंडौ, भोगी अमर बिमारा छे ।
समिकि तपोहण दस विधि पूरा, निरमल धरम कराणा छे ॥
सुध सरीर सहज लव लावहु, भावहु अंतर भा(रा) छे ।
जंपै वृत्ता तम सुप पावहु वंछे पद निरवाणा छे ॥

इति टंडाणा समाप्तम् ।

३३६. ४६२४ (३) नागदमण कथा (अपूर्ण)

आदि- ॥६०॥ श्रीसारदाय नमः ॥ अथ नागदमणि लिप्यते ॥

दूहा ॥ बलतो सारद विनवुं, गुणपति करो पसाऊ ।
पवाडा पनगां सरस, जदुपति कीधो जाऊ ॥ १
प्रभू अनेके पाडीया, देत वडाचा दंत ।
के पालणै पोडीया, के पय पान करन ॥ २
कोइ न दीधो कांनवा, सुण्यो न लीला बंध ।
आप बंधावण उषला, बीजा छोडण बंध ॥ ३

अन्त- कलश ॥ सुणें गुणें सम वास, नंदनंदन अहिनारी ।
समुद्र पार संसार, दोई गोपद अणहारी ॥
अनंतर आखंड सवे वपताप सुणावै ।
भगति मुगति भंडार, कशन मुगताह करावै ॥
रमीयो चरित राधारमणि.....॥

५३८. ४६०६ (२) राजसभारंजन

आदि- ॥६०॥ अथ राजसभारंजन लिप्यते ॥

गंगाधर सेवहु सदा, गाहक रसिक प्रवीन ।
राजसभारंजन कहों, मन हुलास रस लीन ॥ १
दंपतिरति नीरोग तन, विद्या सूधन मुगेह ।
जो दिन जाय आनंदमै, जीतवको फल एह ॥ २

बीचसे कुछ उदाहरण—

साथ सहेट चल्थो चहै, मुग्धा तिय पिय छैल ।
धीसेमैं कोडी न्हीं, चले बागकी सैल ॥ ६७
सहज रीति कुल तजि लगै, काम कलाकै साज ।
बाप न मारी मीडकी, बेटा तीरंदाज ॥ ७०

अन्त- छंद तीनसै साठ सब, व्यवहारै सुप देत ।
राज-सभा-रंजन सरस, कियो रसिकजन हेत ॥ ६७
अंक वांन मुनि ससि (१७५६) समा, विक्रम सक नभ
जल नवमी भगु दिवस, पूरन रस-प्रकास ॥ ६८

सुपद भूमि संग्रामपुर, श्रीनृपवर जयसाहि ।

तहि कवि मन सुप्रसन्न अति, मति रतिसों अवगाह ॥ ६६

जब लों सुष सज्जन कला, मेरु धराधर धाम ।

तब लों चिर जीवहु रसिक, पढत गुणत गुन नाम ॥ ७०

इति श्रीराजसभा-रंजन दोहा समाप्त ।

संवत् १७६८ वर्षे मिति पोस वदि १४ शुक्ले लिपिकृतं श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।

५५०. ४८३४

राठोड नाहरपांनरी छंद

आदि— छंद राठोड नाहरपांनरी गाडण माधौदासरौ कह्यौ ॥

आरज्या ॥ उप्पन्ना पुरसांणी उडा । पांणी पंछा पापर होडा ।

अँराकीआ रछ्छीस जोडा । नाहरपांन समप्पँ घोडा ॥ १

भाडंजी केवी मुगलांणी । पासा पैग जिके पुरसाणी ।

वड पातां सुगु अवरल वाणी । रेवंत रीक दीयै राजाणी ॥ २

अन्त— कलस ॥ वहस तेज बहु सफल बहुत मोला बहु भोयण ।

धीरज तेज अनंत लोय दीप ववहलोयण ॥

घड विसाल पै करह गात उत्तंगह मैंगल ।

पवंग वेग विसराल वाजि वीया वेगागल ॥

वरहास वडा वड कवीयणां त्यागी छणं हरतै रवै ।

समपीया पांन राजांनकै कुंप करनह अभिनवै ॥

इति नाहरपांन घोडांरा दाताररौ छंदः संपूरण ॥

६४१४

विक्रमचरित्र (हेमाणन्द रचित)

आदि— ॥दं०॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ प्रणम्य देवदेवं च वीतरागसुरचितं ॥

लोकानां हि विनोदाय करिष्येहं कथामिमां ॥ १

नत्वा सरस्वती देवी स्वेताभरणभूषिता ।

पद्मनाभविशालाक्षी नित्यं पद्मासने स्थिता ॥ २

अन्त— श्री विक्रमने वेताल कथा कही चउवीस उदार ।

सोल छियालै भाद्रव मांस । हेमाणंद कहै उत्हास ॥ ३६

इति श्रीवेतालपञ्चोसी २४ कथा ।

दोहा— बलि विक्रम सीसम गयो, पाछो तिरण ही डाल ।

भडब्रंधी कांधइ कीयो, तब बोलै भूपाल ॥ १

विशेष— आगेका अंग अपूर्ण है ।

६०३

६१११

विद्याचिलास खोपाई

आदि— ॥दं०॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥

बूहा— सरसति नित आपो सुमति, चित हित धरि प्रणमेवि ।

जित तित थित थानक अचल, सोभित दह दिसि देवि ॥ १

कवियण नरसां निधि करण, दूर हरण अग्न्यांन ।

चरण सरण उपम धरण, उपावण गुण ग्यांन ॥ २

अन्त- वाचक गुणवर्धन सुपदाया, श्रीसोमगणि सुपसाया जी ।

इम जिनहरण पुण्य गुण गाया, तीस ढाल सुष पाया जी ॥ १४

हिव राजानि सुणै गुरवाणी ॥

इति श्रीपुण्यविषये विद्याविलासचोपई संपूर्ण ॥ सं० १८२६ वर्षे मिति: आसाढ सुदि ७ दिने ।

६११. ७७२२ (१४) वीरमदे ईडरिया आदिके कवित्त

आदि- ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

कवित्त- गढत लंक दईवत संक भंकत अहिराइण ।

धनत धीन अहि वेलत पान पेघत पत्राइण ॥

अमरत आस माया तपास रस होइ महा जल ।

परमा वात सोवन घात चितत वेगागल ॥

अणराइ चाइ एकाएवै सालिहांतर दिठो सवे ।

त्रिहुं राइ तिलक नारियेण तना दाता तो वीरमदे ॥

अन्त- कर परि जिण गिरवर धरचो, मथुरा मारचो कंस ।

रेषा राषस निरदले, जयकारी जदुवंस ॥ १०

श्रीठाकुरांरी सापी छै ॥ लिपत मिश्र आनदराम ॥ शुभमस्तु ॥

६१५. ७७४३ (४) वेदस्तुति भाषा

आदि- ॥ श्रीरामजी ॥ अथ वेदस्तुता भाषा लीप्यते ॥ राजश्री राजैसीधजी संभापतं ॥

छंद- श्री भागीतं दसम सकंधं, वेद सतुत्स भाषा वंध ॥

अती आनंद भव वंध छेद, आवागमन मिटै भ्रम पेदं ॥

चोपई- श्रीसुपदेव ब्रह्मा तनुवज्ञाता । वेदव्यासके पुत्र विष्याता ॥

तीनके पदबदन मै करु । तीनको ध्यांन हीरदैमै धरु ॥

अन्त- नीतीप्रती पाठ जु जे करै, बुपजै ब्रम ज्ञान ।

तत पद नीहचै पाय है, राजै प्रम बीज्ञान ॥ ६०

ईति श्रीवेदस्तुती भाषा अरथ सपुरण ॥ कथीतं महाराज श्रीराजैसीधजी ॥

६७५. ४०१० शुक्रबहोतरी

आदि- ॥ ६० ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ वात सूवावहुत्तरी लिप्यते ।

दूहा- करि प्रणाम श्री सारदा, अपनी बुध परमानं ॥

सुक शप्त वार्ता उ करी, न्यायते देवी दांन ॥ १

विक्रम नगर सुहामणो, सुप संपतकी ठोर ।

हिदू थान ऽरु हिदू धरम, असो सहर न और ॥ २

अन्त- ... हरदत्त सेठ होम करायौ तिहा सारिका पिण आई । ऊपरसुं दिव्यमाला पडो । उणरे दर्शन सेती सराप छूट शुक्रशारिका गंधर्व होय आपणै लोक गया ।

इति श्री बहुत्तर वीर्ता मुध सूवावहुत्तरी संपूर्णम् ॥ ७२ संवत् १८६६रा मीती
श्रावण सुदी १ दिने लिपतं पं० त्रिजैसमुद्रेण श्रीजैसलमेर दुर्गो चतुर्मास्यां स्थिता ।

६७६. ४४१६ शुक्रवहोतरी । प्रथम पत्र अग्राप्त

आदि-दी कह्यो । पृथ्वीकै विपै बहुतरी कथा मनुष्य भाषा करि प्रभावती आगे
कहसी । सील रपावसी । तदि गंधमाद परवतकै विपै आविनै शुक्र सरीर छोडिकै मूलगौ
शरीर पामी पांचसै मोहर ब्राह्मणनै दांन देई । निपाप आइस...

अन्त- ...कवि देवदत्त कहै । शुक्रका वचन भेला करिकै आपकी बुद्धिकै अनुसारै
वांधी छई ।

इति श्रीशुक्रवहोतरी कथा समाप्ता ॥ संवत् १७६० वर्षे आंसोज वदि ६ पण्टी
भोम वासरे पं० वनीतविजय लिपि चक्रे ॥ शुभंभवतु ॥ श्रीसमाप्ता ॥

७२४. ४२८७ (१६) सवाई जैसिंहजीकी जोधपुर चढ़ाईका वर्णन

आदि- "संवत् १७६७ का मीती सावण वदी ८ ने श्रीमाहराजा सवाई जैसंघजी
जोधपुर वुपर चढा । राजा अभैसंघरी हुकम पाँतसाह महमुदसाह का[सा]थे चढा । सो रोज
पदरामै १५ जोधपुर जाइ लागा । तरफ मडोवरकी डेरा जाइ कीया । मुकाम १.....
विशेष- आगे युद्धके खर्चे और जोधपुरकी तरफसे लिये गये उपहार आदिका वर्णन है जो
अपूर्ण है ।

७७५. ४६०३ हमीररासो (हमीरायन)

आदि- श्री गनेसाय नम । हमीराईन लीपतै ॥

कवीत- गवरीनंद आनंद चंद लीलाट वीराजैत ।

च्यार भुज कर फरस सरस भुषन अग राजत ॥

कर कमंडल जयमाल लाल वसत्र वोह सुहावै ।

मधुर स्वगंध स्वणमय रची ओर उदभाहन कीन ।

हो हय प्रसन सुधी बुधी धनी जौ कथ कवीत प्रमा माण ॥ १

अन्त-कवीतः ॥ असी करीउ काहु करै नहीं, कोउ सो करी राजवी चक्र तल ।

वाईस वीक्रम रांण वुयवीन पाईवयाभाः अजहु मध्यकी रोड रोले ।

दर्शीन भंडारा मदगल कहु हमेल करी ।

कदल रनथंभ गढ असी करै न कोई ॥

इती श्रीहमरायन साको श्रीगार संपुरन समाप्ती ।

छंद जाजाकोः ॥ कुडलीयो माई मोहदे असीस काई जीवो वरस सो । याई मोह दे
असीस छोत्री ई तोर जीवो । वारा ऊपर वीस भनैजा जन वीरम केह ।

लीपतं पांडे नाथुराम ब्राह्मण गोड मी आसावी श्रम धर्ममुत्तं गड ब्राह्मणका रक्षपाल
राजा श्रीमलजीकूः नाथुराम ब्राह्मण गोड सदारायको भतीजो टोडै रहै है पंकीजीको अप
भीछुकको असीस वंचजोजी मीती पोस वदी ६ मंगलवार संवत् १७८७ जो पुस्तग वाचै जीकु
राम राम वंचजोजी । जाद्रष्टं दत्त्वा ताद्रसं लीपते मा । जदी सुद्ध वीसुद्धं वा मम दोषे न
दीयते ॥ शु० ॥

२१-हिन्दी

१२. ५३६८

अध्यात्मरामायण

आदि-

॥ श्रीरामाय नम ॥

दोहा- जुधकांड पूरन भयो, ब्रह्मज्ञानके भाइ ।

उत्तरकांड कहत हों, विधिसी सब बनाय ॥ १

त्रौपई- जयति जयति रघुकुल उजिआरे । जयति राम कौसल्या प्यारे ॥

रावन दस सिर मारची येन । राम कमल दल निरमल नैन ॥ २

अन्त- संवत सत्रहसै इकताला । तीज जेठकी चंद उजाला ॥

पूरन भयो मउ मैदान । यहई जानौं थान मुकाम ॥ ११०

ग्रंथ होत भए विघन सु भारे । हनुमान गनपति सब टारे ॥

भगवान ग्रंथ यह पूरन गायो । गुरकी कृपा सबै बनि आयो ॥ १११

छंद- भंग अक्षिर कटित, अर्थ विपरजै होइ ।

दुपनतें भूषन करें, कोविद कहिए सोई ॥ ११२

इति श्रीब्रह्मांड पुराणे उत्तरपंडे अध्यात्म रामायणे उमा महेश्वर संवादे उत्तरकांडे नवमौ अध्याय ॥ ६ ॥ मूल ४४६३ ॥ भाषा ५२६६ ॥ इति श्री रामचरित्र भगवानदास निरंजनी कथिते संपूरण । सुभं मंगल । सुभ भवत । त्रपे जेठ मासे वदि दसै रिवि चासुरे ॥ संवत १७८३ ॥ जले रक्षत पेले रक्षित पेले रखे रखे सथ लाभ तवधानान मूरप हस्त न दातव्यं । रावे वधनात पुस्तकं ॥ १ ॥ मंगल लिपकानां पाठकानाव मंगल मंगल सर्व देवानां भूमी भूपति मंगल ॥ १ ॥ सति निरंजन तुम सरना मंत्र सति राम ॥ राम राम ॥

४०. ५३८२

कवित्त संग्रह

आदि-

॥ श्री महागणपतये नम ॥

कवित्त- सील भरी सोहैं, ग्रान पतिकी न जोहैं,

कुल कांनि अरसोहैं तन जोति सरसाती हैं ।

उदैनाथ भोहैं कर तीन तीरछोहैं

रति भोंन लों चलों द्वार लों ना चलि जाती हैं ॥

वैन कहिवेकों पति मोनहीमें राखें ग्रान,

अैसी कुलनधू काहू कासों वतराती हैं ।

रिस रचैं मनमें ती मनहीमें मेंटें,

जैसे जलकी लहरि जल मांझ ही बिलाती हैं ॥ १

अन्त-

दोहा- सांवन सुदिकी तीजकों, करी पचीसी सार ।

संवत अठ्ठारह सतहि त्रेपन थिर सनिवार ॥ १०७८

इति छक पच्चीसी संपूर्णः ॥ संवत १८६३ शाके १७२७ मिति फाल्गुण वुदि १२ १

वार । इदं पुस्तकं समाप्तं । दसकत भट्ट शामसुंदरका । रणजीत तत्सुत बलदेव पठनार्थ ॥
यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखितं मया । यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥ रामः ॥

३५५. ५३८६

रामायण, युद्धकांड

आदि— (प्रारंभिक पत्र अप्राप्त)

मनोहर कवि कलानिधि रच्यो ।

तहां जुद्धकांडहि नारदागम सर्ग वत्तीसों सच्यो ॥ ३२

अन्त— ब्रज चक्रवर्ति कुमार गुनगन गहिर सागर गाजई ।

श्री रामचरन सरोज अलि परतापसिंघ विराजई ॥

तिहि हेत रामायन मनोहर कवि कलानिधिनै रच्यो ।

तहं जुद्धकांडहि सतरू चौतीस ग्रंथ फल वर्णन सच्यो ॥ १३४

लिख्यते लेखक रामसेवग लिखायतं ठाकुरजी श्रीभेदसिंहजी तस्य पुत्र पृथ्वीसिंह आत्म-
पठनार्थ संवत् १८३७ शाके १७०२ प्रवर्तमाने मासोत्तम मासे उत्तम मासे अश्वेन.....।

३६५. ४६२३ (१)

रूपमंजरी

आदि— श्रीगणेशाय नमः । अथ रूपमंजरी नंद कृत लिप्यते ।

दोहा— प्रथम हि प्रणऊ प्रेममय, परम जोति जो आहि ।

रूप उपावन रूपनिधि, नित्य कहति कवि जाहि ॥ १

अन्त—

दोहा— जदपि अगमते अगम अति, निगम कहति है जाहि ।

तदपि रंगीले पेमते, निपट निकट प्रभु आहि ॥ ११७

इति श्री नंददास कृत रसमंजरी ग्रंथ संपूर्ण समाप्तं ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभमस्तु । सम्बत्
१७२६ चैत्र वदि तृतीया वुधवारो मोकाम रंगामाटी सबलसिंघ कुवरस्य पठनार्थ रसमंजरी
ग्रंथं मुरलीधर मिश्रेणमलेखि ॥

३७४. ६०१६

व्रतकथाकोश

आदि— ॥ दं० ॐ नमः ॥ अथ श्री व्रतकथा कोश भाखा लिप्यते ।

चौपई— आदिनाथ वंदू जिनरा [य] । कर्म कलंक रहित सुपदाय ।

धनुष पंच से जाको काय । वृषव लक्ष्म्य सोभै अधिकाय ॥ १

अन्त—

छप्पै— श्री जिनंद गुण धाम जास वच सुणि चित धरिये ।

आवकको आचार पालि कर्मनिसौ लरिये ॥

दान सील तप भाव च्यारि वृष मुल विचारो ।

और सकल परिहारि चहू उत्तम उरि धारो

सुरगादि थान दाइक महा क्रमते सिवपदको कराहि ।

ताते पुस्याल अनिको अवै इनि विनि मनमें किम धरहि ॥ २१

इति श्रीसूरश्रुतसागर कृत व्रतकथाकोशके अनुसारि भाषा श्रीपत्य विद्यानकी

समापिता ॥ मित्ती माघसिर सुदि १३ पंचम्या तिथी वार बृहस्पति वासरे संवत् १६२३ का ।
श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

४६२.

४०२८

सभासार नाटक

आदि- प्रथम पत्र अप्राप्त

सै पथरन भीजै पानी कव ली विचारीये ॥

जिहां वकवाद तिहां अंत न सवाद कछु,

आपै जो न सुधरै तो कौनकी सुधारिये ।

जोपै अति जोर तो वतांज एक ठोर तोहि,

जानीये जगत जोपै एक मन हारीये ॥ २६

दोहरा- सब लछन पहिलै सुनौ पुण्य सुसंगत पाय ।

मन चंचलतासूं वसै, नीच संग न सुहाय ॥ २७

अन्त- सतगुरु सोही जो वतावै साचे मारगकुं,

साथी सतसंग जामै चलत ने हान है ।

कहत अरूप कोउ कोट काम कैसे तेज-

पुंज धाम जाहि जैसी ही पहिचान है ।

ताहिमै मगन देहकों विसर जान,

वेदको विचार यहै जान है सुजान है ॥

यहै पेम लछिना अनन्य भक्ति मुक्ति यह,

यत्र पदप्राप्ति विग्यान निरवान है ॥ २७

दोहा- सब विध सब रस सोहियत, कहत यहै रघुराम ।

यह नाटिक सम सदा, भूषन भेद सुनाम ॥ २८

छप्पै- यह नाटिक जो सुनै, ताहि हिय फाटिक पुलै ।

यह नाटिक जो सुनै, बुधबल कमल प्रफुलै ॥

यह नाटिक जो सुनै, ग्यान पूरन मन आवै ।

नाटिक सुनै सुजान, मरम मनुजको पावै ॥

विग्यान जान निरवानकै, जोग ध्यान धर धन लहै ।

पावत परमपुरुष गत, मति प्रमान कवि रघुकहै ॥ ३२६

इति श्री कवि रघुराम विरचित सभासार नाटिक संपूर्णम् ।

संवत् गुणकृत वसु शशी, तपस्यपक्ष शिति जान ।

पक्षति छाया सुत दिवस, ग्रंथ चढ्यो परमान ॥ १

ऋषि किसोर सोभत हुते, रत्नचंद्रके मित्त ।

सभासारनाटिक लिप्यो, सकल रिभावन चित्त ॥ २

निगम दिवसकी संख्यमै, सत्वरतै शषिरत्न ।

लिख्यो ग्रंथ वाचत सुनत, करीयो इनको यत्न ॥ ३

॥ श्रीरस्तु ॥ सवनर ॥ भद्रं भूयादिति ॥ श्रीः ॥

४८४. ५८६५

सिंहासन वतीसी

आदि— ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ स्थंघासन वतीसी भोज प्रबंध हितो उंपदेस
कवि क्रस्नदाश कृति लिषते ।

छैपा— प्रथम सुमरि गए इसनं गणनायक ।

विघ्नहरन मति राय काज सिधिकरण सहायक ॥

येक दंत मय मंन अंत नहि पाव पाव सुमति गति ।

फरस हथ समरथ देव परतछ अमित गति ॥

कवि क्रस्नदास वंदत चरन, और सुमति दुस्तर तरन ।

रस सिंधु मौढ बिक्रम चरित सु, करित दुरित दुर्गम हरन ॥ १

अन्त— दीनो वर बिक्रमकों सोय, सारिवाहन तन दाहन होय ।

तो लगि सो नृप आयो तहा, बिक्रम वीर अंवि जहा ॥ ४०

चंडी वाच तेरे हेत दहयो तन आय.....

विशेष— इसके पश्चात् पत्र रिक्त है ।



२२—जैनस्तोत्र

३. ४१४६

अन्तरिक्ष पार्श्वस्तव

आदि— श्री अन्तरीक पार्श्वनाथ छन्द लिष्यते ।

दूहा— सारदपाय प्रणमां करी, आपो अविरल वांशि
पुरसादाणी पास जिण, गास्युं गुण-मणि-पाणि ॥ १

अद्भुत कौतुक कलियुगै दीसै एह अदंभ ।

धरतीथी अधर रहै, सदा अंतरीक थिर थंभ ॥ २

अन्त— कीयो छंद आनंद वृंद मनमाहै आणी ।

सांभलतां सुषकंद चंद जिम सीतल वाणी ॥

श्रीविजयदेव गुरुराज आज तस गणधर राजै ।

श्रीविजयप्रभ सूरि नाम काम सम रूप विराजै ॥

गणधर दोय प्रणामी करि थुणियो पास असरण-सरण ।

भावविजय वाचक भणै जयो देव जय जय करण ॥ ४६

इति श्री अंतरीक पार्श्वनाथ छंद संपूरण ।

४. ४३४६

अजित शांतिस्तव (सवालावबोध) त्रिपाठ

आदि— अजि अंजि असघ भयं संति च संत सब गय पावं ।

जय गुरु संति गुण करे दोवि जिणवरे पणिवयामि ।

अन्त— जइ इच्छह परम पयं अहवा कित्तिसवित्थडं भुवरणे ।
ता तेलवकुद्धरणे जिणवयणे फु आयरं कुणह ॥ ४०
इति श्रीअजितशांतिस्तवः ।

८. ४३६२ एकादश गणधर स्तवन .

आदि— गोयम गणहर पदम संघयण ।
तित्थंकर वीर जिण पदमसीस सोन्नन समाणउ ॥ इत्यादि ॥ १
अन्त— इय समयज्जत्ति सव्यसत्ति चित्त भत्ति वन्निया ।
वैशाख सुदि इय्यारिसि दिनि वीर नाहइ थापिया ॥
ए सयलगणहर ए इय्यारसि जे आगहइ भाविया ।
एतवन भणसि भावै सुणसि ते लहइ सुख सपया ॥ ५
श्रीप्रभासगणधरस्तव ।

इति श्री एकादशिदिनसम्बन्धि श्री एकादशगणधर स्तवनं सम्पूर्णं ॥

२०. ४०३० कायस्थिति स्तोत्र

आदि— श्री पन्नवणा भगवती माहि थकी उदार करी गीतार्थ पूर्वाचार्य कायस्थिति
नउ स्तवन करइ छइ ।

आदि गाथा—जहतु हदंसण रहिउ कायठिई भीसणे भवारत्ते ।
भमिउ भवभय भजणा जिणदत्तह विन्न विस्सामि ॥ १
जह कहतां जिम हे जिनेश्वर तुह दंसण रहिउ, ताहरइ...आदि ।

अन्त— बहु सो अनन्ती वार हिव घणइ पुण्य तरणइ
उदय सांप्रत तुभ कुमइ दीवं उछइ ।
ता तस्मात्तिणि कारणि अकाय नही काया जिहां एहवा जे सिद्ध तेह तउ
पद मुक्तिपद तेहती संपदा हे तीर्थकर द मुनइ ॥ २४
इति श्रीकायस्थितिस्तवनवालावबोधः समाप्तः ।

२५. ४३६३ गौतम दीपाली का स्तवन

आदि— इन्द्र भूती गउतम भणइ तिसला कुलि निधान ।
ज्ञात पूतनूं पामोउ दइ मुक्क मुगतिनो दान ॥ १
अन्त— देव गुरु भगवियमी सुगती वर अणुसरो ।
सकल कहि हीर गुरु गुण विचारो ॥ ७५
जिन वचन दीप दीपालिका राजती ।

इति श्री गउतम दीपालिकालि स्तवनम् ॥

२६. ४५६६ चतुर्विंशति जिनस्तोत्र

आदि— जाडघध्वंसकृते नत्त्वा नाभेयप्रमुखान् जिनान् ।
आत्मनः स्मृतये वक्ष्ये यमकस्तुतिवृत्तिकाम् ॥ १

अन्त- स्निग्धा अविरला चासौ विभा दीप्तिश्च अनच्छविभा अलकानां केशानां अन्ता यस्याः सा अनच्छविभालकांता ॥

इति श्रीचतुर्विंशतिजिनसंक्षेपतो वृत्तिः समाप्ता ।

३७. ७४४४ (१)

चौबीसी

इस गुटकेमें निम्न कृतियाँ हैं—१. आनंदधन चौबीसी. २ संग्रहणी सूत्र. ३ जी विचार प्रकरण. ४ नवतत्त्व. ५ दण्डक प्रकरण. ६ सप्तस्मरण. ७ प्रतिक्रमणसू ६ पांच तिथिरी थुई. १० स्तुतिस्तवन. ११ गोतम रासो. १२ स्नात्रपूजादि. १३ चौद लिया. १४ थूलभद्र नवरसो. १५ वार भावना. १६ आनंदधन बहोतरी. १७ पन् तिथिरी थुई. १८ पंचसंधि (सारस्वत प्रक्रिया) १९ मिदूरप्रकर आदि स्तोत्रस्तवन ।

६५. ४२६८

पंच-परमेष्ठि-नमस्कारार्थ

आदि— श्री जिनाय नमः । नमो अरिहंताणं ।

माहरउ नमस्कार श्री अरिहंत भगवंत नइ हुउ । किंसा छइ ते अरिहंत जी अरिहंते राग द्वेष रुपिया अइरि वइरी जीता अनइ अठारे दोपे रहित इत्यादि ।

अन्त— माहरउ नमस्कार पंचांग प्रणाम त्रिकाल वंदना सदा हुइ ।

इति श्री पंचपरमेष्ठिनमस्कारार्थः सम्पूर्णः ॥

६१. ४०२५

भक्तामर-स्तोत्र

आदि— इनही पछइ आपणे घरे पाछा आधी राजानी सेवा करिवा लागी पूर्वि रीतइ आदि ।

अन्त— अन इन्वत्तिकरी मानतुंग सूरि इं रची, मई इस ताहरा स्तोत्र रुपिणी पुष्प माला जे कठ कंदलि धरइ तेह नह लक्ष्मी स्वयंवर वरइ ॥ ४४

इति भक्तामरस्तोत्र-प्राकृतवार्तिकवृत्ति समाप्तम् ॥

१००. ६२७७

भक्तामर भाषा

भाषा भक्तामर कियो, हेमराज हित हेत ।

जे नर पढ़े सुभाव सो, ते पावे सिव खेत ।

इति श्री भक्तामर भाषा संपूर्ण ।

१०१. ७४५०

भक्तामर भाषा आदि १८ कृतियाँ

इस गुटकेमें निम्न कृतियाँ हैं—१ भक्तामर भाषा हेमराज कृत १-१६. २ चौसर योगिनी नाम तथा घंटाकर्ण १७-२१. ३ कल्याणमंदिर भाषा २२-३२. ४ चैत्यवंद २-४. ५ भक्तामर रतोत्र ५-१७. ६ कल्याणमंदिर स्तोत्र सिद्धसेन कृत १७-२६ ७ लघु शांति २६-३३. ८ अजित शांति ३३-३६. ९ स्तोत्र संग्रह आदि १३ कृतिय ३६-८१. १० शक्ति मंत्र ८३-८४. ११ पदस्तवन ८४-८६. १२ वसुधारा ६०-११५ १३ सोलह पद ११५-१३०. १४ स्नात्र अष्ट प्रकारी नवपद पूजा १३१-१६५. १५ वीर

विहरमान गीत १६६ वाँ । १६ अतीत अनागत वर्तमान चौबीसी १६७-२०० । १७ बावन वीर नाम २००-२०२. १८ पदस्तवन (१२ कृतियाँ) २०२-२३२ ।

११४. ४६४४

दीतराग स्तोत्र

आदि— यः परात्मा परं ज्योतिः परमः परमेष्ठिनाम् ।
आदित्यवर्णं तमसः परस्तादमनन्ति यम् ॥ १
अन्त— तव प्रेष्ठ्योऽस्मि दासोऽस्मि सेवकोऽप्यस्मि विकरः ।
उमिति प्रतिपद्यस्व नाथ नाथ परं ब्रुवः ॥ ८
श्रीहेमचंद्रप्रभावाद्धीतरागस्तवादितः ।
कुमारपालभूपालः प्राप्नोतु फलमीप्सितम् ॥ ९
इति वी० स्तोत्रे आशीस्तवो विशः प्रकाशः ॥ २०

१२३. ४१५६

श्रीदेवीछन्द, शनैश्चर स्तुति

आदि— मकल-सिद्धि-दातारं पार्श्वं नत्वा स्तविमहं ।
वरदा सारदा देवी जगदानन्ददायिनी ॥ १
अन्त— इच्छं बहु भक्ति भर अडल छंदन सधुं ।
या देवी भगवई तुंम पसोईं होऊ सया संग कल्याणं ॥ ४५
इति श्री देवीछंद संपूरण ।
शनि स्तुति—आनंदन जग जयो रविसूत सांभलवान ।
कोड कवित करो तुभ स्तव तुज गुण को हवे मान ॥ १
अन्त— ए मंत्र धरी ऊंकार उक्षर सारह । ए मंत्र जपीय नर धारह ॥
एणे मंत्रे उलट धरी विनतडी चीत आणिये ॥
रिध वृध सहजे सदा, वली वली एम सनीसर वपाणीये ॥ १६
इति शनीसर स्तुति ॥ लिपिकर्ता—सुबुद्धिविजय गणी ।

१२८. ४५११

शोभन-स्तुति

आदि— भव्याभोजविबोधनैकतरणे विस्तारि कर्मावली
रंभा सामजनाभिनन्दनमहा नष्टा पदा भासुरैः ।
भक्त्या वन्दितपादपद्मविदुषां संपादय प्रोज्झिता (स्थिता)
रंभा सामजनाभिनंदन महा नष्टापदा भासुरैः ॥ १
अन्त— सरभसनातनाकिनारीजनरोजपीठीलुठत्तारहारस्फुरद्रश्मिसारक्रमांभोरुहे ।
परमवसुत रागजारोवसन्नाशितारातिभाराजिते भासिनी हारतारावलक्षा मदा ।
क्षणरुचिरुचिरुचंचत्सटासंकटोत्कृष्टकंठोद्भूटे संस्थिते ।
संकटा भव्यलोकं त्वमंवाविके परमंब सुतरां गजारोवसन्नाशिताराति भा
राजिते भासिनी हार तारावलक्षा मदा ॥ ६६ ॥ २४ ॥ श्री शुभं भवतु ॥

१३० ७२७८

शोभन स्तुति

आदि— आसी[द्]द्विजन्माखिलमध्यदेशप्रकाशसांकाश्यनिवेशजन्मा ।

अलब्धदेवधिरिति प्रसिद्धि यो दानवर्षित्वविभूषितोपि ॥ १

आस्त्रेष्वधीतो कुशलः कलासु बन्धे च बोधे च गिरा प्रकृष्टः ।

तस्यात्मजन्मा ममभून्महात्मा देवः स्वयंभूरिव(वा) सुदेवः ॥ २

अब्जायतास्यश्लाघ्यस्तनूजो गुणलब्धपूजः ।

यः शोभनत्वंशुभवर्णभाजा ननाम नाम्ना वपुपाप्यधत्त ॥ ३

कातन्त्रचंद्रोदिततन्त्रवेदी यो बुद्धबौद्धार्हंततर्कतत्त्वः ।

साहित्यविद्यार्णवपारदर्शी निदर्शनं काव्यकृतां बभूव ॥ ४

कौमार एव क्षतमारवीर्यश्चेष्टां चिकीर्षन्निव रिष्टनेमेः ।

यः सर्वसावद्यनिवृत्तिगुर्वी सत्यप्रतिज्ञो विदधे प्रतिज्ञाम् ॥ ५

एतां यथामति विमृश्य निजाम्बु (नु) जस्य

तस्योज्ज्वलां कृतिमलंकृतवान् स्ववृत्त्या ।

अभ्यर्थितो विदधता त्रिदिवप्रयाणां

तेनैव सांप्रत कविधर्मपाल नामा ॥ ६

अन्त— इति श्रीशोभनदेवाचार्यकृतचतुर्विंशतितीर्थकरस्तुतिवृत्तिः, कृतिरियं तस्यैव ।

१३२ ६८३६

स्तरुभ पार्श्वस्तुति आदि

इस गुटकेमें निम्न ५ कृतियाँ हैं—१ स्तंभ पार्श्वस्तुति, २ आत्मोपरि सज्जाय,
३ शान्तिजिनस्तवन, दानशीलादि चौदालियो, ५ जम्बूकुमार सज्जाय ।

१३४ ६१६०

स्तवनम्

पुष्पिका के अन्तिम २ श्लोक

पूर्व पाटलिपुत्रमध्यनगरे भेरी मया ताडिता

प्रश्चान्मालवसिधुटवकविपये कांचीपुरे वैदुषे ॥

प्राप्तोहं कलहाटकं बहुभट्टविद्योत्कटैः संकटं

वादार्यो विचराम्यहं नरपते सा(शा)दूर्लवत्क्रीडितम् (क्रीडितुम्) ॥ १

काञ्च्यं नगनाटकोऽहं मलमलिनतनुल्लाम्बुसे पाण्डुपिंडु ।

पुंड्रोद्भूते शाकभक्षी दशपुरनगरे मिष्टभोजी परिव्राट् ॥

वाराणस्यामभूवं शशिकरधवलः पांडुरांगस्तपस्वी ।

राजन् यस्यास्ति शक्तिः स वदतु पुरतो जैननिग्रंथवादी ॥ २

इति समन्तभद्रस्वामिविरचितं स्तुवनं ॥छ॥

१३६ ६८२५

स्तोत्रसंग्रह

इस गुटकेमें निम्न ५ स्तोत्र हैं—१ नवकार रो स्तवन, २ श्री महावीरजी रो स्तोत्र,
३ श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र, ४ श्रीशान्तिनाथ स्तोत्र, ५ संगीत बंध नमस्कार, ये पांच स्तोत्र हैं ।

२३-जैनागम

आवश्यकसूत्र सबालावबोध

- २७ ४३५८
 आदि- नमो अरिहन्ताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं ।
 नमो उवज्झायाणं नमो लोय सव्वसाहूणम् ॥ १
 अन्त- समाईय पोसह, संठियस्म जीवस्स जाइजो कालो ।
 सो सफलो बोधवो सेसो संसार फल हेउ ॥ १
 इति श्री आउशक संपूर्णम्

उत्तराध्ययनसूत्र (सबालावबोध)

- ४२ ४४१८
 आदि- संजोगाविप्पमुक्कस्स अणुगारस्य भिक्षुणो ।
 विण्णयं पउ करिस्सामि आणुपुब्बं सुणोहमे ॥ १
 अन्त- श्रीवर्द्धमानस्वामी परिनिवृतः निर्वाणं प्राप्तः कि० ।
 उत्तराध्ययनभवसिद्धिका भव्यजीवाः तेषां समन्तात् ॥८२ छ॥
 इति षट्त्रिंशत् श्रीउत्तराध्ययनवालावबोधः समाप्तः ॥

उत्तराध्ययनावचूरि

- ५० ४३५७
 आदि- श्रीवर्द्धमानमानम्य बृहद्बु त्यनुसारतः ।
 श्रीउत्तराध्ययनानामवचूरि लिखाम्यहम् ॥ १
 अन्त- योग उपधानादिरुचितव्यापारस्तदानतिक्रमेण यथायोगं गुरु० तच्चित्तप्रसन्नता
 स्याद्धेतोरधीयेत न तु प्रमादं कुर्यादिति भावः ।
 इति श्रीउत्तराध्ययनावचूरिः ॥

कल्पसूत्र (सस्तवक)

- ८१ १०६
 आदि- ॐ नमो अरिहन्ताणं नमो सिद्धाणमित्यादि ।
 अन्त- श्रीमत्तपागणाधीशश्रीदेवविमलप्रभोः ।
 श्रीसोमविमलाह्नेन टवार्थो लिखितः स्फुटः ॥
 टवार्थः कल्पसूत्रस्य मूर्खशिष्यस्य हेतवे ।
 बृहद्बु त्यनुसारेण संशोध्यः सर्वधीधनैः ॥

प्रतिक्रमणसूत्र आदि

- १२१ ७४४५
 १. प्रतिक्रमणसूत्र । २. जयतिहूयणस्तोत्र । ३. आवककरणीस्वाध्याय-जिनहर्षकृत ।
 ४. शत्रुञ्जयरास-समयसुन्दरकृत । ५. गोतमरास । ६. मुनिमालिका-वादित्रसिंहकृत ।
 ७. गोतमस्वामिस्तवनादि । ८. कालज्ञानभाषाचौपई-लक्ष्मीवल्लभगणिकृत ।
 १२२ ७४४६
 प्रतिक्रमणसूत्र आदि
 १. प्रतिक्रमणसूत्राणि । २. स्तुति-स्तवन । ३. शत्रुञ्जयरास । ४. गोतमरासो ।

५. स्तवनादि ८ । ६. जीवविचार, प्राचीन राजस्थानी भाषार्थसहित । ७. नवतत्त्वप्रकरण ।
८. विचारपट्टिशिका । ९. बावीस परिसह छंद । १०. वारहभावनास्वाध्याय ।

१२७ ७३४५ प्रश्नव्याकरणाङ्गटीका

अन्त- निर्वृत्तिककुलनभस्थलचन्द्रोणाख्यसूरमुख्येन ।
पण्डितगणेन गुणवत्प्रियेण संशोधिता चैयम् ॥

१५६ ७२२३ समवायाङ्गवृत्ति

वृत्तिरचनाकालः- एकादशशतेष्वथ विंशत्यधिकेषु विक्रमसभानाम् ।
अणहिलपाटकनगणे(रे) रचिता समवायटीकेयम् ॥



२४-जैनप्रकरण

७. ७०१६ आगमसारोद्धार भाषा

यह और संख्या ७३३१ वाली प्रति मिलती है, किन्तु इसमें निम्न दोहा अन्तमें विशेष है—

करघी इहां सहाय अति, दुर्गदास शुभ चित्त ।
समभावन निज मित्त कौ, कीनी ग्रन्थ पवित्र ॥ १२

१६. ४३०२ ऋषभपंचाशिका

आदि- ॐ नमो वीतरागाय नमः ॥

भक्तिभरनभिरसुरवरातिरीडं मणियंति कंतिकयसोहो ।

उसभाइ जिणवरिदाणं पायपंकेरुहे नमिमो ॥ १

निज्जिय परीसहचमुं संभयुव सग्रवगरिउपसरम् ।

संपत्तकेवलिसिरि सिरिवीरजिणोसर वंदे ॥ २

अन्त- इयग्भाणग्रपलीवियकम्मिधरा वालवुद्धिणा विमय ।

भत्ती डू उभयभयसमुद्दवो हिच्छवो हि फलम् ॥ ५०

इति ऋषभपंचाशिका समाप्ता ॥

६७. ४५६६ धर्म्मोपदेशश्लोकाः

आदि- हण्ट्वा शत्रुञ्जयं तीर्थं नत्वा रवतकाचलम् ।

स्नात्वा गजपदे कुण्डे पुनर्जन्म न विद्यते ॥ १

अन्त- इति श्रीपुराणे कथिताः श्लोकाः ।

८४. ७२००

प्रबोधचिन्तामणि

अन्त- यमरसभुवनमिताब्दे स्तम्भनकाधीशभूषिते नगरे ।
श्रीजयशेखरसूरिः प्रबोधचिन्तामणिमकार्षीत् ॥

८६. ७३४७

प्रवचनसरोद्धार सटीक

ग्रन्थान्ते- श्रीमानर्बुदपर्वतप्रभुरभूत् भूमान् सुरत्राणभूः,
सत्याब्धो भुवि राजासिंह इति यो रामावतारः प
श्रीमानक्षयराजराजतिलकः प्रोद्यत्प्रतापानल-
स्तत्पुत्रोद्भूतभाग्यभूमिरधुना वालोऽपि पाति क्षितिम् ।
तस्य श्रीः.....सत्पुत्रद्वयीसंयुतो,
राज्यस्तम्भनिभः समस्तभुवनप्रख्यातकीर्तिव्रजः ॥ २
यात्रां श्रीविमलाचलस्य महता संघेन माडम्बरं,
द्वेषाभूततपागणस्य सुचिरादद्रेरिवाश्चर्यकृतः ।
सन्धानं च मियो विधाय भूतवान् यो बोधिलक्ष्म्याङ्गिनः,
स्वात्मानं सुकृतं श्रिया च यदासा द्यावापृथिव्यन्तरम् ॥ ३
तेन श्रीतपगच्छनायकगुरुश्रीहीरसूरीशितुः,
संघे श्रीमदुपासकेन नगरे श्रीरोहिणीनामनि ।
वर्षे विक्रमतो रसावसुरसङ्घमासम्मिते वत्सरे (१६८१)
चित्कोशे स्वकृते चिरं विजयतामेषा गृहीता प्रतिः ॥ ४

१११. ४०८५

मङ्गलकलशचोपाई

आदि- श्रीगुरुभ्यो नमः ।

दुहा- प्रह उठी नीत प्रणामीयइ, श्रीरिसहेसरदेव ।
नाम थकी नवनिघ मीलइ, सिवपद आपइ सेव ॥ १
मंगलकलसइ दानसुं, पामि परधल रिद्ध ।
राजलीला सुख भोगवी, देव तरणी गति लीव ॥ ७
अन्त- तस सेवक नित्य हर्षगणि रे, सदा मन आणंद ।
तत शिष्य लक्ष्मीहर्ष कहै रे, सवै नरनावृंद ॥ ५ ॥ दा०
सहैर काकंदीनयर भली रे, रह्या तिहां चोमास ।
आवक सदा सुखिया बसै रे, पुन्य करी जस वास ॥ ६ ॥ द
सांभलवो करवो भावसू रे, मनमें आणी विनोद ।
धरम करै ते सुख लहै रे, उछै एह प्रमोद ॥ ६ ॥ दा०
इति श्रीमंगलकलशचउपी संपूर्ण ॥

१२१. ४२६६ विशतिस्थानकविचारामृतसंग्रह

ग्रन्थान्ते- विशतिस्थानकाचारविचारामृतसागरः ।

गच्छेशश्रीजयचन्द्रसूरिशिष्येण निमित्तः ॥ २२

वीरग्रामाख्यपुरे युग्मव्योमेन्दुपञ्चभिः ।

प्रमिते वत्सरे हर्षेज्जिनहर्षेण साधुना ॥ २३

ग्रन्थस्यास्य पवित्रस्य वाचनश्रवणादिभिः ।

लभन्ते प्राणिनः प्रौढां श्रीजिनेश्वरसम्पदम् ॥ २४

ग्रन्थोऽष्टाविंशतिशतानुमितः सर्वसंख्यया ।

जीवेदयं बुधश्रेणिवाच्यमानो निरन्तरम् ॥ २५

इति श्रीविगतस्थानकविचारामृतसंग्रहः सम्पूर्णः ॥

१२२ ७४७७

विचारामृतसंग्रह

अन्त- सूरिः श्रीकुलमण्डनोऽमृतमिव श्रीआगमाम्भोनिधि

श्चक्रे चारुविचारसङ्ग्रहमिमं रामाब्धिशक्राब्दके (१४४३) ॥

१२७ ४०२६

शीलोपदेशमालाबालावबोध

अन्त- इति श्रीशीलोपदेशमालाबालावबोध श्रीखरतरगच्छमेरुसुन्दरोपाध्यायविर-
चित धनश्रीकथा समाप्ता । हिव ग्रंथकार ग्रन्थनी समाप्ती भणी आपण्डं
नामगर्भित मंगलगाथा कहइं

ईय जईसिंहमुणीसरविनेयजयकित्तिगा कयं

एयं सीलोवएसमालं आराहिय लहइ बाहि सुहां ॥ ११५

व्याख्या—इणइं पूर्वोक्त प्रकारि करी जयसिंह सूरि तेहनउ विनीत शिष्य
शिष्य जयकीर्तिमुनि तीणइं ए शीलोपदेशमाला प्रकरणरूप मूलसूत्र
कीधऊं..... इति श्रीशीलोपदेशमालावबोध प्रकरण समाप्तम् ॥ ग्रन्था-
ग्रन्थ ६२५० ॥ सैलानागाब्धिचन्द्रो, वृद्धमासं त्रयोदशी । कृष्णपक्षे रविपुत्रो
अरुणोदयजिनपूजनम् ॥ १

१४२. ४३५६

संग्रहणीबालावबोध

आदि- श्रीपार्श्वनाथं फलवर्द्धिकाख्यं गुरुंश्च श्रीमज्जिनदत्तसूरीन् ।

गीर्देवतां भाष्यसुधासमुद्रं क्षमाश्रयं श्रीजिनभद्रनाम्ना ॥ १

अन्त- इति श्रीवाचनाचार्यश्री श्रीश्रीशिवनिधानगरिविरचिते संग्रहणीबालावबोधे
सामान्याधिकारः समाप्तः । इति श्रीलघुसंग्रहणी बालावबोधः समाप्तः ॥

१४५. ४००४

संग्रहणीसूत्र (संघेननो रासछंद)

आदि- दशमइं ग्रहं सातमीडं चौदश तर आटमइं । अधिके एकेकं तिहां थी
तिमइं । २३॥

अन्त- (ढाल एह) अर्थ- निरुपम अमृत उपम सुण्यो श्रवणो सुख करी,

विचार करंता चित्त धरंता कर्मकोडिना दुःख हरें ।

तां रहु रास प्रकास उत्तम मेरुं हूं शशि दिणयरुं,

शामना देवी पसाउलि श्रीसंघ चतुर्विध जय करूं ॥ ५५०

इति श्रीसंग्रहणीसूत्रे परिपूर्णता नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ श्लोक संख्या ग्रन्थाग्रं ॥ ६४१

१४६. ४०३१

संग्रहणीसूत्र सस्तबक

अन्त- मलिहारि हेमसूरीणं सीस लेसेण सूरिणा रइयं ।

संघयणिरयणमेयं नंदउ वीरजिणतिच्छं ॥ ३०

इति श्री संग्रहणीसूत्रं संपूर्णमिति ।

१६० ६२०३

सम्मेदसिखरमाहात्म्य

ग्रन्थान्ते पुष्पिका- इति श्रीभगवैल्लोहाचार्यानुक्रमेण श्रीभट्टारकजिनेन्द्रभूषणोपदेशा-

च्छ्रीमदीक्षितदेवदत्तक्र(कृ)ते श्रीसम्मेदसिखरिमाहात्म्ये समाप्तिसूचको नाम

एकविंसतिमोऽध्यायः ॥ २१

१६२. ७२१७

समाधिशतकटीका

अन्त- तुरङ्गदृष्टितत्त्वभूमिसंयुते (१७२७) सुवत्सरे,

तपस्यशुक्लपञ्चमीदिने च तक्षके पुरे ।

समुद्धृतं सुपुस्तकं समाधिसाधिताशयम्,

सुवादिराजधीधनेन धारितं स्वधीगृहे ॥

१७१. ५६११

हरिवंशपुराण

अन्त- इत्यरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्य कृती गुरुपादकमलवर्णनो
नाम षट्षष्टितमः सर्गः ।

विशेष- श्रीवर्द्धमानपुरे श्रीपाश्वर्णालय नवराजवसती निमित्तम् ।

+++++

परिशिष्ट २

ग्रन्थकार नामानुक्रमणिका

अ

अखैराज २४२
अग्निवेश मुनि १३६, १५४
अग्रदास २११, २१३
अचलकीर्ति १६५
अजितप्रभ १५२
अद्वयारण्य ७१
अनुभूति स्वरूपाचार्य ७७, ७८, ७९
अनूपसिंह १६५
अनंतदेव ४१, ४३, ४५, १५७
अनन्त पण्डित १२६, १४६
अनन्त पण्डित (त्र्यम्बकात्मज) १४३
अनन्त भट्ट २५
अनन्तराम ६६
अन्नं भट्ट ७०, ७१
अप्पय (?) (वेकटेशशिष्य) ११७
अप्पय दीक्षित १००, १४१, १४३
अभयदेव २३६, २५५, २५६, २५७,
२५६, २६५
अभयसोम १८६, १६४, २४१
अभिनव नारायणोन्द्र सरस्वती १५
अमृत कवि १७४
अमृतचन्द्र ७०
अमरचन्द्र १४१
अमरप्रभ २४२
अमरसिंह ८२, ८३, ८४
अमर भट्टक १२६, १२७
अष्टावक्र ५८
अहोबल शास्त्री १२

आ

आढमल्ल १६०

आणन्द जेठूमल १७५

आत्माराम २०७

आनन्द कवि २०६

आनन्दगिरि १६, ६१

आनन्दघन १६१, २०८, २३६

आनन्दचन्द्र १६१

आनन्दतीर्थ ४

आन्हिदत्त १०२

इ

ईसरदाम २०४

उ

उज्ज्वलदत्त ७३

उत्तम २६६

उत्पल भट्ट ६६, १०३, ११२, ११५, १

उदय २११

उदयनाचार्य ७०

उदयप्रभ ८५

उदयरत्न १६४

उदयरत्न १७८, १६४, २४०

उदयराम १६७

उदयवन्त १७०

उदैराज १८२

उपेन्द्र ११४

उमास्वामी २६३

ऋ

ऋषभमागर १६४

ऋषि शर्माचार्य (महर्षि) १२१

क

कृपाराम १०४, १७४

कृपाराम मिश्र १०२

कृष्ण कवि २१७, २२७

कृष्ण जीवन २०८
 कृष्णदत्त १५६
 कृष्णदास ५६, २०८, २११, २१८,
 २३३ २३६
 कृष्णदास पयोहारी १३
 कृष्णानन्द ६६
 कृष्ण मिश्र ७६
 कृष्णयाजी ६४
 करणद महर्षि ७१
 कनककीर्ति १७८
 कनककुशल १५१, २४२, २४३
 ,, ,, (विजयसेन सूरिशिष्य) १५३
 कनकनिधान १६०
 कनकसुन्दर २०४
 कनकसोम १६५, २६६
 कबीर १६७
 कमलबन्धु १८१
 कमलसंयम २४६
 कमलाकर ३६, ११५, १२०
 ,, (रामकृष्णसुत) २८
 ,, भट्ट ४२, ४५
 करणीदान २०३
 कर्काचार्य २१, २७
 कर्णसिंह ३२
 कर्मचन्द १७३
 कलश कवि १७१
 कल्याण १५६, १८६
 कल्याणकर १००
 कल्याण मिश्र २२२
 कल्याणराम ६०
 ,, वर्मा ११८
 कविकान्त सरस्वती ४४
 (आदित्याचार्य सुत)
 कवियण १८१, १६१, १६३
 कविराज भिक्षु ६६
 कवि शेखर १२५
 कवीन्द्राचार्य २२०

कात्यायन २८
 कालिदास ७, ६०, १२२, १२३, १२६,
 १२७, १२८, १३०, १३४, १३५,
 १३६, १४०, १५२
 काशीनाथ ६८, १११, ११४, १५४
 ,, भट्ट (जयराम सुत) ३२
 काशीराम १६०, २०१
 किशनसिंह २१८
 किशोरी अली २१४
 कीर्तिप्रभ २४१
 कीर्तिविलास २३८
 कुक्कोक पण्डित २५
 कुबेरानन्द वर्णी ५०
 कुमुदचंद्र २३७
 कुलपति मिश्र २३१
 कुलमण्डन २६८
 कुशलधीर १६३
 कुशललाभ १७७, १८८, २३८
 कुशला २१६
 केदार भट्ट १२२
 केयदेव १५५
 केशरविमल २०२
 केशराज १७६
 केशव ८७, ६३, १११, ११४, २०८
 ,, (आचार्य) १८६
 ,, (कवि शेखर) १३०
 ,, दास १६५, २२१
 ,, देवज्ञ ६२, १०७
 केशव भट्ट १३१
 ,, मिश्र ७०
 केसरसिंह १६७
 केसरी कवि (बालकृष्ण भट्टसुत) २७
 कैवल्यश्रम १३
 कोक १२५
 कोविद मिश्र २३५
 कौण्डि भट्ट ७६
 कंकाली भाटण १७४

ख

खडियो जगो १६१, १६२

खुशाल २३३

खुशालचंद १८७, २३५

खेतल १७३

खेतसी २२६

खेमचंद २०८

खेमो १६३

ग

गजकुशल १७०, २००

गजसागर २६२

गजसार २३६

गरापति दैवज्ञ २४, २८, १०५

(रावल हरिशङ्कर सूनु)

गरापति मिश्र २२७

गरोश ८८

,, गणक (ढुंढिराजात्मज) ६४, ६५

,, दीक्षित ६०

,, दैवज्ञ ६३, ६४, ६५, १०२, ११४

गर्ग ऋषि ८८, ६८, १०१, १८३

गाङ्गला १८८

गिरिधरराय २३०

गिरिधारी मिश्र १११

गुराकीर्ति १६७

गुराभद्र २०७, २६७

गुरारत्न १२१

गुराविजय २३८, २५१

गुराविनय १२६

गुरासागर १६७, १७६, १७७, १८०

गुरासार २४३

गुराकर १२०, २४२

गुरुप्रसाद २२०

गुरुसेवक (श्रीकाल) ३२

गोपदास ५८

गोपाल ३, ७८, ६२, २११, २१३

गोपालदास १५४, १८३, १८८, २१६

गोपाल (न्याय पंचानन भट्टाचार्य) ४२

गोपाल भट्ट ६४, १४२

गोपीनारायण (सूर्यसेन महीमहेन्द्र) ४२

गोपेश्वर ६८

गोरखजी १७१

गोरक्षनाथ ३८

गोवर्द्धन ७१, १२६, १३०, १३१, १४०

गोवर्द्धन कण्डोलक (द्विजराम सुत) १०१

गोविन्द (विष्णु दैवज्ञ सुत) ६६

गोविन्द कवीश्वर १४०

गोविन्द गरिण २४०

गोविन्द ठक्कुर १४१

गोविन्ददास १६२

गोविन्द दैवज्ञ ११६, ११७

गोविन्द गाढाणी २१०

गोविन्द पण्डित ४२, ४३

गोविन्दराम २०३

गोविन्दाचार्य ५६

गौतम मुनि ८६

गौरीकान्त भट्टाचार्य ७०

गौरीकान्त सार्वभौम १३

गङ्गा १६७, २०८

गङ्गादास १२२

गङ्गाधर (रामचन्द्र पाठक सुत) २६

,, १००

गङ्गाधर भट्ट २७३

गङ्गागम १०६

,, कवि (जडचू पनामक) १४१

,, भट्ट ४१

गङ्गेश्वर ७०

गङ्गेश मिश्र २२७

च

चक्रधर १०६

चक्रपाणि ६७, १५८

चक्रवर्ती ६

चक्रदास २१६

चतुर्भुजदास कायस्थ १८७

चतुर्भुज मिश्र २, १२७
 चतुरविजयगणि १०७
 चरणदास २१८, २३६
 चानरा खिडियो १८८
 चारणक्य १४५
 चामुण्ड कायस्थ १५५
 चिन्तामणि २०६, २१०
 ,, पण्डित ११०
 चिरञ्जीव भट्टाचार्य ६६
 चूडामणि चक्रवर्ती १०४
 चूडामणि भट्टाचार्य ७१
 चेतनदास १७४
 चैतन्यदास १२७, १२६, १६६
 चैनराम २२१
 चैना १८६
 चौथमल १७६
 चौधो श्रावक १६६
 चीर कवि १३०
 चन्द ? १८४
 चन्द कवि १८४, २३३
 चन्द्रकीर्ति ७८, ८१, १८५
 चन्द्रचूड २५
 चन्द्रमिह ६०
 चन्द्रशेखर ११२

छ

छत्रसिंह श्रीवास्तव २२७
 छीतरदास १७४

ज

जगदैवज १०८
 जगदानन्द महामहोपाध्याय ३१
 जगदीश २०८, २१०
 जगदीश भट्टाचार्य ७१
 जगन्नाथ भट्ट (तैलङ्ग पण्डितराज) २
 जगन्नाथ (पण्डितराज) ५, १३, १३१, १४१
 जगन्नाथ मिश्र १२२

जगन्नाथ सम्राट् १११
 जगमाल मालावत १७०
 जटमल १७१
 जडभरत ६१
 जनगोपाल २१६
 जनार्दन २२८
 जयकृष्ण ७५
 जयकीर्ति २६८
 जयगणि ६२
 जयदेव १२६, १३१, १४१
 जयपारदीक्षित १५६
 जयराम ६४
 जयरामन्यायपञ्चानन ७१
 जयराम भट्ट १७
 जयराम भट्टाचार्य २२
 जयरङ्ग १६७
 जयवल्लभसूरि २३६
 जयशेखर २६५
 जयानन्द २४४
 जसराज १८२, २१६
 जसवन्तसिंह १७६, २१६
 जानकवि २१७
 जिनकीर्तिसूरि २३६
 जिनचन्द्र ८१
 जिनदत्तसूरि ७२, २६८
 जिनदास १७६
 जिनप्रभ २६४
 जिनभद्र २६८
 जिनमाणिक्य २०२
 जिनरङ्ग २०३
 जिनवल्लभ १४४, १६५, २४२, २६६
 जिनसागर २४०, २४१
 जिनसागरसूरि १४२
 जिनसुन्दर १७६, २६४
 जिनसूरि १७०
 जिनसेन २३६, २७१
 जिनहर्ष १६४, १६६, १७४, १८२,

१६४, १६५, १६६, २०२, २०४

२०७, २६८

जिनहर्षसूरि (सुमतिहंस) १६४

जिनहंस २४७

जिनोदय २०३

जीवक ५५

जीवगोस्वामी ५६, ६०, ६१, ६३

जीवनाथ ११६

जीवागुर्जर (याज्ञिक नरहरिसुत) ६६

जैतकवि १६८

जोरावरसिंह २२१

ठ

ठण्डीराम २१६

ठाकुरसी १८२

ड

डेडराज २२६

(जनराज)

ढ

ढुण्डियज्वा १३४

ढुण्डिराज ६३, १०६

त

तत्त्वहंस १६६

तरुणीवीरेन्द्र ३२

(नरोत्तमारण्यमुनीन्द्रशिष्य)

तिलकसूरि १८६

तिलकाचार्य २६३

तुलछीदास २०६

तुलसीदास १४, २२२, २२३, २२४,

२२५, २२६, २२७, २२८, २३३, २३४

तेजसिंह १४८, २१६

तेजसिंहगणि १४२

तेराकवि १८५

द

दत्तलाल १७८, २१६

दलपतिराम २

दलपतिराय २०७

दक्षनकवि २११

दादू १६८

दादूजी १७८, १०६

दामोदर १०८

दासपण्डित १६०

दिनकर ८७, ८६

दिनकर भट्ट (रामकृष्णात्मज) ४५

दिवाकर १००, १०१, १०४, ११२

दिवाकर (नृसिंहगणकमुत) ६२

दिवाकर भट्ट ४५

दीपचन्द्र १५५

दीपोत्तपि १७०

दीपो १७८, २०२

दुर्गदेव ८५

दुर्गशिङ्कर ११६

दुर्गशिङ्कर पाठक ८८

दुर्गशिङ्कर शुक्ल २८

दुर्योधन ६८

दुर्वासा ऋषि ६

देद कवि १६६

देवकीनन्दन (जीवानन्द सुत) २३

देवगुप्त १६३

देवचन्द्र २६०

देवदत्त १६८, २६६, २७१

देवप्रभ १३१

देवभद्र २६६, २७०

देवयाज्ञिक २१, २२

देवयाज्ञिक (प्रजापतिसुत) २३

देवसागर (रविचन्द्रशिष्य) ८२

देवसूरि ७२

देवसेन पण्डित ७१

देवीदान १६८

देवीदाम २१४, २२२

देवेन्द्र २६५

देवेन्द्रसूरि १४४, २६१, २६८

देवेन्द्राश्रम ३३

घ

घनपाल (पण्डितवान्धव) २४३
 घनराजगणि (भुवनराजगणिशिष्य) १०५
 घनसार १४४, १४५
 घनेश्वर १३४, १३६, २७१
 घनञ्जय ८४
 घनञ्जयसूरि ११
 धर्मकुमार १५२
 धर्मघोष २४३
 धर्मदास १४३, २६०
 धर्मदेव १६४
 धर्ममन्दिर १६४, १६०
 धर्ममन्दिरगणि १८२
 धर्ममेरुगणि १३६
 धर्मराजाध्वरीन्द्र ६६
 धर्मवद्वन २०२
 धर्मसमुद्र १६३
 धर्मसागर २५२
 धर्मसी २३७
 धर्मसुधी १४३
 धर्मेश्वरमालवीय ८६
 धुरन्धरमल्लारि १२२

न

नृपति भूपति ११८
 नृसिंह ३५
 नृसिंहदैवज्ञ १२०
 नृसिंहाश्रम १३०
 न्यायवागीश भट्टाचार्य १४१
 नकुल १६८
 नथमल २२७
 नयनसुख २१२
 नयनसुख (केशवमिश्र मुत) २२८
 नयविजय १६०
 नयविलास २६८
 नयसुन्दर १६७, २०२
 नर्बदो चारण १६३

नरपति ८७, ६६
 नरसिंह १३
 नरसिंह (रतनराजगणिशिष्य) १०६
 नरसिंह सरस्वती ६७
 नरहरदास २०३
 नरहरिदास वारहठ १६४
 नरहरि भट्ट १४३
 नरेन्द्रपुरी ७६
 नरोत्तमदास २३३
 नागदेव उपाध्याय ३६
 नागभट्ट ३८
 नागराज (टाकवंशीय) १३१
 नागरीदास २१४, २१६
 नागार्जुन १५५
 नागार्जुनसिद्ध ३१
 नागेश ७६, ८१
 नागेश भट्ट ७५
 नागेश भट्ट (श्रीकालोपनामकशिवभट्टसुत)
 १४२
 नागोजी भट्ट १२, ३२, ७५
 नाधिया १८१
 नानू ऋषि २४४
 नाभादास २१७
 नामदेव १८१
 नारचन्द्र ६७, १०३
 नारायण १०, २१, ८६, ६०, १०८
 ,, (रामेश्वर भट्टसुत) २५
 नारायणदास सिद्ध (ब्रह्मदाससुत) ६८
 नारायणदैवज्ञ (अनन्तपुत्र) १०७
 नारायणदैवज्ञ कौशिक ११२
 नारायण पण्डित (नृसिंहदैवज्ञसुत)
 नारायण भट्ट ३, २७, १३६
 ,, ,, (रामेश्वरसुत) २३
 नारायणमुनि (शठकोपमुनि) २६
 नाहरखान राजसिंहोत २०४
 नित्यनाथ १५८
 नीलकण्ठ ८, ४२, ४५, ६४, ६५,

१०४, ११२, ११३, ११६, ११७,
१३२, १३३, १४०

नीलकण्ठ (शंकरभट्टात्मज) २४, ३६

,, (गोविन्दसूरिसूनु ३७)

नीलकण्ठ शुक्ल ७६

नेमिचन्द्र २६१, २६३

नेमिप्रभ १४६

नन्द २०२, ११

नन्दमिश्र ६८

नन्दन (अमरसिंहसूनु) ६०

नन्ददास १४, ६०, १८१, २०६, २१०,

२१२, २१४, २१७, २१६, २२०,

२२१, २२६

नन्दराम ८७, २२०

नन्दराम मिश्र ८८, ६८, ११६

नन्दिकेश्वर ८८

प

पतञ्जलि ६५, ७३

पतञ्जलिऋषि ७५

पृथ्वीधर मिश्र (शाण्डिल्यगोत्रज, जगन्नाथ-

सुत, हरपुरवासी) ३७

पृथ्वीधराचार्य ७

पृथुयश ११५, १६८

पृथ्वीराज १६८, १६३

पद्म कवि १६८

पद्मचन्द मुनि १७५

पद्मनाभ ११२

पद्मनाभ (नर्मदात्मज) १०२

पद्मप्रभदेव ८

पद्मप्रभसूरि १०४

पद्मसागरगणि १८६

पद्मसुन्दर ७६

पद्माकर २०६, २१३

परमानन्द ५४

परमानन्ददेव ६६

परमानन्ददास २११

परमानन्द विष्णुपुरी (दण्डिपुत्र) ८३

परमानन्दशर्मा ६८

परमल्ल १६६

परमसुखोपाध्य १००, ११०

परमहंस विष्णुपुरी ६२

पर्वतधर्मार्थी (कुन्दकुन्दाचार्य शिष्य) ६८

पराशरऋषि ११२

पराशरमुनि ४४

प्रकाशानन्द ७२

प्रजापतिदास १००

प्रताप २०१

प्रतापरुद्रदेव ३१

प्रतापशाहदेव ३३

प्रतापसिंह सवाई १६४, २२८, २२६,

२३०, २३४, २३६

प्रतापसिंह (महाराज) २११, २१५

प्रतापसिंह २१२, २१३, २१४, २१६,

२२०, २२१, २२६

प्रद्योत्तम भट्टाचार्य १४१

प्रधानपुहकर २२१

प्रद्योधानन्दसरस्वती ११, ५६

प्रभाचन्द्र २३६, २७१

प्रभुचन्द्र १७६

पशुपतिराढीय ७३

पञ्चानन भट्टाचार्य ७२

पाणिनि १७, ७३, ७५

पारस्कर २६

पार्श्वचन्द्र २५०, २६५

पाशचन्द्र १७७, २५८

पासचन्द्र २४३

प्रियदास २१८

प्रियादास २१७

पीताम्बर १५४

पुञ्जराज २४०

पुञ्जराजनरेन्द्र ७८

पुण्यकीर्ति १८४

पुण्यानन्द मुनीन्द्र ३१

पुण्यसागर १६२
पुन्हकवि १८८
पुलिनन्द भट्ट (बाणभट्टतनय) १२७
पुरुषोत्तम ४०, ४१, ५५, ६८
पुरुषोत्तमदेव ७६
पुष्पदत्त ७, १२
पूरुगनिन्दगिरि ३६
पूरुगनिन्दयतीन्द्र १३४
पूरुगनिन्द श्रीगौड़ ६०
प्रेमजी गणि २५८
प्रेमविजय २४३
प्रेमविमल २४१

ब

बृहस्पति ८३
बखतो १८५
वनवारीदास २०२
वनारस १६५
वनारसी गर्ग २१६
वनारसीदास २०१, २०६, २१०, २१२,
२२६, २३२, २३६, २४३, २४५,
२७३
वप्प भट्टि २३८
बलदेव २
बलभद्र ७२, १०६, १२०, २३०
बलभद्रशुक्ल २२
बल्लालदेव ४२
बल्लालसेन ८५, १५३
ब्रह्मगुलाल २०१, २३६
ब्रह्मचैतन्यमुनि ६०
ब्रह्मजिण्णदास १६३, १८५, २०४
ब्रह्मदेव २६३
ब्रह्मरायमल २१६
ब्रह्महंस २४४
ब्रह्मानन्द ६७
ब्रह्मज्ञानतत्त्वसार ५६
बाण १२७

वावादेवज्ञ (रामपुत्र, शिवानुज) १००
बालकृष्ण १००, २२२
बालकृष्णानन्दसरस्वती ६४
बालचन्द्र १८६
बालपुरी २३२
बिहारी २१७
बीका १८८
बुद्धिविजय १५०
बुद्धिराज ३३
बुद्धिपण्डित ६०
बोपदेव १५७, १६०
बोपदेवमधुसूदन १४०

भ

भक्तिलाभ १७२, २४५
भक्तिविजय १५०
भगवतीदास २१५
भगवान् (अर्जुननागाशिष्य) २०६
भगवानदास निरंजनी २०७
भगवतीदास १७६
भट्ट गदाधर (ज्ञानानन्दापरनामधेय, विमर्श
शिष्य शिवशङ्करसुत) ३८
भट्टाचार्य ३६, ४०
भट्टाचार्यशिरोंमणि ७३
भट्टाचार्यसिद्धांतपञ्चानन ७१
भट्टोजी ८१
भट्टोजीदीक्षित २६, ४१, ४६, ७५, ८०
भट्ट १८६
भरत ११७, ११८
भर्तृहरि १४४, १४५
भवदेव ७०
भवदेव महोपाध्याय ६५
भद्रराजदशार्ण १७६
भद्रसेन १७२
भवानी २१६, २२२
भान २०६
भानुकीर्ति १६१

भानुजी दीक्षित ८३
 भानुदत्त १४१
 भानुदत्त मिश्र १४२
 भानुमेरु १६७
 भारवि १२७
 भारामल २७०
 भाव कवियण १६३
 भाव १५२
 भाव ५१, १५३, १५६
 भावप्रभ १६५
 भावभट्ट (जनार्दनसूनु) १२४
 भावमुनि ६०
 भावविजय २३७
 भास्कराचार्य ८६, ८७, ८८, १०२,
 ११२, ११६
 भास्कर शर्मा १२२
 भीमविजय २६४
 भीमसेन ७५
 भीषम २१६
 भुवनकीर्ति १६२, २४१
 भूधर ५६, २१५, २३६
 भूपति मिश्र ७६
 भेवानन्द ७६
 भैरवदत्त (हरिरामशमपुत्र) ११२
 भोज १५८
 म
 मकरन्द २०६
 मगनीराम १८२
 मञ्चनाचार्य २५
 मण्डनसूत्रधार १११
 मणिकण्ठ भट्टाचार्य ७३
 मतिकुशल १७३
 मतिचन्द्र १६७, २६१, २७०
 मतिराम २२१
 मतिवर्धन २६२
 मतिसागर २०५
 मतिसागर उपाध्याय ११२
 मतिसार १६७, १६८, २७०

मथुरानाथ (मालवीय शुक्ल) ६१
 मदनगोपाल १५५
 मदनपाल १५६
 मदन भट्टोपाध्याय ७१
 मदनस्वामी ६३
 मधुरशर्मा ६
 मधुराचार्य १४०
 मधुसूदन १२६
 मधुसूदन दैवज्ञ (श्रीपतिशिष्य) १०१
 मधुसूदन सरस्वती ७, १२, ६८
 मनराम १७३
 मनसाराम (रामकृष्णसुत) १०७
 मनीराम ११५, २२०
 मनोरथ कवि १३०
 मनोहर २२५
 मनोहरदास २२६, २३१, २३६
 मनोहरदास सोनी २१२
 मयासुर ११६
 मयूर कवि १४०
 मलयकीर्ति १७३
 मलयगिरि २५३, २५६, २५७, २६१
 मल्लिनाथ ६३, १२७, १२८, १३
 १४०
 मलूकदास १८३
 मलयेन्द्रसूरि १०६
 महमद १८६
 महात्मा आग्निपूर्ण ६
 महादेव ६२, ८८, १००, ११०
 महादेव (हीरामणिसुत) ६०
 महादेव (कान्हड़जी वाडवसुत) १०७
 महादेव दैवज्ञ ६३
 महादेव राजगुरु २२, ११८
 महादेव सरस्वती मुनि ६०
 महानन्द २३८
 महानन्द पाठक २७
 महामुद्गल भट्ट १३५
 महाक्षपणक (काश्मीराम्नायी) ८२
 महिमानिधान १५०

महिमोदय १६६
 महीदास ७७
 महीधर ३४, ३५, ६४, ६५, १०३
 महेशकवि २०३
 महेश्वर ७६, १३८, १५८
 महेश्वर कवि ७३
 महेश्वर भट्ट ६
 महेश्वर शर्मा ८३
 महेन्द्र सूरि १०६
 माध १३६
 माणिक्यसुन्दर १४६, १५०, २६०
 माधव १५, २२ ४२, ४३, ७७,
 १०३, १५६
 माधवदास २१६
 माधवलैवज्ञ (गोविन्दसुत नीलकण्ठपौत्र)
 १२३
 माधवपण्डित १५४
 माधव भट्ट ७८
 माधो (भगवन्त हरिदासशिष्य) २२८
 माधोदास १८१, १६२, २२५
 माधोदास गाडगा १६२
 मानकवि १६५, २३१
 मान कविसर १६६
 मानतुङ्ग २४१, २४२
 मानतुङ्ग (हेमराज) २४१
 मानदेव २४२
 मानसागर १६८, २०२
 मालकवि १८७
 मालजी (त्यगलाभट्टसुत) २७
 मालदेव १८४
 मालमुनि १८३
 मिट्टन शुक्ल ११६
 मुकुन्ददास २१७
 मुञ्जादित्य ६५, १०८
 मुनिचन्द्र २४३
 मुनिरत्नसूरि १४६
 मुरारि १२६

मुरलीदास २१६, २३३
 मुरलीधर भट्ट २१३, २२२
 मूला (मयारामसुत) २३७
 मूला वाचक २४३
 मेघराज वाचक २५६, २५७
 मेघराज (लब्धिविजयशिष्य) १८२
 मेरुतुङ्ग २६५
 मेरुसुन्दर १२२, २४२, २
 मेरीलाल २०६
 राम २१६
 मोरेश्वर १५६
 मोहन २१५
 मोहनदास २१६
 मोहनदास मिश्र १४०
 मोहनविजय १७२, १७३, १८२, १८८,
 १८९, १९०, २४५

य

यदुनन्दन १०७
 यशवन्तसिंह (महाराज) २०७
 यशोदानन्द गुसाई २२२
 यशोधर मिश्र ६७
 यशोवर्धन १७२
 यशःसोम २३६
 यज्ञेश्वर ११३
 यामुनाचार्य १, २
 याज्ञवल्क्य ऋषि १६, ६५
 याज्ञिक दीक्षित ४५
 योगचन्द्र १६०
 योगेश्वर ६१
 योद्धराज २३

र

रघुदेव ७३
 रघुदेव तर्कालङ्कार ७१
 रघुदेव भट्टाचार्य ७०

रघुनाथ ८, १७, ७०, २२०
 रघुराम (शिवरामसुत) ५६
 रघुराम कवि २३१, २३२
 रघुवीर १०८
 रघुवीर दीक्षित २२
 रत्नकीर्ति १५१
 रत्नशेखर १६५, २०४, २०५, २२०,
 २२१, २६०, २६२
 रत्नाश्रीक ४०, ४१
 रत्नेश्वर सुरि २८
 रतनविमल १८४
 रतनू हमीर २०४
 रविदास १३४
 रसभ्रानन्द २०६, २१३
 रसानन्द २२६
 रसनायक २१४
 रसरशि २०७, २१३, २१६, २२०, २२१,
 रसिक १६१ २३५
 रसिकराय २१७
 रसिकोत्तंस ६१
 राघवचैतन्य ७
 राज १६३
 राजपि भट्ट ६०
 राजऋषि १०६
 राजमार्तण्ड १५८
 राजवल्लभ पाठक १५०
 राजसिंह १६३, १८५, १६५
 राजसी २०१
 राजशील पाठकवर १४६
 राजानक क्षेमराज १३
 राजुल १६१
 राधाकृष्ण २२२
 राधागोविन्द मिश्र (किशोरीरमणशिष्य
 नवनन्दमुत) १३६
 राधादामोदरदास १२२
 राम ११०, १५८
 रामकृष्ण ११, ६०, ६१, ११०

रामकृष्ण कवि ५, ६
 रामकृष्ण दैवज (नीलकण्ठवंशीय
 आपदेव सुत) ३७
 रामकृष्ण भट्ट (नारायणसुत) ४१
 रामकृष्णविद्वान् ६०
 रामकवि १७२, २३५
 रामचरण १८१, २२५
 रामचरणदास १६२
 रामचन्द्र ७४, ११८, १२७, १६६, १८६,
 २२५, २२६
 रामचन्द्रदास २३०
 रामचन्द्र नैमिषवासी २२
 रामचन्द्र भट्ट (विठ्ठलसुत बालकृष्णपौत्र)
 ४०
 रामचन्द्राचार्य (गोपालगुरुशिष्य) ४०
 रामचन्द्राचार्य सोमयाजी ११७
 रामचन्द्राश्रम ७४, ८१
 रामतीर्थ ३५
 रामदान मुंता २२६
 रामदैवज ८६, १०६, १०७, १०८,
 ११०, १११
 रामदैवज (मधुसूदनात्मज) १०६
 रामनाथ १६२
 रामप्रसाद (सीतापतिशरण) २२५
 रामरत्न २१६
 रामरुद्र ११०
 रामलाल २२७
 रामशरण २०४
 रामानुजाचार्य ६२, ६६
 रामानुजदास ६६
 रामानन्द १६२
 रामानन्द भिक्षु (रामेन्द्रवनशिष्य) १
 रामाश्रम १३०
 रामेश्वरदास २१०
 रामेश्वर भट्ट (नारायणभट्टमुत) ४१
 रायचन्द्र ऋषि १८५

हस्तलिखित ग्रन्थसूची, भाग-२, परिशिष्ट-२]

रावण १२, १५४, १५६
 रुघनदास १६४
 रुचिपति महोपाध्याय १२२
 रुद्रधर २८
 रुद्रधर (लक्ष्मीधरात्मज) ४५
 रुद्रधरत्रिपाठी ११०, १११
 रुद्रमणि ६६
 रूपगोस्वामी ६२, १२७, १४०
 रूपचन्द्र १४५, १७६, २१६, २४०
 रूपचन्द्र २६७
 रूपनारायण ४२
 रूपसनातन ५६, ६३
 रैदास १६३
 रंगनाथ ८६, ११४, ११६
 रंगदास १३

ल

लच्छीराम २०८
 लब्धचन्द्र ६२
 लब्धविजय १८०, २३७
 लब्धविज्ञान १६३
 लल्ल आचार्य ११२
 लक्ष्मणदान वारंठ २३४
 लक्ष्मणाचार्य ६६
 लक्ष्मीधर १४१
 लक्ष्मीनिवास (नृसिंहाश्रमशिष्य) ३५, ३६
 लक्ष्मीनिवास १३५
 लक्ष्मीपति (कुष्माण्डसुत) ८६
 लक्ष्मीपति ८६
 लक्ष्मीवल्लभ १६४, २५३
 लक्ष्मीवल्लभ गणि १६८
 लक्ष्मीहर्ष २६७
 लाभवर्धन १८३, १६३
 लालचन्द्र १८०, १८७, १६२, १६३,
 १६४, २३५
 लालचन्द्र २३१
 लालदास २०७, २१८

लालभट्ट (अनारगिरिशिष्य) ३६
 लालमणि (जगद्रामात्मज) ६६, १०७
 लावण्यकीर्ति १६२
 लावण्यविजय २३८
 लावण्यसमय २०२, २३८
 लीलाशुक २, १२७
 लेशसूरि २७०
 लोलिम्बराज १४०, १५४,

व

वृद्धवशिष्ठ २३
 वृद्धविजय २६०
 वृन्द १६७, १८२, २०६, २१३, २१६,
 २२६, २२७
 वृन्द (वरदराज) २२८
 वृन्दावनदास २३०, २३२
 वृन्दावनहित २१०
 वच्छराज २७६
 वनमाली ६७
 वरदराज ७५, ७६, ७६
 वरदाय ६०
 वरदाचार्य (वैष्णवनाथचार्यशिष्य) ५८
 वररुचि ७३
 वर्द्धमान सूरि ७४
 व्रजजीवन २३६
 व्रजनाथदीक्षित १२४
 व्रजलाल गोस्वामी ६६
 व्रजवासीदास २२६
 वल्लभ ४६, ५८
 वल्लभ (आनन्द देवायनि) १३६
 वल्लभगणि ८२
 वल्लभाचार्य ५३, ५४, ६०, ६१, ६२,
 ६८, ६९, २१५
 वराहमिहिर १०२, १०३, १०५, १११
 ११२
 वसन्त १८०
 वसन्तराजभट्ट ११३

वसिष्ठ ऋषि ११३
 वसुदेव दीक्षित २३
 वाग्भट्ट १४२, १५४
 वाचस्पति ६५, १५६, १५७
 वानर २४४
 वाल्मीकिमुनि ६७, १२६, १३४, १३७
 १३८, १३९
 वासुदेव २७८
 विष्णु १२४
 विष्णुसूक्ति ५५
 विजयचन्द्र १६७
 विजयदेवसूरि १६८
 विजयरामाचार्य ८
 विजयहर्ष १६३
 विट्ठल ८, ८६
 विट्ठलदीक्षित २२, ५४, ६१
 विट्ठलेशदीक्षित ११
 विद्यातीर्थ ११
 विद्यानन्द ७०
 विद्यानन्दनाथ (श्रीनिवासभट्ट गोस्वामी) ३८
 विद्याभूषण ५४, ६८, १२२
 विद्यारण्य ३७
 विद्यारण्य योगी १३१
 विद्यारुचि १७२
 विद्याराम १४२
 विद्याविलास ६१
 विद्वन्नारायण ६३
 विनयविजय १६६
 विनयसुन्दर २४२
 विनीतविमल १६४
 विनोदीलाल २४१
 विमलसूरि १४४
 विलास २१२
 विष्णुदास २१६, २३०
 विष्णुदेवज्ञ १०२
 विष्णुपुरी ६३
 विष्णुशर्मा १५३, २३५

विश्राम १५८
 विश्वनाथ ११, २२, ७०, ८८, ६३,
 १०४, ११३, ११८, ११९
 विश्वनाथ चक्रवर्ती ३
 विश्वनाथ दैवज्ञ ८७, १२०
 विश्वनाथ पञ्चानन, भट्टाचार्य ७२
 विश्वनाथ (श्रीपतिद्विवेदिसुत) २२
 विश्वभूषण २११
 विश्वामित्र ऋषि ८
 विश्वेश्वर ५०, ५८, ६१, ६४, १४१
 विश्वेश्वर (लक्ष्मीधरात्मज) १४१
 विश्वेश्वर कीशिक ४२
 विश्वेश्वर सरस्वती ६२
 विश्वेश्वराश्रम ७०
 विशाखदत्त १३४
 विज्ञानेश्वर ४०
 विज्ञानेश्वर (श्रीपद्मानाभभट्टोपाध्यायात्मज,
 ४३
 वीरचन्द २००
 वीरचन्द्र २३८
 वीरविजय २४३
 वीरसागर गरिण १०६
 वेङ्कटाचार्ययाजी १३९
 वेङ्कटनाथ वेदान्ताचार्य १०, १४
 वेङ्कटेश १०६
 वेणीराम १७६
 वेदाचार्य १४
 वेदव्यास ५, ११, ४८, ४९, ५६, ५७,
 १३१, १३२, १३३
 वैजलभूपति ७४, ७५
 वैद्यनाथ १४१, १५७
 वैद्यनाथ शाम्भव ६५
 वैद्यनाथ (सोमनाथवंशज) २२७
 वंगसेन १५५
 वंशीअली २१४, २२६
 वंशीधर ६४
 श
 श्याम २०१

हस्तलिखित ग्रन्थसूची, भाग—२; परिशिष्ट—२]

श्यामल ११५
 श्यामाचार्य २५६
 श्रीकृष्ण (नरसिंहसूरिसूनु) ७४
 श्रीकृष्ण कवि २२२
 श्रीकृष्ण भट्ट २०६, २११, २१५, २२०
 श्रीकण्ठ १२२
 श्रीचन्द्र २६६
 श्रीचन्द्रसूरि २६६
 श्रीधर ११
 श्रीधरस्वामी १०, ५१, ५२, ५३, ५४,
 ६२, ६३, ६४, २७३
 श्रीनिवासदास ६, ११, ६४, ६५
 श्रीनिवास भट्ट ६६
 श्रीनिवासाचार्य ४४
 श्रीपति ६०, ६१, ६२, ११०
 श्रीपतिपण्डित ६४
 श्रीपति भट्ट ८६, १०४, २३६
 श्रीरामवर्मा (हिम्मतवमपुत्र) १२६
 श्रीरामानुज ३६
 श्रीरामोपाध्याय ३६
 श्रीवल्लभ ५, ६८
 श्रीवल्लभगणि ८१
 श्रीविठ्ठल ६६
 श्रीसार १६४, १६५, १६७, १६६,
 १६०, १६३
 श्रीहर्ष ७०, १३०
 श्रुतसागर २२६
 शठारि ? ६६
 शतानन्द १०४, १०७
 शशधर ७१
 शशिनाथ माथुर २११
 शत्रुघ्नोपाध्याय १८, २०
 शाण्डिल्य ऋषि ६७
 शालिग्राम १८६
 शालिनाथ १५७
 शालिवाहन २७३

शाङ्गधर १५६, १६०, १६१
 शान्तिविमल १६५
 शान्तिहर्ष १६४, १७०, १८७
 शितिकण्ठशर्मा ७१
 शिरोमणिदास २१२
 शिवकवि २०८
 शिवचन्द २५०
 शिवदासराय २३२
 शिवनिधान १६३, २५३
 शिवपण्डित १६०
 शिवप्रसाद २४
 शिवराम १६५
 शिवलाल पाठक ६६
 शिवशङ्कर ११४
 शिवादित्य ७२
 शिवानन्द भट्ट ३८, ४१, १५६
 शीलाङ्क २४७
 शीलाचार्य २५८
 शुक् ११५
 शुद्धकीर्ति १६८, २७३
 शुभचन्द्र १६४
 शुक्वर्द्धन गणि २६१
 शुभशील २०२
 शूलपाणि ४६
 शेखआलम २२१
 शेरसिंह १८३
 शेषकमलाकर १२६
 शेषचिन्तामणि १४२
 शेपनाग ६०
 शेपानन्द पण्डित ७२
 शोभन २४४
 शंकर भट्ट २२, १५१
 शंकराचार्य १, २, ३, ४, ५, ६, ७,
 १२, १३, १४, १६, ३८, ५०,
 ५६, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८,
 १२६, १३५, १४४

शङ्कराचार्य नारायणतीर्थ ५६
 शङ्ख ऋषि ४४
 शम्भूनाथ मिश्र (सुखदेवशिष्य) २०७

स

सकलकीर्ति १५१, १५२, १७१, १८३,
 १९८, २३७, २३८, २४०, २४२,
 २४५, २६४, २६८, २७१

सकल २७८ द्वारक २६०

सकल २३८

सत्यानन्द ३३

सदानन्द ६६, ६७

सदानन्द गण ८१

समयराज २४०

समयसुन्दर (सकलचन्द्रशिष्य) १२२,
 १३६, १७०, १७३, १७४, १७८,
 १७९, १८०, १८१, १८२, १८६,
 १९८, १९९, २०२, २४२

समरसिंह ८६, ९४, ९५

समुद्र ऋषि ११८

समुद्रमुनि १६५

समन्तभद्र २४४

सरूपदास १७७

सरस्वती (वैरिसाल) २१६

सरस्वतीतीर्थ (परमहंसपरिव्राजकाचार्य)
 १२८

सर्वदेव ७१

सहजसागर २६०, २४३

स्वच्छन्द शङ्कराचार्य ११३

स्वप्नेश्वराचार्य ६७

स्वात्माराम योगीन्द्र ६६

स्वरूपदास २१४, २१५

साईदास १८०

सागरचन्द १७४, १८६

सागरचन्दसूरि ६७

साधुकीर्ति २००, २०१, २३८

शमन्त (हर्षरत्नशिष्य) ६५

सायणाचार्य १८

सारकवि २२०

सारंग १८८

सालवाहण २३५

सिद्धसेन ७१, २६३, २६५

सिद्धान्तवागीश ७१

सिद्धिविजय ११६

सिद्धसेनसूरि १६६

सिंहतिलक १०४

सिंहनन्दि २४३

मीताराम पर्वणीकर १३, १३०

सुखदेव मिश्र २११

सुखलाल १४०

सुखसागर २०६

सुजसविजय १६६

सुदर्शनविजय २४०

सुन्दर २१३

सुन्दरदास २०७, २०८, २११, २१४,
 २२५, २२८, २३३, २३४, २३५,
 २३६

सुन्दरलाल २०८

सुन्दरसूरिचन्द्र १६७

सुबन्धु १३६

सुमतिकीर्ति १६४

सुमतिरंग २३६

सुमतिविजय १३६

सुमतिसूरि २५४

सुमतिहंस २५२

सूत्रधारमण्डन ६६

सूर २३०

सूरज १८१

सूरजीशाह १६५

सूरत २१६

सूरतमिश्र २०७, २०८

सूरतदास ४१६

सूरदास २३४

परदेव भट्ट (गोपीनाथसुत) १३६
 सूर्यकवि ६५, १३७
 सूर्यमल्ल १६४
 सूरविजय १६०
 सूरविप्र ८७
 सूरसागर १७६
 सेवक १६६
 सेवकसूर १६०
 सोमतिलक २७३
 सोमचन्द्र १२२
 सोमचन्द्र (रत्नशेखरशिष्य) १४४
 सोमतिलक १२१
 सोमनाथ १२१, २११, २२१
 सोमनाथ (नीलकण्ठात्मज) २३१
 सोमप्रभ १४६, १४७, २३८
 सोमप्रभाचार्य १४०
 सोमविलास २५२
 सोमसुन्दर २६०, २६५
 सोमसूरि १६५, २६६

ह

हनुमत्कवि १२८, १२९
 हरदयाल २२९
 हरदास १८६
 हर्षकीर्ति ८४, १४६, १८२, २३८,
 २३९
 हर्षकीर्तिसूरि ७४, ७९, ९२, १०९,
 १५७
 हर्षमुनि १८४
 हर्षचन्द्रगणि १८४
 हर्षरुचि २४३
 हर्षविजय ६३
 हर्षसागर २४०
 हर्षसौभाग्य (सूर्यसौभाग्यशिष्य) ८५
 हरिकर्ण १०२

हरिकवीश्वर १४४
 हरिदत्त ८८
 हरिदत्तभट्ट ६१
 हरिदास २३१, २४१
 हरिनाथ ११६
 हरिभद्रसूरि २४७, २५४
 हरिभट्ट ६५, १०८, १७१
 हरिभद्रश्वेतभिक्षु ६४

हरिभद्रसूरि ७२
 हरिमुनि (वज्रसेन शिष्य)

हरिराम २१०
 हरिराय ८, ६१
 हरिलाल २३५
 हरिवल्लभ ६३, २०९, २१९, २३१
 हरिहर ४०
 हलायुध २६
 हरिदचन्द्र (आर्द्रदेवकायस्थ) १३०
 हस्तिरुचि १५९
 हारीत ऋषि ४६
 हितहरिवंशगोस्वामी ५७
 हिल्लाल ६४

हीर २०६
 हीरकलक्ष १६८
 हीररतन १६२
 हेमकवि १९७
 हेमचन्द्र ७३, ८१, ८२, ८४, १३१,
 २४६, २६७

हेमचन्द्र (रत्नशेखरशिष्य) १९६
 हेमचन्द्रसूरि ७६, २४३
 हेमचन्द्राचार्य ६५, ७२, ७९, ८५, १४
 हेमप्रभसूरि १२०
 हेमरतन १७१, १८३
 हेमराज २०९, २४२
 हेमहंस ७१, २५७
 हेमहंसगणि ८५
 हेमाद्रि ४१

हेमानन्द १६४

हंसकवि १७१

क्ष

क्षपणक ८४

क्षमाकल्याण ७५, १८२, २६२

क्षमाश्रवण २६८

क्षीरसूत २३, ८४

क्षेम १२१, १६५

क्षेमदेव १२३, १४४

क्षेमेन्द्र १२३, १४४

त्र

त्रिमल्ल १५४, १५५, १५६

त्रिविक्रमाचार्य ११८

त्रैविध्यवृद्ध २१

ज्ञ

ज्ञानकवि १७६

ज्ञानचन्द १८३

ज्ञानभूषण १८४, २३६

ज्ञानविमल ७६

ज्ञानराज ११६

ज्ञानविमल १६५, १७०

ज्ञानसागर १६६, १७३, १६६

ज्ञानेन्द्रसरस्वती ८०

+++++

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग २

परिशिष्ट ३



इन्द्रगढ़ पोथीखाना

ग्रन्थ सूची



१८६० ई०

इन्द्रगढ़ का हस्तलिखित ग्रन्थ-संग्रह



राजस्थान सरकार के आदेश सं० २६१, दिनांक ४-८-५६ ई० के अनुसार इस विभाग की ओर से इन्द्रगढ़स्थित पोथीखाने का निरीक्षण किया गया। ग्रन्थों की अस्तव्यस्त स्थिति की जानकारी प्राप्त होने पर राज्य सरकार से उक्त संग्रह को इस संस्थान के संरक्षण में प्राप्त कराने का प्रस्ताव किया गया। तदनन्तर राज्य के पत्र सं० एफ. ६ (६२) एज्यू. बी. ५६, दिनांक २४-१०-५६ ई० के अनुसार अनुमति प्राप्त होने पर इन्द्रगढ़ से उस संग्रह को इस विभाग में भेज दिया गया।

इन्द्रगढ़ (कोटा) पोथीखाना विद्याप्रेमी महाराजा श्री शिवसिंहजी के समय में 'सरस्वती भंडार' नाम से स्थापित किया गया था। महाराजा शिवसिंह स्वयं अच्छे विद्वान्, सुकवि एवं विद्याप्रेमी थे। इनके द्वारा निर्मित कितने ही ग्रंथ उपलब्ध होते हैं जिनमें से कुछ इस संग्रह में भी प्राप्त हुए हैं। शिवसिंहजी के सुपुत्र महाराजा हाड़ा संग्रामसिंह अपने समय के एक आदर्श साहित्यकार नरेश हुये हैं। ये बड़े ही विचारसिक एवं सुकवि थे। अच्छे-अच्छे पंडितों को पुरस्कृत करना एवं ग्रन्थरचना करते-कराते रहना इनका व्यसन था। इनके द्वारा निर्मित सौ से भी अधिक ग्रन्थ प्राप्त होते हैं जिनमें से भी अधिकांश इन्होंने अपने ठिकाने में शिला-मुद्रणालय की व्यवस्था कर मुद्रित करा लिये थे, जो अब प्रायः अप्राप्त हैं। उक्त हाड़ा संग्रामसिंहजी के समय में इस संग्रह की दशा अवश्य अच्छी रही होगी, यह स्वतः अनुमेय है। इनके उत्तराधिकारी महाराजा सुमेरसिंहजी के निःसंतान अवस्था में अकाल ही काल-कवलित हो जाने पर इस संग्रह की दुर्दशा होने लगी और ग्रन्थ भी इतस्ततः नष्टभ्रष्ट एवं जीर्ण-शीर्ण होने लगे। जिस समय इस संग्रह को देखा गया उस समय यह ठिकाने की सम्पत्ति के रूप में रखा हुआ था। बहुत से ग्रन्थ गढ़ में धूल में दबे हुये जीर्ण-शीर्ण, कीट विद्ध, दीमक-वर्षादि से क्षतिग्रस्त अवस्था में पड़े थे जिन्हें प्राप्त करके इस विभाग के संग्रहालय में व्यवस्थित-रूप में संशोधकों के उपयोगार्थ रखा गया है। संग्रति इस संग्रह में २०६ हस्तलिखित ग्रन्थ प्राप्त हैं। इनमें बहुत से ग्रन्थ हाड़ा संग्रामसिंह एवं उनके पिता महाराजा शिवसिंहजी के रचे हुये हैं। इनके अतिरिक्त कुछ छपे हुए उर्दू ग्रन्थ भी प्राप्त हुये हैं।



राजवंशीय साहित्यकार हाड़ा संग्रामसिंह की ओर, जितना चाहिये उतना, अभी विद्वानों का ध्यान नहीं गया है। उक्त संग्रह की पुस्तकों की प्रस्तुत सूची विद्वानों एवं सर्वसाधारण की जानकारी और उपयोग के लिये प्रकाशित कर दी जा रही है।

परिशिष्ट-३

इन्द्रगढ़ पोथीखाने से प्राप्त हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|----------------------------------------|------------------------------------------------|------------------|--------------|-----------------------------------------------------------------------------------|----------|----------------------------------------------------------------------------|
| १ | अलंकारमञ्जरी | संग्रामसिंह | हिन्दी | रसालंकार | ३२ | १९११ | त्रिमलभट्टकृत अलंकार- मञ्जरी का भावानुवाद |
| २ | शालिहोत्र | | राजस्थानी | ब्राह्मवेद | १३२ | १८९५ | लि. क. गुमानोसाह लि. स्था. इन्द्रगढ़ |
| ३ | हनुमत्पाठक, सटीक (रत्नमञ्जूषा टीका) | मू. हनुमत्कवि, टी. मोहन- दास माथुर चतुर्वेद | संस्कृत | काव्य | १३० | १८वीं श. | |
| ४ | मधुमालती चौपई | चतुर्भुजदास | हिन्दी | " |  | १९वीं श. | कामदारी लिपि, आरम्भ में 'स्वप्नावलि' के ५ पत्र हैं। पद्य संख्या १४५४ |
| ५ | छन्दःकौस्तुभ | संग्रामसिंह | " | छन्दःशास्त्र | ४३ | १९३४ | लि. क. वंशीधर गुजराती |
| ६ | सभाप्रकाश | हरिवरणदास | " | रसालंकार | ७६ | १९२३ | लि. क. चैतराम ब्राह्मण |
| ७ | पृथ्वीराजरासो (पञ्चावती समय) | चन्दवरदायी | " | काव्य | ७४ | १८२९ | लि. स्था. किला रण- स्तम्भवर |
| ८ | हिकमतग्रन्थ | | फारसी, हिन्दी | ब्राह्मवेद |  | १०वीं श. | हिकमत के फारसी भाषा के नुस्खे नागरी लिपि में लिखे हैं |

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|------------------------|----------------|-----------|-------------|------------|----------|---------------------------|
| ६ | रूपकप्रभाकर | संग्रामसिंह | राजस्थानी | काव्य | १६वीं श. | | शिवसिंहनृपतिकारिता |
| १० | वृन्दसतसई | वृन्दकवि | हिन्दी | " | १६२(?) | | आदि में कुछ स्फुट |
| ११ | पुरुषपरीक्षा | विद्यापति | संस्कृत | कथा | १६१२ | | कवित्त लिखे हैं। |
| १२ | नाममञ्जरी | नन्ददास | हिन्दी | कोष | ५८ | १६१४ | चारों छतियों के कुल |
| १३ | (क) हरिरस | ईसरदास | राजस्थानी | काव्य | | | ५८ पत्र है। |
| | (ख) नीसाणी विवेकवार्ता | | " | " | | | |
| | (ग) नीसाणी ईसरदास | | " | " | | | |
| | (घ) सूरदासके पद | | हिन्दी | " | | | |
| १४ | सिखनल शृंगार सटिपण | बलभद्र | " | " | ४१ | १६२३ | अन्तिम प्रशस्ति में गुलाब |
| १५ | रसतरंगिणी | शम्भुनाथ मिश्र | " | रसालंकार | | १६२४ | कवि (अलवरवासी) ने |
| | | | | | | | स्वयम् को ग्रन्थकर्त्ता |
| | | | | | | | वताया है। |
| १६ | रूप(क) रत्नावलि | संग्रामसिंह | राजस्थानी | काव्य | १२ | २०वीं श. | अपूर्ण, लि. क. धाभाई |
| १७ | रसार्णव | सुखदेव (?) | हिन्दी | कार | ५७ | " | लक्ष्मण, शिवसिंहराज्ये |
| १८ | केसोदासकी बाजी | केसोदास | राजस्थानी | सन्तसाहित्य | ३-२५४ | १८८८ | लि. क. भवानोरास |
| | | | | | | | शिवसिंहराज्ये |
| १९ | काव्यरसायन | देवदत्त कवि | हिन्दी | रसालंकार | ७८ | १६३१ | लि. क. रामवल्लभ गुजराती |


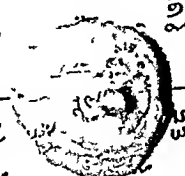
| क्रमांक | ग्रन्थ नाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्र संख्या | लिपि काल | विशेष |
|---------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------|------------------------------------|-----------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------|
| २१ | (ख) सुखनलरासो (ग) कृष्णबालचरित्र (घ) तारातम्बोलको विस्तार (च) कोटाके महाराजाओं की सूची पाण्डवयशेन्द्रचन्द्रिकासटीक (रसाल- बोधिनी) | मू. स्वरूपदास, टी. रसाल | राजस्थानी " " " हिन्दी | काव्य " इतिहास " काव्य | ४-७ ८-११ १२वां १३वां १४२ | १६२६ " " " १६१७ | लि. क. वगसीराम |
| २२ | (क) विज्ञानसागर (ख) गङ्गास्वति (ग) आर्यचर्यनिधान (घ) भगतिचिन्तामणि (च) चौदहरतन खेल | | राजस्थानी " " " " | वेदान्त स्तोत्र वेदान्त " " | १-११ ११-१३ १-६ | १६११ " " " | |
| २३ | पृथ्वीराजरासो | चन्दवरदायी | हिन्दी | काव्य |  | १६वीं श. | मुलित्तित प्रति |
| २४ | (क) कबीर की साली (ख) हरिवंशपुराणभाषा | | राजस्थानी " | सन्तसाहित्य काव्य | १-४ १-५७ | १८३६ " | लि. क. खुशालपाण्डे |
| २५ | (क) रामचरित (ख) सुदामाजी की वारहखड़ी | तुलसीदास/दाहूपन्थी | " | " | १-५४ १५४-१६२ | १६वीं श. | |
| २६ | (क) कविकुलकरनर (ख) सूरजनलम् (वि) गल (ग) सभाप्रकाश (दशमोत्तरासान्त) | चिन्तामणि सूरजनल (?) हरिचरणदास | हिन्दी " " | रसालंकार छंद शास्त्र रसालंकार |  १-५ | १६वीं श. " १६२६ २०वीं श. | आद्य ११ पत्र अप्राप्त, अपूर्ण अपूर्ण लि. क. दीक्षित वृद्धिचन्द लि. स्या. इन्द्रगढ़, अपूर्ण |
| | (घ) रघुनाथरूपक मरुधरदेशभाषा | कविमंथ | राजस्थानी | काव्य | | | |

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिसमय | विशेष |
|---------|-------------------------------------------------|--------------|---------|-------------|------------|----------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| (व) | पाण्डवशोनुचन्द्रिका तृतीय- मयूखान्त | | हिन्दी | रसालंकार | | १०वीं श. | |
| (ख) | कविप्रिया | केशवदास | " | " | १-१५ | " | अपूर्ण |
| (ज) | साहित्यानन्द, षोडशस्कन्धान्त | ग्यालकवि | " | " | ३७-२५३ | " | " |
| २७ | (क) इशकचमन | | " | काव्य | १-१४ | " | अपूर्ण |
| (ख) | राजनीति कवित्त | देवीदास | " | नीति | १-३५ | " | " |
| (ग) | स्फुटकवित्त संग्रह | | " | काव्य | १-७ | " | " |
| २८ | रामचरितमानस श्रयोध्याकाण्ड | गो. तुलसीदास | " | " | १-३३ | १८६८ | लि. क. लाला खुमानसिंह |
| २९ | (क) गुरुपरिचय | | " | सन्तसाहित्य | | २०वीं श. | 'श्रीगुरु बलदेवजी |
| (ख) | ग्रन्थपरिचयअष्टांग | | " | " | १-६६ | " | शिक्षा' व 'श्रीदुर्जनगुरु शिक्षा' आदि विभिन्न भाग हैं। |
| ३० | फुटकर गजल | | " | काव्य | ८ | " | |
| ३१ | (क) धनञ्जयकोष (नाममाला) द्वितीय परिच्छेदान्त | धनञ्जय | संस्कृत | कोष | ४-१५ | १७५१ | लि. क. पं. दयाराम, गूढके के आदि व अन्तमें स्फुट कवितादि हैं तथा दोनों कृतियों के मध्य छत्रबन्ध कवित्त आदि हैं। |
| (ख) | पृथ्वीराजरासो (नाहराय | चन्दवरदायी | हिन्दी | काव्य | १-१३ | १७६० | लि. क. चारण बिहारीदास |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग २; परिशिष्ट ३, इन्द्रगढ़ पोथीखाना ग्रन्थ सूची]



[३५४]

| क्रमांक | ग्रन्थ नाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्र संख्या | लिपि समय | विशेष |
|--------------------------------------------|------------|-------|-----------|-------------|-------------|----------|----------------------------------------------------------------------------------|
| (ख) स्फुट साखियाँ (कवित्त आदि) | | | हिन्दी | काव्य | २५३ | ११ श. | |
| (ग) गुणनन्द्यास्तुति | ईश्वरदास | | राजस्थानी | सन्तसाहित्य | २५-५ | " | अन्त में गीत व भौरगीता हैं |
| (घ) ज्ञानसमुद्र | सुन्दरदास | | हिन्दी | " | ४१-८१ | " | |
| (च) गजल, कवित्त, गीत आदि का संग्रह | | | " | काव्य | ८१-९४ | " | |
| (छ) गुरुस्तुति, गोरखगणेशज्ञानगोष्ठी ग्रन्थ | गोरखनाथ | | " | सन्तसाहित्य | ९४-९६ | " | अन्त के २२ पत्रोंमें कबीर, नामदेव, मीरा, सूर आदि की साखियाँ व दोहे हैं |
| (ज) निसानी, केशवदास गाढण चारण की | | | राजस्थानी | काव्य | ११८-११९ | | |
| (झ) प्राणशांकली | | | " | " | १२०-१२१ | | |
| (ट) शांकावलि | | | " | " | १२१-१२२ | " | |
| (ठ) डूंगरसी बागड़ी को गीत | | | " | " | १२३-१२४ | " | |
| (ड) वज्रशूयुपनिषद् | शंकराचार्य | | संस्कृत | वेदान्त | १२५-१३० | १८८२ | आगे पत्र १५४ तक विभिन्न पद आदि हैं तथा कुछ श्रौषधियों के योग हैं, लि. क. 'निहाल' |

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|---------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------|--------|-------------------|------------------------------------------------------------------------------------|------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------|
| ४४ | (ग) अमरचन्द्रिका (क) सदैवससार्वलिंगरी बात (ख) पन्ना वीरमदेकी बात डिगल ग्रन्थ | बलदेव | हिन्दी | काव्य | १२३-२७६ | १६२४ | र. का. १८७३ |
| ४५ | कुलप्रकाश (हाड़ावंश के खरड़े) | संग्रामसिंह | " | वार्ता | १-७२ | २०वीं श. | लि. क. चि. नूरीलाल |
| ४६ | शृंगारगुडो | " | " | काव्य | १-६२ | १६१४ | |
| ४७ | (क) भाषाभूषणटीका | संग्रामसिंह | " | इतिहास | २७ | १६३० | |
| ४८ | (ख) कविप्रियाव्याख्या (कविप्रिया-भरण, पिंगलकाव्यविभूषण) | म. जसवंतसिंह टी. हरिचरणदास सू. केशवदास टी. हरिचरणदास वक्की सुमनेश | हिन्दी | रसालंकार | ६४ | २०वीं श. | लि. क. वंशीधरगुजराती |
| | | | " | " | ७ | १६३३ | " |
| | | | " | " | ४१ | १६३० | लि. स्था. इन्द्रगढ़ |
| | | | " | छन्दःशास्त्र | २४२ | १६२६ | " |
| | | | " | |  | १६१२ | |
| | (घ) ध्रुवाष्टक नीति (च) पद्यामृततरंगिणी | विश्वनाथसिंहदेव भास्कर अग्निहोत्री | " | काव्य | १०३वाँ १-२७ | २०वीं श. १६३० | लि. क. वंशीधर गुजराती ब्राह्मण, लि. स्था. ग्राम मुनमानपुरा प्रति कीदविद्व जीर्णशीर्ण |
| | (छ) काव्यरसायन हरिरस बिहारीसतसई | देवदत्त बारहठ ईसरदास बिहारीलाल | हिन्दी | रसालंकार काव्य |  | २०वीं श. १७८६ | आगे पत्र ८२वें तक आधु- निक संबंधी कुछ स्पष्ट योग हैं। लि. स्था. इन्द्रगढ़ |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषणमन्दिर—हस्तलिखितग्रन्थसूची, भाग २; परिशिष्ट-३, इन्द्रगढ़पोखानाग्रन्थसूचि]



| क्रमांक | ग्रन्थसूची | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|------------------------------------------------------------|--------------------------------------------|-----------------------------|-------------------------------|---------------------|----------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ५१ | शकुनावली | | हिन्दी | ज्योतिष | १-२५३ | १९२५ | अन्तमें १८ पत्रोंमें कुछ दोहे हैं |
| ५२ | (क) गीतगोविन्द (ख) भजन-संग्रह (ग) फुटकर कवित्त | जयदेव चन्द्रसखी मोरां आदि गो. लसीदास | संस्कृत हिन्दी " " | काव्य " " " | १-३० १-३४ १२४ | " " १८८४ | " " अपूर्ण, वा.क. के केवल २ पत्र (३१वां व ३२वां है) इसी प्रकार अन्य काण्ड भी अपूर्ण हैं। बीच बीचमें पत्र नहीं हैं |
| ५३ | रामचरितमानस (बाल, अयोध्या, लंका व उत्तरकाण्डके स्फुट पत्र) | | | | | | लि. क. ब्राह्मण रामनाथ |
| ५४ | पाण्डवशेन्दुचन्द्रिकाटीका (बोधिनी) | रसाल | " | " | १६३ | १९१७ | लि. क. लच्छीराम भगत |
| ५५ | पृथ्वीराजरासो (एकादशखण्डान्त) | चन्दवरदायी | " | " | १३० | १८७१ | |
| ५६ | भाषाभूषण | जसवन्तसिंह | " | रसालंकार | २३ | १९०२ | |
| ५७ | हितहेमेल (४२वां ग्रन्थ) | संग्रामसिंह | राजस्थानी | काव्य | १०० | १९२९ | लि. क. रामनाथब्राह्मण, कांटो |
| ५८ | (क) रसराल सटीक (ख) शालिहोत्र | मू. सतिराम, टी. शिवदत्त नकुल | हिन्दी " | रसालंकार आयुर्वेद काव्य | ९३ ७७ | २०वीं श. " | अन्तमें ८ पत्रोंमें 'नाम सहिमा' व 'दासजीकी नामसहिमा' है |
| ५९ | (क) अजामिलचरित्र | कवीर | " | सन्तसाहित्य | १-१२१ — ७५ | १८९८ " | |



| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|-----------------------------------|-------------|---------------|-------------|------------------------------------------------------------------------------------|----------|--------------------------------------------------------------------------------------|
| | (च) प्रह्लादचरित्र | जनगोपाल | हिन्दी | काव्य | १६६-२१४ | १८६८ | अन्तमें ८ पत्रोंमें नाम महिमा व दासजीकी नाम महिमा है। लि.क. ब्राह्मण भुवना। |
| | (छ) भरतचरित्र | " | " | " | २१४-२२१ | " | " |
| | (ज) राजा मोहमदकी कथा | " | " | " | २२१-२२६ | " | " |
| | (झ) सुन्दरदासजीके सर्वैया | सुन्दरदास | " | " | २२६-३१७ | " | " |
| ६० | (क) फुटकर कविता | " | " | " | १-३५ | २०वीं श. | " |
| | (ख) हाथीके लक्षण | " | " | ज्योतिष | ३६-४७ | " | " |
| | (ग) रागमाला | " | " | संगीत | १-१६ | " | " |
| ६१ | नखशिखवर्णन व कोकसार | आनन्दकवि | " | कामशास्त्र |  | १६०७ | लि. क. रघुनाथसिंह |
| ६२ | (क) सुखसंवाद | " | राजस्थानी | सन्तसाहित्य | | २०वीं श. | अन्तमें पत्र सं. ५० तक जनगोपाल आदिके भजन हैं। अपूर्ण |
| ६३ | (ख) गणेशगोरखसंवाद सतसई (डिंगल) | संग्रामसिंह | " | " | १-१६ | " | कि. क. रघुनाथसिंह, कीटविद्व |
| ६४ | गीतबही (६८० गीतोंका संग्रह) | " | " | काव्य | ६३ | १६३४ | " |
| ६५ | भगवद्गीता का अनुवाद | " | हिन्दी (ब्रज) | वेदान्त |  | १०वीं श. | लि. क. ब्राह्मण भुवना |
| ६६ | (क) विवेकविचार | शिवसिंह | हिन्दी | " | | १६०० | लि. क. राव जुहार |
| | (ख) फुटकर रागसंग्रह | " | " | संगीत | २० | १८६७ | 'मत्ताप (महताब) पुत्र, |

| क्र.सं. | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|--------------------------------|------------------------|-----------|------------------|------------|----------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ६७ | विवेकयार्ता | केशवदास गाडण | हिन्दी | | | | जीर्णजीर्ण, कोटविद्ध, अन्त में १० पत्रों में स्फुट इलोक, पद्य व राग हैं |
| ६८ | रघुनाथरूपक | कवि मन्साराम (कविमंछे) | राजस्थानी | काव्य | ८८ | १६२५ | लि. क. ब्राह्मण रामनाथ |
| ६९ | यघनछंद (फारसी छंदों का वर्णन) | संग्रामसिंह | हिन्दी | " | २८ | २०वीं श. | 'गणपतिचरणसरोजरज, घर हाड़ा संग्राम । यघन छंद रचना रचत, इन्द्र-कुर्ग निजधाम ।' |
| | संगीतप्रयोगनिधि (७६वीं प्रश्न) | | " | संगीत | | १६३३ | रामरामग्रहचन्द्रमा, दरवा हरियाली रत्न । इन्द्रग निजधाम में, ये तो ग्रंथ लखेन । गुनसन्तियोग्रन्थ जो, यह रच्यो संग्राम, यह सुधार सुध कीजियो, जो सुकवि गुणधाम । |
| ७१ | (क) गुणसंसार | | " | सन्तसाहित्य | २६ | १८८४ | लि. क. 'रामरतन', अन्त में ६ पत्रों में नक्षत्र राशि व वायुविवार आदि हैं । |
| | (ख) सन्तदासजीकी साली | सन्तदास | " | " | १ | " | लि. क. रामरतन |
| | (ग) प्रह्लादचरित | जनगोपाल | " | " | २-३२ | " | " |
| | (घ) भुवचरित | " | " | " | ३२-६३ | " | " |
| | (च) फटकर रत्ना | प्रहमव | " | " | २ | " | " |
| | (छ) ठोकरनाथजीकी भावना | | " | " | २ | " | " |
| ७२ | सुन्दरकल्याणकल्पद्रुम | कल्याणदास भटनागर | " | द्वन्द्व-शास्त्र | ५५ | १६वीं श. | कोटविद्ध, अपूर्ण, जीर्णजीर्ण |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|----------|-----------------------------|--------------------------------|---------|-------------|------------|----------|------------------------------------------------|
| ७३ | कोदण्डचन्द्रिका | संग्रामसिंह | हिन्दी | प्रकीर्ण | ४७ | १९वीं श. | जीर्ण |
| ७४ | बुधसिंहचरित्र | वंशभास्करराज | " | काव्य | १६० | २०वीं श. | अपूर्ण |
| ७५ | नलशिलवर्णन | रसिकप्रियाल्लर्गत (केशवदास) | " | रसालंकार | १० | १८६७ | लि. क. चि. नन्दराम लि. स्या. 'करवाड' |
| ७६ | गुरुपरीक्षा | | " | काव्य | ३८ | २०वीं श. | अपूर्ण |
| ७७ | ढोलमारुही वार्ता | राजस्थानी | " | वार्ता | १३४ | " | " |
| ७८ | सदेवत्साल्लिगारी वात | " | " | " | ८६ | " | " |
| ७९ | (क) भक्तिमुक्तिप्रश्नोत्तरी | हिन्दी | " | वेदान्त | १-७० | १९११ | |
| | (ख) तत्त्वसारगीता | राजस्थानी | " | " | ७०-८७ | " | |
| | (ग) वर्णप्रभाकर | " | " | धर्मशास्त्र | ८७ | " | |
| | (घ) भक्तिपदार्थ | " | " | भक्ति (योग) | " | " | लि. क. ब्राह्मण चि. |
| | (च) शिरोमणिसार | " | " | वेदान्त | १३-२२ | " | चम्पालाल |
| | (छ) सहजानन्दभक्ति | " | " | भक्ति (योग) | ३२-५५ | " | लि. स्या. सेवागली |
| ८० | कृष्णहर्षिमणीरोवेली सटीक | राठोड़ पृथ्वीराज | " | काव्य | ८७ | १८१६ | मध्य, चर्मखतीतटे |
| ८१ | वंशभास्कर सटीक | | " | इतिहास | " | " | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| ८२ | (क) चाणक्यदर्पण | चाणक्य | संस्कृत | नीति | ११३ | २०वीं श. | अपूर्ण |
| | (ख) नीतिशतक | भर्तृहरि | " | " | १-११८ | " | |
| | (ग) बृहज्जातक | | " | ज्योतिष | " | " | अन्त में तीन पत्रों में तब ग्रहदान लिखे हैं |



| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|--------------------------------|----------------------------|-----------------|-------------|--------------|----------|------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ८३ | नरसीजीका माहेरा | | राजस्थानी | काव्य | | श. | अपूर्ण |
| ८४ | कर्मविपाक | | संस्कृत, हिन्दी | कर्मकाण्ड | | | " |
| ८५ | पातवाहीका किस्सा | | हिन्दी | कथा | १२३ | १२वीं श. | " |
| ८६ | हाडोंके शरास्तिगीतके स्फुटपत्र | | " | काव्य | ६३ | २०वीं श. | |
| ८७ | स्फुटकीर्तनकवित्तसंग्रह | | " | " | ५० | " | |
| ८८ | हरिदासजीके पद | हरिदास | " | सतसाहित्य | ४३ | १८०७ | लि. क. जोशी जीवरान गुर्जरगौड़, पृष्ठ ४१ वें व ४२ वें में देवाचारणके कवित्त लिखे हैं। |
| ८९ | गजलचन्द्रिका | संग्रामसिंह | " | काव्य | | १९२८ | |
| ९० | अक्षरारविक्रमसे कवित्तसंग्रह | | " | " | ५८ | १९वीं श. | कवित्त संख्या ११९ से ७७५ तक |
| ९१ | रसभक्तिपथ | शिवदत्त | " | योग (भक्ति) | १२ | १९३५ | |
| ९२ | लीलावतीगणितभाषा | | " | ज्योतिष | १४ | १९वीं श. | अपूर्ण |
| ९३ | ताराविलास सटीक | विद्यानाथ | संस्कृत, हिन्दी | " | १-९ | " | पृष्ठ सं. १० पर नक्षत्र- स्वरूपचक्र एवं पत्र ९ तथा १० के पृष्ठोंपर दोहा आदि लिखे हैं। |
| ९४ | (क) स्वरोदय | चरणदास | हिन्दी | " | १-१३ | " | |
| | (ख) नामसार | फतेहसिंह राठौड़ | " | काव्य | १४-५४ | " | |
| ९५ | (क) स्वरोदय | | " | ज्योतिष | १-१९ | " | |
| | (ख) त्रियिकल्पद्रुम | | " | " | १९-२४ | " | |
| ९६ | (क) सुमुखीपञ्चाङ्ग | संग्रामसिंह रुद्रयामलगत | संस्कृत | तन्त्र | समग्र १३६ | १८२९ | लि. क. आचार्य नगादे- विचय(?) लि. स्था. सांगोदा |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थ नाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्र संख्या | लिपि काल | विशेष |
|----------|------------------------------------------------------|-----------------------|-----------|----------------|------------------------------------------------------------------------------------------------|----------|----------------------------------------------------------------------------------------|
| | (ख) रजःस्वतास्तोत्र (ग) शिवमहिम्नःस्तोत्रादि | पृष्पदन्ताचार्य | संस्कृत | स्तोत्र | समग्र १३६ | १८२६ | उच्छिष्टगणपति व बहुतक भैरवस्तवराज आदि भी हैं। अग्रपूर्ण लि. क. चि. रामरतन ब्राह्मण |
| ६७ | रामाज्ञा | मो. तुलसीदास | हिन्दी | काव्य | २१ | १६१८ | |
| ६८ | ज्योतिषगान्ध | | " | ज्योतिष | ४१ | १६०७ | |
| ६९ | फुटकरवार्ता (ज्योतिष आग्र्यवैद केयोग व मोकल विद्या) | | " | प्रकीर्ण | १७ | २०वीं श. | |
| १०० | स्फुटवार्ता (लौहगुणवर्णन आदि) | | " | " | १० | " | प्रतिमें तीन खुले पत्र हैं जिनमें लोह परीक्षा आदि लिखित है। |
| १०१ | रमस्तोत्कर्ष | चिन्तामणिपंडित | संस्कृत | ज्योतिष |  | १८६८ | |
| १०२ | छायापुनर्विधि और स्वरोदय (कबीरसाहबकी) | | राजस्थानी | " | १४ | १६वीं श. | |
| १०३ | (क) ज्योतिषसार (लघुजात-कानुसार) | | " | " | १-३१ | १६१० | लि. क. द्वारका व्यास, आगे पत्र सं. ३६ तक ज्योतिष एवं जैनशास्त्र सम्बन्धी कुछ चक्र हैं। |
| १०४ | (ख) मेघमाला (ग) चमत्कारचिन्तामणि सुभाषितयद्धति | शार्ङ्गधर, दामोदरसूनु | संस्कृत | " " सुभाषित |  ३६ ४० | २०वीं श. | अग्रपूर्ण, हम्मीरभूपतिचौहान राज्यसभासदस्यराधव-नाम्नः पौत्रः (प्र.क.) |

| क्रमाङ्क. | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|-----------|------------------------------------------------------------------------------|-----------------------|--------|--------------|------------------------------------------------------------------------------------|----------|--------------------------------------------------------------------------------------------------|
| १२३ | प्रेमरत्नाकर | राजकुमार, भैया रतनपाल | हिन्दी | काव्य | ३३ | १७४१ | लि. क.-स्वामी खेमदास आगे १२ पत्रोंमें स्फुट कवित्त आदि है। आद्य ५ पत्र अप्राप्त। अपूर्ण |
| १२४ | कबीरजीकी साली | कबीर | " | " | २०२ | २०वीं श. | |
| १२५ | विरदप्रकाश | उमेदसिंह | " | " | २७ | १६१६ | |
| १२६ | गृहदर्पण, (३६वीं ग्रन्थ) (यात्रा- विषयकवर्णन व स्टेशनोंके नाम) | संग्रामसिंह | " | प्रकीर्ण | १४ | २०वीं श. | |
| १२७ | शालिहोत्र | नकुल | " | आयुर्वेद | ५८ | १८६० | |
| १२८ | मन उमंग अनुराग | संग्रामसिंह | " | काव्य | १६ | १६३५ | लि. क. वंशीधर गुजराती- ब्राह्मण आद्य दो पत्र अप्राप्त अपूर्ण |
| १२९ | (क) चैतन्यसिद्धान्त (ख) चतुरमहाबोध | गुलाबकवि | " | वेदान्त |  | १६१३ | |
| १३० | (क) व्यंग्यार्थचन्द्रिका (ख) पादसप्तचीसी (ग) प्रेमपचीसी | जगन्नाथकवि | " | रसालंकार | १४-१६ | " | |
| १३१ | (क) अलङ्कार-मुक्तावली (ख) छांदःप्रस्तार (ग) अलङ्कारदीपिका | गुलाबकवि | " | काव्य | १७-१९ | " | |
| १३२ | (क) आत्म-उद्धार (ख) आत्मप्रकाश (ग) युक्तिरत्न (घ) युक्तिरत्नविधामणि | संग्रामसिंह | " | " | ३ | १६१० | |
| | | " | " | रसालंकार | ३ | " | |
| | | शिवसिंह | " | छन्दःशास्त्र |  | " | छन्द.संख्या ५२२ |
| | | " | " | रसालंकार | २५-३१ | " | |
| | | " | " | वेदान्त | ३२-४० | " | |
| | | " | " | " | | " | |
| | | " | " | भक्ति(योग) | | " | |

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|----------------------------------------------------------|------------------------------------------------|--------|-------------|------------|---------|---------------------------------------|
| १३३ | (च) प्रेमप्रभा | शिवसिंह | हिन्दी | काव्य | ४ | १७ | वा. |
| १३४ | (छ) मुक्तिसंगल | " | " | वेदान्त | ५५-५८ | १८ | " |
| १३५ | (ज) स्नेहसार | " | " | काव्य | ५८-६७ | १९ | " |
| १३६ | (झ) ग्रन्थसंक्रान्ति | " | " | " | ६७-७८ | २० | " |
| १३७ | (ट) स्फुटकवित्त | " | " | सत्तसाहित्य | ४० | २१ | " |
| १३८ | भर्तृहरिचरित | सेनापति | " | काव्य | १८ | २२ | स्फुटकवित्त (प्रारम्भिक ४ पत्रोंमें) |
| १३९ | संग्रामसिन्धु ग्रन्थव्याख्या (व्यंग्यार्थ-मौक्तिकमात्ता) | संग्रामसिंह | " | " | १९ | २३ | " |
| १४० | रामचरितमानस (बालकाण्ड) | गो. तुलसीदास | " | " | ११७ | २४ | अपूर्ण |
| १४१ | पावसबोडशी (५०वाँ ग्रन्थ) | संग्रामसिंह | " | " | १७ | २५ | " |
| १४२ | भूगोलज्ञानोत्तरी (५६वाँ ग्रन्थ) | " | " | " | १५ | २६ | " |
| १४३ | रससिरोमणि | महाराज रामसिंहजी छत्रसिंहजीसुत, नरवर-निवासी | " | रससंस्कार | ३७ | २७ | लि. क.-लक्ष्मण धाभाई लि. स्था.-बड़ौदा |
| १४४ | बिहारीसतसई, सटीक | बिहारीलाल | " | काव्य | १८४ | २८ | " |
| १४५ | महाभारत उद्योगपर्व, ६ अध्याय, पद्यानुवाद | कुणकवि | " | " | ८१ | २९ | र. का. १७९२ आद्य तीन-पत्र अप्राप्त |
| १४६ | (क) पूर्णबोधप्रकाश ज्ञानप्रकरण | पूर्णदास (गोवर्धनाश्रम-वासिस्त्रेमप्रतापशिल्य) | " | वेदान्त | ३१८ | ३० | लि. स्था.-बुंदीपतिभाव-सिंह राज्ये |
| १४७ | (ख) भक्तिभक्तसंप्रदाय | " | " | भक्ति (योग) | ३२८ | ३१ | र. स्था. " " |

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखितग्रन्थसूची, भाग २; परिशिष्ट-३, इन्द्रगढ़पोखानाग्रन्थसूची]

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------|
| १४३ | (क) द्वाजचरित (ख) अमरलोकप्रखण्डधामवर्णन- लीला (ग) धर्मजहाज (घ) गुरुचलासंवाद श्रृष्टांगयोग (च) पञ्चोपनिषद्, भाषा (छ) ज्ञानस्वरोदय (ज) ब्रह्मज्ञानसागर (झ) भक्तिपदार्थ (ट) चारयुगवर्णन कुण्डलिया (ठ) नायिका श्रृंगवर्णनादि (ड) चौबीसगुरुपरीक्षा (ढ) मोहछुड़ावनश्रृंगवर्णन (त) सन्देशसागर (थ) शब्दोक्तै मंगलाचरणद्वय (द) स्फुट कवित छन्द आदि शर्नस्वरकथा इन्द्रजाल हरिलीलामृत (क) रसशृङ्गार (ख) पावसपञ्चाशिका | | हिन्दी " " " " " " " " " " " " " " " " " " " संस्कृत हिन्दी " | काव्य " " योग वेदान्त " " भक्ति योग काव्य वेदान्त " " " " काव्य " कथा ज्योतिष तंत्र काव्य " | १-४ ४-७ ७-१७ १७-३७ ३७-४५ ४५-५६ ५६-६४ ६४-७५  ७५-११५ ११५-१२४ १२४-१२७ १२७-१७५ १७५-१८९  १८९-१९० १-७ | १८२६ " " " " " " " " " " " " " " " " " " " १८१४ श. १८८८ १८२० " | र. का.-१७८१ अपूर्ण लि. क.-मनीराम प्रथमपत्र अप्राप्त |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|----------|------------------------------------------|------------------------|-----------|-------------|------------|----------|-------------------------|
| | (ग) भूपाल (दूसरी) आदि | संग्रामसिंह | हिन्दी | काव्य | १-३ | १६२१ | र. का.-१६११ |
| | (घ) शृङ्गाररत्न | " | " | रसालंकार | १-५ | " | अपूर्ण |
| १४८ | (च) अलङ्कारमञ्जरी | सिद्धान्त पञ्चानन- | " | रसालंकार | ११ | १६वीं श. | लि. क.-लक्ष्मण, गंगाराम |
| १४९ | (छ) पावसषोडशी | भट्टाचार्य | संस्कृत | न्याय दर्शन | ७ | १७१८ | त्मज, लि. स्था. काशी |
| १५० | रामस्तवरज | सनत्कुमारसहितोक्त | " | स्तोत्र | ३२ | १८४७ | अपूर्ण |
| १५१ | शिवव्रतनामस्तोत्र | संग्रामसिंह | " | " | ३१ | १६वीं श. | अपूर्ण |
| १५२ | शृङ्गारप्रश्नोत्तरी, भाषा (६८वाँ ग्रन्थ) | संग्रामसिंह | हिन्दी | रसालंकार | ३१ | १६३१ | अपूर्ण |
| १५३ | अलङ्कारमञ्जरी | त्रिमल, वल्लभभट्टपुत्र | " | " | १३ | १६वीं श. | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| १५४ | वाजिचन्द्रिका (६३वाँ ग्रन्थ) | संग्रामसिंह | " | ज्योतिष | २१ | १६३१ | आद्य दो पत्र अप्राप्त, |
| १५५ | आरामस्वर्ण (७४वाँ ग्रन्थ) | " | राजस्थानी | प्रकीर्ण | १८ | १६३४ | लि. क.-रामनाथ |
| १५६ | स्तुत कवित्त | पद्माकरभट्ट | हिन्दी | काव्य | १५ | २०वीं श. | एक कवित्त बेनीका भी है |
| १५७ | (क) अचुचरित | परमानन्द | " | " | १-१२ | १७६१ | लि. क.-वल्लतराम |
| | (ख) मंगलाष्टक | कवि कालिदास | संस्कृत | " | १२-१७ | " | |
| | (ग) गणेशजीकी स्तुति | | हिन्दी | स्तोत्र | १७-२३ | " | |
| | (घ) गोरखनाथजीकी स्तुति | | " | " | २३-३० | " | |
| | (च) भोगलपुराण | | " | पुराण(कथा) | ३०-४० | " | |
| | (छ) रागचिन्तन | | " | संगीत | ४०-४८ | " | |

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|------------------------------|------------------------|-----------|-------------|------------|----------|---------------------------------------------------------------------------------------|
| | (ज) छोटमजीकी जकड़ी | छोटमराम | हिन्दी | काव्य | ४१-५१ | १७६१ | |
| | (झ) फायस्यद्दावशनाम टीका | " | " | कथा (पुराण) | ५१-५७ | " | |
| १५८ | रसचन्द्रोदय | संग्रामसिंह | " | रसालंकार | ३५ | १६१६ | |
| १५९ | रसचन्द्रोदय | " | " | " | २० | १६१० | |
| १६० | राजयोग भाषा | " | " | वेदान्त | ४ | १६२१ | लि. क.-श्रीलाल |
| १६१ | बहुसाष्टमी कथा | राजा प्रथीचन्द्र अनन्य | " | कथा | ५ | २०वीं श. | |
| १६२ | लीवरा बालेसरकी वारता | राजस्थानी | राजस्थानी | वार्ता(कथा) | १७ | १८५४ | लि. क.-घासीराम ज्योतिर्व (डाकोत) लि. स्था. मेणोली (बूंदी) प्रथमपत्र अप्राप्त |
| १६३ | पद्मकोश राजस्थानीटीकासहित | | संस्कृत | ज्योतिष | ११ | १६वीं श. | कीटवि- |
| १६४ | (क) मांसविचार (ज्योत्समाससे) | | राजस्थानी | " | ११ | १६०५ | |
| | (ख) छायापुरुषविचार | | राजस्थानी | " | १६-१७ | " | |
| | (ग) कबीरजीके रेलता | | " | सततसाहित्य | १८-२५ | " | |
| | (घ) आत्मप्रकाश | | " | " | २५-३० | " | |
| | (च) बालबोधिनी चौपाई | धर्मदास | " | " | ३८-४६ | " | |
| | (छ) हरिबोल | | " | " | ४६-४८ | " | |
| | (ज) शब्द | कबीर | " | " | ४८-५० | " | |
| | (झ) कबीराष्टक | | " | " | ५१ | " | |
| | (ट) अलण्डपरब्रह्मकी स्तुति | | " | " | ५२ | " | |
| | (ठ) आत्मदान भारती | धर्मदास | " | " | ५३वा | " | |
| | (ड) सम्बत्सरको फल | | " | ज्योतिष | ५४वा | " | |

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|----------------------------|---------------------------------|---------|-------------|------------|----------|----------------------|
| १६५ | (ठ) भुक्तज्ञानगुदरी | कबीर | हिन्दी | सन्तसाहित्य | ५५ | १६०५ | अपूर्ण |
| १६६ | (त) रामरक्षा | रामानन्द | हिन्दी | " | ५५-६५ | " | " |
| १६७ | (थ) मूलपांजीग्रन्थ | जालन्धरनाथ | संस्कृत | वेदान्त | ७ | २०वीं श. | " |
| | विवेकमार्तण्ड | भगवानदास | हिन्दी | रसालंकार | १४ | " | आद्य ४ पत्र अप्राप्त |
| १६८ | शृङ्गारसिन्धु (नवम कल्लोल) | जसवन्तसिंह | " | वेदान्त | ५-३२ | १८१० | लि. क.-विश्वनाथ |
| | (क) सिद्धान्तबोध | " | " | " | १-२२ | " | " |
| १६९ | (ख) सिद्धान्तसार | गोविन्दराम वडवा, कोटा- | संस्कृत | योग | १२ | " | " |
| | (ग) गोरक्षवतक | निवासीकी पुस्तकसे | " | प्रकीर्ण | " | " | " |
| १७० | (घ) चौबीस अवतार | वेला चारण | हिन्दी | इतिहास | १२ | १८८३ | " |
| १७१ | चौहाणोंकी वंशावली | निवासिंह | " | काव्य | १४ | १६वीं श. | खरड़ा |
| १७२ | गीतबही | गोविन्दराम वडवा, कोटा- | " | " | १ | " | " |
| १७३ | गीतमध्याक्षरी | निवासिंह | संस्कृत | पुराण (कथा) | १-७ | " | " |
| १७४ | (क) श्रावित्यव्रतमाहात्म्य | पञ्चपुराणगत | " | ज्योतिष | ८-३३ | " | " |
| १७५ | (ख) नक्षत्रफल | गोरचा ढाढी | हिन्दी | काव्य | ५२ | " | " |
| १७६ | मानसदीपिका व्याख्या | श्रीकृष्णचन्द्र (महाराजा-धिराज) | संस्कृत | ज्योतिष | १३ | १६१६ | " |
| १७७ | पञ्चाङ्ग | गोरचा ढाढी | हिन्दी | कथा (पुराण) | १४ | २०वीं श. | " |
| १७८ | सूर्यजीकी कथा (हिन्दी) | गोरचा ढाढी | संस्कृत | रसालंकार | १ | " | " |
| १७९ | छत्रबन्ध | श्रीकृष्णचन्द्र (महाराजा-धिराज) | हिन्दी | काव्य | २१ | " | " |
| १८० | अमाल | गोरचा ढाढी | संस्कृत | " | १-२८ | " | " |
| १८१ | (क) कवित्तशतक | गोरचा ढाढी | हिन्दी | " | " | " | " |

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|---------------------------------|-------------------|-----------|---------------|------------|----------|-----------------------------------------------------------------------------------------|
| १७८ | (ख) दोहाशतक | मोहनकावि | हिन्दी | काव्य | १-१४ | २०वीं श. | लि. क.-रामवल्लभ चौबे गुजराती, लि. स्था.-इन्द्रगढ़ |
| | (ग) रफूटकवित्त | | " | " | १-६ | " | |
| | (घ) विष्णुपद | | " | " | १-४० | " | |
| | (च) मोहननामपचीसी | | " | " | १-२ | " | |
| | (छ) दोहासंग्रह | | " | " | १-१२ | " | |
| | (क) शृंगारचमन | संग्रामसिंह | " | " | १-६ | १९३२ | |
| १७९ | (ख) प्रेमचमन | " | " | " | ६-११ | " | अपूर्ण |
| | (ग) रागसंयोग | " | " | संगीत | १२-२३ | " | |
| | (घ) दृष्टिकलाविधि (६८वाँ ग्रंथ) | " | " | रसालंकार | २४ | " | |
| | (क) छन्दःशास्त्र | " | संस्कृत | छन्दःशास्त्र | १-३ | २०वीं श. | |
| | (ख) वृत्तरत्नाकरटीका | समयसुन्दरगणि | " | " | १०-२० | " | |
| | गणेशमहिमाकथा | | हिन्दी | कथा | ५१ | १७८५ | |
| १८० | संग्रामसिन्धु | संग्रामसिंह | " | रसालंकार | १-६ | १९०८ | लि. क.-व्यास कालूराम इसमें निम्नलिखित सूची के अनुसार विविध गीतों का सङ्कलन है। |
| १८१ | गीतापरिचयटीका | शिवसिंह (महाराजा) | " | वेदान्त | ८-११६ | २०वीं श. | |
| १८२ | चारणगीतसंग्रह— | | राजस्थानी | काव्य | ३४४ | " | |
| १८३ | १ कवित् हाँगळाजकौ | | | कवित्तसंख्या१ | १ | | |
| | २ कवित् बीजाशणिजीकौ | | | २ | | | |
| | ३ गीत नरसिंगजीका | | | २५ | | | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थसूची | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|----------|-----------------------|-------|------|-------|------------|---------|-------|
| ४ | डुहा सीरदुण | | | १ | | | |
| ५ | कवित राड(ठ) | | | २६ | | | |
| ६ | गीत जाति श्रीवल | | | ३० | | | |
| ७ | कवित यंघतध्वनि | | | ४७ | | | |
| ८ | नशाणीसीराछलतन(त)जीकी | | | ५४ | | | |
| ९ | गीत हामाजीकी | | | १ | | | |
| १० | गीत चतकळोळ हनुमत-जीकी | | | ५१ | | | |
| ११ | गीत गोख डोढो देवजीकी | | | ५३ | | | |
| १२ | गीतजोगारसां(रंम) | | | ५६ | | | |
| १३ | कवित् चवाणकी उत्पत्ती | | | ५६ | १० | | |
| १४ | गीत गोग(गोगा) चहवाण | | | ५८ | १० | | |
| १५ | गीत राव कोलणको | | | ५६ | १० | | |
| १६ | गीत हाळुजी की | | | ६३ | ११ | | |
| १७ | गीत रों(गो)पाळजीकी | | | ६४ | ११ | | |
| १८ | गीत वैरसळ | | | ६५ | ११-१२ | | |
| १९ | गीत लालाहाडाको | | | ६६ | १२ | | |
| २० | गीत भापो पशुकाळको | | | ६७ | १२ | | |
| २१ | गीत राव अरजनजीकी | | | ६८ | १३ | | |
| २२ | कवित राव सुरजनकी | | | ६९ | १३ | | |
| २३ | गीत रावसुरजमजीकी | | | ७१-७६ | १३-१६ | | |

५६वें गीत का प्रसङ्ग
नहीं मिलता है।

| ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | तिथिकाल | विशेष |
|------------------------------------------|-------|------|---------|------------|---------|------------------------------------|
| २४ नसाणी राव मुरजनकी | | | ८० | १६-१७ | | |
| २५ नोसाणी राव दूवा भोजकी | | | ८१ | १७ | | |
| २६ नोसाणी दूवाजीकी | | | ८२-८३ | १७ | | |
| २७ गीत दूवाजीकी | | | ८३-८७ | १८-१९ | | |
| २८ राव भोजकी गीत | | | ८८-९८ | १९-२३ | | |
| २९ गीत पाउगति | | | ९९-१०८ | २३-४० | | |
| ३० राव भावसिधजीका गीत | | | १०९-११७ | ४० | | |
| ३१ गीत भगतसिधजीकी | | | ११८-१२८ | ४२-४६ | | |
| ३२ राव ग्रमेव (उमेद) सीधजीका गीत | | | १२९-१८३ | ४६-४९ | | |
| ३३ घ (जोध) सिधजी लार सती होई जीकी | | | १८४-१९१ | ४९-५३ | | |
| ३४ गीत राव छत्रसाळजीकी | | | १९२वां | ५३वां | | |
| ३५ गीत म्हाराजा ईंदसाळजीकी | | | १९३-१९६ | ५३-५५ | | |
| ३६ गीत म्हाराजा सरदारसीध-जीकी | | | २००-२११ | ५५-५८ | | |
| ३७ गीत म्हाराजा मेवसिधजीकी | | | २१२-२२० | ५८-६० | | |
| ३८ गीत म्हाराजा धीत्रसिधजीका (गीत चोसरो) | | | २२१-२६८ | ६०-७१ | | |
| ३९ गीत म्हाराजा देवसीधजीकी | | | २६९वां | ७१-७३ | | |
| ४० गीत खेलियो सांगोर | | | २७० | ७३-७४ | | इसमें इन्द्रगङ्गमहाराज प्रशस्ति है |
| ४१ गीत श्रीकुटबंध | | | २७१ | ७६-७७ | | " |

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पृथसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|-------------------------------------------|-------|------|---------|-----------|---------|--------------------------|
| ४२ | रूपका महाराजाजी भगत- रामजी का कवित | | | २७३-२७६ | ७७ | | भगतेसनरेशकी प्रशस्ति है |
| ४३ | गीत मुक्ताग्रह | | | २७७-२७८ | ७८ | | " |
| ४४ | गीत चोसरा | | | २७९ | ७९-८० | | |
| ४५ | गीत त्रिकुटबंध | | | २८०-३०४ | ८०-९० | | |
| ४६ | भालड़ी | | | ३०५-३६२ | ९०-१०४ | | इसमें स्फुटकवित्त भी है। |
| ४७ | साखी महाराजा सरदारसिंघ- जीकी कही | | | ३६३ | १०४ | | |
| ४८ | रूपक कवगजी सुनमानसिंघजी का गीत पंचसर | | | ३६४-३६५ | १०५ | | सुनमानसिंह प्रशस्ति है। |
| ४९ | गीत मुक्ताग्रह | | | ३६६-३६७ | १०५-१०६ | | " |
| ५० | गीत सुपंखरो | | | ३६८-३७८ | १०६-१११ | | " |
| ५१ | गीत त्रिकुटबंध | | | ३७९-३९५ | १११-११७ | | |
| ५२ | गीत (कु)वरजी अमानसिंघ- जीका | | | ३९६-३९८ | ११७वां | | |
| ५३ | गीत म(प्र)तापसिंघजीको | | | ३९९-४०६ | ११७-१२० | | पद्यसंख्या मूल पुस्तकमें |
| ५४ | गीत राव अजीतसिंघको | | | १ | १२०-१२२ | | केवल १ ही दी गई है। |
| ५५ | रूपक माहाराजा अमरसिंघ- जीका गीत बेलीयो | | | ४०४-४०८ | १२३-१२४ | | पुनः ४०४ से प्रारम्भ है। |
| ५६ | गीत माहाराजा फकीरसिंघ- जीकी | | | ४०९-४१० | १२४-१२५ | | |

राजस्थान पुरातत्वावेषणमन्दिर—हस्तलिखितग्रन्थसूची, भाग २; परिशिष्ट-३, इन्द्रगढ़पोखानाग्रन्थसूची]

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|---------------------------------------------------|-------|------|---------|------------|---------|-------|
| ५७ | माहाराजा जोगीरामजीका | | | ४११-४१३ | १२५-१२६ | | |
| ५८ | गीत महाराजा सालमसौघ- जीका | | | ४१४-४१६ | १२६-१२७ | | |
| ५९ | गीत घासीरामजीका | | | ४१७-४१८ | १२७ | | |
| ६० | गीत महाराज प्रतापसिंघजीको | | | ४१९ | १२७-१२८ | | |
| ६१ | गीत दलेलसौंघजीको | | | ४२० | १२८ | | |
| ६२ | गीत महाराजा मरजादसिंघ- जीको | | | ४२१-४२३ | १२८-१२९ | | |
| ६३ | गीत कैवर फतेसौंघजी सुजाण- सौंघजी ईन्द्रसालोतको | | | ४२४-४२५ | १२९-१३० | | |
| ६४ | गीत बरीसालोवताका | | | ४२६-४३६ | १३० | | |
| ६५ | कबित् रूपजी माहासीगोत | | | ४३७ | १३१ | | |
| ६६ | माघोसीघजीको | | | ४३८ | १३१ | | |
| ६७ | गीत मुकुनसिंघजीका | | | ४३९-४४६ | १३१-१३६ | | |
| | सावभड़ो | | | | | | |
| ६८ | श्रीजी कसोरसौंघजीका गीत | | | ४४७-४५१ | १३६-१३८ | | |
| ६९ | गीत रामसौंघजीका | | | ४५२-४५५ | १३८-१४० | | |
| ७० | गीत भीव (व) सौंघजीका | | | ४५६-४६५ | १४०-१४३ | | |
| ७१ | गीत स्यामसौंघजीका | | | ४६६ | १४३ | | |
| ७२ | गीत दुरजलसाल (दुरजनसाल) जी का | | | ४६७-४७८ | १४४-१४५ | | |
| ७३ | गीत जैराम बीयास (व्यास) | | | ४७८-४८० | १४५-१४६ | | |

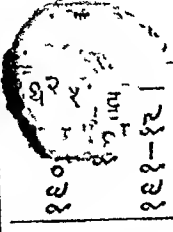
| क्रमाङ्क | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|----------|----------------------------------------------------------|-------|------|---------|------------|---------|-------|
| ७४ | गीत मोहोणसिधजीका | | | ४८१-४८२ | १४६ | | |
| ७५ | गीत गोरधनसिधजीका | | | ४८३-४८४ | १४६ | | |
| ७६ | गीत अजीतसिधजीका | | | ४८५ | १५० | | |
| ७७ | माहाराव छत्रसाळजी कबित् | | | ४८६-४८६ | १५०-१५१ | | |
| ७८ | गीत प्रथीसिधजीका | | | ४८० | १५१-१५२ | | |
| ७९ | गीत नाहरसिधजीको | | | ४८१ | १५२ | | |
| ८० | गीत नाथजीको | | | ४८२ | १५२-१५३ | | |
| ८१ | गीत हरद्वनारायेणको | | | ४८३ | १५३ | | |
| ८२ | गीत दोलतसिध हरदावतको | | | ४८४ | १५३ | | |
| ८३ | गीत भोवसीध हरदावतको | | | ४८५ | १५३-१५४ | | |
| ८४ | जैतसिध हरदावत कबित् | | | ४८६-४८७ | १५४ | | |
| ८५ | छीत्रसीधजी मेवाडता गीत | | | ४८८-४८९ | १५४-१५५ | | |
| ८६ | फतेसीध जैतसीधजीको कबित् | | | ५००-५०१ | १५५ | | |
| ८७ | कसुबा(कसुबां) नायको गीत | | | ५०२-५०४ | १५५-१५६ | | |
| ८८ | गीत हाडा भोवसिधजीको | | | ५०५-५०६ | १५६-१५७ | | |
| ८९ | कबित् राव हमीरको | | | ५०७-५०८ | १५७वां | | |
| ९० | प्रथीयरानकी छाप | | | ५०९-५१२ | १५७-१५८ | | |
| ९१ | गीत मोख डोढो बरडोदको | | | ५१३ | १५८ | | |
| ९२ | राणा भोजराज चहुंवाणको कबित् टोडरमल चहुवान नीमराणाको राजा | | | ५१४ | १५८-१५९ | | |

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|--------------------------------------------------------------|-------|------|----------|------------|---------|-------|
| ६३ | गीत बेवलाका ठाकुर बखत- सीध चहुवाण को । सुपंखरौ चोटीबंध | | | ५१५से५१७ | १५६-१६० | | |
| ६४ | गीत चहुवाणाको | | | ५१८-५१९ | १६०-१६१ | | |
| ६५ | गीत सत्रसाळ देवड़ाको | | | ५२० | १६१ | | |
| ६६ | गीत अखसीध देवड़ाको | | | ५२१ | १६१ | | |
| ६७ | गीत सुरताण देवड़ाको | | | ५२२ | १६१ | | |
| ६८ | गीत (बी)रमदे सोनगराको | | | ५२३ | १६२ | | |
| ६९ | गीत राणगदे सोनगराको | | | ५२४ | १६२ | | |
| १०० | गीत जसो सोनगरको | | | ५२५ | १६२-१६३ | | |
| १०१ | गीत कुभा(कुंभा) खीचीको | | | ५२६ | १६३ | | |
| १०२ | गीत धीरतसीध खीचीको | | | ५२७ | १६३-१६४ | | |
| १०३ | गीत नगा खीचीको | | | ५२८-५२९ | १६४ | | |
| १०४ | गीत फतेसीध खीचीको | | | ५३० | १६४-१६५ | | |
| १०५ | गीत अकबर पातस्याको | | | ५३१-५३२ | १६५ | | |
| १०६ | कबित साहिजादो दानसाहको | | | ५३३ | १६५ | | |
| १०७ | कबित् खान खान नवाबको | | | ५३४-५३६ | १६५-१६६ | | |
| १०८ | कबित् श्रोरेजे(ब) पातस्याका | | | ५३७ | १६६ | | |
| १०९ | गीत साहिजादाको | | | ५३८ | १६६- | | |
| ११० | गीत दलिको | | | ५३९ | १६७ | | |
| १११ | गीत राणा कुंभाको | | | ५४०-५४३ | १६७ | | |

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|-----------------------|-------|------|---------|------------|---------|-------|
| ११२ | गीत रायमल राणाको | | | ५४४ | १६८ | | |
| ११३ | गीत राणा परतापसीधको | | | ५४५-५४६ | १६६-१६७ | | |
| ११४ | गीत राणा अमरसीधको | | | ५४६ | १६६-१७३ | | |
| ११५ | गीत राणा जगतसीधजीको | | | ५५० | १७० | | |
| ११६ | गीत राणा राजसीधको | | | ५५१-५५५ | १७०-१७१ | | |
| ११७ | गीत राणा परतापसीधजीको | | | ५५६ | १७२ | | |
| ११८ | गीत राणा सगरामसीधजीको | | | ५५७ | १७२-१७३ | | |
| ११९ | गीत राणा सांगाको | | | ५५८-५५९ | १७३-१७४ | | |
| १२० | गीत जमल पताको | | | ५६०-५६१ | १७४-१७५ | | |
| १२१ | गीत रावलजीका | | | ५६२ | १७५ | | |
| १२२ | गीत रावलको | | | ५६३ | १७५-१७६ | | |
| १२३ | गीत अमरसीध रावलको | | | ५६४ | १७६ | | |
| १२४ | गीत जेतसी रावलको | | | ५६५ | १७६ | | |
| १२५ | गीत सालमसीध देवलको | | | ५६६ | १७६-१७७ | | |
| १२६ | कबित् सेवो रावलको | | | ५६७ | १७७ | | |
| १२७ | कबित् काबड़चा खेड़ीको | | | ५६८ | १७७ | | |
| | भारतसीधजीको | | | | | | |
| १२८ | गीत राणा भोवको | | | ५६९-५७० | १७७-१७८ | | |
| १२९ | गीत उडणा प्रथीराजको | | | ५७१-५७२ | १७८-१७९ | | |
| १३० | गीत सागा मीणाको | | | ५७३ | १७९ | | |
| १३१ | गीत चोडो लाखाको | | | ५७४ | १७९ | | |

राजस्थान पुरातत्त्वविषयमन्दिर—हस्तलिखितग्रन्थसूची, भाग २; परिशिष्ट ३; इन्द्रगढ़पोथीखानाग्रन्थसूची]

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|-----------------------------|-------|------|---------|------------|---------|-------|
| १३२ | गीत सीही चलो | | | ५७५ | १७६-१८० | | |
| १३३ | गीत देवीसीध वेगुंका ठाकुरको | | | ५७६ | १८० | | |
| १३४ | गीत दवारिकादास | | | ५७७ | १८० | | |
| | चोडावतको | | | | | | |
| १३५ | गीत जसोतसीध चोडावतको | | | ५७८ | १८०-१८१ | | |
| | मुक्ताग्रह | | | | | | |
| १३६ | गीत नरायणदास | | | ५७९ | १८१ | | |
| | सगतावतको | | | | | | |
| १३७ | गीत गजगति नरायणदास | | | ५८०-५८१ | १८१-१८२ | | |
| | सगतावतको | | | | | | |
| १३८ | गीत श्रुतालो | | | ५८२ | १८२-१८४ | | |
| १३९ | गीत गोकलदास सगतावतको | | | ५८३-५८६ | १८४-१८५ | | |
| १४० | गीत परतागसीध सगतावतको | | | ५८७-५८९ | १८५-१८६ | | |
| १४१ | गीत जगतसीध सगतावतको | | | ५९०-५९५ | १८६-१८६ | | |
| १४२ | गीत लालसीध सगतावतको | | | ५९६ | १८६ | | |
| १४३ | गीत सगतसीध सगतावतको | | | ५९७ | १८६-१८८ | | |
| | त्रीकुटबध | | | | | | |
| १४४ | गीत सुरतसीध सगतावतको | | | ५९८ | १८८ | | |
| १४५ | गीत सगतावतको | | | ५९९ | १८८-१८९ | | |
| १४६ | गीत राणा संग्रामसीधजीको | | | ६०० | १८९-१९० | | |
| १४७ | रूपक म्होकमसी चंद्रावतको | | | ६०१-६०४ | १९०-१९० | | |

| क्रमांक | ग्रन्थसूची | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|-------------------------|-------|------|---------|------------|-----------------------------------------------------------------------------------|-------|
| १४८ | गीत अमरसौंघ चंद्रावतको | | | ६०५ | १६० |  | |
| १४९ | गीत भारतसौंघ साहपुर | | | ६०६-६०७ | | | |
| १५० | गीत उमेदसौंघ साहेपुर | | | ६०८-६१२ | १६१-१६२ | | |
| १५१ | गीत अदोतसौंघको | | | ६१३ | १६४ | | |
| १५२ | गीत रामानंद नागाको | | | ६१४ | १६४-१६५ | | |
| १५३ | गीत केसरीसौंघ सीसोदो | | | ६१५ | १६५ | | |
| १५४ | गीत सांवलदास डावरको | | | ६१६ | १६५-१६६ | | |
| १५५ | गीत अचलसौंघ राणाउतको | | | ६१७-६१९ | १६६-१६७ | | |
| १५६ | गीत जगमाल जालपुरको | | | ६२० | १६७-६२१ | | |
| | ठाकुरको श्रीबंकड़ो | | | | | | |
| १५७ | गीत देवलाका ठाकुरको तसर | | | ६२१ | १६७-१६८ | | |
| | गीत | | | | | | |
| १५८ | गीत जंगखोड़ो वेधुका | | | ६२२ | १६८ | | |
| | रावत हरीसौंघजीको | | | | | | |
| १५९ | गीत बिहारीदास गलोतको | | | ६२३ | १६८ | | |
| १६० | गीत आनू गलोतको | | | ६२४ | १६८-१६९ | | |
| १६१ | गीत मलराज सोलखीको | | | ६२५ | १६९-२०१ | | |
| | मुक्ताग्रह | | | | | | |
| १६२ | कवित् नाहारसौंघ सोलखीको | | | ६२६ | २०१ | | |
| १६३ | दोनू कवित् नाहारखीजीको | | | ६२७ | २०१ | | |
| | छे । ऐक कवित् नाहारखीजी | | | | | | |
| | को ऐक सुरजीको | | | | | | |

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|---------------------------------|-------|------|---------|------------|---------|-------|
| १६४ | कवित हरीजीको | | | ६२८-६२९ | २०१-२०२ | | |
| १६५ | गीत लावसीध सोलै (ल) खीको | | | ६३०-६३१ | २०२ | | |
| १६६ | गीत कसनसीधजीको | | | ६३२ | २०२-२०३ | | |
| १६७ | गीत बीरमदे सोलखीको | | | ६३३ | २०३ | | |
| १६८ | गीत सीधराव जैसगको | | | ६३४ | २०३-२०४ | | |
| १६९ | गीत मुठराज सोलखीको | | | ६३५ | २०४ | | |
| १७० | कवित नाथावताको | | | ६३६ | २०४ | | |
| १७१ | गीत देवीसीध नाथावतको | | | ६३७ | २०४-२०५ | | |
| १७२ | कवित् करण नाथावतको | | | ६३८ | २०५ | | |
| १७३ | गीत गोयंदा सबराडको | | | ६३९-६४० | २०५-२०६ | | |
| १७४ | गीत अमरसीध भाटी जसलमेरको | | | ६४१ | २०६ | | |
| १७५ | गीत सबळा भाई | | | ६४४ | २०७ | | |
| १७६ | गीत जाडुको | | | ५४५ | २०७ | | |
| १७७ | गीत बिजासर बंयाको | | | ६४६ | २०७-२०८ | | |
| १७८ | गीत करण सरबंयाको | | | ६४७ | २०८ | | |
| १७९ | डुहा जसा सरबंयाका | | | ६४८ | २०८-२०९ | | |
| १८० | गीत राठोईका | | | ६४९ | २०९-२१० | | |
| १८१ | गीत राजा गजसीधजीको | | | ६५०-६५१ | २१० | | |
| १८२ | गीत राजा जसोतसीधजीको | | | ६५३-६५४ | २१०-२११ | | |
| १८३ | गीत अमरसीध राठोईको नागौरको राजा | | | ६५७-६५८ | २१२ | | |

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|----------------------------------------------------------------|-------|------|---------|------------|---------|-------------------------------|
| १८४ | गीत राजा अजीतसिंघजीको | | | ६५६-६७२ | २१२-२१३ | | ६६७ से ६७० तकके गी नहीं हैं । |
| १८५ | गीत राजा अम(य)सिंघजीको | | | ६७३-६७५ | २१४-२१६ | | |
| १८६ | गीत बखतसिंघको | | | ६७६-६८१ | २१६-२१६ | | |
| १८७ | गीत जीवा आपा दखणीको | | | ६८२ | २१६-२२० | | |
| १८८ | गीत राजा विजिसिंघको । सुपखरो | | | ६८३ | २२०-२२१ | | |
| १८९ | गीत राजसिंघ रूपनगरको राजाको | | | ६८४-६८६ | २२१-२२३ | | * यह दोहेकी संख्या है |
| १९० | (गो) ...त कुंया राठोड़को | | | ६८७-६९० | २२३-२२५ | | |
| १९१ | गीत नीबाको | | | ६९१ | २२५ | | |
| १९२ | गीत रतनको | | | ६९२ | २२५ | | |
| १९३ | गीत बलु चौपावतको | | | ६९३-६९५ | २२६-२२७ | | |
| १९४ | सोनग बलुको बेटो दोहा | | | १* | २२७ | | |
| १९५ | गीत रामसिंघ राठोड़को | | | ६९६-६९७ | २२७-२२८ | | |
| १९६ | गीत दोलतसिंघ राठोड़को | | | ६९८ | २२८ | | |
| १९७ | गीत अमरसिंघ गरडवाको गीत नागटो | | | ६९९ | २२८-२२९ | | |
| १९८ | गीत ईंदूसिंघ खरवाका ठाकुरको | | | ७००-७०१ | २२९-२३० | | |
| १९९ | गीत गोकलवास राठोड़को अमरसिंघ नागोरका ठाकुरके आटे काम आयो | | | ७०२ | २३० | | |

राजस्थान पुरातत्त्वशास्त्राभ्यासमन्दिर—हस्तलिखितग्रन्थसूची, भाग—२; परिशिष्ट-३; इन्द्रगढ़पोथीभानाग्रन्थसूची]

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | तिथिकाल | विशेष |
|---------|-----------------------------------------|-------|------|---------|------------|---------|-------|
| २०० | गीत जतसीध सुमीयांराको ठाकुर राठोड़को | | | ७०३ | २३०-२३१ | | |
| २०१ | गीत केसरीसीध उदावतको | | | ७०४ | २३१-२३२ | | |
| २०२ | गीत उदावतको | | | ७०५ | २३२ | | |
| २०३ | गीत मोहोकम राठोड़को | | | ७०६ | २३२-२३३ | | |
| २०४ | गीत जिजा राठोड़को | | | ७०७ | २३३ | | |
| २०५ | गीत हठीसीध राठोड़को | | | ७०८ | २३३-२३४ | | |
| २०६ | गीत तेजसीध राठोड़को | | | ७१० | २३४-२३५ | | |
| २०७ | गीत कुसलसीध चांपावतको | | | ७११ | २३५ | | |
| २०८ | गीत सेरसीधजी कुसल- सीधजीको | | | ७१२-७१४ | २३५-२३८ | | |
| २१० | गीत सेरसीधजीको | | | ७१५-७१७ | २३८-२४१ | | |
| २११ | गीत डुग्गादास राठोड़को | | | ७१८ | २४१ | | |
| २१२ | गीत गोपालसीध मेड़याको | | | ७२० | २४१-२४२ | | |
| २१३ | गीत अरध गोल कसनसीध राठोड़को | | | ७२१ | २४२ | | |
| २१४ | गीत परसा राठोड़को | | | ७२२ | २४२-२४३ | | |
| २१५ | गीत चतुरा राठोड़को | | | ७२३ | २४३ | | |
| २१६ | गीत करण राठोड़को | | | ७२४ | २४३-२४४ | | |
| २१७ | गीत साहाबसीध राठोड़को | | | ७२४ | | | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|----------|-----------------------------------|-------|------|---------|------------|---------|-------|
| २१८ | गीत करण राठोड़को | | | ७२५ | २४४ | | |
| २१९ | गीत सैतमल राठोड़को | | | ७२६-७२६ | २४४-२४६ | | |
| २२० | गीत माधोसीध राठोड़को | | | ७३०-७३१ | २४६-२४७ | | |
| २२१ | गीत जसोतसीधजीका | | | ७३२ | २४७ | | |
| | उमरावाको | | | | | | |
| २२२ | गीत अमरसीधजीका | | | ७३३ | २४७-२४८ | | |
| | उमरावाको | | | | | | |
| २२३ | गीत परथीराज राठोड़को | | | ७३४ | २४८ | | |
| २२४ | गीत ज(य)सीध राठोड़को | | | ७३५ | २४८ | | |
| २२५ | गीत सेवो बादलको | | | ७३६ | २४९ | | |
| २२६ | गीत घाणोराको ठाकुर पदम- सीधको | | | ७३७ | २४९ | | |
| २२७ | गीत सगतसीध राठोड़को | | | ७३८ | २४९-२५० | | |
| २२८ | गीत मोकम चांपाउतको | | | ७३९ | २५० | | |
| २२९ | गीत अलसीध राठोड़को | | | ७४० | २५०-२५१ | | |
| २३० | गीत कमो राठोड़को | | | ७४१ | २५१ | | |
| २३१ | कबित् राव बीकाको | | | ७४२ | २५१ | | |
| २३२ | गीत कल्याणसीधजीको | | | ७४३ | २५१-२५२ | | |
| २३३ | गीत प्रथीराज राठोड़को | | | ७४४-७४५ | २५२-२५३ | | |
| २३४ | गीत रायसीधको | | | ७४६ | २५३ | | |
| २३५ | गीत बीकानेरको मोगीसीधका बेटाको | | | ७४७ | २५३ | | |

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|---------------------------------------|-------|------|---------|------------|---------|-------|
| २३६ | गीत सांगोर थाणवंध वेलीयो रामसौंधको | | | ७४८ | २५३-२५४ | | |
| २३७ | गीत रामसौंध वीकानेर को | | | ७४९ | २५४ | | |
| २३८ | कवित् वीकानेरका राजा अनोपसौंधको | | | ७५० | २५४-२५५ | | |
| २३९ | गीत वीकानेरको पदमसौंधको | | | ७५१-७५४ | २५५-२५६ | | |
| २४० | गीत केसरीसौंध वीकानेरको | | | ७५५ | २५६-२५७ | | |
| २४१ | कवित् राजा गजसौंधजी वीकानेरको | | | ७५६ | २५७ | | |
| २४२ | गीत भोंव राठोड़को | | | ७५७ | २५७-२५८ | | |
| २४३ | गीत दुदा राठोड़को | | | ७५८ | २५८ | | |
| २४४ | गीत लखवीर रोंदा | | | ७५९ | २५८-२५९ | | |
| २४५ | गीत योक अलरो करण वीकानेरका राजाको | | | ७६० | २५९ | | |
| २४६ | गीत आफुको | | | ७६१ | २५९-२६० | | |
| २४७ | गीत भ्यागको | | | ७६२ | २६० | | |
| २४८ | छर्प राव भाराकी जाड़ो- चाकी | | | ७६३ | २६० | | |
| २४९ | गीत जाड़ेजाको बीसर | | | ७६४ | २६०-२६१ | | |
| २५० | गीत हीरा मांगलयाको | | | ७६५ | २६१ | | |
| २५१ | गीत महेड़ जाड़ेचाको | | | ७६६ | २६१-२६२ | | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थसूची | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|----------|---------------------------------------------|-------|------|---------|------------|---------|-------|
| २५२ | गीत राव देसलको | | | ७६७ | २६२ | | |
| २५३ | दुरजनसाल सोडाको | | | ७६८ | २६२ | | |
| २५४ | गीत भोज कावाको | | | ७६९ | २६२-२६३ | | |
| २५५ | गीत घासड़ी सोडा चवानको | | | ७७० | २६३ | | |
| २५६ | गीत सोडा राठोडाको चुकको | | | ७७१ | २६३-२६४ | | |
| २५७ | गीत सोडा भाटीको चुकको | | | ७७२-७७३ | २६४ | | |
| २५८ | गीत राजा मानको | | | ७७४-७७५ | २६४-२६५ | | |
| २५९ | कवित बड़ो जैसोधको | | | ७७६-७७८ | २६५-२६६ | | |
| २६० | गीत बड़ो जैसोधको | | | ७७९ | २६६ | | |
| २६१ | गीत जगतसीप ग्राम [से] रका राजाको लहचाल | | | ७८० | २६६ | | |
| २६२ | गीत राजा रामसोधजीको | | | ७८१ | २६६-२६७ | | |
| २६३ | कवित् राजा बसनसोधको | | | ७८२ | २६७ | | |
| २६४ | गीत सीहि ओगान राजा सवाई जैसोधको | | | ७८३-७८८ | २६७-२७० | | |
| २६५ | गीत बडा जैसोधजीको | | | ७८९-७९० | २७०-२७१ | | |
| २६६ | गीत डुमेळ । मनोहर साखळो बडा जैसोधको उमरावको | | | ७९१ | २७१ | | |
| २६७ | गीत तलोकसीध राजाजतको | | | ७९२ | २७१ | | |
| २६८ | कवित् कुशलसीध नाथा उत चौमा [मू] को ठाकुर | | | ७९३-७९४ | २७१-२७२ | | |
| २६९ | गीत गजसोध नाथाजतको | | | ७९५-७९६ | २७२-२७३ | | |

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|------------------------------------------------------------------|-------|------|---------|------------|---------|-------|
| २७० | गीत सोरठो उव(य)सौंघ सेखाउतको | | | ७६७ | २७३ | | |
| २७१ | गीत दीपसिधजीको | | | ७६८ | २७३-२७४ | | |
| २७२ | गीत दोलतसौंघको | | | ७६९ | २७४ | | |
| २७३ | गीत सोसौंघ सेखाउतको | | | ८०० | २७४-२७५ | | |
| २७४ | गीत कानसिध बलभदोत | | | ८०१ | २७५ | | |
| २७५ | गीत देवसौंघ खंगारोतको | | | ८०२ | २७५-२७६ | | |
| २७६ | गीत अमरसौंघ खंगारोत | | | ८०३ | २७६ | | |
| २७७ | गीत मोरघन कल्याणोत | | | ८०४-८०५ | २७६ | | |
| २७८ | गीत मानसिध कल्याणोत | | | ८०६ | २७६-२७७ | | |
| २७९ | गीत कमा कल्याणोतको | | | ८०७ | २७७ | | |
| २८० | गीत जैचंद कल्याणोतको | | | ८०८ | २७७ | | |
| २८१ | गीत फतेसौंघ नागाको | | | ५०९ | २७७-२७८ | | |
| २८२ | गीत जैसौंघ नरुको | | | ८१० | २७८ | | |
| २८३ | गीत दोनु जैसौंघ नरुकाका | | | ८११ | २७८ | | |
| २८४ | गीत सुजाणसौंघ जंग-नाथोतको | | | ८१२ | २७८-२७९ | | |
| २८५ | गीत साहिबखां भाखरोतको | | | ८१३ | २७९ | | |
| २८६ | कबित राजसौंघ भाखरोतको | | | ८१४-८१५ | २७९-२८० | | |
| २८७ | गीत राजसौंघ भाखरोतको | | | ८१६ | २८० | | |
| २८८ | गीत गुजरीका पेठ(बेटा)को नरायणदासजीको दोलतखां बेटो छं जीको गीत छं | | | ८१७ | २८०-२८१ | | |

मन्त्रालय-विभाग-परिशिष्ट-३, इन्द्रगढ़पोषीखानाग्रन्थसूची, भाग २; परिशिष्ट-३, इन्द्रगढ़पोषीखानाग्रन्थसूची]

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|-------------------------------------|-------|------|---------|------------|---------|----------------------|
| २८६ | कवित् जंतसीध मानसीधउत (बाकाउत)को | | | ८१८ | २८१ | | *यह दोहेकी संख्या है |
| २८७ | डुहो बाकाउतको | | | १* | २८१ | | |
| २८८ | गीत सपुतको | | | ८१६ | २८१-२८२ | | |
| २८९ | गीत कपुतको | | | ८२० | २८२-२८३ | | |
| २९० | गीत वेसर मानसीधोताको | | | ८२१ | २८३ | | |
| २९१ | डुहा सवाई जंसीधजीको | | | १* | २८३ | | *यह दोहेकी संख्या है |
| २९२ | गीत खंगार कछावाको । | | | ८२२ | २८३ | | |
| २९३ | खंगारो ताको यडो सारा सु | | | | | | |
| २९४ | कवित नाथाउत कछवावाको | | | ८२३ | २८३-२८४ | | |
| २९५ | गीत जंग खोडो राजा विठल- | | | ८२४-८२७ | २८४-२८५ | | |
| २९६ | दास गोडको | | | ८२६ | २८५-२८६ | | गीतसं० ६२८ नहीं है |
| २९७ | गीत राजा अनाद (आनां?)को | | | ८३०-८३२ | २८६ | | |
| २९८ | कवित राजा बीठलको | | | ८३३ | २८६-२८७ | | |
| २९९ | डुंगरसी बाभडीका कह्यां | | | ८३४-८३५ | २८७ | | |
| ३०० | गीत राजा अनरद गोडको | | | ८३६-८३६ | २८७-२८८ | | |
| ३०१ | कवित् सावफडो | | | ८४० | २८६ | | |
| ३०२ | गीत राजा नरसं (ग)को | | | ८४१ | २८६ | | |
| ३०३ | गीत जाति हंसग | | | | | | |
| ३०४ | अरट गो. को | | | | | | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विवरण |
|------------|-------------------------------------------------|-------|------|---------|------------|---------|-----------------------|
| ३०५ | गीत अरजन गोडको | | | ८४२-८६० | २८६-२८६ | | गीतसं. ८६५ नहीं है। |
| ३०६ | गीत सुभराम गोडको | | | ८६१-८६४ | २८६-२८८ | | |
| ३०७ | गीत राजा मनोरदासजीको | | | ८६६ | २८८-२८८ | | |
| ३०८ | गीत राजा उत्तमरामजीको | | | ८६७ | २८८ | | |
| ३०९ | गीत धीरभद्र गोडको | | | ८६८ | २८८-३०० | | |
| ३१० | गीत अरजन धीरभद्रको | | | ८६९ | ३०० | | अथह दोहेकी संख्या है। |
| ३११ | गीत जोरावरसीधजी साहा- राजाछीमसीधजीका नावजीको | | | ८७० | ३००-३०१ | | |
| ३१२ | गीत उद(य)भाण हरभाण गोडको | | | ८७१-८७२ | ३०१ | | |
| ३१३ | गीत सगता गोडको | | | ८७३ | ३०२ | | |
| ३१४ | हुहो रासा(भा)सांगा उत्तमराव रतनको कह्यो | | | १* | ३०२-३०३ | | |
| ३१५ | गीत थानसीध सांगाउतको | | | ८७४-८७५ | ३०३ | | |
| ३१६ | गीत कसनसीध गोडको | | | ८७६-८७७ | ३०३-३०४ | | |
| ३१७ | गीत बलाभालाको | | | ८७८-८७९ | ३०४ | | |
| ३१८ | गीत राज कीरतसीधजी सावई(डी)का ठाकराको | | | ८८० | | | |
| ३१९ | गीत नाथजी भालोताणाको ठाकुरको | | | ८८१ | ३०४-३०५ | | |
| ३२० | कुंडल्या जसोत भालाका | | | ८८२-८८६ | ३०५-३०६ | | |



| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|------------------------------------------|-------|------|---------|----------------|---------|-----------------------------------------------------------------------|
| ३२१ | दूहो माधोसींघ भालाको | | | *१ | ३०६ | | *यह दोहेकी संख्या है। |
| ३२२ | दूहो मदनसींघ भालाको | | | १-८६० | ३०६-३०७ | | ८६० कवित् सं. है। |
| ३२३ | कवित् हमतोंसिंघ भालो | | | ८६१ | ३०७ | | |
| ३२४ | मंत्र हेमतसींघ भाला उपर | | | ८६२ | ३०७ | | |
| ३२५ | गीत जालमसींघ भालाको | | | ८६३ | ३०७-३०८ | | |
| ३२६ | दूहो पुवारको | | | *१, ८६४ | ३०८ | | *१ संख्या दोहेकी है। |
| ३२७ | गीत सादुल (सादुल) पुवारको | | | ८६५ | ३०८ | | |
| ३२८ | गीत रावत मयण उमटको | | | ८६६ | ३०९ | | |
| ३२९ | गीत परसराम उमटको | | | ८६७ | ३०९-३१० | | कवित्संख्या के प्रतिरित्त ४ दोहे और हैं। *यह संख्या दोहे की है। |
| ३३० | दूहो मानधाता पुवार बीजोलयांका ठाकुरको | | | *१ | ३१० | | |
| ३३१ | गीत नंगा खातीको | | | ८६८-८६९ | ३१०-३११ | | |
| ३३२ | गीत नारंग देसलीको | | | ९०० | ३११ | | |
| ३३३ | गीत रजपुताका गाढको | | | ९०१-९०४ | ३११-३१३ | | |
| ३३४ | गीत अनोपसींघ कछवावो | | | ९०५ | ३१३ | | |
| ३३५ | गीत माधोसींघ कछवावो | | | ९०६ | ३१३-३१४ | | |
| | अजबगढ भानगढका ठाकुरको | | | | | | |
| ३३६ | गीत गोयंददास साधारणीको कछवावो | | | ९०७ | ३१४ | | |
| ३३७ | गीत कमा साधारणी कछवावो | | | ९०८ | ३१४ ३१४-३१५ | | |

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कवि | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | निर्णयकाल | विशेष |
|---------|----------------------------------------------------------------|-----|------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------|-----------|-------|
| ३३९ | कवित् सताराका राजाका | | | ९१०-९१९ | ३१५-३१७ | | |
| ३४० | कवित् हरदसाह बुदेलाका | | | ९२०-९२१ | ३१७-३१८ | | |
| ३४१ | कवित् आतमाराम रुघनाथ- सिंघ गोइ भाखरोत | | | ९२२-९२३ | ३१८ | | |
| ३४२ | कवित् तरवरसाह भाटको | | | ९२४-९२५ | ३१८-३१९ | | |
| ३४३ | कवित् घरती चकवहुवाको | | | ९२६-९२७ | ३१९ | | |
| ३४४ | कवित् रूपगांकी खोड्को | | | ९२८ | ३१९-३२० | | |
| ३४५ | कवित् पसताई देवीदासका | | | ९२९-९३६ | ३२०-३२२ | | |
| ३४६ | कवित् कुडळया गिरधरका कहा | | | ९३७-९६६ | ३२२-३२९ | | |
| | | | | इसके पश्चात् स्फुटपत्र हैं, उन्हीं पर क्रमशः पत्र- संख्या दी हुई है। अतः गीत संख्या क्रमशः नहीं है | | | |
| | | | | ३३० | | | |
| | | | | ३३० | | | |
| | | | | ३३० | | | |
| | | | | ३३५ | | | |
| | ३४७ गीत अमरसिंघजी खातोली का ठाकुरको | | | | | | |
| | ३४८ गीत महाराजा भगतरामजी को छसर । भख्यारीदास बागडीको कहा | | | | | | |
| | ३४९ कवित् खटवरसणका भाव- परी छप्प | | | | | | |
| | ३५० गीत डोढो अठताळो सदा- सोको | | | | | | |

पत्र ३३१ से ३३४ तक
स्फुट कवित्त दोहे हैं।

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|-------------------------------------------------------------------------|-------------|-----------|--------------|------------|----------|------------------|
| १८४ | ३५१ गीत सावभड़ो | वंशभास्करगत | हिन्दी | ३३६ | ४-१९६ | २०वीं श. | अपूर्ण |
| १८५ | ३५२ गीत ज त अठतालो | | | ३३८ | | | |
| १८६ | ३५३ गीत यदमसीधजी रहणावन को ठाकुरज्याकी ठुकराण्या मयारामे काम आयी ज्याको | | | ३४० | | | |
| १८७ | ३५४ गीत देवो बागाको | | | ३४४ | | | |
| | ३५५ नशाणी राव साडाकी | | | ३४४ | | | |
| १८४ | उमदेचरित्र | भर्तृहरि | हिन्दी | इतिहास | ४-१९६ | २०वीं श. | अपूर्ण |
| १८५ | गीतासार | | " | वेदान्त | १० | " | " |
| १८६ | मदनकैवाररी कथा | | राजस्थानी | कथा | ३० | " | अपूर्ण, कीटविद्ध |
| १८७ | (क) वैराग्यशतक | | संस्कृत | काव्य | ८-१२ | १८०० | " |
| | (ख) पोथी साठसम्बररी | | हिन्दी | ज्योतिष | १-३३ | " | " |
| | (ग) गोकुल नाथामल्ल अलाङ्गके युद्ध | | " | काव्य | १-६ | " | " |
| | (घ) शाहजहाँका चारोंशहजादोंकी कथा (पद्यबद्ध) | | " | " | १-७ | " | " |
| १८८ | (च) कुतुबरात | | " | " | ३६ | " | अपूर्ण |
| १८९ | परिचय अष्टाङ्ग | | " | योग | ३-८० | २०वीं श. | कीटविद्ध, अपूर्ण |
| १९० | भाषापिंगल | | " | छन्दःशास्त्र | ६ | " | अपूर्ण |
| | (क) कविकुलकण्ठाभरण | संग्रामसिंह | " | रसालंकार | ४१ | " | " |
| | (ख) काव्यकौमदी | | " | " | १-१३ | " | " |

| क्रमांक | ग्रन्थनाम | कर्ता | भाषा | विषय | पत्रसंख्या | लिपिकाल | विशेष |
|---------|------------------------------------------------------------|-------------------|---------|-------------------|------------|----------|---------------------|
| १६१ | (घ) भाषाभूषण परमलोकपत्रिका | जसवन्तसिंह | हिन्दी | रसालंकार | १० | २०वीं श. | अपूर्ण |
| १६२ | यशःप्रकाश | कविजुहार | " | वेदान्त | १० | १६०५ | |
| १६३ | विदग्धमुखमण्डन (तृतीयपरि- च्छेदान्त) | धर्मदास | " | काव्य | १२ | २०वीं श. | |
| १६४ | वीरसप्तशती | सूर्यमल्ल | संस्कृत | रसालंकार | १० | " | |
| १६५ | महाकालभैरवकवच | सूर्यमल्ल | हिन्दी | काव्य | १६ | " | जीर्णशीर्ण, अपूर्ण |
| १६६ | भैरवकवच (त्रैलोक्यमङ्गलनामक) | गन्धर्वतन्त्रोक्त | संस्कृत | तन्त्र | ३ | " | |
| १६७ | सुमुखीसहस्रनाम | रुद्रयामलगत | " | " | ३ | " | |
| १६८ | अर्गलाकीलकरतोत्र | रुद्रयामलगत | " | " | १२ | १८६१ | |
| १६९ | सुमुखीपटल (हनुमद्विषयक) | सप्तशतीगत | " | " | ४ | २०वीं श. | |
| २०० | गणेशकवच | रुद्रयामलगत | " | " | १० | १८६० | |
| २०१ | क्षेत्रपालमन्त्र | " | " | " | ३ | १८६५ | |
| २०२ | अमृतसञ्जीवनीकल्प | " | " | मन्त्रशास्त्र | ३ | १६वीं श. | |
| २०३ | बालापूजनपद्धति | " | " | तन्त्र | ८ | " | अन्तिमपत्र अप्राप्त |
| २०४ | उडुडीशतन्त्र | " | " | मन्त्रशास्त्र | १४ | " | अपूर्ण |
| २०५ | गर्गसंहितागिरिराजखण्डटीका | नाथूराम गुजराती | हिन्दी | तन्त्र | ८ | " | |
| २०६ | इन्द्रगुह्यमहाराजसंग्रामसिंहवि- रचितग्रन्थोंकी सूची आदि | नाथूराम गुजराती | " | पुराण प्रकीर्ण | ३३ | २०वीं श. | |

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजयजं

++++++

प्रकाशित ग्रन्थ

१-संस्कृत ग्रन्थ

१. प्रमाद-जरी, तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्य, सम्पादक—मीमांसान्यायकेसरी पं० पट्टाभिराम-शास्त्री, विद्यासागर । मूल्य—६.००
२. यन्त्रराजरचना, महाराजा-सवाई-जयसिंह-कारित । सम्पादक—स्व० पं० केदारनाथ, ज्योतिर्वित् । मूल्य—१.७५
३. महर्षिकुलवैभवम्, स्व० पं० मधुसूदन ओझाप्रणीत, सम्पादक—म०म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी । मूल्य—१०.७५
४. तर्कसंग्रह, अन्नभट्ट, सम्पादक—डॉ० जितेन्द्र जेटली, एम. ए., पी-एच. डी., मूल्य—३.००
५. कारकसंबंधोद्योत, पं० रभसनन्दी, सम्पादक—डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी. एच-डी., मूल्य—१.७५
६. वृत्तिदीपिका, मौनिकृष्ण-भट्ट, सम्पादक—पं० पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य । मूल्य—२.००
७. शब्दरत्नप्रदीप, अज्ञात कर्तृक, सम्पादक—डॉ० हरिप्रसादशास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी. । मूल्य—२.००
८. कृष्णगीति, कवि-सोमनाथ, सम्पादिका—डॉ० प्रियवाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य—१.७५
९. नृत्यसंग्रह, अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका—डॉ० प्रियवाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य—१.७५
१०. शृङ्गारहारावली, श्री हर्ष-कवि-रचित, सम्पादिका—डॉ० प्रियवाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य—२.७५
११. राजविनोद महाकाव्य, महाकवि-उदयरज, सम्पादक—पं० श्री गोपालनारायण बहुरा, एम. ए., उप-सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य—२.२५
१२. चक्रपाणिविजयमहाकाव्य, भट्ट लक्ष्मीधर विरचित, सम्पादक—केशवराम काशीराम शास्त्री । मूल्य—३.५०
१३. नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग), महाराणा कुम्भकर्ण रचित, सम्पादक—प्रो. रसिकलाल छोटालाल पारीख, तथा डॉ० प्रियवाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य—३.७५
१४. उर्वितरत्नाकर, साधुसुन्दर-गणी-विरचित, सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य श्री जिनविजय मुनि । सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य—४.७५
१५. दुर्गापुष्पाञ्जलि, म०म० पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदीकृत, सम्पादक—पं० गङ्गाधर द्विवेदी, साहित्याचार्य । मूल्य—४.२५

१६. कर्णकुतूहल, महाकवि भोलानाथ विरचित, सम्पादक-पं० श्री गोपालनारायण बहुरा, एम. ए., उप-सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । इसी ग्रंथकार की अपर कृति 'श्रीकृष्णलीलामृत' सहित । मूल्य-१.५०
१७. ईश्वरविलास-महाकाव्य, कविकलानिधि श्रीकृष्ण भट्ट विरचित, सम्पादक-श्री मथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर । मूल्य-११.५०
१८. रसदीधिका, कवि विद्याराम प्रणीत, सम्पादक-पं० श्री गोपालनारायण बहुरा, उप-सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य-२.००
१९. पद्यमुक्तावली, कविकलानिधि कृष्ण भट्ट, सम्पादक-पं० मथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य । मूल्य-४.००
२०. काव्यप्रकाशसंकेत, सोमेश्वर भट्ट कृत, सम्पादक-श्री रसिकलाल छो० परीख भाग १ मूल्य-१२.००
२१. " " " भाग २ मूल्य- ८.२५
२२. घस्तुरत्नकोश, अज्ञात कर्तृक, सम्पादिका-डॉ. प्रियवाला शाह । मूल्य-४.००

२-राजस्थानी और हिन्दी ग्रन्थ

२३. फान्हुडदे प्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभ रचित, सम्पादक-प्रो. के. बी. व्यास, एम. ए. । मूल्य-१२.२५
२४. क्यामखां रासा, कविवर-जान रचित, सम्पादक-डॉ. दशरथ शर्मा और श्री अग्ररचन्द भंवरलाल नाहटा । मूल्य-४.७५
२५. लावारासा, चारण कविशा गोपालदानविरचित, सम्पादक-श्री महतावचन्द खारेड़ । मूल्य-३.७५
२६. बांकीदासरी ह्यात, कविवर बांकीदास, सम्पादक-श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम. ए. । मूल्य-५.५०
२७. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग १, सम्पादक-श्री नरोत्तमदास स्वामी एम. ए. । मूल्य-२.२५
२८. कवीन्द्रकल्पलता, कवीन्द्राचार्य सरस्वती विरचित, सम्पादक-श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत । मूल्य-२.००
२९. जुगलविलास, महाराजा पृथ्वीसिंह कृत, सम्पादिका-श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत । मूल्य-१.७५
३०. भगतमाल, ब्रह्मादासजी चारण कृत, सम्पादक-उदैराजजी उज्ज्वल मूल्य-१.७५
३१. राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची-भाग १ मूल्य-७.५०
३२. " " " " भाग २ मूल्य-१२.००
३३. मुंहता नैणसोरी ह्यात, भाग १, मुंहता नैणसी कृत, सम्पादक-श्री बदरीप्रसाद साकरिया । मूल्य-८.५०
३४. रघुवरजसप्रकास, किसनाजी आढ़ा कृत, सम्पादक-श्री सीताराम जालस मूल्य-८.२५
३५. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग १, सम्पादक-श्री मुनि जिनविजयजी । मूल्य-४.५०
३६. बीरवांज, डाढी वादर कृत, सम्पादिका-श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारीजी चूडावत । मूल्य-४.५०

ग्रंथों में छप रहे ग्रंथ

संस्कृत ग्रंथ

| | |
|------------------------------------------------------|----------------------------|
| १. शकुनप्रदीप, लावण्य शर्मा रचित | सम्पादक—मुनि श्रीजिनविजयजी |
| २. त्रिपुरा भारती लघुस्तव, धर्माचार्य प्रणीत | " " " |
| ३. करुणामृतप्रपा, ठक्कुर सोमेश्वर-विनिर्मित | " " " |
| ४. बालशिक्षाव्याकरण, ठक्कुर संग्रामसिंह विरचित | " " " |
| ५. पदार्थरत्नमंजूषा, पं० कृष्ण मिश्र रचित | " " " |
| ६. अतविलास काव्य, अज्ञात कर्तृक | " एम. सी. मोदी |
| ७. नैपाख्यान, अज्ञात कर्तृक | " " बी. जी. साठेसरा |
| ८. चांद्रव्याकरण, आचार्य चन्द्रगोमि विरचित | " श्री बी. टी. दोसी |
| ९. वृत्तजातिसमुच्चय, कवि विरहाङ्क विनिर्मित | " " एच. डी. वेण्णलकर |
| १०. कविदर्पण, अज्ञात कर्तृक | " " " |
| ११. स्वयम्भूच्छन्द, कवि स्वयम्भू विनिर्मित | " " " |
| १२. प्राकृतानन्द, रघुनाथ कवि रचित | " मुनि श्री जिनविजयजी |
| १३. कविकौस्तुभ, पं० रघुनाथ विरचित | " श्री एम. एन. गोरी |
| १४. दशकण्ठवधम्, पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी | " " गङ्गाधर द्विवेदी |
| १५. नृत्यरत्नकोश, भाग २, महाराणा कुंभा प्रणीत | " डॉ. प्रियवाला शाह |
| १६. भुवनेश्वरी स्तोत्र (सभाष्य), पृथ्वीधराचार्य रचित | " श्री गोपालनारायण बहुर |
| १७. इन्द्रप्रस्थ प्रबन्ध | " डॉ. दशरथ शर्मा |

२-राजस्थानी और हिन्दी ग्रन्थ

| | |
|---------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------|
| १८. मुंहता नैणसी की ख्यात, भाग २, नैणसी मुंहता सम्पादक—श्री बदरीप्रसाद साकरिया | |
| १९. गीरा बादल पदमिणी चउपई, कवि हेमरतन विनिर्मित | सम्पादक—श्री उदयसिंह भटनागर |
| २०. राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज मूल लेखक श्री आर. एस. भण्डारकर | अनुवादक—श्री ब्रह्मदत्त त्रिवेदी । सम्पादक—मुनि श्री जिनविजयजी |
| २१. राठोड़ारी वंशावली | " " " |
| २२. सचित्र राजस्थानी भाषा-साहित्य ग्रन्थ-सूची | " " " |
| २३. मीरां बृहत् पदावली | " विद्याभूषण स्व. पुरोहित ह नारायणजी द्वारा संकलित |
| २४. राजस्थानी साहित्य संग्रह, भाग २ (देवजी बगड़ावत और प्रतापसिंह वार्ता आदि) | सम्पादक श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिय |
| २५. पुरोहित बगसीराम हीरां और अन्य वार्ताएं | " श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वाम |

इन ग्रन्थोंके अतिरिक्त अनेकानेक संस्कृत, राजस्थानी और हिन्दी भाषाके ग्रंथ संशोधन और सम्पादन किया जा रहा है ।

‘राजस्थान पुरातत्त्व’ नामसे एक शोध-पत्र (जर्नल) निकालने की योजना विचाराधीन है ।